सिलसिला-ए-क़ादरिया, चिश्तिया, सोहरवर्दीया नक्शबंदिया, अबुल उलाइया, शत्तारिया, फिरदौसिया के 65 औलिया अल्लाह की मुकम्मल सवानेह हयात मोतबर सनद के साथ

तज़किरा-ए-औलिया ए हिन्द

गदा-ए-अहले बैत

सैयद सालिम मियाँ अल्वी

बेलखरा शरीफ, बाराबंकी

ए.जे. ग्राफिक्स वर्ल्ड
बहादुरगंज, गाज़िपुर Mob.8188873136
Email.: faizanemakhdoomashraf143@gmail.com

یہ کتاب Madaarimedia.com سے ڈاؤلوڈ کی گئی ہے

हिन्द के 65 औलिया अल्लाह की सवानेह हयात आसान लफ़्ज़ों में

तज़किरा ए औलिया हिन्द

मोअल्लिफ(लेखक)
सैयद सालिम मियाँ अल्वी
(बेलखरा शरीफ़, बाराबंकी)

یہ کتاب Madaarimedia.com سے ڈاؤلوڈ کی گئی ہے

मुसन्निफ़--सैयद सालिम मियाँ अल्वी साहब किब्ला

(बेलखरा शरीफ़, बाराबंकी)

नज़रे सानी--अल्लामा मौलाना नूरुल हसन मिस्बाही ओवेसी साहब किब्ला

(सैफाबाद, प्रतापगढ़)

नज़रे करम--मुफ़्ती सैयद शमसादुल क़ादरी साहब किब्ला

(काठमांडू, नेपाल)

जेरे इनायत--सूफी आफाक़ अहमद अबुल उलाई जहाँगीरी

(हयातनगर, शुजागंज,रूदौली)

कम्पोजिंग---जनाब हाफ़िज़ सैयद शादाब अशरफ़ साहब किब्ला

(बहादुरगंज,गाज़ीपुर)

फेहरिस्त

ख्वाजा बाकी बिल्लाह अलैहिर्रहमा		मुजद्दीद ए अल्फे सानी अलैहिर्रहमा	
ख्वाजा शेख सलीम चिश्ती अलैहिर्रहमा		शेख सारँग चिश्ती बाराबंकवी अलैहिर्रहमा	
मख्दूम शाहमीना शाह लखनवी अलैहिर्रहमा		शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमा	
ख्वाज़ा गौस मोहम्मद ग्वालियरी अलैहिर्रहमा		अल्लामा फज़ले हक़ खैराबादी अलैहिर्रहमा	
सैयद वजीहुद्दीन अल्वी सत्तारी अलैहिर्रहमा		ख्वाजा मुहम्मद नबी रज़ा शाह अलैहिर्रहमा	
मीर सैयद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी अलैहिर्रहमा		ख्वाजा इनायत हसन शाह अलैहिर्रहमा	
शाह मुहिबबुल्लाह इलाहाबादी अलैहिर्रहमा		ख्वाजा मुहम्मद राहत हसन शाह अलैहिर्रहमा	
सैयदना अमीर अबुल उला अलैहिर्रहमा		हाफिज़ो क़ारी सूफी अहमदुल्लाह शाह अलैहिर्रहमा	
शेख सईद सरमद शहीद अलैहिर्रहमा		ख्वाजा फ़साहत हसन शाह अलैहिर्रहमा	
शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अल बाँसवी अलैहिर्रहमा		सैयद साहू सालार ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा	
सैयदना मीर मोहम्मद इस्माइल अलैहिर्रहमा		हुज़ूर महबूबुल औलिया अलैहिर्रहमा	
सैयद हाज़ी वारिस अली शाह अलैहिर्रहमा		हुज़ूर शुएबुल औलिया अलैहिर्रहमा	
बाबा ताजुद्दीन नागपुरी अलैहिर्रहमा		हुज़ूर ताजुश्सरिया अलैहिर्रहमा	
शाह नियाज़ बे नियाज़ अल्वी चिश्ती अलैहिर्रहमा		फातहे बिलग्राम सैयद मोहम्मद सुगरा अलैहिर्रहमा	
मख्दूम शाह मुनाम पाक बाज़ अलैहिर्रहमा		मख्दूम ए काल्पी अलैहिर्रहमा	
सैयद आले रसूल माहरेरवी अलैहिर्रहमा		ख्वाजा इमामुद्दीन चिश्ती अलैहिर्रहमा	
सरकार आला हजरत अजीमुल बरक़त अलैहिर्रहमा			
अल्लामा नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमा			

तसव्वुफ़

तसव्वुफ़ नाम है उन रास्तों का जो ले जाते हैं उस मंज़िल तक जिसे क़ुरआन तज़किये नफ़्स कहता है और हदीस अहसान और उन रास्तों पर रहनुमाई करने वाले को मुर्शिद कहते हैं जिसके पास सुन्नते मुस्तफ़ा की शमा और खोफे खुदा का असा होता है.

(अल्लामा सैयद मुख़्तार शाह नईमी अशरफी दामत बरकातहुल आलिया)

"औलिया अल्लाह का तज़किरा गुनाहो का कफ़्फ़ारा है"

(ख्वाजा फरीदुद्दीन अत्तारी रहमतुल्लाह अलैह)

पेशे ख़िदमत

अस्सलामुअलैकुम,

मेरे प्यारे अज़ीज़ों "**तज़किरा ए औलिया ए हिन्द**" किताब में हिंदी जुबान का इस्तेमाल किया गया है जो कि हमारे देश की राष्ट्र भाषा है आप सब के आसानी के लिए मेने औलिया अल्लाह की मुकद्दस बारगाह में गुलामी का सबूत देते हुए टूटे फूटे अंदाज़ में खिराजे अक़ीदत पेश किया है। हिन्दोस्तां में आये हुए औलिया अल्लाह का तज़किरा जिसे पढ़कर आप उनकी रूहानी,इरफ़ानी,जिंदगी को समझे और उनके नक्शे कदम पर चलने की कोशिश करें।अगर लिखने में कोई गलती हो गई हो तो में पनाह लेता हूँ उस रब की जो सब का मालिक है,जो अम्बिया का मालिक है,जो औलिया का मालिक है जो अस्फिया का मालिक है,जो मलाइका का मालिक है,जो जिन्न, बशर,शजर,हज़र का मालिक है जो सबसे ज्यादा बड़ाई रखने वाला है जिसका कोई शरीक नही है जिसकी कोई बराबरी का नही

है जो वाहिद है जो बेनियाज़ है जो पाक है जो पूरी दुनिया का पालनहार है जो समंदर में पानी बहाता है,जो पहाड़ो को मजबूत करता है में उस रहमान की बारगाह में माफी का तलबगार हूँ!

चश्मो चराग़ खानवाद ए शुएबुल औलिया नवासए सदाकुल आशिकीन सूफी आफाक अहमद अबुल उलाई जहाँगीरी दामत बरकातहुल आलिया

सैयद सालिम मियाँ अल्वी साहब किब्ला

(बेलखरा शरीफ़, बाराबंकी)

मो0--9559821241

9651677712

बाबा रतन लाल हिंदी

बाबा रतन लाल हिंदी रजिअल्लाहो तआला अन्हु को सहाबीए रसूल होने का शरफ़ हासिल है।आपकी सवाने हयात से ज्यादा जानकारी तो अभी तक नही मिलती है लेकिन आप सहाबीए रसूल है इसको कई मोतबर वली अल्लाह और मुहद्दिसीन ने अपनी किताब में दर्ज किया है। आप का आस्ताना हिंदुस्तान के राज्य पंजाब के शहर भटिंडा में है।

आपका खानदान और मक्का आमद

आप के खानदान का काम तिजारत करना था।आप अपने खानदान के साथ मसालो(लौंग, अदरक,इलायची,सागवन) जो उन दिनों अरब में बहुत मशहूर था वहां ले जाते आप तिजारत के लिए मुल्क शाम जाते तो उसी रास्ते पर आपको मक्का शरीफ मिलता था। अल्लामा हाफ़िज़ इब्ने हजर असकलानी अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि

एक दिन आप तिजारत के लिए मुल्क शाम रवाना हुए उस वक़्त आपकी उम्र करीब 20 साल थी।आप जब मक्का की सरजमीं पर पहुँचे तो वहां की वादी जहां से आपका निकलना होता था अचानक से बहुत तेज़ बारिश शुरू हो गई और इतनी तेज बारिश हुई कि पास में एक नाला था वो भर गया और बहने लगा।इतने में एक छोटा मासूम सा बहुत ही खूबसूरत बच्चा कुछ बकरियों को चरा रहा था वो नाले के किनारे खड़ा था आपने उस बच्चे को देखकर कैफियत जान ली की वो छोटा सा खूबसूरत बच्चा इस नाले को पार करना चाहता है और उसको अपने ऊपर बिठा कर नाला पार कराया।

अज़ीज़ों एक बात पर गौर करो बाबा रतन लाल हिंदी ने जिस छोटे बच्चे को अपने ऊपर बिठा कर नाला पार कराया जिसके लिए आप ऊंठ बने वो बच्चा कोई और नही बल्कि ताजदारे मदीना, सैयदुल अम्बिया,इमामुल अम्बिया,महबूबे खुदा हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम थे।जब आपने प्यारे आक़ा अलैहिस्सलाम को अपने कंधे पर बिठाकर

नाला पार कराया तो प्यारे आक़ा के मुबारक लब से निकला की अल्लाह तुम्हे बरकत दे,ये जुमला सुनने के बाद वो बहुत खुश हुए आप पर अजीब केफियत तारी हुई क्योंकि ऐसी मिठास आपने पहले कभी नही सुनी न ये लफ्ज़ आपने पहले कभी सुना था और वो बकरिया जो आप चरा रहे थे वो हज़रत हलीमा सादिया सलामुल्लाह अलैहा की बकरिया थी उस वक़्त आप अपनी दाई माँ हज़रत हलीमा सादिया सलामुल्लाह अलैहा के पास ही रहते थे।

(आलासबा जिल्द अव्वल,बाब2)

चांद के 2 टुकड़े होना

चाँद के 2 टुकड़े करना आपका ये मोजिज़ा तो शायद हर उम्मती जानता है कि हमारे नबी क़रीम ने एक इशारे से चांद के 2 टुकड़े कर दिए इसी वाकिये को ध्यान में रखते हुए इमाम अहमद रज़ा खान फ़ाज़िल ए बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं कि

सूरज उल्टे पाँव पलटे चाँद इशारे हो चार
अंधे नज़दी देखले क़ुदरत रसूलअल्लाह की

तो बात हो रही है बाबा रतन लाल हिंदी रहमतुल्लाह अलैह की आपके बेटे महमूद हिंदी फरमाते है कि आप एक दिन रात में खुले आसमान के नीचे लेटे थे तभी अचानक से आपने देखा कि चाँद के दो टुकड़े हो गए हैं एक मगरिब में और दूसरा टुकड़ा मशरिक में है।ये वाकिया देखकर आप के मन में इसके बारे में जानने के लिए बेकरारी बढ़ गई।आपका दिल बेचैन हो उठा कि आखिर चाँद के दो टुकड़े करने वाली शख्सियत कौन है।लेकिन उस वक्त हिन्द में किसी के पास इतना इल्म न था जो आपका ये मसला हल कर सके।फिर आप तिजारत के लिए अरब मुल्क गए और वहाँ पर आपने एक बूढ़े आदमी से अपने वाकिये को बताया तो उन्होंने कहा हां वो मक्का के ही हैं और उन्होंने अपने आप को नबी होने का दावा भी किया है ये सुनकर आप फौरन उनके बताए हुए पते पर गए तो

आपने देखा कि प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम अपने कुछ जानिसार सहाबा क़राम के साथ बैठे हैं जब आप पहुंचे तो सब आपको देखते रह गए क्योंकि आपकी बोली/हुलिया/सब मुख़्तलिफ़ था।आपको देखते ही आक़ा अलैहिस्सलाम ने फरमाया क्या तुम रतन हिंदी हो ये सुनकर बाबा ने कहा हां में रत्न हिंदी हूँ लेकिन आपको किसने बताया तो आक़ा क़रीम ने जवाब दिया जिस रब ने मुझे नबी बनाया है उसी रब ने ये भी बताया है. क्या तुमने मुझे पहचाना--? तो बाबा ने जवाब दिया नही।आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम फ़रमाया की बचपन में जिस बच्चे को आपने अपने कंधे पर बिठा कर रास्ता पार कराया था वो बच्चा में ही हूँ उस दिन तुमने मुझे अपने कंधे पर बिठाया था और खाई पार कराई थी आज में तुम्हे कलमा पढा कर जहन्नम की खाई से पार लगाऊंगा ये सुनना था कि बाबा रत्न हिंदी तुरन्त आपके क़दमो में गिर गए और आपने क़लमा शहादत पढ़ कर इस्लाम मे दाखिला लिया और सहाबी होने का शरफ़ पाया।फिर आप ने

बाबा रतन हिंदी को 7 खजूरे दी और आपने क़बूल फ़रमाई जिसके बाद आप की उम्र 700 साल हुई!

कुछ जरूरी बातें

हज़रत सैयद मखदूम अशरफ जहाँगीर सिमनानी ने आपकी जियारत क़रके ताबईन होने का शरफ़ हासिल किया है।वही सैयद बदिउद्दीन ज़िंदा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह ने भी आपकी जियारत की है।आप को हिंदुस्तान का पहला मुसलमान भी माना जाता है।आपका मज़ार शरीफ पंजाब के शहर भटिंडा में है।आप का तज़किरा इमाम असकलानी अलैहिर्रहमा ने अलासबा में,हज़रत अलाउद्दीन सिमनानी अलैहिर्रहमा ने किताब फसलुल खिताब में व शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमा ने अदरुश समीन में मौलाना अब्दुर्रहमान जामी अलैहिर्रहमा जैसे मुहद्दिसीन ने किया है।आपका मक़ाम बेशक बहुत ही आला है आप के दर से आज भी लोग फेज पाते हैं,आपकी उम्र करीब 700 साल बताई जाती है वही दूसरी रिवायत में आपकी उम्र 632 साल बताई जाती है।आपके बारे में क़ाज़ी नुरुद्दीन जो की

یہ کتاب Madaarimedia.com سے ڈاؤلوڈ کی گئی ہے

हसन इब्ने मुहम्मद के बेटे है आप खुरासान से हिन्द तिजारत की गरज से आये जहाँ पर आपने क़याम किया था वहां पर देखा कि अचानक से एक शोर पैदा हुआ आप भी जब भीड़ में गये तो लोगो से शोर गुल की वजह पूछी तो लोगो ने बताया कि इस दरख़्त के अंदर बाबा है जिन्होंने नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम को देखा है ये सुनकर क़ाज़ी नूरूद्दीन को भी उन्हें देखने की ख्वाहिश हुई तो आपने देखा आप दरख़्त के अंदर रुई में ऐसे लेटे है जैसे चिड़िया अपने घोंसले में उसके बाद आपने उन्हें जगाया तो उन्होंने आंख खोली और फिर अपना तज़किरा बयान किया तो अज़ीज़ों ये थे हिन्द के पहले मुसलमा और हिन्द के पहले सहाबीए रसूल बाबा रतन शाह हिंदी राजिअल्लाहो तआला अन्हू जिनका मक़ाम हर वली से अफ़ज़ल है क्योंकि सहाबा का मक़ाम वलियों से अफ़ज़ल होता है इसलिए इनकी शान में गुस्ताखी करके किसी का ईमान सलामत नही रह सकता तो फिर आक़ा अलैहिस्सलाम की शान में गुस्ताखी अल्लाह अल्लाह!

हज़रत ख्वाज़ा मोइनुद्दीन चिश्ती अजमेरी अलैहिर्रहमा

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 535 हिजरी को खुरासान के शहर संजर में हुई।यानी आज से लगभग 860 साल पहले आपकी विलादत हुई।

आपका नाम मुहम्मद हसन है आपका लक़ब अताए रसूल,हिन्दल वली,ग़रीब नवाज़ है।

आपकी किस्मत में दुनिया का सबसे अज़ीम खानदान आया है।यानी आप हसनी/हुसैनी सादात है जिसको उलेमा की जुबान में नजीबुत तरफैन सैयद कहा जाता है।आप वालिद की तरफ से हुसैनी सैयद है और वालिदा की तरफ से हसनी सैयद है।

आपका बचपन और तालीम

आपने कम उम्र में ही क़ुरआन हिफ़्ज़ कर लिया था।जब आपकी उम्र 14 साल हुई तो आपके वालिद हज़रत सैयद

गयासुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का इंतेक़ाल हो गया।आप अपनी वालिदा के पास रहते थे।आपके वालिद एक बाग और कुछ नगदी विरासत में छोड़ गए थे एक दिन आपने अपनी वालिदा से कहा कि ए अम्मी जान मेरा मन बाग और गुलशन(बगीचा)की रखवाली में नही लगता बल्कि में चाहता हूँ कि उस बाग की हिफाजत करूं और उस गुलशन को तरो ताज़ा करूँ और हरा भरा रखूँ जिसे मेरे जद्दे अमज़द हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने लगाया है।आप ने कहा कि अम्मी जान मुझे अल्लाह की राह में दे दीजिए आपकी ये बात सुनकर आपकी वालिदा ने आपको इजाजत दे दी।उसके बाद आला तालीम के लिए नेशापुर जो कि एक मशहूर शहर है वहां चले गए जहां से बड़े बड़े उलेमा,बुजुर्ग, सूफिया हुए हैं।जब आप नेशापुर पहुंचे तो वहां पर सैयद हिसामुद्दीन बुखारी रहमतुल्लाह अलैह थे जो अपने वक़्त के बहुत बड़े मुहद्दिस मुफ़स्सिर थे।उनके दारुल उलूम में आपने तालीम हासिल की कुछ सालों में आपने तालीम मुकम्मल कर सनद हासिल कर ली उसके बाद आप एक क़ामिल पीर की तलाश में रहने लगे।

पीरो-मुर्शिद

एक बात जरूर याद रखो अज़ीज़ों चाहे कोई कितना इल्म पढ़ ले या चाहे कोई कितना बड़ा अल्लामा,मुहद्दिस बन जाये लेकिन तबतक उसका बेड़ा पार नही होता जबतक उसे कोई मुर्शिद क़ामिल की निस्बत नही मिल पाती।इल्मे बातिन और तरीक़त व मारफत तबतक हासिल नही हो सकती जबतक अहले इरफान के साथ ताल्लुक न हो।मौलाना रूम रहमतुल्लाह अलैह से बड़ा आलिम कौन था--?मगर आप उस वक़्त तक मौलाना रूम नही बने जबतक हज़रत शाह शम्स तबरेज़ रहमतुल्लाह अलैह की निगाह नही हुई।

आपका बहुत मशहूर शेर है

मौलवी हरगिज़ न शुद मौलाए रूम

ता गुलामी शम्स तबरेज़ी न शुद

हज़रत ख्वाज़ा मोईनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने इल्मे दीन हासिल करने के बाद क़ामिल पीर की तलाश शुरू की

अल्लाह तबारक तआला इरशाद फरमाता है(तर्जुमा)

"ए ईमान वालो!अल्लाह से डरो तक़वा और परहेजगारी अख्तियार करो और अल्लाह की तरफ वसीला ढूंढो"

उलमाए क़राम और सूफिया ए इज़ाम फरमाते हैं कि वसीले से मुराद मुर्शिद ए क़ामिल है।जब आप को मालूम हुआ कि नेशापुर के पास एक गाँव है जिसका नाम हारून है उस गांव में क़ुतुबुल अकताब हज़रत ख्वाज़ा उस्मान हारूनी रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ़ रखते थे।आप अपने वक़्त के बड़े क़ुतुबुल अकताब और वली ए क़ामिल थे।

जब आप उनकी बारगाह में हाजिर हुए तो आपको बगैर देखे ही ख्वाजा उस्मान हारूनी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि

"हसन में तुम्हारा ही इंतज़ार कर रहा हूँ, वक़्त बहुत थोड़ा है जल्दी आओ मेरे पास,जो हिस्सा अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से तुम्हारे लिये है वो ले लो

फिर आप मुरीद हुए,शेख क़ामिल ने एक हुज़रा आपको रहने के लिए दिया।आप उस हुजरे में रहकर वजायफ़ पढ़ते थे।

इबादत गरीब नवाज की

अज़ीज़ों अल्लाह की इबादत से आज हम और आप कितने दूर है एक ख्वाज़ा गरीब नवाज रहमतुल्लाह अलैह हैं अल्लाह अल्लाह।आजकल हमारा हाल ये है कि हम ये चाहते हैं कि हमे ऐसा पीर मिल जाए जो एक निगाह से हमे क़ुतुब बना दे.न नमाज़ पढ़नी पड़े,न रोज़ा रखना पड़े,न हज करना पड़े,न दाढी रखनी पड़े,न तहज्जुद पढनी पड़े,न कोई जिक्र अज़कार करना पड़े,न ख्वाहिशात नफ़सानी को कुचलना पड़े बगैर मेहनत व मशक्कत किये बगैर हमे कुतुब बना दे तो हमारा हाल ये है।

मेरे लिखने का मतलब ये बिल्कुल नही है कि अल्लाह वाले किसी को एक नज़र में क़ुतुब नही बना सकते,बिल्कुल बना सकते हैं जब चाहे जिसे चाहे जहां चाहे लेकिन ये कानून नही है कि सबको एक निगाह से

क़ुतुब बनाते रहे।क़ानून यही है मेहनत व मशक्कत से ये मर्तबा हासिल करो।

शाने गरीब नवाज

आपकी शान का एक हिस्सा भी मोअल्लिफ़ नही लिख सकता।एक बार आपके पीरो मुर्शिद ने पूछा कि ए हसन! बेटा तुम कहाँ तक देखते हो--?आपने अर्ज़ किया!सातों आसमानों और सातों जमीनों की हक़ीक़तों को बे हिजाब देखता हूँ।जो कुछ सातों आसमानों और सातों ज़मीनों में है वो सब कुछ देखता हूँ।शेख क़ामिल ने फरमाया बेटा अभी बड़ी कमी है तुम्हे जिस मंजिल पर हम पहुंचाना चाहते हैं वो अभी बड़ी दूर है और मेहनत और मशक़्क़त करो और रियाजत करो।ख्वाज़ा गरीब नवाज़ ने मेहनत और मशक़्क़त करना शुरू कर दी इधर शेख क़ामिल ख्वाजा उस्मान हारूनी रहमतुल्लाह अलैह की तवज़्ज़ो आप पर थी।

कुछ दिन बाद फिर आपके पीर ने पूछा कि हसन अब तुम कहाँ तक देखते हो--?

आपने अर्ज़ किया "तहतुश शरा" से "अर्शे मुअल्ला" तक सब कुछ देखता हूँ।

फिर आपके मुर्शिद ख्वाजा उस्मान हारूनी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते है अभी कमी है और मशक्कत करो।

आपने और मेहनत और मशक़्क़त शुरु कर दी।

तीसरी मर्तबा आपको बुलाकर पूछा अब कहाँ तक देखता हो-?

अर्ज़ की या मुर्शिद अर्शे मुअल्ला से आगे अल्लाह तआला की हकीकत को देखता हूँ और उनकी अज़मत के अनवार और तज़ललियात को देखता हूँ ये सुनकर आपके पीरो मुर्शिद ने फरमाया की अब काम हो गया।

अज़ीज़ों जरा देखो शान मेरे ख्वाज़ा की जब आक़ा के गुलामो का ये आलम है तो सैयदुल अम्बिया का आलम क्या होगा-?

ख्वाज़ा गरीब नवाज की शान और उनके पाक नसब पर पीर सैयद नसीरुद्दीन जीलानी का ये शेर चार चांद लगाता है।

गुलशने मुस्तफा की फबन और हे

ये चमन और हे

शाह-ए-अबरार की अंजुमन और हे

ये चमन और हैं

बू ए गुलदस्ता ऐ पंजतन और हे

ये चमन और हे

शाने आले हुसैन ओ हसन और हे

इसके बाद आप मुर्शिद से ख़िरका ए खिलाफत व इजाजत लेकर मदीने शरीफ चले गए।छः महीने तक अपने नाना सैयदुल अम्बिया की मुक़द्दस बारगाह में रहे।सरकारे दो आलम सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम ने आपको अपनी ज़ियारत का शरफ़ बख्शा और फ़रमाया

"तुम मोईनुद्दीन हो!यानी दीन के मददगार,तुम क़ुतुबुल मशायख हो"

ये अलक़ाब आपको नबी क़रीम ने अता फरमाए हैं जबकि आपका असली नाम हसन था।उसके बाद

आपको हुक्म दिया और कहा बेटा जाओ हिंदुस्तान की सरजमीं को कुफ्र से पाक करो अल्लाह तुम्हारे साथ है,हमारी नज़र तुम पर है तो इस तरह से आप हुक्म पाने के बाद मदीना शरीफ से अजमेर के लिए रवाना हुए।

मदीना मुनव्वरा से अजमेर तक

नबी क़रीम का हुक्म मिलने के बाद आप मुल्क शाम के रास्ते से इराक़ आये।हज़रत सरकार गौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह से मुलाकात की।गौसे आज़म सरकार का बजाहिर वो आखरी वक़्त था।रास्ते मे बड़े बड़े औलिया अल्लाह मिले।बगदाद शरीफ में ही आपके सबसे पहले मुरीद हज़रत ख्वाज़ा कुतुबद्दीन बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह हुए।और ऐसे मुरीद हुए की आखिर तक शेख की सोहबत और हुजूरी में रहे.आप ईराक़ से ईरान और ईरान से अफगानिस्तान और अफगानिस्तान से पेशावर(अब पाकिस्तान) के रास्ते से लाहौर आये।रास्ते मे बड़े बड़े वाकियात हुए,बड़ी बड़ी क़रामते आपसे जाहिर हुईं जिनका बयान अगर करूं तो शायद ये किताब आपकी शान और क़रामतो से ही खत्म

हो जायेगी लेकिन आपकी शान और क़रामत बयान नही हो पाएगी।

दाता गंज बख्श के आस्ताने पर रुकना

लाहौर में एक बहुत बड़े क़ामिल व अकमल वली अल्लाह हज़रत सैयद अली हिज्वेरी दाता गंज बख्श रहमतुल्लाह अलैह का आस्ताना है। रास्ते मे अजमेर आते वक्त आप उनके आस्ताने पर भी गए,दाता गंज बख्श रहमतुल्लाह अलैह की शान को जानना हों तो सरकार गौसे आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हू का एक जुमला ध्यान में रखो कि एक मर्तबा सरकार गौसे आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हू की मजलिस में सैयदना अली हिज़वेरी दादा गंज बख्श रहमतुल्लाह अलैह का ज़िक्र आया तो आपने फ़रमाया "अगर हम उस ज़माने में होते तो दाता गंज बख्स के मुरीद होते"अल्लाह अल्लाह अज़ीज़ों अब हमें इस कौल से अंदाजा लगा लेना चाहिए कि हुज़ूर दाता गंज बख्श रहमतुल्लाह अलैह कितनी आला हस्ती हैं जिनके मुरीद होंने की बात सुल्तानुल औलिया गौसे आज़म कर रहैं हो।ख्वाज़ा हिन्द के जैसा वली जो तहतुश शरा से अर्श मुअल्ला तक सबकुछ देखता हो उन्होंने दाता गंज बख्श

की मज़ार अक़दस के क़दमो मे 40 दिन गुजारे है और फेज़ हासिल किया।अल्लाह वाले बुजुर्गों की कद्र जानते हैं ये उनके दर्ज़े और मर्तबे को पहचानते हैं हज़रत ख्वाज़ा गरीब नवाज रहमतुल्लाह अलैह जानते है पैरो की तरफ अदब है आपने चालीस दिन तक क़दमो की तरफ बेठकर एतिकाफ किया और चिल्ला किया।और जब दाता गंज बख्श के फेज़ो बरकात को देखा तो वो कह उठे

गंज बख्श-ए-फ़ैज़-ए आलम मज़हर-ए-नूर-ए-खुदा

ना किशा रा पीर-ए-क़ामिला रा रहनुमा

(तर्जुमा)--ये वही सखी दाता हैं जो ख़ज़ानों के ख़ज़ाने तक़सीम फरमा देते हैं,आप नाकिशो के लिए ही क़ामिल पीर नही बल्कि क़ामिलो के लिए भी रहनुमा है आप क़ामिलो के रहबर और पीर हैं)

ये शेर किसी आम सूफी या मौलवी साहब का नही है बल्कि ख्वाज़ा गरीब नवाज रहमतुल्लाह अलैह जैसी हस्ती का है।अब एक बात आप से पूछता हूँ कि एक तरफ ख्वाज़ा गरीब नवाज जैसी हस्ती है ओर दूसरी तरफ ये चौदहवीं सदी के मुल्ले हैं जो कहते है ये हुज़ूर मरकर मिट्टी में मिल गए हैं ये कुछ दे नही सकते उधर मेरे गरीब नवाज फरमाते हैं कि ये क़ामिल औलिया अल्लाह जो अपनी क़ब्रो में सोये हुए है ये ख़ज़ानो के ख़ज़ाने बख्श देते हैं उनका फेज़ जहाँ को पहुंचता है ये अल्लाह के नूर का मज़हर हैं।अब फैसला आपको करना है कि आप सुल्तानुल हिन्द की सुनोगे या 14सदीं के मुल्लो की।

अजमेर में आपके मुबारक क़दम

दाता गंज बख्श रहमतुल्लाह अलैह की मजार अक़दस से सलाम पढ़कर आप देहली,पानीपत, करनाल से होते हुए अजमेर शरीफ पहुंचे।जब आप अजमेर शरीफ पहुंचे तो आपकी उम्र सैतालिस बरस की थी।अभी आपने निकाह नही किया था आपके साथ चन्द मुरीद थे, कोई

जमात नही,कोई लश्कर नही,कोई असलहा(हथियार) नही ये अल्लाह वाले होते हैं इनको क्या ज़रूरत तीरों कमान की-?

डॉक्टर अल्लामा मुहम्मद इक़बाल रहमतुल्लाह अलैह फरमाते है कि

उन्हें क्या ज़रूरत है तीरों कमान की

नज़र से उड़ाएं जो दिल का निशाना

उनकी निगाह ही तलवार होती है डॉ0 अल्लामा इक़बाल रहमतुल्लाह अलैह फरमाते है कि अल्लाह वाले जो होते हैं उनके पास दो चीजें होती है एक दरवेशी निगाह होती है और एक खुशरवी शमशीर होती है।यानी वो शमशीर लोहे की नही बल्कि निगाहों की होती है जो करना होता है कर देती है।

चन्द करामते

आपके अजमेर आने के बाद दीन तब्लीग का काम शुरु हुआ।एक दिन आप एक मैदान में बैठे थे जो मैदान अजमेर के राजा का था।जब शाम हो गई तो राजा के ऊँट उसी मैदान में बाँधे जाते थे।जब चरवाहों ने शाम हुई वो ऊँट को लेकर आये तो देखा कि आप उसी जगह पर आराम फरमा है चरवाहों ने कहा फ़क़ीर बाबा!उठो यहां से यह ऊँटो के बैठने की जगह है आपने फ़रमाया कि इतना बड़ा मैदान पड़ा है ऊँट कहीं भी बैठ जाएंगे हम ने ये चार गज़ जगह ले ली तो उससे ऊंटो के बैठने के लिए क्या रुकावट पैदा हो गई-?

इतनी जगह पड़ी है ऊँट इधर-उधर कहीं भी बैठ जायेंगे।

उन्होंने कहा नही बाबा उठो!जहाँ तुम बैठे हो वहाँ ऊँट ही बैठेंगे तुम किसी और जगज डेरा लगाओ आपने दो तीन मर्तबा कहा मगर वो चरवाहे जाहिल थे उन्हें अदब और तमीज़ क्या है ये नही पता था।उन्होंने बदतमीजी करते हुए कहा कि तुम्हे यहाँ से उठना ही पड़ेगा--

उन्होंने कहा तुम्हे मालूम नही ये राजा के ऊँट है और राजा के ऊँटो के बैठने की जगह पर राजा के ऊँठ ही

बैठेंगे उठो यहाँ से. ये सुनकर मेरे गरीब नवाज रहमतुल्लाह अलैह ने कहा कुतबुद्दीन! अपनी चटाई यहाँ से उठा कर वहां बिछा लो अब यहाँ राजा के ऊंट ही बैठेंगे।और ये कहकर वहाँ से उठ गए और राजा के ऊँठ बैठ गए।

सुबह हुई तो चरवाहे ने ऊंटो को उठाना चाहा मगर ऊंट उठे ही नही।उन्होंने ने डंडे मारे,बड़ी कोशिश की मगर वो बैठे ही रहे।चरवाहे कहने लगे इन्हें क्या हो गया है--?कहाँ ये हमारे इशारे से ही उठ जाते थे दूसरा चरवाहा कहने लगा क्या तूने सुना नही कि उस फकीर ने कहा था कि चलो अगर हमें नही बैठने देते तो यही बैठे रहें।जभी तो बैठे हुए हैं उन्होंने सोचा चलो देखे वो फ़क़ीर कौन है--?लोग देखने के लिए आ रहे थे कोई कह रहा था फ़क़ीर बड़ा क़ामिल है,कोई कह रहा था कि फ़क़ीर बड़ा जादूगर है उसने ऊँटो पर जादू कर दिया है ये बात राजा तक भी पहुंच गई।राजा ने कहा जाओ फ़क़ीर से माफी मांगो फ़क़ीर तो मख़लूक़ पर महरबान होते हैं और आपने बेजुबानों पर जादू कर दिया है महरबानी करके अपना जादू वापिस लो ताकि ये ऊँट उठ जाए।फिर वो

चरवाहे आपके पास आये रोने लगे और माफ़ी तलब करने लगे।आपने कहा आइंदा बदतमीजी मत करना और हम जादू वगैरह नही करते फिर आपने माफ फ़रमाया उसके बाद राजा के ऊँट उठ कर बैठ गए।अब पांचों वक़्त अज़ान होती थी नमाज़ होती थी आप इस्लाम की तालीमात बयान फरमाते थे कुफ्र और शिर्क की तरदीद करते थे।

अना सागर का कासे मे सिमटना

आपकी आमद का तज़किरा अजमेर के हर कोने में फैलने लगा।आखिर ये बात राजा तक पहुंची कि एक मुसलमान फ़क़ीर आया है उस के साथ कुछ लोग हैं जो पांचो वक़्त अज़ान देते हैं और हमारे पवित्र तालाब को भरष्ट करते हैं।उसी में हाथ धोते हैँ मुंह धोते हैं पैर धोते हैं और ये धर्म के खिलाफ लोग है औए हमारे तालाब को नापाक करते हैं इस लिए इन्हें यहाँ से हटाया जाए वह हमारे धर्म के खिलाफ बातें करते हैं वो कहते है मूर्तिया पूजा के लायक(योग्य) नही ये तो पत्थर है।

हमारे खुदाओं की वो तोहीन करते है और उनकी बातों से मुतास्सिर(प्रभावित)होते हैं।हमारी हुकूमत में अगर कोई

मुसलमान आकर हमारे लोगो को मुसलमान बना दे और हमारे धर्म के लोग अपना धर्म छोड़कर उस के दीन में चले जाएं ये हमारे लिए बड़े अफसोस की बात होगी।इसलिए उस फ़क़ीर को यहां से हटाया जाए उसके बाद राजा के सिपाही आते है और आपसे कहते हैं कि राजा का हुक्म आया है तुम यहाँ से चले जाओ क्योंकि तुम गोश्त खाते हो,धर्म के खिलाफ बातें करते हो हम बर्दाश्त नही कर सकते कि तुम हमारे उस मुक़द्दस(पवित्र)तालाब में अपने पैर वगेरह धो**ते हो**।जाओ!किसी और जगह जाके अपना डेरा लगाओ-

आपने इरशाद फ़रमाया इतनी दुनिया आती है कोई तालाब में नहाता है हत्ता की जानवर भी आकर पानी पी जाते हैं तो हम तो उससे बस वज़ू कर लेते हैं तो क्या हो गया-? उन्होंने कहा वो हमारे धर्म के लोग है और तुम हमारे धर्म के खिलाफ हो बस राजा का हुक्म है कि तुम्हे आइंदा उस में हाथ पांव धोने की इजाजत नही खबरदार!आइंदा तुम उसमे हाथ पेर नही धोओगे वरना हम सख्ती करेंगे।

मेरे ख्वाज़ा गरीब नवाज रहमतुल्लाह अलैह ने अपने मुरीद हज़रत ख्वाजा कुतबुद्दीन बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह से फ़रमाया कि शायद ये लोग हमें वज़ू न करने दे जाओ मश्कीज़ा(छोटी बाल्टी) तो भर कर के ले आओ अगर पानी की ज़रूरत पेश आई तो कुछ पानी तो पास रहेगा।जब हज़रत ख्वाज़ा कुतबुद्दीन ने मशक़ीज़ा भर लिया तो अना सागर का सारा पानी खुश्क हो गया।ये मेरे ख्वाज़ा ए हिन्द की अदना सी करामत थी जो आपने अपने तसर्रुफ़ से सारे अना सागर को मश्कीजा में भर लिया।सारा पानी खुश्क हो गया।याद रखो औलिया अल्लाह के हाथ से जो क़रामते ज़ाहिर होती हैं वो अल्लाह तआला ही की क़ुदरते और कमालात होते हैं सारा पानी खुश्क हो गया,अना सागर भी खुश्क हो गया।पानी जब खुश्क हुआ तो कोहराम मच गया क़यामत बरपा हो गई इधर बच्चे बूढ़े सब प्यास की सिद्दत से बिलबिला रहे थे।हर तरफ शोर मच गया कोहराम मच गया कि फ़क़ीर ने जादू करके सारे अजमेर के पानी को ख़ुश्क कर दिया।जब बात राजा के दरबार मे पहुंची तो राजा ने वज़ीरों को बुलाकर मशवरा किया कहने लगें या तो फ़क़ीर क़ामिल फ़क़ीर है या तो वो दौरे वक़्त का

सबसे बड़ा जादूगर है ।अब तो इसने हमारी ज़िंदगी मुश्किल कर दी है।फिर जब जान पे बन आई तो ये तय हुआ कि जैसे हो सके मिन्नत(विनती) करके उन फ़क़ीर को मनाया जाए।और उनसे कहा जाए वो अगर माफ नही करेगे तो अजमेर में हर घर से लाशें ही लाशें मिलेंगी क्योंकि बच्चों और औरतो में प्यास की सिद्दत से कहर बरपा था।लोग आए आपके पास रोने लगें क़दमो में गिर गए मिन्नते करने लगे बाबा रहम आपने जादू कर दिया अना सागर को ख़ुश्क कर दिया है।।

मेरे सुल्तान ने फरमाया की हमारा जादू से कोई ताल्लुक नही है हम मुसलमान हैं हमारा दीन इस्लाम है और यही सच्चा दीन है हम यहां इस्लाम की तब्लीग के लिए आये हैं इस्लाम की रोशनी आप सबके दिल मे जगाने के लिए आए हैं हमारा जादू से कोई ताल्लुक नही है ।आपने फ़रमाया तुमने हमे वज़ू से रोक दिया था कि हम वज़ू नही कर सकते फिर आपको राजा की तरफ से वज़ू की छूट आई। आपने फिर रहम दिली दिखाते हुए कुतबुद्दीन से कहा जाओ मशक़ीजे में जो पानी है उसे अना सागर में पलट दो आपका हुक्म पाकर मशक़ीज़ा अना सागर में

पलट दिया गया।पानी उबल पड़ा और देखते ही देखते सारा अना सागर पानी से लबरेज़ हो गया आजतक उस अना सागर के पानी मे कमी नही आई है।जिस दिन आपकी ये करामत ज़ाहिर हुई है उस दिन मुतास्सिर(प्रभावित)होकर 32 हज़ार काफिरो ने इस्लाम कबूल किया।

आपके अक़वाल(सन्देश)

आपने अपने चाहने वालो को नसीहत फ़रमाई है जिन पर अमल करना बहुत जरूरी है क्योंकि वो सुल्तानुल औलिया ए हिन्द है आपको हिन्द का महाराजा कहा जाता है।आप वलियों के भी सुल्तान है।आप के कुछ जरूरी और मशहूर अक़वाल ये हैं

1--बारगाहे खुदावन्दी में नमाज़ से क़ुर्ब हासिल होता है,नमाज़ अब्द और माबूद के बीच राज है और मेराजुल मोमिनीन है!

2-खुदा का दोस्त वो होता है जिसमे तीन चीजे हो

(1)--सख़ावत दरिया जैसी

(2)-शफ़क़त आफ़ताब की तरह

(3)-तवज़्ज़ो ज़मीन की तरह

3--नेको की सोहबत नेक काम करने से बहतर और बुरे लोगो की सोहबत बदी करने से बदतर है!

4--अल्लाह की मख्लूक से मोहब्ब्त करो नफरत किसी से भी न करो!

ख्वाज़ा गरीब नवाज़ एक नज़र में

अज़ीज़ों आपने अभी तक जो भी पढ़ा है आपने गौर किया है कि ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती हसन संजरी रहमतुल्लाह अलैह एक वलीए क़ामिल,एक मोतबर आलिम थे।आप बहुत ही ज्यादा रहमदिल(दयालु)थे।आप की बारगाह में हर धर्म के लोग आते है आपने कभी भेदभाव नही किया आपने जैसा सुलूक अपने मुरीद से किया बिल्कुल वैसा

सुलूक आपने गेरो से भी किया है।आप सब से मोहब्बत करते थे आपका ये कौल बहुत मशहूर है कि मोहब्बत सब से करो नफरत किसी से नही।आप ने सभी के दिलो में प्रेम,भाईचारे का परचम लहराया है।आज भी देश की बड़ी बड़ी मश**हूर** हस्तियां आपके आस्ताने पर जाती है और आपके वसीले से दुआएं/मिन्नते माँगती हैं आपसे हर मजहब के लोग अक़ीदत रखते हैं आप हिन्द के वलियों के सुल्तान हैं अहले हिन्द आपको अपना पेशवा मानते हैं। लेकिन हम और आप किसी वली के मक़ाम को तय नही कर स्कते ये काम बड़ो का है छोटो का नही आप ख्वाज़ा गरीब नवाज की ज़िंदगी से सबक ले बिलयक़ीन वो हिन्द में हमारे पेशवा है और रहेंगे आपके सदके में अल्लाह हम सबके गुनाहों को मिटा कर नेक सालेह मोमिन बनने की तौफ़ीक़ अता करे।आपकी मोहब्बत ही हम सब के लिए खुशनसीबी है!आपकी बारगाह में आला हजरत अजीमुल बरकत रहमतुल्लाह अलैह का एक शेर ज़हन में गर्दिश कर रहा है

ख्वाज़ा ए हिन्द वो दरबार है आला तेरा

नही महरूम कभी मांगने वाला तेरा
या मोईन हक़ मोईन

ख्वाजा कुतुबद्दीन बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 569 हिजरी और अंग्रेज़ी कैलेंडर के मुताबिक 1174 ईस्वी को गारगिस्तान में हुई है।वही कुछ रिवायातो में है कि आपकी विलादत(जन्म) बगदाद शरीफ में हुई है।

नाम,शजरा ए नसब

आपका नाम बख्तियार और पूरा नाम हज़रत ख्वाजा सैयद महम्मद बख्तियार काकी था।आपका सिलसिला ए नसब अमीरुल मोमिनीन सैयदुल औलिया मौलाए क़ायनात हज़रत अली रजिअल्लाहू तआला अन्हू से मिलता है।

आपका हसब-नसब कुछ यूं है

सैयद मुहम्मद कुतबुद्दीन बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह

सैयद कमालुद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयद मूसा अलैहिर्रहमा

सैयद अहमद अलैहिर्रहमा

सैयद कमालुद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयद मुहम्मद अलैहिर्रहमा

सैयद अहमद अलैहिर्रहमा

सैयद रजीउद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयद हुसैमुद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयद राशिदुद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयद जफर अलैहिर्रहमा

सैयद नफिल वजूद अलैहिर्रहमा

सैयदना इमाम अली मूसा रज़ा रजिअल्लाहू तआला अन्हु

सैयदना इमाम अली मूसा काज़िम रजिअल्लाहू तआला अन्हु

सैयदना इमाम जाफर ए सादिक़ रजिअल्लाहू तआला अन्हु

सैयदना इमाम बाकर रजिअल्लाहू तआला अन्हू

सैयदना इमाम जैनुल आब्दीन रजिअल्लाहू तआला अन्हू

सैयदुश सादात सरदारुल औलिया इमामुल इमाम महबूबे मुस्तफा लाडला ए फ़ातिमा सैयदना इमाम हुसैन रजिअल्लाहू तआला अन्हू

सैयदुल औलिया शेरे ख़ुदा मुश्किल कुशा महबूबे बदरुदुज़ा मोलाए आलमीन हज़रत अली क़रमल्लाहु वजहुल करीम

तो इस तरह से आपका ताल्लुक क़ायनात के सबसे अज़ीम **खानदान** से है।

तो अज़ीज़ों तज़किरा चल रहा है हज़रत ख्वाज़ा कुतबुद्दीन बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह के मुबारक खानदान का की किस कदर आपका हसब नसब मुबारक और अज़ीम है!

लक़ब

आपकी इल्मी जहनियत और तक़वे परहेजगारी इबादत रियाजत के मद्देनजर आपको जो अलक़ाब अता हुए हैं वो यूँ है

1-मलिकुल-मशायख

2-क़ुतुबुल-अकताब

3-क़ुतुबुल-इस्लाम

4-सुल्तानुल तरीक़त

5-बुरहानुल हक़ीक़त

6-इमामुल आमिलीन

7-सिराजुल औलिया।

आपकी तालीम और इबादत

जब आपकी उम्र डेढ़ साल यानी 18 महीने की थी तो आपके वालिद का इंतेक़ाल हो गया।आपकी वालिदा(मां)जो खुद एक आलिमा थी उन्होंने आपकी इब्तिदाई(प्रारंभिक)तालीम के लिए उस वक़्त के मशहूर आलिम शेख़ अबू हिफ़्ज़ के पास भेजा।फिर जब आपकी उम्र 17 साल हुई तक एक दिन बगदाद शरीफ में ख्वाज़ा ए हिन्द मोईनुद्दीन हसन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह का गुजर उधर से हुआ तो आपने उन के पास जाकर कहा ए शेख क्या में आपका मुरीद बन सकता हूँ।अज़ीज़ों यहां गौर करने वाली बात ये है कि अभी आपने सिर्फ जाहिरी तालीम ही हासिल की है उसके बावजूद आपकी नज़रे बातिन की एक झलक देखो की आपने एक नज़र देखते ही ख्वाजा गरीब नवाज को पहचान लिया कि ये क़ामिल मुर्शिद हैं।अब जरा सोचो जिस नोजवान सैयदजादे की नज़र का आलम अभी से ये था तो जिसने सारी जिंदगी ख्वाजा गरीब नवाज के क़दमो में गुजारी हो अल्लाह अल्लाह उनके मक़ाम का अंदाज़ा लगा पाना मुश्किल है!

फिर आपको ख्वाज़ा गरीब नवाज ने मुरीद किया इस तरह से आप ख्वाज़ा गरीब नवाज रहमतुल्लाह अलैह के पहले मुरीद व ख़लीफ़ा हैं।

आपका नाम काकी क्यों--?

अज़ीज़ों आप सब के मन मे ये जरूर आया होगा कि जब आपका नाम बख्तियार था और आपका मुकम्मल नाम सैयद मुहम्मद हसन बख्तियार था तो आज पूरी दुनिया आपको बख्तियार काकी क्यों कहती है।

तो इसके पीछे अलग अलग रिवायत है में आपके सामने एक रिवायत पेश करता हूँ जिसके बाद से आपका नाम काकी पड़ गया।

अज़ीज़ों आपने पढ़ा है कि आपके वालिद के इंतेक़ाल के बाद से आप अपनी मां के पास रहते थे।जब आपकी उम्र 5 साल थी तब आप मदरसे में पढ़ने जाते थे आपकी वालिदा आप के लिए बहुत परेशान रहती थी वो आपको एक नेक फरमाबरदार इंसान बनाना चाहती थी।एक दिन आप मदरसा गए तो आपकी माँ ने खाना पकाया और उसे अलमारी में छुपा दिया।जब आप मदरसे से पढ़कर घर आये तो आपको रोज़ की तरह भूख महसूस हुई

आपने अम्मी जान से खाना की तलब की आपकी अम्मी जान ने कहा कि बेटा आज हमें अल्लाह रोटी देगा।ये कहकर आपको एक मुसल्ला दिया और कहा बेटा लो नमाज़ पढ़कर दुआ मांगो कि अल्लाह रोटी अता करे।आपने नमाज़ पढ़ने के बाद दुआ की फिर आपकी माँ ने कहा कि अल्लाह ने रोटी भेज दी है चलो कमरे में तलाश करते है इस तरह अमूमन ये रोज़ होता रहा।आपकी वालिदा का मकसद था कि आप अपने रब को पहचान ले।एक दिन आप मदरसे से आये उस दिन आपकी वालिदा अपने किसी रिश्तेदार के यहां गई थी उन्हें जब वक़्त की याद आयी तो वो वहां से तेज़ी से निकली रास्ते मे पहुंची तो माँ की आंखों से आंसू जारी थे उन्होंने रोते हुए कहा ए परवरदिगार आज मेरे बख्तियार की नज़र में में झूठी हो जाऊंगी उसकी तवज़्ज़ो उसके रब की तरफ से हट जाएगी आज मेरी लाज रखना फिर आप घर पहुँची तो देखा कि आप सो रहे हैं।आप जब सो कर उठे तो आपकी वालिदा ने कहा आज तो मेरा बेटा भूखा होगा।आपने मुस्कुरा कर कहा नही अम्मी जान आपके न रहने के बाद मेने रोज़ की तरह नमाज़ अदा की और दुआ मांगी फिर मुझे एक रोटी पड़ी मिली मेने उसे खाया जो

बहुत ही मीठी थी ऐसी रोटी मेने आजतक नही खाई बस इसी वाकिये के बाद से आपको काकी कहा जाता है और इसी नाम से आप पूरी दुनिया मे जाने व पहचाने जाते हैं!

दिल्ली में आपकी आमद

दिल्ली में आप मेहरौली जो उस वक़्त भीड़ भाड़ शोर शराबे से दूर था वही पर अपनी ख़ानक़ाह बनाई।यहाँ पर हर धर्म के लोगो को खाना खिलाया जाता है ये एक ऐसी जगह है जहां सभी तरह के लोग चाहे अमीर हो या गरीब सभी की भीड़ जमा रहती है।आपके दर से रोज़ लँगर होता इसी शखावत को ध्यान में रखते हुए शायर लिखता है कि

देता है भीख आज भी ज़हरा का खानदान

इंसान के ज़मीर को रुसवा किये बगैर

आप मजलिस में बयान/तब्लीग करते लोगो को इस्लाम की दावत देते।आपकी दरियादिली देखकर लोग आपसे बहुत ही मुतास्सिर(प्रभावित) होते।आपने हमेशा सब को

बराबरी का सम्मान दिया। यतीमो/बेसहारो/गरीबो/गुनहगारों को आपने खास तवज़्ज़ो दी है।

आपका तसव्वुफ़

एक बार आप मुल्तान शहर में थे।वहां आपकी सीरत/सूरत और तसव्वुफ़ को देखकर लोग आपसे बहुत मोहब्ब्त करते थे एक दिन आपने दिनचर्या(रोजाना का काम) फ़ज्र की नमाज़ के बाद इसराक की नमाज़ पढ़ी।और फिर चाश्त की नमाज़ के लिए एक मस्जिद में तशरीफ़ ले गए वहां एक कमसिन लड़का बैठा एक किताब पढ़ रहा था उसने जब आपको देखा तो वो देखता ही रह गया ।आपने नमाज़ अदा की तो देखा वो लड़का बैठा क़ोई किताब पढ़ रहा था आपने कहा बेटे क्या पढ़ रहे हो उसने कहा बाबा जान नाफ़े पढ़ रहा हूँ आपने कहा तुम्हे बहुत नफा होगा ये सुनकर वो आपके क़दमो में गिर गया और उसने बैत होने की ज़िद की आपने फरमाया नही ये मुल्तान अल्लाह ने शेख़ बहाउद्दीन ज़करिया नक्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह के हवाले कर दिया है में मुल्तान में किसी को मुरीद नही करूँगा।आप अभी छोटे

हो जब तालीम हासिल कर लेना फिर दिल्ली आना हम दिल्ली में मुरीद करेंगे।अज़ीज़ों जिस लड़के से आपने ये जुमला कहा वो क़ोई और नही बल्कि वक़्त के मुर्शिद ए कामिल वली हज़रत बाबा फरीद गंज शकर अलैहिर्रहमा थे।अल्लाह अल्लाह ये तसव्वुफ़ आपने वहां पर किसी को मुरीद नही किया सबको मना कर दिया और कहा कि ये बहाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का इलाका है में यहां किसी को अपना मुरीद नही बनाऊंगा।

मुर्शिद से रिश्ता

आप की शान जाहिलो के समझ मे कैसे आएगी।हम अहले सुन्नत निस्बत को सबसे ज्यादा तवज़्ज़ो देते हैं और अगर ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह की निस्बत देखी जाए तो एक तो आप खुद सादात घराने से हैं!और दूसरी आप उस अज़ीम हस्ती के खलीफा है जो अताए रसूल है तो आसान लफ़्ज़ों में समझिए की जिसने अपनी ज़िंदगी का एक अहम हिस्सा अताए रसूल ख़्वाज़ा ए हिन्द के साथ गुजारा हो उस जात के मक़ाम का अंदाज़ा हम और आप कैसे लगा सकते हैं।आप अपने पीरो मुर्शिद के सबसे चहेते थे।जब ख़्वाज़ा

ए हिन्द को बजाहिर दुनिया से जाने का वक़्त मालूम हुआ तो आपने ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह को सारी नेमतें दे दी जो आपने अपने पीरो मुर्शिद ख़्वाज़ा उस्मान हारूनी रहमतुल्लाह अलैह से मिली थी और आपने कहा तुम किसी कामिल वली को ये नायाब विरासत दे देना।उसके बाद ख़्वाजा ए हिन्द ने आसमान की तरफ देखा और कहा ए अल्लाह में कुतबुद्दीन को तेरे हवाले करता हूँ ये कहकर आप एक खाट पर बैठ गए।ख़्वाज़ा कुतबुद्दीन बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह के मन मे अपने मुर्शिद के कदम चूमने का ख्याल आया आपने ख़्वाजा ए हिन्द का क़दम चूमा फिर ख़्वाज़ा ए हिन्द ने आपको उठाया अपने सीने से लगाया फिर फातिहा पढ़ा एक बार फिर आप ख़्वाजा ए हिन्द के क़दमो में गिर गए और क़दम चूमने लगे।अल्लाह अल्लाह क़दम को चूम कर आपने क़यामत तक उन फतवेबाज़ों को ये आईना दिखा दिया है कि मुर्शिद के क़दम चूमना शिर्क नही बल्कि तरीका ए मुरीद ए कामिल है।आपक़ी जात पर लाखों सलाम मेरे काकी अल्लाह आपके सदके तुफैल हम सभी के गुनाहों को बक्श दे।आपने सभी को प्यार,इंसानियत,भाईचारे,

मोहब्बत,ईमानदारी, नरमी, की तालीम दी।आप हर धर्म के लिए बहुत बड़ा मक़ाम रखते हैं आज भी आपके आस्ताने पर हर धर्म के लोग हाजिरी देते हैं।और फेज़याब होते रहते हैं और ता क़यमात तक आपके ज़रिए ख़्वाजा ए हिन्द, मौलाए क़ायनात का फैज़ान हम सब तक पहुंचता रहेगा।

आपकी चन्द क़रामते

यूं तो आप जिस मक़ाम पर फ़ायज़ थे आप का हर दिन क़रामतो से भरा रहता लेकिन आपकी चन्द क़रामतो का यहां ज़िक्र करना मेने मुनासिब समझा है क्योंकि इन हस्तियों की बेशुमार क़रामते हैं जिनका तज़किरा किसी एक किताब में करना मुमकिन ही नही है।

मुरीद को गुनाह से बचाया

आपकी नज़र को क़ुदरत ने वो कशिश और असर पैदा फ़रमाया था कि आप की नज़र जिस पर पड़ जाती थी वो वली बन जाता था।हज़ारो फ़ासिक़/काफ़िर आपकी निस्बत पाकर मुत्तक़ी बन गए।बेशुमार सलेहीन ने आपकी रूहानी बरकात से बड़े बड़े दरज़ात हासिल कर लिए।

एक बार एक शख़्स घर से ये सोच कर रवाना हुआ कि आपके पास आकर तौबा करूं लेकिन रास्ते मे एक फहासा(बदचलन) औरत उसके हमवार हो गई। जो चाहती थी कि किसी तरह इस मर्द से ताल्लुक क़ायम हो जाये।कुछ देर बाद जब औरत उसके पास बैठ गई जहाँ उस आदमी ने उसे छूने की कोशिश की तो एक आदमी ने उन्हें थप्पड़ मारा और उन्हें कहा बदतमीज तू आज ही ख्वाज़ा बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह के दर पर माफी मांगने जा रहा है और गुनाह कर रहा है फिर उस आदमी ने तौबा की और जब वो आपके पास आया तो क़दमो में गिर गया और माफी मांगी।

15 पारे माँ की पेट से हिफ़्ज़ कर लिए

जब आपकी उम्र 4 साल 4 **माह** हुई तो आपने 15 पारे अपने उस्ताद को सुनाए तो उस्ताद ने कहा और और पढ़ो तब आपने कहा कि बस मेने इतने ही पारे अपनी माँ के पेट से हिफ़्ज़ किये थे।क्या इससे भी बढ़कर कोई क़रामत हो सकती है यानी मां के पेट से आप वली थे।जरा गौर करो अज़ीज़ों और क़ुर्बान जाओ ख्वाज़ा

बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह पर आपने माँ के पेट से ही 15 पारे हिफ़्ज़ कर लिए थे उसके बावजूद आप एक क़ामिल मुर्शिद की तलाश में थे।और आपने फ़र्ज़ तो दूर की बात कभी नफ़्ल तक नही छोड़ा आप एक दिन में 95 रकत नफिल नमाज़ पढ़ते थे।

आप पर झूठा इल्ज़ाम का लगना और ख्वाजा ए हिन्द का दरबार मे आना

एक बार एक औरत बादशाह के दरबार मे आई और चींख चींख कर रोने लगी। बादशाह ने पूछा क्यों रो रही हो उस औरत ने बताया कि एक इंसान ने मेरे साथ गलत काम किया है जिसका बच्चा मेरे पेट मे पल रहा है और अब वो इस बच्चे को अपनाने से इंकार कर रहा है।बादशाह अल्तमश रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मेने सल्तनत शरीयत के तहत संभाली है शरीयत से हटकर कोई काम हो में कभी बर्दाश्त नही करूँगा। तुम मुझे उस आदमी का नाम बताओ उसकी गर्दन न उड़वा दूं तो कहना!उस औरत ने कहा तुम उसका कुछ नही कर सकते क्योंकि वो कोई और नहीँ बल्कि आपके पीरो मुर्शिद हज़रत ख्वाजा कुतबुद्दीन बख्तियार काकी

रहमतुल्लाह अलैह है(नउजबिल्लाह)।ये सुनकर बादशाह के पैर के नीचे से जमीन खिसक गई।बादशाह ने आसमान की और नज़रे उठाकर कहा या अल्लाह ये कैसा इम्तिहान है एक कुतुब पर ऐसा नाजेबा इल्ज़ाम अल्लाह अल्लाह।फिर आपको दरबार मे बुलाया गया जब आप लाठी के सहारे दरबार मे पहुंचे तो सब आपके अदब में अपनी अपनी कुर्सी से उठने लगे आपने फ़रमाया कि तुम सब बैठे रहो आज में पीर बनकर नही बल्कि मुजरिम बनकर आया हूँ।आपकी आंखों में आंसू थे मानो दिल्ली की हर गली रो रही थी आज दिल्ली का पीर वक़्त का क़ुतुब दिल्ली के दरबार मे अल्लाह अल्लाह इतना दुःख भरा मंजर आप की आंखों में आँसू भर आए उन आँसुओ को देखकर सुल्तान शमशुद्दीन अल्तमस तड़प गए।अज़ीज़ों जरा सोचो किसी मुरीद के सामने उसके पीर पर ऐसा इल्ज़ाम क्या मुरीद अपने को रोक पायेगा लेकिन क़ुर्बान जाओ सुल्तान अल्तमश रहमतुल्लाह अलैह की जात पर आपने अपने आप को सम्भाला।फिर ख्वाजा कुतबुद्दीन ने कहा रब जानता है में तुझे नही जानता हूँ,ये सुनकर औरत रोने लगी और फिर उसने इल्ज़ाम लगाया तब आपने कहा कि गवाह है तेरे

पास तो चार कलमा पढ़ने वाले खड़े हो गए कहा हां मेने इस औरत को जाते भी देखा है और आते भी।अज़ीज़ों जुमले पर ध्यान दो 4 कलमा पढ़ने वाले अल्लाह के वली के खिलाफ यानी कलमा पढ़कर कोई मोमिन नही होता इस वाकिये से ये बात भी जाहिर हो गई।

फिर आप ने फरमाया की बादशाह मुझे एक रात की मोहलत दे दे।ये सुनकर बादशाह रोने लगा उसने फरमाया बाबा में नोकर हूँ आपका।आप पैदल आए।आप पैदल गए!

दिल्ली के असल बादशाह ख्वाज़ा कुतबुद्दीन बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह ने अजमेर की तरफ मुंह किया और मदद के लिए आवाज़ दी क्योंकि उनका अक़ीदह था ख्वाज़ा ए हिन्द हयात है(ज़िंदा है)।

बेखबर हो जो गुलामो से वो आक़ा क्या है

आपने फ़रमाया ए मुर्शिद में कोई लावारिस तो नही हूँ,मेने सारी जिंदगी आपका ही नाम जंपा है।फिर आपको नींद आ गयी तो आपने ख्वाब में देखा कि ख्वाज़ा मोईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह ने कहा ए कुतबुद्दीन कल में आऊंगा मेरा इंतज़ार करना।

कल सुबह हुई आप दरबार गए कहा तीन दिन की मोहलत चाहिए अजमेर से ख्वाजा ग़रीब नवाज़ खुद आएंगे फिर तीन दिन बाद जब आप दुबारा पहुँचे तो अजमेर से सारा क़ाफ़िला आया लेकिन ख्वाजा गरीब नवाज नही आये मगरिब की अज़ान हुई तो आप नमाज़ पढ़ाने के लिए आगे आये आप रो रहे थे क्योंकि कल आखिरी वक्त था उसके बाद बादशाह मजबूरन कोई भी मोहलत नही दे सकता था उसके बाद जब आपने सलाम फेरा तो देखा कि ख्वाज़ा ए हिन्द की पीछे नमाज़ पढ़ रहे हैं और अभी उनकी दो रकत बाकी है ख्वाजा गरीब नवाज़ ने सलाम फेरा तो आप पर नज़र पड़ी आप दौड़ कर उनके सीने से लगकर रोने लगे।कहा ए मुर्शिद में शहज़ादा था आपने कहा था ख़ुश्क रोटी खाना मेने ख़ुश्क रोटी ही खाई है,आपने कहा था फाके करना तो मैने किये हैं आपने कहा था वतन छोड़ कर मत जाना में नही गया इतना सुनने के बाद ख्वाज़ा गरीब नवाज ने जलाली अंदाज़ में कहा ए क़ुतुब ये बता तुम ज्यादा इज्जत वाले हो या यूसुफ अलैहिस्सलाम, तुम ज्यादा पाक दामन वाले हो या माँ आयशा सिद्दीका रजिअल्लाहो तआला अन्हा ये कोई सूफ़िया का तरीका है रोने का।ये सुनकर कुतबुद्दीन

काकी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते है में अभी आपके सामने ही रोया हूँ मुर्शिद।कहा जाओ बादशाह से कह दो की सुबह फ़ज़र की नमाज़ के बाद में खुद आऊँगा।सुबह अदालत लगी तो ख्वाजा गरीब नवाज ने ख्वाज़ा कुतबुद्दीन बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह का हाथ पकड़ा।उन्होंने देखा कि एक मज़मा लगा है तो ख्वाज़ा गरीब नवाज भी रोने लगे आपने पूछा ए गरीब नवाज आप क़यो रोते हो तो गरीब नवाज ने फरमाया कि ये जो लोग आज इकट्ठा हुए है ये इतने बदबख्त है कि मेरे क़ुतुब की रुसवाई देखने आये हैं।ख्वाज़ा ए हिन्द ने क़ाज़ी से कहा कि आप तो जानते है क़ाज़ी ने कहा ख्वाज़ा साहब गवाह लाओ।फिर जब गवाह आये तो ख्वाज़ा गरीब नवाज ने कहा तुम हो मेरे क़ुतुब पर इल्ज़ाम लगाने वाले।जब कोई जवाब नही दिया तो बादशाह ने कहा बोलो नही तो सर कलम कर दिया जाएगा।फिर उन गवाहों ने कहा हां मैने उस औरत को तहज्जुद के वक़्त जाते और आते देखा।उसके बाद वो औरत आई आपने कहा चलो इस बच्चे से ही मालूम करते हैं कि इसका बाप कौन है ये कहकर ख्वाजा गरीब नवाज

सजदे में चले गए और अपने रब से फरमाने लगें कि मौला तेरा फरमान है कि मेरे नाना की उम्मत के उलेमा बनी इस्राइल के नबियो की तरह होंगे अगर हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के लिए बच्चा बोल सकता है तो मेरे क़ुतुब के लिए भी बोल सकता है

फिर वो उठे औए उस औरत के पास गए लड़के के चेहरे से कपड़ा खींचा और कहा ए बच्चा तू खुद बोल दे कि तेरा बाप कौन है--?दो महीना का बच्चा उठकर बैठ गया और कहा अस्सलामुअलैकुम या वलीउल्लाह जब ये लफ्ज़ अदा किए तो नारे लगने लगे औरत बेहोश हो गई।आपने फरमाया की मुझे सलाम न करो मेंरे क़ुतुब के बारे में बताओ।वो बच्चा बोलने लगा और कहा ये मजमे में जो फला सरदार बैठा है ये मेरा बाप है और ये क़ाज़ी भी इस साजिश का हिस्सा है।ये सुनना था कि आपने क़ुतुब का हाथ पकड़ा लेकर बाहर चले आये।इतने में बादशाह भी आपके पीछे पीछे आये और सब क़दमो में गिर गए आपने कहा में अपने क़ुतुब को अजमेर ले जा रहा हूँ बादशाह ने कहा हुज़ूर शरीयत की तामीर के लिए इन्हें यहां रहने दो फिर आपने कहा ठीक है जाओ क़ुतुब अब

क़यामत तक कोई भी तुम्हे रुसवा नही कर सकेगा।इसके बाद आप अजमेर चले गए।

महिफल ए शमा के शौकीन

अज़ीज़ों आपको बता दे सिलसिला ए चिश्त में महफिल-ए-शमा जायज है और महफ़िल-ए-शमा के ताल्लुक से लताएफे अशरफी, सना सनाबिल जैसे मोतबर किताबो में इसकी अज़मत बयान की गई है।ख्वाज़ा कुतबुद्दीन बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह को महफिल-ए-शमा का बहुत शौक था।14 रबिउल अव्वल(27 नवम्बर 1235 को आपने महफ़िल-ए-शमा में भाग लिया आप वज्द की हालत में थे और क़व्वाल नसीरुद्दीन ने जैसे ही पढा

कुश्तगान-ए कंजर-ए-तस्लीम रा

हर ज़मान अज्ज ग़ैब जान ए दिग्र अस्त

(For the victims of the sword of divine love:

There is a new life every moment from the unseen)

आप इस क़लाम को सुनकर वज्द में आ गए फिर चौथे दिन आप का बाजहिर इंतेक़ाल हो गया।आपकी दरगाह मेहरौली में है।आपके ताल्लुक से बहुत मशहूर किस्सा है जब क़व्वाल एक शेर पढ़ता आप की रूह परवाज कर जाती फिर जब क़व्वाल दूसरा शेर पढ़ता आपकी रूह वापिस आ जाती ये सिलसिला चार दिन तक चलता रहा।फिर आपने क़व्वाल को रुकने का इशारा किया और बजाहिर इस दुनिया को अलविदा कह दिया।

नमाज़ ए जनाजा

जब आपके मुरीद ने आपको ग़ुस्ल देकर जब आपका नमाज़ ए जनाजा पढ़ाने की बात आई तो आपकी वसीयत के मुताबिक वही इंसान आपकी नमाज़ ए जनाजा पढ़ायेगा जिसने कभी असर की सुन्नत नमाज़ नही छोड़ी।जिसने बे वजू कभी आसमान की तरफ न देखा हो,जिसने कोई हराम काम न किया हो जब ये वसीयत

सुनाई गई तो सब पीछे हट गए फिर जब तलाश हुई ऐसे कमाल वाले शख़्स की तो वो कोई और नही आपके ही मुरीद हज़रत सुल्तान शमसुद्दीन अल्तमश रहमतुल्लाह अलैह थे।आप रोने लगे क्योंकि आज एक राज़ से पर्दा उठ गया था।तो अज़ीज़ों ये है अल्लाह के वली जिनकी इबादतों और तक़वे परहेजगारी है के बल पर आज भी ये हमारे बीच ज़िंदा है और क़यामत तक जिंदा रहेंगे।

आपकी मज़ार सबसे हटकर

यूं तो अमूमन वलियों के आस्ताने जैसे होते है आपका आस्ताना उससे थोड़ा हटकर है आपका आस्तान समतल है।यानी काफी दूर तक फैला हुआ है तो इसके पीछे भी एक राज है अज़ीज़ों एक बार आपके ख़लीफ़ा बाबा फरीद गंज शकर अलैहिर्रहमा पाक पटन से आप के आस्ताने पर तशरीफ़ लाये और आपसे आपका आस्ताना बनाने की इजाजत मांगी।आपने इजाजत दे दी फिर आप मिट्टी डालने लगे मिट्टी डालते डालते मगरिब की अज़ान हो गई तब आपको पीछे से आवाज़ आई बस कर फरीद अब नमाज़ का वक़्त हो गया फिर आप मिट्टी को उसी हालत में छोड़कर नमाज़ पढ़ने चले गए उसके बाद से

आजतक आपका आस्ताना ऐसा ही है जहां से आज सारा हिंदुस्तान फेज़ पाता है और क़यामत तक पाता रहेगा जब भी सिलसिला ए चिश्त का ज़िक्र आएगा आपका नाम ज़हन में गर्दिश करने लगेगा।अल्लाह आपके सदके तुफैल हम सबको नेक सालेह मोमिन बनने की तौफ़ीक़ अता करे।

हज़रत ख़्वाज़ा निजामुद्दीन औलिया

विलादत, नाम,नसब

आपकी विलादत 1238 ईस्वी में हिंदुस्तान के राज्य उत्तर प्रदेश के मशहूर कस्बा बदायूं शरीफ में हुई।आपका असल नाम मुहम्मद था।आपके वालिद का नाम सैयद अहमद बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह था।वही आईने अक़बरी(दीने इलाही)में आपके वालिद का नाम अहमद दानियाल भी लिखा मिलता है आपक़ी वालिदा(माँ) का नाम सैयदा ज़ुलैख़ा था।

शजरा ए नसब

आप दुनिया के सबसे अज़ीम मर्तबे वाले खानदान यानी सादात खानदान के फ़रज़न्द थे।आप वालिद और वालिदा दोनों तरफ से हुसैनी सैयद हैं।आपके नाना सैयद अहमद अरब मुल्क और दादा सैयद अली बुखारा से हिजरत करके लाहौर आये फिर लाहौर से बदायूँ।आपके वालिद बदायूँ के क़ाज़ी(चीफ जस्टिस) थे।इसलिए घर की माली हैसियत ठीक ठाक थी।

आपका शजरा ए नसब

हज़रत ख़्वाज़ा निजामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत सैयद अहमद रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत सैयद अली रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत सैयद अब्दुल्लाह बुखारी रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत सैयद हुसैन बुखारी रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत सैयद अली बुखारी रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत सैयद अहमद बुखारी रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत सैयद अबी अब्दुल्लाह बुखारी रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत सैयद अली असगर बुखारी रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत सैयद जाफर बुखारी रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत सैयदना इमाम अली-अल-

नकी रजिअल्लाहू तआला अन्हु

हज़रत सैयदना इमाम अल तकी रजिअल्लाहू तआला अन्हु

हज़रत सैयदना इमाम अली मूसा रज़ा रजिअल्लाहू तआला अन्हु

हज़रत सैयदना इमाम मूसा काज़िम रजिअल्लाहू तआला अन्हु

हज़रत सैयदना इमाम जाफर सादिक रजिअल्लाहू तआला अन्हु

हज़रत सैयदना इमाम बाकर रजिअल्लाहू तआला अन्हु

हज़रत सैयदना इमाम जैनुल आब्दीन रजिअल्लाहू तआला अन्हु

हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रजिअल्लाहू तआला अन्हु

सैयदना मौलाए क़ायनात ताजदारे हल अता शेरे खुदा हज़रत अली क़रमल्लाहु वजहुल करीम

तो अज़ीजो इस तरह से हज़रत निजामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह उस गुलशन के चमन है जिनके बारे में आला हजरत अजीमुल बरकत ने कहा है कि

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का

तू है ऐन ए नूर तेरा सब घराना नूर का

(नोट--)अज़ीज़ों आजकल एक बहुत बड़ा फितना ये खड़ा हो गया कि अक्सर अवाम ये समझती है कि यहाँ पर नूर से मुराद सफेद रंग है बल्कि तारीख साहिद(गवाह है कि सादात काले भी होते है और साँवले भी तो इस तरह से यहां पर जो नूर है वो नूर ए बातिन है न कि रंग का गौरा होना।अगर रंग का गोरा होना ही सादातो की पहचान है तो कश्मीर, व दुबई, इंग्लैंड में ज्यादातर लोग गोरे हैं तो क्या वो सब सादात है नही बहरहाल आप सब यहां ये समझे की सैयद काले और साँवले रंग के भी हो सकते हैं।

आपका बचपन

आप जब 5 साल के हुए तो आपके वालिद सैयद अहमद बदायूंनी रहमतुल्लाह अलैह का इंतेक़ाल हो गया।फिर आपकी वालिदा ने आपकी परवरिश की।आपकी एक बहन भी थी आप बचपन ही से बेहद ज़हीन(बुद्धिमान) थे।

तालीम और इल्मी दबदबा

यूं तो अमूमन लोग ये समझते हैं कि वली अल्लाह के पास इल्म नहीं होता है बस तक़वा और परहेजगारी होती है अरे जाहिल इनके पास तो वो इल्म होता है कि जिसका हजारवा हिस्सा जाकर मौलवी को नसीब होता है इसलिए इनके जरिए किये गए काम हम अहले सुन्नत क़यामत तक याद करते रहेंगे क्योंकि तू जिस शरीयत का डर दिखाकर भोले भाले सूफिया पर फतवा कशी करता है इतना याद रख की सूफिया ने कोई नया तरीका अपने पास से नही ईजाद किया है बल्कि 1400 साल से आजतक हमे ख्वाज़ा ए हिन्द,ख्वाज़ा निजामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह,सरकार आला हजरत ने जो तरीक़ा दिया है वही तरीक़ा हम आज भी जारी व सारी रखे हुए हैं।क्या उनसे ज्यादा शरीयत तुझे पता है इसलिए

अज़ीज़ों किसी के बहकावे में न आये औलिया अल्लाह के दामन को मजबूती से पकड़े रहें और उनकी ज़िंदगी की तर्जुमानी बनकर खुद भी क़ामयाब रहो और राह से भटके हुए लोगो को भी कामयाब करो।

आप तालीम के लिए सबसे पहले मौलाना सादी रहमतुल्लाह अलैह जैसे वली के पास गए उस ज़माने में मौलाना सादी रहमतुल्लाह के बारे में एक करामत बहुत मशहूर थी कि जो भी आपके पास पहला पारा हिफ़्ज़ कर लेता था वो मरने से पहले हाफिज ए क़ुरआन जरूर बनता था ।जब आप मौलाना सादी रहमतुल्लाह अलैह के पास गए तो आपने पहला पारा पढा और हिफ़्ज़ किया और फिर फिर मुअर्रेखीन लिखते है कि उसके बाद आपने 20 साल तक कुछ नही पढा(मतलब क़ुरआन हिफ़्ज़ के ताल्लुक से) और दीगर तालीम हासिल की।आपने कदूरी शरीफ मौलाना अलाउद्दीन से पढ़ी उसके बाद मौलाना शमसुद्दीन से मकामाते हरीरी पढी और फिर आपने मेहनत करके 40 मक़ामात जुबानी याद कर लिए।बाद में आपने इतना पढ़ा की सारी किताबें आपको याद हो गई और आप मुनाजिर ए आज़म बन

गए।हर उलूम पर आपका क़ब्ज़ा था मानो मौला अली का इल्म आपको विरासत में मिल गया था।आपको क़ुरआन और हदीस का तर्जुमा आता था।आपने 16 साल तक पढ़ा।हर शू आपके इल्म का डंका बजने लगा।अल्लाह अल्लाह अज़ीज़ों गौर करो ये होते है अल्लाह वाले आज लोग ये समझते है उन्होंने तालीम नही हासिल किया अरे नादान 4 किताबे पढ़कर तू फतवा बाज़ी करने लगा जबकि उस वक़्त महबूबे इलाही को क़ुरआन का तर्जुमा/तफ़सीर और सारे उलूम आते थे।

पीरो मुर्शिद

आपने पहले भी पढ़ा है कि इल्म कितना भी हो जाये इंसान तबतक क़ामयाब नही हो सकता है जबतक उसे क़ामिल पीर नही मिल जाता इसी तरह आप भी इल्म का समंदर थे लेकिन आपको तलाश थी उस क़ामिल पीर की जो आपको हक़ से मिला दे।फिर आपकी मुलाकात बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह से हुई उन्होंने आपको अपना मुरीद बनाया।मुरीद बनने के बाद आपने 6 पारे बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह से पढ़े।आपने मारिफुल आरिफ जैसी तसव्वुफ़ की आला

किताबो में से एक है इसको पढ़ा ये किताब सिलसिला ए सोहरवर्दी के बानी शेख सहाबुद्दीन सोहरवर्दी रहमतुल्लाह अलैह ने लिखी थी।आपको क़ाज़ी बनने का बहुत शौक था।

बदायूँ से दिल्ली

जैसा कि मैने पहले ही ये लिखा है कि आप की पैदाइश उत्तर प्रदेश के शहर बदायूँ शरीफ़ मे हुई थी।

जब आप सब उलूम पढ़ चुके थे आपने बदायूं छोड़कर देहली(दिल्ली)जाने का फैसला किया।पहले आप खुद दिल्ली आए आपने कुछ दिन वहाँ रहकर दिल्ली का माहौल देखा फिर आप घर गए और वहां से आप आपकी वालिदा और एक बहन और उनके बेटो के साथ दिल्ली मुस्तक़िल रहने के लिए आए।आप सबसे पहले हज़रत अमीर ख़ुसरो रहमतुल्लाह अलैह के मकान में रुके उस वक़्त उनके मामू कहीं गए हुए थे फिर अचानक से वो वापिस आ गए अब मज़बूरन आप रहमतुल्लाह अलैह ने वहां से हिजरत की और शेख सदरुद्दीन के घर पर रुके फिर वहां से सादगुलाबी के घर पे कुछ दिन रुके उसके

बाद सराय रक़ाबदार में कुछ दिन क़याम रहा फिर आप शेख शमसुद्दीन के घर पर रुके इतनी जगह रहने के बाद आपने एक जगह क़याम किया।उस वक़्त आपकी उम्र 16 साल थी आप वहां जामा मस्जिद में इबादत करते फिर जो वक़्त मिलता उसमे थोडा काम करते जो मिलता लाकर वालिदा के सामने पेश कर देते इस तरह से आपके वो दिन बहुत मुश्किल से गुजरे है फिर भी आपके इल्म/इबादत में एक जर्रा भर भी फ़र्क़ नही आया।

आपके नाम मे औलिया क्यो-?

अज़ीज़ों आपने पहले भी पढ़ा है और मैने भी शुरू में आपका नाम ख्वाज़ा निजामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह लिखा है।आओ आज जानते हैँ कि आखिर आपके नाम के आगे औलिया क्यों लगता है--?

अहले इल्म और कवायद(ग्रामर)का जानने वाला शख्स जानता है कि वली से मुराद है एक वली के लेकिन औलिया से मुराद है एक से ज्यादा वली लेकिन आप तो अकेले है तो आपके नाम के आगे औलिया क्यों इसके

पीछे भी कई रिवायात है जिसमे ये रिवायत सबसे ज्यादा मशहूर है।

दरसअल इस उनवान(टॉपिक) पर अल्लामा मुख्तार शाह नईमी साहब फरमाते है कि आपका जो नाम है वो यूं है

"ख्वाज़ा निजामुद्दीन महबूबे औलिया रहमतुल्लाह अलैह"

यानी आपके नाम मे औलिया से पहले महबूब भी था जिसे आज साइलेंट गायब कर दिया है बस यही वजह से की आज तक आपको सिर्फ ख्वाज़ा निजामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह ही कहा जाने लगा।

(नोट--)ठीक इसी तरह बहुत ही ज्यादा मशहूर पीराने पीर पर भी उलेमा फरमाते है कि ये लफ्ज़ ठीक नही है बल्कि इस लफ्ज़ की जगह पर पीरे पीरां था लेकिन चूंकि वो नाम लेने में आसानी होती है बस इसीलिए ये नाम इस तरह से लिये जाते हैं खैर इससे कोई नुकसान नही है बस आपकी जानकारी के लिए लिखना जरूरी था)

महबूबे औलिया क्यों-?

आप को महबूबे औलिया कहा जाता है जिसका मतलब होता है (वलियों का महबूब) अब आपके मन मे ये सवाल आया होगा कि सिर्फ आपको ही क्यों महबूबे औलिया कहा जाता है तो आइए इसका भी राज जानते हैं।

जब आप जेरे तालीम थे तो आपके उस्ताद अलाउद्दीन साहब ने देखा कि आपने सदूरी शरीफ खत्म कर ली है तो उन्होंने आपकी दस्तार क़रने की बात कही आप घर गए अपनी वालिदा से इजाजत मांगी आपकी वालिदा ने इजाजत दे दी फिर आपकी दस्तार बंदी की रस्म शुरू हुई।उलेमा के साथ वली अल्लाह और सुफिया की जमात बैठी थी।जब आपके सर पर पगड़ी बांधी जाती जितनी बार आप घूमते उतनी बार जानबूझकर किसी न किसी वली के कदम पर गिर जाते तो बोसा ले लेते अल्लाह अल्लाह.आपकी ये अदा वलियों को बहुत पसन्द आयी उन्होंने आपको दुआएं दी।

वहीँ जब आपके पीरो मुर्शिद हज़रत बाबा फरीदगंज शकर रहमतुल्लाह अलैह ने आपको खिलाफत व इजाजत दी तो उस वक़्त वहां पर सारे औलिया अल्लाह

मौजूद थे।सबने अपनी मोहब्बत का इज़हार किया और फिर तभी से आपका लक़ब महबूबे इलाही हो गया।

अल्लाह अल्लाह ये मक़ाम है मेरे महबूबे इलाही का तारीख में आपका कोई सानी नही मिलता।उसके बाद ये सादगी की आप के सर पर जब दस्तार बांधी जाती तो आप उन औलिया अल्लाह के क़दमो में गिर जाते जिन्हें आज तारीख जानती तक नही है यानी तकब्बुर का नामो निशान आप के करीब नहीं था।जो वक़्त का मुनाजिर ए आज़म हो हर उलूम पर कब्ज़ा हो उसके बाद ये सादगी हो ।सिलसिला ए चिश्त आप पर नाज़ करता है।

सिलसिला ए चिश्त एक नज़र में

1-हज़रत अबू इस्हाक़ शामी रहमतुल्लाह अलैह

2-हजरत अबू अहमद अब्दल रहमतुल्लाह अलैह

3-हज़रत अबू मुहम्मद बिन अबी अहमद रहमतुल्लाह अलैह

4--हज़रत अबू यूसुफ बिन सामान रहमतुल्लाह अलैह

5--हज़रत ख्वाज़ा मौदूद चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह

6--ख्वाज़ा शरीफ़ ज़नदनी रहमतुल्लाह अलैह

7--ख्वाज़ा उस्मान हारूनी रहमतुल्लाह अलैह

8--ख्वाज़ा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती संजरी अजमेरी रहमतुल्लाह अलैह

9--ख्वाज़ा कुतबुद्दीन बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह

10--बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह

11--हज़रत ख्वाज़ा निजामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह

तो इस तरह से आप सिलसिला ए चिश्त के 11वें पेशवा है।

आपकी चन्द क़रामते

आम ज़हन बुजुर्गों के हालात में करामत जरूर तलाश करता है,अहले सुन्नत व जमाअत के अक़ाएद हैं कि तमाम किताबो में निहायत साफ शफ्फ़ाक ये इबारत जरूर मिलती है कि "क़रामातुल औलियाए हक़" यानी औलियाए क़राम की करामत हक़ है।और ये तमाम अहले सुन्नत व जमाअत का अक़ीदह है कि महबूबाने खुदा से ऐसी चीजें सादिर(ज़ाहिर)हुई है और होती रहती हैं जो समझ से बाहर है।मसलन मुर्दो को ज़िंदा कर देना,पैदाइशी अंधे को रोशनी दे देना और कोढी के कोढ़ को दूर कर देना,कम खाने में काफी लोगो को आसूदा(भर पेट)कर देना।बांझ का साहिबे औलाद हो जाना।ज़मीन पर चलने की तरह दरिया पर चलना,हवा में परवाज करना वगेरह.

हज़रात सहाब-ए-अखियार,ताबेईन अबरार,उलमाए रब्बानीन,औलियाए सलेहीन से जो क़रामते ज़ाहिर हुई है ये सब हुज़ूर रसूले दो जहां सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम के मोजिज़ात मुबारका के ही फुयूज़-व-बरकात है।

दीनार और दरहम के हौज़

महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में एक बार एक शख्स मुलाकात की गरज से हाजिर हुआ उसके हाथ मे पैसे की एक थैली थी आप उस वक़्त वजू फ़रमा रहे थे जब आप वजू कर चुके तो वो शख्स आप के पास आया और कहा हुज़ूर ये कुछ पैसे है में इसे आपके मदरसे में बतौर हदिया(डोनेशन)देना चाहता हूँ आप ने उस शख्स की थैली से सिर्फ एक पैसा ले लिया और कहा हमारे लिए इतना ही काफी है बाकी पैसा तुम अपने घर मे ले जाकर अच्छे कामो में लगाओ।जब आपने उसकी थैली उसे वापिस कर दी तो उस शख्स ने ग़ुरूर भरे लहजे में कहा सरकार पूरा पैसा ले लीजिये वैसे भी हम मालदारों की बदौलत ही आप लोगो का मदरसा चलता है इतना सुनना था कि ख्वाज़ा निजामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह को जलाल आया आपने कहा नादान जब तू अल्लाह की नाफरमानी करता है,ना शुक्री करता है तब तेरे पास इतनी दौलत है तो सोच यहां मदरसे और ख़ानक़ाह में तो हर वक़्त अल्लाह का ज़िक्र होता है हमारे

पास कितनी दौलत होगी।ये कहने के बाद आपने उससे कहा इस हौज़ की तरफ देख जब उस शख्स ने हौज़ की तरफ देखा तो बेहोश हो गया।उसके होश में आने के बाद लोगो ने पूछा हौज़ की तरफ देखने के बाद क्यों बेहोश हो गया उस शख्स ने जवाब दिया कि जब मैने हौज़ की तरफ देखा तो मुझे पूरा हौज़ पानी की जगह दीनारों और दरहम से भरा हुआ दिखाई पड़ा।

नदी में रास्ता बन गया

एक दिन सख्त बारिश हो रही थी तभी हज़रत ख्वाज़ा निजामुद्दीन औलिया रहमततुल्लाह ने अपने एक मुरीद को बुलाया और कहा जमुना नदी के उस पार एक क़ुतुब आराम फरमा हैं तुम जाओ और खीर खिलाकर वापिस चले आना। मुरीद ने कहा कि हज़रत बीच मे तो नदी है और कोई दूसरा रास्ता भी नज़दीक में नही है तो में कैसे जाऊंगा।आपने फ़रमाया जब जमुना के किनारे जाना तो कह देना कि में उसके पास से आया हूँ जो कभी बीवी के पास नही गया ये सुनकर मुरीद का दिमाग पलट गया उन्होंने सोचा की हज़रत की तो शादी भी हो गई और औलाद भी है लेकिन मुरीद ने एहतराम की वजह से

आपसे कुछ न पूछा।जब वो नदी के किनारे पहुँचा तो वही बात कही जो महबूबे इलाही ने कही थी।मुरीद ने जैसे ही कहा उसके बीच से रास्ता बन गया फिर वो मुरीद रास्ते से नदी के उस पार गए और क़ुतुब क़ो खीर खिलाई।फिर जब खीर खिलाकर वो मुरीद वापिस लौट रहा था तो क़ुतुब ने कहा जाओ जमुना से कह देना की में उस के पास आया हूँ जिस ने कभी कुछ भी नही खाया है।ये सुनकर मुरीद का दिमाग चकरा गया क्योंकि उसने अपने हाथ से उन क़ुतुब को खीर खिलाई थी।बहरहाल उसने जमुना से वही बात कही जो क़ुतुब ने कही थी उसके बाद वो महबूबे इलाही के पास आ गया।लेकिन उसके दिमाग मे ये चल रहा था एक दिन मौका पाकर उसने महबूबे इलाही से पूछ ही लिया कि सरकार ये क्या माज़रा था आप कह रहे थे कि में उसके पास से आ रहा हूँ जो आजतक अपनी बीवी के पास नही गया और उन क़ुतुब ने भी कहा कि कह देना में उस के पास से आ रहा हूँ जिसने आजतक कुछ नही खाया।ये सुनकर महबूबे इलाही ने मुस्कुरा कर जवाब दिया कि हम लोग नफ़्स के लिए कुछ भी नही करते है जो भी करते है रब की रज़ा के

लिए है उसके लिए खाते है और उसी के लिए बीवी से मिलते है।अल्लाह अल्लाह ये शान है अल्लाह वालो की।

(मलफूजाते ईमान)

एक आशिक धोबी

हज़रत निजामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह एक जुमला अक्सर कहा करते थे कि हमसे तो बेहतर धोबी का बेटा निकला और फिर आप वज्द में ज़मीन में गिर जाते।एक दिन आपके मुरीदों ने पूछा हज़रत ये क्या मामला है आपने फ़रमाया एक मियां बीवी जो धोबी थे महल में आते थे कपड़े धुलते थे उनका एक बेटा था जो माँ-बाप के कामों में हाथ बंटाता था।वो शहज़ादी के कपड़े धोते धोते उसके इश्क़ ने मुब्तिला हो गया वो शहज़ादी के कपड़े अलग रखता उन्हें धोता और उन्हें अच्छी तरह से रखता।उधर उसके वालिद ने जब ये माजरा नोटिस किया तो कहा कि ये लड़का शहज़ादी के इश्क़ में पड़ गया है और पूरे खानदान को मरवाएगा।इसके बाद उसके बाप ने उसे नोकरी से हटा दिया।जिसके गम में वो लड़का बीमार रहने लगा और एक दिन इंतेक़ाल कर गया।एक दिन शहज़ादी ने कहा

कि मेरे कपड़े कौन धोता है तो उसकी मां ने कहा ने धोती हूँ फिर उसने कहा पहले कौन धोता था तो ये सुनकर उस आशिक लड़के की मां रोने लगी और पूरा वाकिया सुनाया।ये सुनने के बाद शहज़ादी ने तुरतं सवारी मंगाई और क़ब्र पर गई और फूल डाले फिर उसके बाद वो हर बरसी पर जाने लगीं ये बताने के बाद महबूबे इलाही फरमाते है कि जब एक धोबी का बच्चा बगैर देखे एक इंसान से सच्ची मोहब्बत कर सकता है तो हम इंसान उस अल्लाह से क्यों नही।आप फरमाते जब वो शहज़ादी कपड़ो के तहाने से अंदाज़ा लगा लेती है कि इसे किसने तहाए हैं तो ज़रा सोचो क्या मेरा वो रब दिल से पढी गई नमाज़ और जबरदस्ती पढी गई नमाज़ की पहचान नही कर सकता ये कहकर फिर आप गश्त खाकर जमीन पर गिर गए।

झूठा पान

एक बार एक शख्स हज़रत निजामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह के लिए खाना लाया और उसने रास्ते मे अपने मन मे सोचा कि अगर हज़रत अपने हाथ से मेरे मुंह मे एक लुकमा रख दे मेरी बड़ी खुशनसीबी

होगी।फिर आपके पास आया तो आपने खाना खाया जब आप खाने से फारिग हुए तो वो शख्स वही बैठा रहा आप पान खा रहे थे आपने पान निकाल कर उसके मुंह मे डाल दिया और फ़रमाया की ये झूठा पान उस निवाले से बेहतर था इतना सुनते ही वो शख्स आपके क़दमो में गिर गया उसने कहा हज़रत में आपके हाथ से एक निवाला खाना चाहता था ये बात तो सिर्फ मेने सोची थी आप मुस्कुरा दिए आपने फ़रमाया अल्लाह की रज़ा के लिए जो भी अपने नफ़्स को कुचल देता है वो ये सब बातिनी बातें जानने की क़ुव्वत रखता है ।

बादशाह अलाउद्दीन खिलजी की तड़प

दिल्ली का मशहूर बादशाह अलाउद्दीन खिलजी आपसे बहुत मोहब्बत करता था और आपकी जियारत करना चाहता लेकिन अज़ीज़ों अल्लाह वालो का ये मामूल रहा है कि वो ये सब दिखा वा बिल्कुल पसंद नही करते थे।एक बार अलाउद्दीन खिलजी आस्ताने के बाहर पहुंचा तो अंदर जाने की इजाज़त माँगी लेकिन आपने इजाजत नही दी।

फिर बादशाह अलाउद्दीन खिलजी ने आपको एक खत भेजा कि हुज़ूर ये क्या मेरे यहाँ भी सिपाही है और आपके यहाँ भी सिपाही है तो आख़िर एक बादशाह और फ़क़ीर में फर्क क्या रह गया।आपने उसी खत के दूसरी तरफ उसको जवाब दिया कि हाँ ये सच है कि बादशाहो के यहां भी सिपाही रहते है और फकीरों के यहाँ भी लेकिन बादशाहो के यहां सिपाही इसलिए रखे जाते है कि कोई गरीब अंदर न आने पाए यहां सिपाही इसलिए रखे जाते है कि कोई बादशाह अंदर न आने पाए।

खत पढ़कर वो शर्मिंदा हुए।फिर उसने कहा हुज़ूर कम से कम खानकाह की जियारत(दर्शन)कर लेने दीजिये तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने कहा जाओ इसे ख़ानक़ाह दिखा दो।इसके बाद बादशाह ख़ानक़ाह में घूमता घूमता अस्तबल पहुंचा तो उसने देखा वहाँ के घोड़े सोने/चांदी की जंजीरों बंधे थे ये देखकर फिर उसे शरारत सूझी।उसने कहा हुज़ूर ये किया बादशाहो के यहाँ भी सोने/चांदी और फकीरों के यहां भी सोने/चांदी तो फिर फर्क़ क्या है-?सवाल देखकर महबूबे इलाही मुस्कुराए और जवाब में आपने लिखा सुन अलाउद्दीन बादशाहो के

यहां पर सोने/चांदी को छुपा के रखा जाता है और फकीरों के यहां पर हमारे घोड़ो के पैरों के नीचे रौंदे जाते है यानी हम ये पैगाम देना चाहते है कि सोने चांदी की हकीकत सिर्फ इतनी है है कि उसे जानवर अपने पैरों के नीचे रौंदे ये जवाब पढ़कर बादशाह अलाउद्दीन खिलजी शर्मिंदा हुआ और वहां से चला गया।

(हदीस--एक बार नबी क़रीम अपने कुछ जानिसार सहाबा के साथ तशरीफ़ ले जा रह थे रास्ते ने कूड़े का ढेर आया जहां पर एक बकरी का मरा हुआ बच्चा मिला आपने कहा तुमसे इसे कौन खरीदेगा-?सहाबा ने कहा या रसूलल्लाह ये बकरी का बच्चा मरा हुआ है इसे कोई भला क्यों खरीदेगा।आपने जवाब दिया मेरे सहाबा इसी तरह ये दुनिया अल्लाह के यहाँ ज़िल्लत वाली है।)

फ़ज़र की नमाज़ काबा शरीफ में

अज़ीज़ों ये शरफ़ भी हज़रत ख्वाज़ा निजामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह को नसीब है।आपके ताल्लुक से अक्सर ये मशहूर है कि आप फजर क़ी नमाज़ खान ए काबा में ही अदा करते थे।एक बार हज़रत शेख

नजमुद्दीन असबहानी रहमतुल्लाह अलैह उस वक़्त मक्का में इमाम थे।आपसे खादिमो ने पूछा कि दौरे वक़्त के वली ए क़ामिल हज़रत निजामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह कभी काबा शरीफ़ की जियारत के लिए क्यो नही आते है। ये सुनकर वहां के इमाम हज़रत शेख नजमुद्दीन असबहानी रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया की मेने उन्हें कई बार यहां जमात के साथ नमाज़ पढ़ते देखा है।

दिल्ली अभी दूर है

आपका तज़किरा हो और ये जुमला अगर ज़हन ने न आये तो शायद ये अधूरा रहता।दरसअल उस वक़्त सुल्तान गयासुद्दीन तुग़लक़ आपसे दिली दुश्मनी रखता था एक दिन वो बंगाल गया हुआ था उसने अपने मंत्रियों और सिपाहियों से कहा कि दिल्ली पहुंचते वक़्त महबूबे इलाही को दिल्ली से निकाल दूंगा ये कहकर वो दिल्ली के लिए रवाना हुआ ये खबर जब महबूबे इलाही के पास आई तो आपने फ़रमाया की "दिल्ली अभी दूर है" उधर जब सुल्तान गयासुद्दीन तुग़लक़ दिल्ली से 5 किलोमीटर पहले एक जगह है तुग़लकाबाद वहां पहुँचा तो उसने सोचा

लाओ आज रात यही आराम करता हूँ कल महबूबे आलिया को यही तलब करता हूँ इतना सोचकर वो सो गया।रात में बहुत तेज़ तूफान आया और उसका तम्बू उखड़ कर उसी के ऊपर गिर गया जिसमें दबकर वो मारा गया।

तोहफ़े में कैची दी

एक बार किसी ने आपको तोहफे में केंची दी आपने क़बूल कर लिया।और क़बूल करके तोहफा देने वाले से कहने लगे और इसकी जगह हमे सुई लाकर दो।क्योंकि हम सूफी है और ये कैंची है कैंची का काम काटना होता है जबकि सुई का काम जोड़ना होता है लिहाजा हमे सुई लाकर दो क्योंकि हम ख्वाज़ा वाले है आपने फ़रमाया की हम सब मुस्तफा वाले है और तब से आजतक हमारा काम मोहब्बत ही रहा है जोड़ने का ही रहा है ये सुनकर वो तोहफे देने वाला शर्मिंदा हुआ उसने क़दमो में गिरकर माफी तलब की।

शान ए अली मुर्तज़ा

मौला अली मुर्तज़ा की शान बयान करना आज लोगो के गले के नीचे से नही उतर रहा है।प्यारे तसव्वुफ़ के बानी

ही अली है सूफिया के बिलवास्ता बाप है मौला अली।एक बात बता दूं प्यारे अली अली का ज़िक्र खुलकर किया करो ये शियो का तरीका नही बल्कि महबूबे इलाही निजामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह का तरीका है।आप के दरवाजे पर ये शेर लिखा है

पस खुर्द ए सगाने दर ए दो रिजते मन

हाशा अगर निगाह कुनम सूए अग्निया

"या अली अगर तेरी गली के कुत्ते का बचा हुआ हुआ खाना नसीब हो जाये तो निजामुद्दीन खुशनसीब होगा"

अल्लाह अल्लाह ये कोई आम सूफी या शिया या आम इंसान नही कह रहा है बल्कि ये उसके जुमले है जो वक़्त का मुनाजिर ए आज़म जो दस्तगीर ए दो जहां है,जो सुल्तानुल मशायख है जो दिल्ली का क़ुतुब हो जो सिलसिला ए चिश्त का एक अज़ीम पेशवा है

एक बार एक बद अक़ीदह शख्स आपके पास आया और कहा महबूबे इलाही तुम्हारे पास क्या सबूत है कि मौला अली काबा में पैदा हुए ये सवाल सुनकर आपको जलाल आ गया।

आपने फ़रमाया सुन जाहिल अगर मेरा बाबा अली काबा में नही पैदा हुए है तो तू मुझे वो जगह बता दे जहाँ पर मेरे बाबा अली अलैहिस्सलाम की विलादत हुई हो आज से वही दर निजामुद्दीन के लिए काबा होगा!

माशाल्लाह ये होते है अल्लाह वाले जिनके सामने अगर मौला अली की जरा सी भी गुस्ताखी होती है तो उन्हें बर्दाश्त नही होता।अज़ीज़ों इस कौल से पहचानो कि मौला अली अलैहिस्सलाम की शान क्या है आज के मौलवी के हलक से मौलाए आलमीन की शान हलक से नीचे नही उतर रही है वो सहाबी-ए-रसूल के मर्तबे को चिल्लाकर चिल्लाकर मौला अली के बुग्ज़ में हज़रत अबू बकर सिद्दीक राजिअल्लाहो तआला अन्हू की शान बयान करते है अरे पागल मौला की शान क्या है हम सूफ़िया बहतर जानते है हर सूफी हज़रते सिद्दीक ए अकबर

राजिअल्लाहो अन्हू को सालार ए सहाबा मानता है हम उन्हें सहाबा का सरदार मानते है ये अहले सुन्नत का तरीका रहा है लेकिन शान सबकी अलग अलग है।हा आज जरूरत है हम जब भी मौलाए आलमीन की शान बयान करे तो ये ख्याल रखे कि नबी क़रीम के किसी भी सहाबा की अदना सी भी तौहीन न होने पाए।हर सहाबा का मक़ाम हर वली से अफ़ज़ल है।

आप के मुरीद ख़लीफ़ा

आपके खुल्फा ने हिंदुस्तान के हर कोने में सिलसिला ए चिश्त को फैलाया।जिनमे ख्वाज़ा नसीरुद्दीन चराग देहलवी रहमतुल्लाह अलैह,और हज़रत अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह,हज़रत शेख अखी सिराज रहमतुल्लाह अलैह बंगाल ,शेख बुरहानुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह बहुत ही मशहूर हुए हैं।आपने बाजहिर दुनिया ए फानी को 03 अप्रैल 1325 में अलविदा कहा।

महबूबे इलाही एक नज़र में

1--बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह कहा करते थे कि मुरीद और बेटा शेख निजामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह की तरह होना चाहिए।

2--आप इल्म का समंदर थे उसके बावजूद आप उलेमाओं/सूफियों की बहुत ताज़ीम करते थे।

3--आपने कभी भी अपने इल्म/नसब/तसव्वुफ़ पर कभी जर्रा भर तकब्बुर(घमण्ड) नही किया।

4--आप फ़ज़र की नमाज़ अदा करने मक्का मुअज़्ज़मा तशरीफ़ ले जाते और जोहर की नमाज़ अपनी ख़ानक़ाह में पढ़ते थे।

5--आप बादशाहो से बहुत दूर रहते थे,आपके तसव्वुफ़ का अंदाज़ा लगा पाना आम इंसान के बस की बात नही है,हज़ारो क़रामते आपके बजाहिर दुनिया को अलविदा कहने के बाद आपके आस्ताने से जाहिर हुई है।

6--एक बद अक़ीदह मर्द के पेट मे बच्चा हुआ था ये करामत आपकी बाजहिर ज़िंदगी के कई सालों बाद हुई हे।

7-आपको महबूबे इलाही/सुल्तानुल मशायख/दस्तगीर ए दो जहाँ/जग उजियार/कुतुब ए देहली भी कहा जाता है।

तो अज़ीज़ों ये है अल्लाह के महबूब वली अल्लाह अल्लाह जब इनकी ये शान है तो जरा सोचो मौलाए आलमीन अमीरुल मोमिनीन ताजदारे हल अता शेरे खुदा शौहर ए फ़ातिमा दामाद ए मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम यानी मौला अली अलैहिस्सलाम की शान मुबारक क्या होगी इसी मद्देनजर एक शेर मेरे ज़हन में गर्दिश कर रहा है

बगैर हुब्बे मुद्दआ नही मिलता
इबादतो का भी हरगिज़ सिला नही मिलता
खुदा के बंदों सुनो गौर से खुदा की कसम
जिन्हें अली नही मिलते खुदा नही मिलता

तो ये है महबूबे इलाही जिनका फेज़ ता क़यामत तक जारी रहेगा।मौला आपके सदके हम सबके गुनाहों को मिटाकर नेक सालेह बनाए।आपकी शान में अगर जाने अनजाने में कोई गलती या चूक हुई हो तो मौला माफ फरमाए।

ख्वाजा सैयद नसीरुद्दीन महमूद रोशन चराग़ देहलवी अलैहिर्रहमा

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 1274 ईस्वी को उत्तर प्रदेश के जिला अयोध्या(अवध) में हुई थी उन दिनों इसे अवध के नाम से भी जाना जाता था।

नाम

आपका असल नाम नसीरुद्दीन था।

नसब

नसब के एतबार से अक्सर मोअल्लिफ आपका शजरा ए नसब ख़लीफ़ा ए दोम हज़रत उमर फारूक ए आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हू से मिलाते हैं और कई मोअल्लिफ आपको हसनी सादात कहते हैं। इस जुमरे में तहक़ीक़ के बाद ये वाजेह हुआ है कि आप मौला इमाम

हसन रजिअल्लाहू अन्हु की औलाद में से हैं।यानी आप को हसनी सैयद कहा जाता है।आप वालिदा की तऱफ से भी सादात घराने के चश्मो चराग़ हैं।

खानदान की आमद

आपके दादा शेख यहया अब्दुल लतीफ अलैहिर्रहमा खुरासान से ईरान होते हुए लाहौर आये और यही रहने लगे चूंकि आपके खानदान का पेशा ऊनि कपड़ा बेचना था एक

बार इस कारोबार में काफी नुकसान हुआ लोगो ने आपके वालिद से सलाह दी कि दिल्ली चले जाएं वहां का सुल्तान बहुत ही दयालु है वो जरूर कुछ मदद करेगा उसके बाद आपका सारा खानदान दिल्ली आ गया कुछ दिन दिल्ली में रहने के बाद आपका खानदान दिल्ली छोड़कर अवध(अयोध्या) चला आया और यही रहने लगा यही पर आप की पैदाइश हुई है।

ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया की बारगाह में हाजिरी

जब आपकी उम्र 9 साल हुई तो आपके वालिद का इंतेक़ाल हो गया।उसके बाद तालीम के लिए आप अब्दुल करीम शेरवानी और इफ्तिखारुददीन जीलानी साहब के पास गए जब आपकी उम्र 14 साल हुई तो आप ख्वाजा

निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह के दरबार मे पहुँचे और रूहानी तालीम हासिल करने लगे उन दिनों महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह की खानकाह का एक मामूल था कि जो भी मुरीद अक़ीदत के साथ रूहानी तालीम की तरफ तवज़्ज़ो देता था उस पर महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह की नज़र होती थी जब वो तसव्वुफ़ के हर मरहले में पास हो जाता तो उसे आप ख़िलाफ़त अता करते थे आप भी दिन रात मुजाहिदा करते रहते आप को देखकर महबूबे इलाही बहुत खुश होते थे एक दिन आपने अपने पीर भाई तूती ए हिन्द हज़रत अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह से कहा कि ए खुसरो जाओ और मुर्शिद से इजाजत ले आओ की नसीरूद्दीन जंगलो में जाकर अल्लाह की इबादत करना चाहता हे शाम को अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह जब महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह ए आली में हाजिर हुए तो फ़रमाया की हुज़ूर आपके मुरीद नसीरुद्दीन जंगलो में रहना चाहते हैं और यादे इलाही में खो जाना चाहते हैं आपने फ़रमाया की सुनो खुसरो उनसे कह दो दिल्ली छोड़कर कहीं न जाये उनको यही रहना है और मुश्किलात का सामना करना है उसके बाद से आपने कभी भी जंगलो की तरफ जाने को

सोचा भी नही और मुर्शिद के हुक्म के मुताबिक आप हमेशा दिल्ली में ही रहै।

मुर्शिद से मोहब्बत

एक बार लाहौर से एक आलिम साहब खानकाह में तशरीफ़ लाये तो वो बहुत ही कीमती झुब्बा पहने हुए थे फजर के वक़्त उन्होंने वज़ू करने के लिए झुब्बा उतारा इतने देर में कोई शख्श उनका झुब्बा उठा ले गया जब वो वज़ू से फारिग हुए तो झुब्बे को ना पाकर शोर शराबा करने लगे उनका शोर शराबा सुनकर आप उनके पास आए और शोर करने की वजह जानी जब उन्होंने सारा माजरा बताया तो आपने फ़रमाया मेरे मुर्शिद नमाज़ अदा कर रहे हैं तुम ऊंची आवाज में शोर न करो ये लो मेरा झुब्बा ले लो लेकिन खुदा के वास्ते मेरे मुर्शिद की इबादत में खलल मत डालो आपकी ये अक़ीदत व आजिज़ी देख ख्वाजा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह हुजरे के बाहर खड़े मुस्कुरा रहे थे।

चराग़ क्यों--?

आपके नाम मे रोशन चराग़ क्यों लिखा रहता है इसके पीछे कई रिवायतें हैं जिसमे कुछ रिवायतें जो एकदम सटीक बैठती है वो ये हैं।

1--कहते है कि एक बार बादशाह मोहम्मद फ़िरोज़ तुगलक ने खानकाह पर तेल की पाबंदी लगा दी यानी खानकाह के काम मे तेल ले जाना बंद कर दिया गया था और ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह का उर्स मुबारक भी चल रहा था रात का वक़्त हुआ मुरीदों/अकीदतमन्दो ने चराग़ जलाने की ख्वाहिश की आपने कहा जाओ कुंआ से पानी निकालो लोगो ने पानी निकाला आपने उसी पानी को चराग़ में डाल दिया कुछ ही देर में सारे चराग़ जलने लगे आपकी इसी करामत के बाद से आपका नाम रोशन चराग़ पड़ गया

2--दूसरी रिवायत में है कि एक बार आप ख्वाज़ा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह के पास खड़े थे सामने एक महमान भी बैठे थे आपके मुर्शिद ने कहा नसीरुद्दीन बैठ जाओ तो आपने जवाब दिया कि हुज़ूर अगर में बैठ जाऊंगा तो आपके मेहमान की तरफ मेरा पुश्त हो जाएगा जिससे आपके महमान की शान में गुस्ताखी होगी और में नही चाहता हूँ कि मेरे मुर्शिद के महमान की गुस्ताखी मुझ से हो ये सुनकर वो बहुत खुश हुए और फ़रमाया तुम बैठ जाओ नसीर चराग़ हर सिम्त से

उजाला ही देता है उसके बाद से भी आपको सब चराग़ कहते थे।

ख़लीफ़ा-ए-अव्वल

ख्वाजा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह अपने वक़्त के बुजुर्ग वली ए क़ामिल थे और ऐसे वली ए क़ामिल थे कि जिनका सानी तारीख़ में आज तक नही मिलता है। ख्वाजा निजामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह अक्सर कहा करते थे की में चाहता था कि अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह मेरे ख़लीफ़ा ए अव्वल बने लेकिन नसीर अपनी किस्मत पे जितना नाज़ करे उतना कम है क्योंकि अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म है कि मेरा ख़लीफ़ा ए अव्वल कोई और नही बल्कि ख्वाजा नसीरुद्दीन महमूद रोशन चराग़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह को बनाया जाये इस लिहाज़ से आपकी शान व अज़मत निराली है आपकी शान बयान करना मामूली बात नही है।

बादशाह मोहम्मद तुगलक ओर उसका जुल्म

बादशाह मोहम्मद तुगलक ने आप पर बहुत ज़ुल्म किये और आपने उसके हर ज़ुल्मो सितम को बर्दाश्त भी किया क्योंकि आपके पीरो मुर्शिद ने पहले ही इरशाद फ़रमा

दिया था कि नसीरुद्दीन तुम दिल्ली में ही रहना और तकलीफ बर्दाश्त करना सब्र का दामन कभी न छोड़ना।

अज़ीज़ों अब हमें ये देखना है कि आखिर बादशाह तुग़लक़ आपको परेशान किस तरह करता था। दरसअल वो बहुत ही शातिर दिमाग था उसने कभी आपको सामने से कुछ भी गलत नही कहा यानी दिखावे में उसने कभी आपक़ी तौहीन नही की। उसके दरबार मे और भी उलेमा रहते थे जो आप से जलते थे उसने उन्ही उलेमा का सहारा लेकर आपको नीचा दिखाने की बहुत कोशिश की लेकिन आप के साथ अल्लाह और उसके रसूल का करम था जो आपको कुछ न हुआ एक बार आप दरबार मे हाज़िर थे और भी उलेमा हज़रात थे बादशाह ने खादिमो से कहा दस्तरख्वान बिछाओ आज बुजुर्ग नसीरुदीन महमूद रोशन चराग़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह भी हमारे साथ खाना खाएंगे।इसके बाद बादशाह ने अपने शैतानी दिमाग का इस्तेमाल करते हुए कहा कि यहां पर ये हमारे महमान है और दरवेश है लिहाजा इन्हें चांदी के प्लेट में खाना दो ये सुनकर सारे उलेमा बहुत खुश हो गए क्योंकि वो जानते थे की चांदी के बर्तन में खाना खाना शरह के खिलाफ है और जैसे ही आज ये खाना खाएंगे हम इनके खिलाफ फतवा

निकाल देंगे और बादशाह भी यही चाहता था कि आप किसी तरह खाना खा ले आप ने मना भी नही किया और उस प्लेट में सालन ले लिया और रोटी रख ली लेकिन जब खाने लगे तो सालन अपनी हथेली पर डाल लेते और उसी में भिगोकर खाते इस तरह से आपने किसी तरह खाना खाया और वहां मौजूद लोग शर्मसार हो गए उसके बाद आप चलने लगे तो बादशाह का वज़ीर आपके क़दमो में गिर गया और कहने लगा बाबा मुझे माफ़ कर दें में बादशाह के आगे मजबूर था आपने उसे उठाया और कहा नही जनाब हम तो अल्लाह वाले हैं हम छोटी छोटी बातों पर किसी से नाराज़ नही होते हैं ये देखकर बादशाह वज़ीर के ऊपर बहुत खफा हुआ इसी तरह से शातिर दिमाग का इस्तेमाल करते हुए उसने आप रहमतुल्लाह अलैह को बहुत ही ज़्यादा परेशान किया है जिसका जिक्र आपने खुद किया है ख्वाजा नसीरुद्दीन चराग देहलवी रहमतुल्लाह अलैह खुद फरमाते है कि उस वक़्त केलूला भी बड़ी मुश्किल से मयस्सर होता था आपने अपनी ज़िंदगी का हर एक लम्हा बहुत ही मुसीबत से गुजारा है लेकिन कभी भी सब्र का साथ नही छोड़ा।

आपके खुल्फा

आपके खुल्फा की फेहरिस्त बहुत लंबी है एक से बढ़कर एक शख्सियत आपकी खुल्फा में है।जिनमे सबसे बड़ा नाम सैय्यदना सरकार बन्दानवाज़ गेसूदराज़ रहमतुल्लाह अलैह का है।

1--हज़रत ख्वाजा सरकार बन्दानवाज़ गेसुदराज़ रहमतुल्लाह अलैह

(गुलबर्गा शरीफ़)

2--हज़रत ख्वाजा अल्लामा सैयद कमालुद्दीन अलैहिर्रहमा

(दिल्ली)

3--हज़रत शेख दानियाल अलैहिर्रहमा

(सतरिख -बाराबंकी)

4--हज़रत शेख सदरुद्दीन तबीब अलैहिर्रहमा

(दिल्ली)

5--हज़रत ख्वाजा सिराजुद्दीन अलैहिर्रहमा

(फिरन पटन--गुजरात)

6--हज़रत शेख अब्दुल मुक़तदिर अलैहिर्रहमा

(महरौली,दिल्ली)

7--हज़रत शेख मौलाना ख़्वाजगी अलैहिर्रहमा

(काल्पी शरीफ, बुंदेलखंड)

8--हज़रत शेख अहमद थानेसरी अलैहिर्रहमा

(काल्पी)

9--हज़रत शेख मुतवक़्क़ल किंतूरी अलैहिर्रहमा

(बहराईच)

10--हज़रत क़ाज़ी शेख कयामुद्दीन अलैहिर्रहमा

(लखनऊ)

11--हज़रत कुतब ए आलम अलैहिर्रहमा

(जूनागढ़)

12--हज़रत शेख जैनुद्दीन अली अलैहिर्रहमा

(दिल्ली)

13--हज़रत शेख मसऊद अलैहिर्रहमा

(लाडो सराय,दिल्ली)

14--हज़रत मीर सैयद जला**लु**द्दीन जहानीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह

(ऊँच शरीफ पाकिस्तान)

15--हज़रत शेख सुलेमान अलैहिर्रहमा

(रूदौली--अयोध्या)

16--हज़रत सैयद मोहम्मद बिन जाफ़र मक्की अलैहिर्रहमा

(सरहिन्द)

17--हज़रत सैयद अलाउद्दीन अलैहिर्रहमा

(संडीला--हरदोई)

विसाल का वक़्त और आपकी दरियादिली

आप अपने हुजरे में बैठे अल्लाह रब्बुल इज्ज़त की इबादत में मशगूल थे इतने में एक दुश्मन फ़क़ीर के हुलिए में अंदर चला गया और आपके जिस्म में चाकू से कई वार किए उस वक़्त आप आलमे इस्तेग्राक में थे जब आपके जिस्म ए अक़दस से खून निकलने लगा और बहकर बाहर पहुंचा तो

बाहर पहरेदारी कर रहे आपके खादिम अंदर गए और उस मलऊन को पकड़ लिया शोर शराबा सुनकर आप आलमे इस्तेग्राक से बाहर आये तो देखा कि आपके जिस्म से खून निकल रहा है आपने अपने खादिमो से कहा खबरदार कोई भी इसे हाथ नही लगाएगा उसके बाद आपने एक खादिम से कहा जाओ अस्तबल **से** इसके लिए बढ़िया नस्ल का घोड़ा लाकर दो और दुश्मन से कहा तुम यहाँ से भाग जाओ वरना मेरे विसाल के बाद ये तुम्हे जान से मार देंगे अल्लाह अल्लाह इतनी दरियादिली ये सब्र जिसपे औलिया भी क़ुरबान यही वजह है कि आपका मक़ाम बड़ा ही आला व बरतर है। उसके बाद आपने 14 सितम्बर 1356 ईस्वी में इस दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया

लेकिन आपका नाम ताक़यामत तक रोशन चराग़ की तरह जगमगाता रहेगा।

एक नज़र

1---आप की मुकम्मल हालात ए ज़िन्दगी तारीख़ ए फरिश्ता में मिलती है।

2--आपके मुर्शिद ख्वाजा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह हैं।

3--आपके खलीफा में सबसे मशहूर सैयदना सरकार ख्वाजा बन्दानवाज़ गेसुदराज़ रहमतुल्लाह अलैह हैं।

4--आप को कई मोतबर सूफिया और उलेमा ने **फारूक़ी** भी लिखा है।

5--सिलसिला ए चिश्तिया से तालुल्क रखने के बाद भी आप महफिले शमा नही सुनते थे बल्कि महफिले शमा से दूर रहते थे।

6--आप महबूबे इलाही के पहले ख़लीफ़ा हैं।

7--आप की पैदाइश अयोध्या में हुई है।

8--आपके एक ख़लीफ़ा अयोध्या जिले के रूदौली शरीफ में भी है।

9--आप की शान व अज़मत बहुत ही बुलन्द व बाला है।

10--आपका पूरा नाम ख्वाजा नसीरुद्दीन महमूद रोशन चराग़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह है।

आप की शान व अज़मत बुलंद बाला है आप की बड़ी बहन जिनका नाम हज़रत सैयदा बीबी कताना उर्फ हज़रत बड़ी बुआ साहिबा रहमतुल्लाह अलैहा है।जो कि अपने वक़्त की राबिया-ए-जमन और विलायत-ए-शहर अयोध्या

थीं।आपका मज़ार मुबारक अयोध्या (गोरिस्तान)में है।यहाँ साल में 2 बार उर्स लगता है।आपका तज़किरा जिन मोतबर किताबो में मिलता है उनका ज़िक्र करना भी ज़रूरी है-

1--खेरूल मजालिस--मलफूजात ख़्वाजा मख्दूम नसीरुद्दीन

2--सियरुल आरफीन--हज़रत हामिद बिन फ़ज़्लुल्लाह

3--मिरातुल असरार--शेख अब्दुर्रहमान चिश्ती

4--अखबारूल अख़्यार--मुहद्दिस अब्दुल हक़ देहलवी

5--मजलिसे-ए-हसनिया--शेख मुहम्मद चिश्ती

6--तारीख़ ए फ़िरोज़शाही--शम्स ए सिराज अफीफ

7--खजीनतुल अस्फिया--हज़रत गुलाम सरवर

8--खानदानी बयाज़--रिज़वानुल्लाह वाहिदी,बलिया

जिसमे से बलिया सिकन्दरपुर से जनाब सैयद रिज़वानुल्लाह शाह वाहिदी साहब हज़रत ख्वाजा अल्लामा सैयद कमालुद्दीन अलैहिर्रहमा की औलाद में से हैं और मेरे करीबी अज़ीज़म है मौला उनको सलामत रखे उनके इल्म व उम्र में बरकते अता फ़रमाए।

हज़रत अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह

विलादत/नाम

आपकी विलादत उत्तर प्रदेश के एटा जिले के पटियाली नाम के एक गाँव मे 1253 ईस्वी में हुई थी।उन दिनों पटियाली गाँव क़ो मोमिनाबाद के नाम से जाना जाता था।आपका पूरा नाम अबुल हसन यमीनुद्दीन अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह था।

आप लाचन जाति के थे आपके वालिद चंगेज खां के ज़ुल्मो सितम के बीच सुल्तान बलबन के राज में हिंदुस्तान आ गए।आपके तीन भाई थे।

आपका बचपन और तालीम

आपके वालिद सैफ़ुद्दीन अहमद दिल्ली के बादशाह के यहां नोकरी करते थे आप के वालिद साहब को अमीर का लक़ब मिला जिसका मतलब उस वक़्त में बहुत शान

वाला समझा जाता था।जब आप 6 साल के हुए तो आप के वालिद दिल्ली आ गए।दिल्ली में आपके नाना भी बादशाह के यहां बड़े ओहदे(पद) पर थे।आपका सारा परिवार नाना के यहां ही रुका।उसी वक़्त आपके नाना के यहां वक़्त के क़ामिल बुजुर्ग मुर्शिद हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह रहते थे आपने अपने नाना की अक़ीदत देखकर उसी वक़्त आपने हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह के हाथ पर बैत ली जिस वक़्त आप मुरीद हुए उस वक़्त आपकी उम्र 7 साल थी आपके साथ आपके दोनो भाई और वालिद साहब भी उसी वक़्त मुरीद हुए थे।आपके नाना बादशाह के यहां बड़े ओहदे पर थे जिसकी मदद से आपके बड़े भाई को भी बादशाह के यहां नोकरी मिल गई।उसी वक़्त आपके वालिद का इंतेक़ाल हो गया।उसके बाद आपकी परवरिश आपके नाना ने की।आप 10 साल अपने नाना के साथ रहे वो वक़्त आपकी तरबियत और मोहब्बत का था जिसमे आपको नाना की सोहबत का बड़ा फायदा हुआ क्योंकि नाना को हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया जैसे क़ामिल वली अल्लाह की सोहबत मिली थी।फिर जब

आपके नाना का इंतेक़ाल हुआ तो उनकी उम्र 113 साल और आपकी उम्र 18 साल थी।

बादशाहो के दरबार में आपकी आमद

जब आपके नाना का इंतेक़ाल हुआ तो आप सुल्तान बलबन के भतीजे सजूक खां के साथ रहने लगे एक दिन सजूक खां ने कहा ए अमीर खुसरो आज कुछ सुनाओ तो आपने फ़ोरन चन्द अशआर लिखे और उन्हें सुनाया उसे सुनकर वो बहुत खुश हुआ और आपकी बहुत तवज़्ज़ो खातिर में लाने लगा।आपने अपनी पहली शायरी का मजमूआ बनाम तोहफ़्तुस सिग्र लिखी जिससे 1 साल के अंदर आपकी शोहरत हर तरफ फैलने लगी।तभी सुल्तान बलबन का दूसरा बेटा बुगरा खान जब सजूक खां के पास आया तो उसका जोरदार स्वागत किया गया क्योंकि वो वली अहद था फिर शाम को जब महफ़िल लगी तो सुल्तान बलबन के बेटे ने कहा कि क्या आपके यहाँ कोई ऐसा नही जो कुछ सुनाए ताकि हमारा दिल लगे ये सुनकर सजूक खां ने आपको कहा कि आओ और कुछ पेश करो आपने जब पढ़ना शुरू किया तो बलबन का बेटा भौचक्का रह गया वो आपसे बहुत ही ज्यादा

मुतास्सिर हुआ और जब सुबह हुई तो आपको अपने साथ ले जाने की बात सजूक खां से कर ली और वो सुल्तान बलबन का बेटा था तो किसी की हिम्मत भी न हुई उसे रोकने की ।इस तरह से अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह अब सुल्तान बलबन के बेटे के साथ गए फिर कुछ दिन बाद वो बंगाल का हाकिम बन गया तो आप फिर दिल्ली अपनी मां के पास चले आए।

बलबन का सबसे बड़ा बेटा

जब आप दिल्ली चले आए उसके कुछ दिन बाद सुल्तान बलबन का सबसे बड़ा बेटा शहज़ादा मलिक खान हिंदुस्तान आया जब उसे आपके बारे में पता चला तो उसने आपको बुलवाया और बड़ी क़दर की वो आपकी बड़ी इज्जत करता था फिर उसको मुल्तान की हाकमी मिल गयी और वो आपको अपने साथ ले जाना चाहता था इधर आप भी मुल्तान जाना चाहते थे क्योंकि उन दिनों मुल्तान बहुत ही मशहूर इलाक़ा था जहां पर बड़े बड़े उलेमाओं/सूफिया/शोअरा जैसी हस्ती रहती थी यही वजह है आपको मुल्तान जाने का बहुत शौक था फिर आप उसके साथ मुल्तान गए और कुछ दिनों बाद आपने

दूसरा मजमूआ वस्तुल हयात लिख डाला।आप मुल्तान के बड़े बड़े उलेमा के साथ रहे और 4 साल रहने के बाद जब मंगोलो ने मुल्तान पर हमला किया तो हाकिम शहज़ादा मलिक खान मारा गया उसके बाद आप फिर दिल्ली आ गए।इसी मुल्तान में आपने अपना बहुत ही मशहूर कलाम

"मनकुन्तु मौला फ़ा अलियून मौला"

लिखा जो बहुत ही मशहूर हुआ।

सुल्तान कहक़बात

जब आप मुल्तान से दिल्ली आए तो अपनी मां के पास रहने लगे ।अपने को एक कमरे में बंद कर लिया और कई महीनों तक आप सिर्फ और सिर्फ लिखते रहते फिर एक दिन मां ने दरवाजा खटखटाया तो पता चला सुल्तान कहक़बात का बुलाया आया है जब आप उसके दराबर पहुँचे तो उसने बा अदब कहा आप बड़े बड़े बादशाहो के साथ रहे ये बताओ जब बादशाह खुश होता है तो कितना देता है।

आपने फ़रमाया एक थाली अशर्फियो से भरी हुई।उसने कहा उससे ज्यादा आपने फ़रमाया दो थाली अशर्फियो और सोने चांदी से भरी हुईं।उसने कहा और जब सबसे ज्यादा खुश हो जाता है तो कितना देता है तो आपने जवाब दिया कि हाथी के वजन के बराबर तोल कर सोना देता है।जवाब सुनकर कहक़बात खुश हो गया और कहा हाँ आप मेरे बारे में लिखो आपको हाथी के बराबर वजन का सोना/चांदी दिया जाएगा।आपने उसकी शान में लिखा लेकिन आपने इनाम लेने से इनकार कर दिया।

सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी

सुल्तान जलालुद्दीन चौथा बादशाह था और वो खुद एक शायर था इसलिए शायरों की बहुत इज़्ज़त करता था।उसने आपको बुलवाया और आपसे कलाम सुना फिर सुनकर बहुत खुश हुआ और आपको "अमीर" का ओहदा दे दिया।और कहा तुम आज से हमारे ही साथ रहोगे और रोज़ शाम को एक शायरी लिखोगें।आप सात साल इसके साथ रहे और रोज़ एक शायरी इसकी शान में लिखते रहे तभी आपने मसनवी मिफ्ताहुल फतूह,और गुररतुल कवाल जैसी मोतबर किताबें लिखी।

सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी

सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने ही सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी का क़त्ल किया था।उसके बाद खुद बादशाह बना।सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी पहली मोहर्रम को सुल्तान बना।अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली में 21 साल हुकूमत की इसके दौर में अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह ने सबसे ज्यादा लिखा इसी दौर में आपने खजीनतूल फतूह,मतवउल अनवार जिसमे 310 अशआर है आपने 15 दिन में लिखा और मसनवी आईने सिकंदरी 4 जिल्दों में लिखी जिसमे 4500 अशआर थे उसके बाद मसनवी हश्त बहिश्त लिखी।

सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारक

कुतबुद्दीन मुबारक आपके सामने गद्दी पर बेठने वाला छटवां सुल्तान बना।आप उसके भी साथ रहे उसकी मुल्क की खिदमात पर भी आपने किताबें लिखी हैं वो कहता था कि आप तारीख पर कुछ लिखो उसपर आपने हिंदुस्तान की भाषा,बोलचाल,पहनावा,मौसम,सब पर लिख डाला।इसी दौर में आपने दो मशहूर किताब तुग़लक नामा और एजाज ए खुसरवी लिखी है।

आपका इल्मी दबदबा

आप 8 साल से ही शेर लिखने लगे आपने मसनवी मिफ्ताहुल फतूह,गुररतुल कवाल,मतवउल अनवार,मसनवी आईने सिकन्दरी,मसनवी हश्त बहिश्त,तुगलक नामा,एजाज ए खुसरवी, वस्तुल हयात बखीया नखीया,किस्सा ए चार दरवेश,खिद्र खां कुल मिलाकर 99 मोतबर किताबे लिखी।अल्लाह अल्लाह आपके इल्मी दबदबा का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उस वक़्त हर तबके के लोग आपकी शायरी गुनगुनाते रहते थे।

फ़ादर ऑफ उर्दू

यूं तो हम सब उर्दू जुबान को अदब की जुबान कहते है लेकिन क्या हम जानते हैं कि उर्दू जुबान के बानी(संस्थापक/आविष्कारक/निर्माता)हज़रत अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह ही हैं।एक बार आपके पास कुछ ताजिर(व्यापारी)आये उन्होंने अर्ज़ किया कि एक ऐसी जुबान बना दीजिये की जिसके इस्तेमाल से हर जगह काम चल जाए फिर आपने अरबी,फारसी,हिंदी,तमिल,संस्कृति जैसी जुबानों को

मिलाकर एक जुबान बनाई जिसे आजकल उर्दू कहा जाता है।

क़व्वाली के जनक

उर्दू के साथ साथ आप क़व्वाली के भी जनक माने जाते हैं। आपसे पहले सिर्फ महिफल ए शमा होती थी लेकिन आपने क़व्वाली की रीति को शुरू किया और खुद अशआर भी लिखे।आपकी हमेशा ख्वाहिश थी कि दरबार छोड़कर अपने पीरो मुर्शिद के पास चला जाऊं लेकिन आपके पीरो मुर्शिद ने ही आपको कहा था कि अभी तुम वही रहो।

शान ए अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह

आपकी शान बयान करने के लिए बस इतना ही काफी है कि आप ख्वाजा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह के सबसे महबूब मुरीद व ख़लीफ़ा थे।

महफिले शमा

ख़ानक़ाह से आपको बहुत अक़ीदत थी।जब भी आप अपने पीरो मुर्शिद के दरबार मे जाते तो उस शाम क़व्वाली होती और आप हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह के दाएं तरफ बैठते और बाएं तरफ ख्वाज़ा मुबस्सिर रहमतुल्लाह अलैह बैठते थे।जब क़व्वाली पढ़ी जाती तो सबसे पहले अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह का कलाम पढ़ा जाता आपकी इसी खूबी की वजह से आपको महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह मिफ्ताहुस शमा कहते थे।

(अज़ीज़ों यहाँ पर गौर करो कि आप क़व्वाली के कितने शौकीन थे अगर क़व्वाली महफ़िले शमा शरीयत के खिलाफ होती तो क्या महबूबे इलाही से ज्यादा शरीयत आजका कोई आलिम जानता है क्या हजरत अमीर खुसरो से बड़ा कोई शायर आलिम/आशिक आज मिल सकता है तो ये उन लोगो के लिए एक सबक है और मिसाल भी की देखो तुम हमारी शमा पर तो रोक लगाते हो लेकिन हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह और अमीर ख़ुसरो रहमतुल्लाह अलैह

तो ये बता रहे है कि ये शरीयत से हटकर नही बल्कि सूफिया का एक खास तरीक़ा रहा है)

बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत अलाउद्दीन अली अहमद साबिर क़लियरी रहमतुल्लाह अलैह से मुलाकात

अहले तसव्वुफ़ जानते हैं कि हज़रत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कलियरी रहमतुल्लाह अलैह का मक़ाम व शान क्या है।एक बार सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने आपको बू अली क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह के दरबार मे नज़राना लेकर भेजा तो जाते वक्त आपके पीरो मुर्शिद हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह ने आपको नसीहत की सुनो जब उनके दरबार में जाना तो सर झुका कर खड़े रहना कुछ बोलना मत नज़रे भी न उठाना फिर जब आप पहुँचे तो हज़रत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह ने कहा कुछ सुनाओ आपका बहुत नाम सुना है।ये सुनकर आपने उनको कलाम सुनाये जिसे सुनकर वो बहुत खुश हुए और आपको दुआएं दी इसके बाद फिर उन्होंने आपको

अपना कलाम सुनाया जिसे सुनकर आप रोने लगे आपक़ी आँखों मे आँसू देखकर सैयदना बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह ने पूछा खुसरो कुछ समझ गए इसलिए रो रहे हो या कुछ समझ नही पाए हो इसलिए रो रहे हो।आप ने अदब के दायरे को महफूज़ रखते हुए फ़रमाया हुज़ूर कुछ भी नही समझा हूँ आप समझा दें तो समझ जाऊंगा। फिर वही कलाम आपने सैयदना साबिर कलियरी रहमतुल्लाह अलैह को सुनाये जिसे सुनकर वो बहुत खुश हुए और उन्होंने भी आपको दुआएं दी।

मुर्शिद ने मुरीद के हाथ चूमे

ये शरफ़ भी आपको हासिल है।जब आपने हज़रत सैयदना अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कलियरी रहमतुल्लाह अलैह से मुलाकात की उसके बाद जब आप दिल्ली पीरो मुर्शिद के पास गए तो कहा मुर्शिद ने कहा खुसरो तुमने इन हाथो से मेरे पीर भाई मेरे यार को छुआ है तो आपने अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह के हाथ चूमे,फिर आपने आंखे चूमी।अल्लाह अल्लाह पीर जो खुद क़ामिल ए वक़्त था अज़ीज़ों यहाँ इस वाकिये से भी

हज़रत अमीर खुसरो रहमतुल्लाह की शान का पता चल जाता है।

आपका तसव्वुफ़

यूं तो अमूमन ज्यादातर लोग आपको या तो कवि समझते है या शायर लेकिन आप मोतबर आलिम बुजुर्ग वली-ए-कामिल थे।

इबादत

आप एक इबादत गुजार शायर थे आपकी तहज्जुद की नमाज़ कभी क़ज़ा नही हुई।एक बार हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह ने आपसे पूछा कि सुबह आपकी मसरूफियत क्या है--? आपने जवाब दिया हुज़ूर तहज्जुद के बाद 7 पारे रोज़ पढ़ता हूँ अब तो ये हालात है कि आंखों से आंसू निकल आते तो अज़ीज़ों देखा आपने ये होते है अल्लाह वाले आप बादशाहो के दरबार मे रहकर भी तसव्वुफ़ के अज़ीम मरहले पर फ़ायज थे।आपके तसव्वुफ़ का पता आपके इस शेर से पूरी दुनिया को चलता है कि

नमी दानम च मंज़िल बूद शब जाए कि मन बूदम
ब हर सू रक्स बिस्मिल बूद शब जाए कि मन बूदम
परी पैकर निगारे सरो कदे लाला रुख़सारे
सरापा आफते दिल बूद शब जाए कि मन बूदम
खुदा खुद मीर मजलिस बूद अंदर ला मकाँ ख़ुसरो
मोहम्मद शमा ए महफ़िल बूद शब जाए की मन बूदम

मुर्शिद क़ी नज़र मे

अगर वक़्त का क़ामिल मुर्शिद अपने मुरीद की तारीफ करे तो वाकई मुरीद कमाल का ही होगा

1--हज़रत ख्वाज़ा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मेरा दिल चाहता है कि में और तुम

एक ही क़ब्र में लेटे लेकिन शरीयत इजाजत नही देती लेकिन तुम्हारी क़ब्र मेरे करीब ही होगी।और जो मेरे पास आएगा उसे पहले तुमसे मिलना होगा।

2--एक दिन आपने कहा अगर कोई मेरे सिर पर आरा रख दे और कहे कि तुम अमीर खुसरो को छोड़ दो वरना हम तुम्हे चीर देंगे तो में कहूँगा आरा ले जाओ मुझे चीर दो क्योंकि खुसरो के बगैर जीने से अच्छा है कि मैं चीर दिया जाऊँ

3--आप फरमाते है कि जब में जन्नत जाऊंगा तो आपको ले जाऊंगा वरना न में जाऊँगा न तुम।

4--एक दिन आपने फ़रमाया की बाज औक़ात अपने वजूद से तंग आ जाता हूँ लेकिन ए अमीर खुसरो में तेरे वजूद से कभी तंग नही होता

5--इशा की नमाज़ के बाद आप बालखाने पर चले जाते वही चारपाई बिछाकर तस्बीह पढ़ते फिर किसी की हिम्मत नही पड़ती की आपसे कलाम(बात) कर ले सिवाय अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह के आपके आने के बाद वो आपसे कलाम करते।

हर कौम रास्त राहै दीन व किबला गाहे

मन क़ीबला रास्त करदम व समत कचाई

एक बार अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह कही गए हुए थे जब आप वापिस आये तो सुना कि मेरे पीर का इंतेक़ाल हो गया।आते ही आपने अपने चेहरे को क़ब्रे अनवर पर मुंह से रगड़ा और कपड़े फाड़ लिए इसी सदमे में आपका आपका विसाल(बजाहिर) जुमा के दिन 13 सव्वाल 1325 ईस्वी को हुआ आपका आस्तानां आपके मुर्शिद के पास ही है क्योंकि ये आपके पीरो मुर्शिद का ही हुक्म और वसीयत थी।

एक शायर की बदतमीज़ी

एक शायर जिसका नाम उबेद था वो आपसे हसद(ईर्ष्या) रखता था अक्सर लोगो से कहता था कि ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह मेरा कलाम क्यों नही सुनते है पहले वो आपको रास्ते में चलते हुए ताने मारता फिर धीरे-धीरे ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह में ही आने-जाने लगा आपने सोचा शायद आगे चलकर बदल जाये इसीलिए आप भी उस पर तवज़्ज़ो नही देते थे।लेकिन उसकी शरारते बढ़ती गए एक दिन उसने हद पार कर दी एक दफा एक काफ़िर ख्वाजा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में आया तो आपने कलमा पढ़ाया उसके बाद उसको दो मिस्वाक आपने दिए।फिर जब वो शख्स उबेद के पास आकर बैठा तो उसने कहा कि एक से मुंह से साफ करना और दूसरे से गंदगी(माजअल्लाह) ये सुनने के बाद वो शख्स ऐसा ही करता रहा फिर एक दिन वो आया और महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह से अर्ज़ की कहा हुज़ूर आपने जो दूसरी मिस्वाक से गंदगी साफ करने को कहा था अब बहुत ज्यादा तकलीफ हो रही है ये सुनकर आपको जलाल आ गया और कहा तुझसे ये करने के किये किसने

कहा था उसने उबैद की तरफ इशारा करके उसका नाम बताया।ये सुनना था कि महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह ने कहा उबैद तू लकड़ी से खेलता हुआ मरेगा।उसके बाद बादशाह ने उबैद को गिरफ्तार करवाया और पेड़ में उल्टा लटका कर उसे जान से मारा गया और उसकी लाश वही टँगी रही जब वो पूरी तरह से सड़ गई तो उसे कूड़े में डलवाया गया।

कलाम में मिठास

एक दिन आपने अपने पीर की तारिफ में कुछ मनकबत पढ़ी तो हज़रत निजामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह ने खुश होकर फ़रमाया खुसरो मांगो क्या मांगते हो--?आपने कहा मेरे कलाम में मिठास आ जाये तो फिर उसके बाद उनकी तवज़्ज़ो ने आपके कलाम में असर पैदा फ़रमा दिया।हर कोई आपके शेर गुनगुनाता रहता।मंदिर/ख़ानक़ाह/किसान/ताजिर/औरत/बूढ़े/बच्चे /बादशाह/फ़क़ीर हर कोई आपके शेर गुनगुनाता रहता था।

चन्द मशहूर अशआर

1— ख़ाही आमद

ख़बरम रसीदा इमशब,के निगार ख़ाही आमद
सर-ए-मन फ़िदा-ए-राही के सवार ख़ाही आमद
हमा आहवान-ए-सेहरा, र-ए-खुद निहादा बर कर्फ़
बा उम्मीद आँ के रोज़ी,बा शिकार ख़ाही आमद
काशिशी के इश्क़ दारद,नागुजारदात बादीनशा
बा जनाजा गर न आई,बमज़ार ख़ाही आमद

2-जिहाल-ए मिस्की

जिहाल-ए-मिस्की मकुन तगाफुल,दुराये नैना बनाये बतियाँ

कि ताब-ए-हिजरा नदारम ऐे जान,न लेहो काहे लगाए छतियाँ

शबां-ए-हिजराँ दरज चूं जुल्फ वा रोज़-वस्लत चो उम्र कोताह

सखि पिया को जो मैं न देखूं तो कैसे काटूँ, अँधेरी रतियाँ

यकायक अज़ दिल,दो चश्म-ए-जादू बस सद फरेबम बाबुर्द तस्की

किसे पड़ी है जो जा सुनावे,पियारे पी को हमारी बतियाँ

चो शम्मा सोजान,चो जर्रा हैरान हमेशा गिरयान,बे इश्क़ आं मेह

न नींद नैना,ना अंग चैना,ना आप आवें,न भेजें पतियाँ

बहक्क-ए-रोज़े,विसाल-ए-दिलबर की दाद मारा गरीब खुसरो

सपेट मन के,वराये राखूँ जो जाये पाँव पिया के खटिया

3--दोहा

गोरी सोये सेज पर, मुख पर डाले केश

चल खुसरू घर अपने, रैन भई चहुँ देश

खुसरो दरिया प्रेम का,सो उल्टी वा की धार

जो उबरा सो डूबा गया जो डूबा हुआ पार

सेज वो सूनी देख के रोवूं में दिन रैन

पिया पिया में करत हूँ पहरों,पल भर सुख ना चैन

रैन चढ़ी रसूल की सो रंग मौला के हाथ

जिसके ऊपर रंग दिए सो धन धन वाके भाग

खुसरो बाजी प्रेम की खेलू पी के संग

जीत गई तो पिया मोरे हारी पी के संग

चकवा चकवी दो जने इन मत मारो कोय

ये मारे करतार के रैन बिछोया होय

खुसरो ऐसी प्रीत कर जैसे हिन्दू जोय

पूत पराए कारने जल जल कोयला होय

उज्ज्वल बरन अधीन तन एक चित्त दो ध्यान

देखत में तो साधु है पर निपट पाप की खान

श्याम सेत गोरी लिए जनमत भई अनीत

एक पल में फिर जात है जोगी करके मीत

पँखा होकर में डुली साती तेरा चाव

मुझ जलती का जनम गयो तेरे लेखन भाव

नदी किनारे में खड़ी सो पानी झिलमिल होय

पी गोरी में साँवरी अब किस विधु मिलना होय

रैन बिना जग दुखी और दुखी चन्द्र बिन रैन

तुम बिन साजन में दुखी और दुखी दरस बिन नैन

तो ये आपकी कुछ मशूहर शायरी थी आप एक आला दर्जे के शायर थे वली ए क़ामिल थे।बहतरीन मुसन्निफ़

और उम्दा मुहक़्क़िक़ भी थे।आप को तूती ए हिन्द और उस्तादुस शोअरा भी कहा जाता है।आपका नाम ता क़यामत तक लिया जाएगा अहले तसव्वुफ़ के नज़दीक आपका मक़ाम बहुत आला है सूफिया की जमात आपको क़व्वाली के दलाएल में अपना पेशवा और इमाम मानती है आपके जरिये किये गए हर काम शरीयत के हिसाब से थे।शरीयत से हटकर आपने कोई भी काम नही किया है आप मुत्तक़ी/इबादतगुजार/फरमाबरदार/परहेजगार भी थे आप का फैज़ान हम सबको मिलता रहे आपके सदके तुफैल अल्लाह हम सब गुनहगारो के गुनाहों को मिटाकर नेक सालेह मोमिन बनने की तौफ़ीक़ दे।

शेख़ उस्मान अखी सिराजुद्दीन आईने हिन्द अलैहिर्रहमा

विलादत,नाम

आपकी विलादत 1258 ईस्वी में मुल्क हिंदुस्तान के सूबा लखनोती में हुई।आप ख्वाज़ा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व खलीफ़ा हैं।आपको आईने हिन्द का लक़ब आरिफ ए बिल्लाह मुर्शिद ए क़ामिल ख्वाजा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह ने दिया है इसीलिए आपके नाम मे आईने हिन्द जरूर लगता है।

तालीम

आपने तालीम हासिल करने की गरज से बंगाल से दिल्ली का सफर किया।उन दिनों दिल्ली में महबूबे इलाही की रूहानियत व मारफत का डंका बज रहा था आप तालीम

की गरज से उन्ही के पास गए जहां उन्होंने आपको अपनी खानकाह में रख लिया और आप की तरबियत शुरु हूई।आप मुर्शिद की मोहब्बत और खिदमत में इतना डूब गए कि आप ज़ाहिरी तालीम नही हासिल कर सके फिर महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा हज़रत ख्वाजा शेख़ फखरुद्दीन जुर्रादी अलैहिर्रहमा ने आपको 6 माह में इल्मे दीन सिखाकर आलिम बनाने का वायदा किया और मुर्शिद की निगाहें करम से आपने 6 महीने में ही सारा इल्म हासिल कर लिया।उसके बाद आपने उस्ताद मौलाना रुकनुद्दीन साहब और तूती ए हिन्द हजरत अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह से भी सीखा कुछ दिनो में ही आप एक बहतरीन आलिमे दीन भी बन गए उधर तसव्वुफ़ पर आपका असर बचपन ही से था महबूबे इलाही ने जब आपका इम्तिहान लिया और आप उसमे खरे उतरे तो आपको सिलसिला चिश्तियां की खिलाफत व इज़ाज़त अता कर दी और आपकी रूहानियत और इल्म से मुतासिर होकर आपको आईने हिन्द का लक़ब दिया आज भी आपके चाहने वाले इसी लक़ब से ही आपको याद करते हैं।

(यहाँ इम्तिहान का मतलब उन दिनों महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह अपनी ख़ानक़ाह में जितने भी मुरीद को तालीम देते उन्हें हर मुआमलात में शरीयत और तरीक़त के रास्ते पर चलते हुए देखना चाहते थे जब आपकी ख़ानक़ाह में रहकर मुरीद आजिज़ी/इन्किसारी/इबादत/रियाज़त/मोहब्बत/शफकत/सब्र/मुआमलात में माहिर हो जाता तभी आप उसे ख़िलाफ़त अता करते वरना आप मुरीदों को किसी तरह ढील नही देते थे।

लखनोती वापसी

पीरो-मुर्शिद से ख़िलाफ़त अता होने के बाद आप अपनी वालिदा के पास अपने गाँव लखनोती चले आये उधर आप के मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह ने दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया उसके बाद फिर दिल्ली गए वहाँ अपने पीर भाइयो के साथ रहने लगे 4 साल के बाद 1329 ईस्वी में जब सुल्तान फ़िरोज़ शाह तुगलक ने अपनी राजधानी दिल्ली से दौलताबाद कर ली थी तभी आप दिल्ली से हमेशा के

लिए अपने गांव वापिस लौट आये।जहाँ आपने एक ख़ानक़ाह बनाई और लँगरखाना आम कर दिया जहाँ पर गरीबो को खाना खिलाया जाता था इसके अलावा आपने कुछ कीमती और अनमोल किताबें भी अपने पास रखी और धीरे धीरे पूरी लाइब्रेरी तैयार कर ली अब अक्सर उलेमा और सूफिया आते और किताब का मुताला करते थे।

पांडवा का सफर

कुछ दिनो बाद आपने पांडवा का सफर किया जहाँ आपकी मुलाकात हज़रत मख्दूम अलाउल हक़ पाण्डवी रहमतुल्लाह अलैह से मुलाकात हुई जो आपकी रूहानियत और तक़वे परहेजगारी से मुतासिर होकर आपके मुरीद हो गए।मख्दूम अलाउल हक़ पाण्डवी रहमतुल्लाह अलैह की शान व अज़मत का अन्दाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जिनका एहतराम खुद सुल्तान सैयद मीर मख्दूम अशरफ जहांगीर सिमनानी रहमतुल्लाह अलैह करें उस हस्ती के मर्तबे का अंदाज़ा हम और आप क्या लगा सकते हैं--?मख्दूम अलाउल हक़ पाण्डवी रहमतुल्लाह आपसे बहुत मोहब्बत व

अक़ीदत रखते थे।आप सादगी पसन्द सूफी थे।जब आईने हिन्द रहमतुल्लाह अलैह सफर करते तो वो अपने सर पे गर्म खाना रखकर चलते थे ताकि मुर्शिद के भूख लगने पर वो गरम गरम खाना मुर्शिद को पेश कर सके।उसके बाद आप बंगाल चले आये और शादी की जिससे एक बेटी हुई जिसकी शादी अपने ख़लीफ़ा मख्दूम अलाउल हक़ पाण्डवी रहमतुल्लाह अलैह से कर दी।आपने बंगाल के भटके हुए लोगो मे तब्लीग शुरू की और लोगो को हक़ की राह पर लाने का मिशन शूरू किया दिन रात याद ए इलाही और हुकमे इलाही की तामील करते रहे बंगाल में आपने अपनी रूहानियत से इस्लाम का परचम लहरा दिया और क्यों न हो जब आपके मुर्शिद ने आपको आईने हिन्द का लक़ब दे दिया तो फिर अब कमी किस चीज़ की।आपके पीर भाई अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं कि आप बंगाल वालो के लिए रोशनी की तरह हैं आपने बंगाल में ऐसे वक्त में दीन की तबलीग की है जब दूर दूर तक कोई अल्लाह और उसके रसूल का नाम लेवा नही था आप ही की तब्लीग और मेहनत का नतीज़ा था कि वहां पर इस्लाम फैला।

एक नज़र में

1--आप की पैदाइश लखनोती नाम के गांव में हुई थी।

2--आपका आस्ताना सादुल्लाहपुर(लखनोती)बंगाल में है।

3--आपके मुर्शिद ख्वाजा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह हैं।

4--आपने उस वक़्त ख्वाजा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह से फेज़ लिया है जिस वक्त आपके साथ हज़रत अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह भी पढ़ते थे।

5--आपके मुरीदीन व खुल्फा में सबसे बड़ा नाम मख्दूम अलाउल हक़ पाण्डवी रहमतुल्लाह अलैह का है जो कि सैयद मख्दूम अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी रहमतुल्लाह अलैह के भी पीर मुर्शिद हैं।

6--आपने 1357 ईस्वी मे दुनिया-ए-फानी को अलविदा कह दिया।

ख्वाज़ा बन्दानवाज़ गेसुदराज़ रहमतुल्लाह अलैह

हर के मुरीद सय्यद गेसू दराज़ शुद
वल्लाह खिलाफ ए निय्यत के ओ इश्क़ बाज़ शुद

विलादत, नाम,नसब

आपकी विलादत 1321 ईस्वी में हिंदुस्तान के शहर दिल्ली में हुई ।आपके वालिद का नाम सैयद मुहम्मद यूसुफ रहमतुल्लाह अलैह था आपके वालिद साहब महबूबे इलाही हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह के मुरीद और उनके सच्चे जानिसार आशिक थे।

नाम

आपका पूरा नाम सैयद मुहम्मद हुसैन बन्दानवाज़ गेसूदराज़ था।

जबकि आपकी उरफियत अबुल फतह,सदरुद्दीन, वली ए अकबर और गेसूदराज़ है।आप सरदार ए जन्नत सरकार इमाम हुसैन रजिअल्लाहू अन्हु की औलाद में से हैं यानी आप हुसैनी सादात हुसैनी सैयद हैं।आपके वालिद सैयद मुहम्मद यूसुफ रहमतुल्लाह अलैह मुल्क अफगानिस्तान के क़स्बा हिरात में रहते थे वही से हिजरत(पलायन) करके आपका खानदान दिल्ली आया।

दिल्ली से दोलताबाद

जब आप 4 साल के हुए तो आपका खानदान दिल्ली से दोलताबाद चला गया।उस वक़्त सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक ने दिल्ली के बजाय दोलताबाद को अपनी राजधानी बनाने का फैसला किया जिसके चलते आप के साथ और भी कई खानदान दौलताबाद चले आये थे।बड़े बड़े उलेमा और ताजिर भी साथ आये उस वक़्त आपकी उम्र 4 साल थी।

महबूबे इलाही से मोहब्बत

दरसअल उस वक़्त जब आपके वालिद अफगानिस्तान से दिल्ली आए तब महबूबे इलाही हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह दिल्ली में

मौजूद थे।आपके वालिद को उनसे बहुत निस्बत थी एक तो आपके वालिद खुद सादात थे और दूसरी उस वक़्त महबूबे इलाही जैसा क़ामिल मुर्शिद दिल्ली की सरजमीं पर नही था।तो आपके वालिद की निस्बत उनकी तरफ बेपनाह थी जिसका असर आप पर भी पड़ा।

तालीम

कुरआन क़रीम आपने बचपन मे हिफ़्ज़ कर लिया लेकिन उसके बाद आपने दीन की तालीम नही हासिल की क्योंकि आपका मन बचपन ही से तसव्वुफ़ की तरफ ज्यादा था आपके घर मे सिर्फ दो शख्सियतो का ही ज़िक्र होता था उनका ही किस्सा आप बचपन से सुनते चले आ रहे थे एक तो आपके वालिद के पीर मुर्शिद हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह और दूसरी शख्सियत आपके पीरो मुर्शिद हज़रत ख्वाजा नसीरुद्दीन महमूद रोशन चराग़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह थे।जब आप बचपन मे इनका जिक्र सुनते तो आप इनकी तरह बनना चाहते थे और आप कहते रहते कि मुझे ख्वाजा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह की तरह बनना है।आप औलिया अल्लाह की

सवानेह पढ़ते उनकी /इबादतों/रियाज़तो/क़रामतो को पढ़ते और आप भी उन्ही की तरह बनना चाहते थे यानी तसव्वुफ़ की तरफ आपने बचपन ही में अपने कदम बढ़ा दिए थे।जब आप 10 साल के हुए तो आपके वालिद साहब का इंतेक़ाल हो गया उसके बाद आपके दादा ने आपकी तालीम पर सख्ती से तवज़्ज़ो के साथ ध्यान दिया जिससे आपने कदूरी शरीफ पढी।

दोलताबाद से दिल्ली

अज़ीज़ों यहां ध्यान दो की आप की विलादत(पैदाइश)दिल्ली में हुई लेकिन आप दोलताबाद आये फिर जब आप 15 साल के हुए तो आपकी वालिदा आपको लेकर दिल्ली आ गई।

पीरो--मुर्शिद

जब मुरीद इतना शानदार होगा तो पीर के क्या कहने एक दिन आप दिल्ली के क़ुतुब मस्जिद के अंदर नमाज़ पढ़ने गए तो आपने देखा कि हज़रत ख्वाजा नसीरुद्दीन महमूद रोशन चराग़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह आपके सामने हैं उन्हें देखते ही आपकी खुशी का ठिकाना नही रहा क्योंकि आपके घर मे इनके क़सीदे पढ़े जाते थे तो आप

उनसे बहुत ही अदब के साथ मिले और कहा में सैयद यूसुफ हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह का शहज़ादा हूँ ये सुनकर चराग देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने आपकी और शफ़क़त से हाथ बढ़ाया और फिर आपने कहा कि में आपका मुरीद बनना चाहता हूँ और आपकी ख़ानक़ाह में रहना चाहता हूँ आपने उन्हें मुरीद तो बना लिया लेकिन ख़ानक़ाह में रहने की इजाजत नही दी और कहा अभी तुम्हे बहुत तालीम हासिल करना है जब इल्मे दीन सीख लेना फिर खानकाह आ जाना इसके बाद आप चले गए।

फिर जब आप वापस आये और तालीम हासिल करना शुरु कर दिया कुछ सालों बाद फिर आप ख़ानक़ाह गए फिर आपके पीरो मुर्शिद ने कहा जाओ अभी हिदाया, रिसाला शमशिया,मिफ्ताह पढ़ो और जब ये सब पढ़ लेना फिर आना।

आपकी ख़ानक़ाह में आमद

अज़ीज़ों ये जो ख़ानक़ाह की बात हो रही है वो आपके पीरो मुर्शिद हज़रत ख्वाज़ा नसीरुद्दीन महमूद रोशन चराग़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह है।जब

आप ख़ानक़ाह गए तो आपके पीरो मुर्शिद की उम्र 59 साल थी।वहां जाकर आपने रियाजत/इबादत शुरू की।

बन्दानवाज़

अज़ीज़ों हम अहले सुन्नत का अक़ीदह यही है कि अल्लाह ही यकता है जो सारे आलम का खालिक है,हम सब का मालिक है ,सारे निजाम में उसकी मर्जी के बगैर एक पत्ता भी नही हिल सकता उसके अलावा कोई और इबादत के लायक नही है।लेकिन कुछ अल्लाह के बन्दे जब अपने नफ़्स को अल्लाह क़ी मर्ज़ी और उसकी रज़ा पाने के लिए कुचल देते हैं उसके दीन की तब्लीग करते है,उसके महबूब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की सुन्नतो के मुताबिक अपनी ज़िंदगी गुजर करते हैं तो वही लोग अल्लाह के दोस्त(वली) हो जाते हैं फिर उन्हें अल्लाह की अता से सबकुछ अता हो जाता है और अल्लाह ही की अता से जिसे चाहे अता कर दे ये हमारा अक़ीदह ये और यही अक़ीदह हक़ है।

अब सवाल आता है कि आपका नाम बन्दानवाज़ क्यों पड़ा--? तो आज़ीज़ों आपको मालूम ही होगा कि तसव्वुफ़ में जो पहली बात है वो है दूसरों का ख्याल रखना यानी

मेरे नबी की हदीस भी है कि जो अपने लिए पसन्द करो वही दूसरो के लिए भी।

आप बन्दानवाज़ क्यों--?

उस वक़्त खानकाहों में जो भी नज़राना आता था वो आपके पीरो मुर्शिद जरूरत मन्दो गरीबो को तक़सीम कर देते और एक हिस्सा अपनी ख़ानक़ाह में रहने वाले दरवेशों/मुरीदों को तक़सीम करवा देते थे तो उसमे से जो हिस्सा सरकार बन्दानवाज़ गेसूदराज़ रहमतुल्लाह अलैह को मिलता तो आप दूसरे यतीमो/मजलूमो को बांट देते और खुद पानी मे रोटी भिगोकर खाते थे आपकी ये आजिज़ी और इन्किसारी देखकर लोग आपको बन्दानवाज़ कहने लगें और तभी से आजतक आपको बन्दानवाज़ कहा जाने लगा।

गेसूदराज़ क्यों?

आपके नाम मे गेसूदराज़ भी रहता है जिसके पीछे दो रिवायत हैं यूँ तो लुगत के हिसाब से आप के नाम का मतलब ये निकलता है कि

(गेसू=बाल,दराज़=लम्बे)यानी लम्बे बाल वाला लेकिन अब रिवायातो पर गौर करते हैं।

पहली रिवायत

शाह मुहद्दिस अब्दुल हक़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह बड़ी मोतबर किताब अखबारुल अख़्यार में बयान करते हैं कि एक बार आपके पीरो-मुर्शिद ख्वाजा नसीरुद्दीन महमूद रोशन चराग देहलवी रहमतुल्लाह अलैह पालकी में बैठकर कहीं जाने की तैयारी कर रहे थे इतने में आप जल्दी से आगे बढ़े और आपने सोचा कि में खुद अपने मुर्शिद को कंधे पर उठाऊंगा तो आपने दौड़कर पालकी अपने कन्धे पर रख ली जिससे आपके जो लम्बे बाल थे उसी पालकी मे फँस गए लेकिन आपने पालकी नही रोकी क्योंकि ये आपको अदब के खिलाफ लग रहा था जब पालकी रुकी तो आपके पीरो-मुर्शिद ने आपके बाल पालकी में फंसे देखे तो मुस्कुराए और कहा कि तुम्हारी पालकी एक दिन बादशाह उठाएंगे।उसके बाद से ही आपको गेसुदराज़ कहा जाने लगा इसी मौके पर आपके पीरों मुर्शिद ने आपकी शान में एक शेर कहा

हर के मुरीद सय्यद गेसू दराज़ शुद

वल्लाह खिलाफ ए निय्यत के इश्क़ ओ बाज़ शुद

दूसरी रिवायत

वही दूसरी रिवायत के मुताबिक मीर सैयद मखदूम अशरफ जहाँगीर सिमनानी किछोछवी रहमतुल्लाह अलैह बयान करते हैं कि आप के वालिद अफगानिस्तान में ज़िस जगह रहते थे वहाँ आपके खानदान के लोग बाल लंबे रखते थे क्योंकि आप सब एक तो सादात खानदान से थे इसलिए आपके खानदान के बुजुर्ग भी सुन्नते मुस्तफा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम पर अमल करते हुए लम्बे बाल रखते थे और लम्बे बाल रखना आपके खानदान का रिवाज था जिससे वहां के लोग आपके खानदान को गेसूदराज़ के खानदान के नाम से जानते है और आजतक आपके आस्ताने के सज्जादानशीं और गद्दी नशीं आज भी आपके नाम के आगे गेसूदराज़ लिखते चले आ रहे है।

ज़िंदगी अफ़ज़ल या मौत-?

आप मोतबर आलिम भी थे एक बार एक शख्स आपके पास आया और उसने आपसे पूछा ए सरकार बन्दानवाज़ ये बताओ कि जिंदगी अफ़ज़ल या मौत--?

आपने चुटकी में जवाब देते हुए कहा कि सुनो जबतक मेरे नाना रसूल ए आज़म ताजदारे मदीना महबूबे खुदा सैयदुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम ज़ाहिरी हयात में थे तब जिंदगी अफ़ज़ल थी और जबसे बदरुदुज़ा, शमसुददुहा, नुरूलहुदा ने पर्दा लिया है तबसे मौत अफ़ज़ल है क्योंकि मौत के बाद इंसान को उनके रूखे अनवार की जियारत(दर्शन) तो नसीब हो जाती है।

गुलबर्गा में आपकी आमद

दिल्ली में 40 साल से ज्यादा रहने के बाद आप गुलबर्गा शरीफ़ आये उस वक़्त आपकी उम्र करीब 76 साल थी।वहां के बादशाह ने आपकी पालकी को खुद कंधा दिया क्योंकि आपके पीरो मुर्शिद ने आपकी फरमाबरदारी से खुश होकर आपको दुआएं दी थी की तुम्हारी पालकी एक दिन बादशाह   उठाएंगे सो आपके मुर्शिद की दुआ गुलबर्गा मे जाकर सच साबित हुई।वहां

का बादशाह फिरोज़ शाह बहमानी आपको बहुत इज्जत देता और आपके पास बैठकर दुआएं लेता और दीन की बातेँ सीखता रहता था।

करामत

यूं तो आपकी बेशुमार क़रामते हैं लेकिन यहाँ पर एक खास करामत का ज़िक्र किया जा रहा है।

आप 17 साल की उम्र में बाख्तियार बुजुर्गाने दीन की जमात शामिल हो गए थे एक बार आपकी विलायत और तसव्वुफ़ को जांचने/परखने के लिए चन्द लोग एक आदमी जो कि ज़िंदा था उसे मुर्दे की शक्ल में कफ़न वगेरह सारी रस्मे पूरी करके आपके पास लाए और आपसे कहा बाबा नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दीजिये आपने कहा में मुर्दो का जनाज़ा पढ़ाता हूँ जिंदो का नही उन्होंने कहा बाबा ये मर चुका है आपने कहा खैर क़ोई बात नही अगर ये मर चुका है तो तुम सब सफे दुरुस्त करो उन लोगो ने उस आदमी से पहले ही बता दिया था कि जैसे ही बाबा दूसरी तकबीर कहेंगे तुम उठ जाना फिर हम लोग कहेंगे जो बाबा जिंदो और मुर्दो की पहचान नही कर सकता वो क्या वली हो सकता है-? आपने नमाज़ जनाज़ा

पढ़ाई सारी तकबीरे हो गई जब उन लोगो ने उस आदमी को देखा तो उसके जिस्म से रूह परवाज कर चुकी थी ये माजरा देखकर कोहराम मच गया उसकी माँ को जब मालूम हुआ वो भागी भागी आपके पास आई और क़दमो में गिरकर उसने कहा बाबा मुझे माफ़ कर दे इस बच्चे को ज़िंदा कर दे इसका कोई कसूर नही है उस माँ का रोना देखकर आप उस मुर्दे बेटे के पास गए उसे देखकर मुस्कराया आपका मुस्कुराना था कि वो दुबारा जिंदा हो गया अल्लाह अल्लाह ये होते है अल्लाह वाले जो अल्लाह की अता से मुर्दो को भी जिंदा करने की क़ुव्वत रखते है अल्लाह का क़ुर्ब इन्हें हासिल होता है ।

किताबें

अज़ीज़ों मेने पहले ही बता दिया है कि औलिया अल्लाह जबरदस्त इल्म के भी मालिक होते है उनके इल्म की बराबरी करना आम आलिम के बस की बात नही इसी तरह सरकार बन्दानवाज़ गेसूदराज़ रहमतुल्लाह अलैह के पास भी बेपनाह इल्म था आपने अरबी उर्दू फारसी में लगभग 195 किताबें लिखी हैं। आपने उर्दू और दक्कनी

जुबान में मेराज-उल-आशिकीन जैसी मोतबर किताब लिखी जो दक्कनी जुबान में लिखी जाने वाली पहली किताब मानी जाती है।बाद में इस किताब को सूफ़िया ने अलग अलग जुबानो में ट्रांसलेशन किया है।आपने शेख इबनुल अरबी रहमतुल्लाह अलैह और शेख सहाबुद्दीन सोहरवर्दी रहमतुल्लाह की खिदमात पर कई किताबें लिखी।आपकी कुछ मोतबर किताबे जो यहाँ पर दी जा रही है।

1-तफ़ासीर-ए-कुरआन-ए-मजीद

2-हवशी कशफ

3-शरह-ए-मशारेक

4-शरह फिकह-ए-अकबर

5-शरह अदब-उल-मुरीदैन

6--शरह तारुफ़

7--रिसाला सीरत-उन-नबी

8-तरजुमा मशरेक

9-मआरिफ़

10-तरजुमा अवारिफ

11-शरह फसुसुल हिकम

12-हवा असाही क़ुव्वत-उल-क़ल्ब

13-मेराज-उल-आशिकीन

14-क़सीदा आमाली

आपके अक़वाल(वचन)

1-अगर कोई फ़क़ीर सिर्फ मशहूर होने के लिए रब की इबादत/रियाजत करता है तो वो जाहिल और गवार है।

2--अगर कोई जहन्नम के डर से इबादत/रियाजत/तिलावत करता है तो वो ढोंग है और धोखाधड़ी है।

3--जब कोई मोमिन अपने नफ़्स को कुचलने का दावा करता है तो फिर वो कभी दुनिया के पीछे नही भागेगा अगर वो ऐसा नही करता है तो वो ढोंग है।

4--रात को तीन भागों में बांट लो

पहली में दुरूद शरीफ़ पढो,दूसरी में नींद लो और तीसरे में अल्लाह का ज़िक्र करो।

5-मोमिन को खाने पीने में सादगी दिखानी चाहिए और हलाल होना चाहिए।

6--मोमिन को दुनियादारी से दूर होना चाहिए।

उर्स

आपका उर्स मुकद्दस आस्ताने आलिया गुलबर्गा शरीफ में जिल कादह की 15,16,और 17 तारीख को मनाया जाता है। आपके आस्ताने पर हर मजहब हर समुदाय के लोग आज भी हाजिर होते है और ताक़यामत तक हाज़िर होते रहेंगे क्योंकि आपकी जात से दीन का जो काम हुआ है वो यक़ीनन आपके नाम को ता क़यामत तक जिंदा

रखेगा।आप के सदके तुफ़ैल मौला हम सभी को नेक सालेह नरम दिल बनाए और क़ामिल मोमिन बनाए।

ये बारगाहे ख्वाज़ा बन्दानवाज़ है
इस दर पे जिसका सर है वो सरफराज़ है

सरकार मदारुल आलमीन अलैहिर्रहमा

मदार का मतलब क्या है

इमाम साफई अलैहिर्रहमा अल हावी में और इमाम इब्ने हज़र मक़्क़ी हदीसिया में रक़म फरमाते है कि

वो क़ुतुब(मदार)जो गौस ओ क़ुतुब के मक़ाम व मर्तबे का जामे व मुताहममिल होता है,उस को अल्लाह तआला दुनिया के चारो गोशों(पूरब,पश्चिम, उत्तर,दक्षिण)में गश्त कराता है जैसे आसमान के चारो तरफ सितारे चक्कर लगाते है और अल्लाह तआला उसकी ग़ैरतदारी में उसके आहवाल को खास ओ आम से पोशीदा रखता है वो आलिम होने के बावजूद नादान लगता है,ज़हीन होने के बावजूद कम फ़हम मालूम होता है दुनिया से बेनियाज़ होकर भी दुनिया को अपनी गिरफ्त में रखता है,खुदा से करीब तर होते हुए भी कुछ दूर सा लगता है दर्द मन्द होते हुए भी तंग दिल जान पड़ता है,बेखौफ होने के बा वजूद सहमा सहमा महसूस होता है ,औलिया अल्लाह में

उसका मक़ाम ऐसा है जैसे दायरे के मरकज़ नुक़्ते का,उसी पर आलम की दुरुस्तगी का दारो मदार होता है

(फतावा हदीसिया-पेज-322) तो प्यारे भाइयो आपने देखा कि मदार कहते किसे है,मदार का मर्तबा क्या होता है वक़्त के 2 बड़े इमाम जिन्होंने मदार के मायने हमको बताए है अब आइये हम हज़रत सैयद बदिउद्दीन ज़िंदा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह और मदार के बीच का कनेक्शन समझते हैं ताकि हमें इसे पढ़ने में और भी आसानी हो जाए।

सैयद बदिउद्दीन का मदार कनेक्शन

अज़ीज़ों जैसा कि पिछले सफा में मदार के मायने आपको हवाले के साथ समझाया गया है अब उसी हवाले से आपको हुज़ूर सैयद बदिउद्दीन ज़िंदा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह में मदारियत की झलकियां पेश करते हैं।

तारीख शाहिद(गवाह) है कि आपने आफाके आलम(दुनिया) का गश्त फ़रमाया है.एशिया, यूरोप के

अमेरिका, अफ्रीका,ऑस्ट्रेलिया, सीरिया, हिजाज,ईराक, अफगानिस्तान, ब्रिटेन, बरतानिया, अलमानिया,चीन,रोम,यूनान,ईरान,मिस्र,फारस,सूडान, जापान, कोलम्बो,इंडोनेशिया, श्री लंका,नेपाल,आपने पूरी दुनिया मे चिल्ले किये।आपकी जात से इस्लाम दुनिया के हर कोने में आबाद हुआ।आपके नाम से मनसूब दीगर निशानिया आपकी अज़मतो की यादगार है.

सरकार मदारुल आलमीन

दौरे हाजिर में आज हुज़ूर सैयद बदिउद्दीन ज़िंदा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह की शान के साथ खिलवाड़ हो रहा है।अल्लाह तबारक व तआला अपने मोहसिन बन्दों को मर्तबा अता करता है जो उन्हें ताक़यामत तक ज़िंदा रखते हैं ऐसे ही हमारे मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह हैं आपकी शान वो निराली शान है जिसे समझना हर किसी के बस की बात नही है!

आपको जानने के लिए इंसान का अक़ीदह का पक्का होना बहुत जरूरी है।क्योंकि बगैर अक़ीदह के इंसान कोहिनूर को पत्थर ही मानता है मिसाल के तौर हमारे हिंदुस्तान के ही चन्द नामवर अहमकों ने नबियो के

सुल्तान हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम को भी अपने बड़े भाई के जैसा समझा(माज़अल्लाह) तो मेरे कहने का मतलब ये है जो जात अल्लाह रब्बुल इज्जत के महबूब नबियो के सुल्तान रसूले आज़म रहमतुल लिलआलमीन बदरुदुज़ा नुरूलहुदा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम को न समझ पाई हो वो उनके बेटे सैयद बदिउद्दीन ज़िंदा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह को कभी नही समझ पाएगी।

विलादत और नसब नामा

आपकी विलादत हलब(सीरिया) मे 242 हिजरी में हुई!आप मां की तरफ से हसनी सादात और वालिद की तरफ से हुसैनी, सादात है.आपके वालिद का नाम सैयद अली हल्बी और वालिदा का नाम सैय्यदा सानिया फ़ातिमा था।

5 वास्तो से आपका नसब नामा सय्यदुल अम्बिया से मिलता है।

1--जाफ़रिया,

2-तैफूरिया

3--सिद्दीकिया

4--महदविया

5--ओवेसिया

निसब्ते जाफ़रिया

1-सैयद बदिउद्दीन ज़िंदा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह

2--सैयद किदवतुद्दीन अली हल्बी रहमतुल्लाह अलैह

3--सैयद बहाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह

4--सैयद जहीरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह

5--सैयद मुहम्मद इस्माईल रजिअल्लाहू अन्हु

6-सैयदना इमाम जाफर ए सादिक़ रजिअल्लाहू तआला अन्हु

7-सैयदना इमाम मुहम्मद बाक़र रजिअल्लाहू तआला अन्हु

8--सैयदना इमाम जैनुल आब्दीन रजिअल्लाहू तआला अन्हु

9--सैयदना मौला इमाम हुसैन रजिअल्लाहू तआला अन्हु

10--सैयदुल औलिया मौलाए क़ायनात करमल्लाहु वजहुल करीम

11--नबी क़रीम हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

निसब्ते सिद्दीकिया

हुज़ूर नबी ए पाक सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम

हज़रत सैयदना सिद्दीक ए अकबर रजिअल्लाहू अन्हु

हुज़ूर सैयदुल मोमिनीन अब्दुल्लाह अलम्बरदार राजिअल्लाहू अन्हु

हज़रत ए ख्वाजा ऐनुद्दीन शामी राजिअल्लाहू अन्हू

हज़रत सुल्तानुल आरफीन बायजीद बुस्तामी रजिअल्लाहू अन्हु

हुज़ूर सैयद बदिउद्दीन जिंदा शाह मदार मदारुल आलमीन रजिअल्लाहू अन्हू

तो प्यारे अज़ीज़ों आपने देखा कि किस कदर हुज़ूर बदिउद्दीन ज़िंदा शाह मदार की शान व मर्तबा बुलन्द व बाला है आप खानवादे हाशिम के चश्मो चराग़ हैं मौला अली के दुलारे है,सैयदा तैयबा ताहिरा माँ फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा के प्यारे हैं हर दौर में आप का फैज़ान ज़माने को मिलता रहेगा।

आपकी हिन्द में आमद

आप पूरी दुनिया मे इस्लाम की तब्लीग करने के बाद मुल्क हिंदुस्तान के लिए रवाना हुए आपने पहले श्री लंका पहुंचकर तामारपाड़ी में क़याम फ़रमाया।फिर आप

आदम का पुल होते हुए सरज़मीन ए हिन्दुस्तान में दाखिल हुए!

उस वक़्त हिंदुस्तान में मुहम्मद बिन तुगलक की दौरे हुकूमत का आगाज़ था।कावेरी नदी के किनारे आपका क़ाफ़िला फरोकश(ठहरा) हुआ।आपकी आमद की खबर हर तरफ़ फैल गई।हर वक़्त आपके हमराह आशिकों का हुजूम रहता था।आप यहाँ से बेंगलुरु के लिए रवाना हो गए।और कोलार(एक प्रसिद्ध स्थान) में खेमाज़न हुए, यहाँ से अपने फैज़ान की बारिश बरसाते हुए हैदराबाद ,गोलकुण्डा, विजयबाड़ा,और आलमपुर वरंगल से गुलबर्गा में इरफान की दौलत खूब लौटाई.

बेशुमार मख़लूक़ सिलसिला ए इरादत में दाखिल हुई।और आपके फैज़ान से मालामाल हुई।

यूपी में मदारुल आलमीन

मुल्क हिंदुस्तान के एक सूबा(प्रदेश) जिसे आजकल उत्तर प्रदेश कहा जाता है।आपने महम्मद बिन साबिर मुल्तानी को खिलाफत देकर गोरखपुर और असीर कबीर को कुंडा के लिए रवाना किया।

फिर आप फैज़ाबाद(अब-अयोध्या)के रास्ते से लखनऊ की जानिब निकल गए।जब आपने शहरे लखनऊ में क़याम फ़रमाया तो मौलाना शहाबुद्दीन परकाला अतिश खिदमत में हाज़िर हुए और मुरीद बने।फिर आपने हरदोई,फर्रुखाबाद,
कायमगंज,बरेली,शाहाबाद,बाराबंकी, शमशाबाद में क़याम फ़रमाया और बाराबंकी के मशहूर क़स्बा किन्तूर में आपके मुरीद मीठे मदार मौजूद हैं।मीठे मदार के बारे में तारीख में है कि वो आपकी ही दुआओ से पैदा हुए हैं।वही अक्सर बुजुर्ग व सूफिया फरमाते है कि सैयदना मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह को किन्तुर कस्बे से बहुत ज्यादा लगाव था।

अज़मते मदारुल आलमीन अलैहिर्रहमा

1--आपको ताबई होने का शरफ़ हासिल है,आपने तीन तीन सहाबी ए रसूल की ज़ियारत की है।

2--आपके पीरो मुर्शिद सैयदुल आरफीन ख़्वाजा बायजीद बुस्तामी रहमतुल्लाह अलैह ने आपको 259 हिजरी में इजाजत व खिलाफत अता की!

3--आपकी उम्र शरीफ 596 साल हुई है और आपने 556 साल बगैर कुछ खाये पिये गुजारे हैं।

4--आपकी दुआओ से हमारे जद्दे क़रीम(सैयद सैफ़ुद्दीन सुरुखू गाज़ी अलैहिर्रहमा के भतीजे) सैयद सालार मसऊद गाज़ी रहमतुल्लाह अलैह की विलादत हुई।

5--12 साल तक आप के साथ मखदूम अशरफ़ जहांगीर सिमनानी आपके हमराह रहे और आपके फैज़ान से मालामाल हुए।

6--आपकी बारगाह में अशरफुल आलमीन सरकार वारिस ए पाक ने 12 साल तक खिदमत की!

7--आपके आस्ताने पर हज़रत आलमगीर औरंगजेब रहमतुल्लाह अलैह घुटनो के बल हाजिर हुए!

(**नोट**)–ताबई**न––**ये उसे कहा जाता है जिसने अपनी माथे की निगाहों से किसी सहाबीए रसूल को देखा है।

आपकी मुलाकात गौसे आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हु से

हज़रत अल्लामा मोहम्मद जानी इब्ने अहमद अल कानी क़ादरी फ़रमाते हैं कि

हज़रत सैयद बदिउद्दीन ज़िंदा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह जब बगदाद शरीफ़ तशरीफ़ लाये तो वहाँ आप की मुलाकात सुल्तानुल औलिया महबूब सुब्हानी तफसीरें कुरआनी, शाहबाज़ ए लामकानी शेख अब्दुल कादिर जीलानी राजिअल्लाहू तआला अन्हू से हुई।उस वक़्त हुज़ूर ग़ौसे आज़म की कैफियत(हालत)जलाली थी कुछ मुअर्रेखीन ने तहरीर फ़रमाया है कि हज़रत कुतबुल मदार की तवज़्ज़ो से हुज़ूर गौसे आज़म का जलाल जमाल में तब्दील(परिवर्तन) हो गया।

(अल क़वाकिबुददारिया फी तनवीर ए मनाकिबुल मदारिया अरबी,उर्दू)

आपकी ही दुआ से सरकार गौसे आज़म की बहन को औलाद हुई और तारीख की किताबो में आता है कि वो

दोनों औलादे यानी गौसे आज़म सरकार के सगे भांजे सैयद मोहम्मद जमालुद्दीन जानेमन जन्नती रहमतुल्लाह अलैह और सैयद मोहम्मद जीलानी मदारी रहमतुल्लाह अलैह हैं जो आपके साथ हिंदुस्तान आये थे।

क़रामते मदारुल आलमीन

सदहा बरस ना खाकर भी ज़िन्दा रहे मदार

ये है दलील देखीये ज़िन्दा मदार की

````````

मुगल वंशज शाहजहाँ के बेटे और हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रह्तुल्लाह अलैह के भाई हज़रत दारा शिकोह क़ादरी फरमाते हैं-- आप मक़ामे समदिय्यत पर फ़ायज़ हैं जो सालिको का मक़ाम है और अल्लाह ने आपको ऐसा हुस्न-ओ-जमाल अता किया था कि जो आपको देख लेता था वो बेखुदी के आलम मैं सजदा रैज़ हो जता था इसलिये आप हमेशा नक़ाब ढ़ाले रहते थे.

(सफीनतुल औलिया)

````````

मोलाना सय्यद शाह मोहम्मद कबीर अबुल अलाम फरमाते हैं--

हज़रत बदीउद्दीन ज़िंदा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह बज़ाहिर कुछ नही खाते थे और उनका कपड़ा कभी मैला नही होता था और ना उस पर मक्खी बेठती थी और उनके चेहरे पर हमेशा नक़ाब पढ़ा रहता था,निहायत हसीन ओ जमील थे,चारो क़ुतुब आसमानी के हाफिज़-ओ-आलिम थे,और तमाम दुनिया का सफर उन्होंने किया था,और वो अपने वक़्त के क़ुत्बुल मदार थे।

(तज़किरातुल किराम तारीख खुलफाऐ अरब वा इसलाम सफ्हा-493)

हज़रत मौलाना हसन चिश्ती रामपुरी फरमाते हैं--

हज़रत क़ुतबे रब्बानी ग़ौस ए समदानी शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी महबूबे सुबहानी ने अपने मकतूब 'निताब किबरतुल वेहदत' मैं और हज़रत ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती सनजरी रह्तुल्लाह अलैह ने अपने मकतूब निताब उहदीयतुल मुआरिफ में लिखा है कि बिल्ला सुम्मा बिल्ला हमने देखा कि हज़रत सैयद बदीउद्दीन ज़िंदा शाह मदार

के नक़ाब आहयानन ऐक या दो उतर जाते थे तो मख्लूक़े खुदा सज्दे मैं गिरने लगती थी, मगर आप हिजाबात ए दबीज़ मैं अपना चेहरा मसतूर रखते थे

ताकी शरीअत से बाहर क़दम ना निकले।

(तवारीख़ आईना ऐ तसव्वुफ,रज़ा लाईब्रेरी रामपुर)

चन्द जरूरी बातें

तो अज़ीज़ों आपने देखा कि मदारुल आलमीन की शान क्या शान है अल्लाह अल्लाह.आपकी शान के ताल्लुक से एक अदना सी भी गुस्ताखी इंसान के ईमान के लिए खतरा है लिहाजा हमे इन औलिया अल्लाह की शान में तोहीन या छीटाकशी करने से पहले ये सोच लेना चाहिए कि जिस शख्स की शख्सियत का अंदाज़ा बड़े बड़े फुकहा, वली,क़ुतुब,शेख नही लगा पाए उस शख्सियत का अंदाज़ा हम और आप जैसे लोग कैसे लगा सकते हैं।

सैयद जमालुद्दीन जानमेंन जन्नती अलैहिर्रहमा

विलादत

आप की विलादत की पक्की सनद तो नही मिल पाई है हां सूफिया अक्सर 500 हिजरी के आखिर और 600 हिजरी के शुरूआत में आपकी विलादत के बारे में अक्सर क़ुतुब में लिखते हैं।

नाम

आपके बचपन का नाम मुहम्मद था।

नसब

आप का खानदान दुनिया का सबसे अज़ीम खानदान है आप हसनी/हुसैनी सादात हैं और सुल्तानुल औलिया पीरे-पीरां सरकार गौसे आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हू के सगे भांजे भी हैं।

दुआ और विलादत

आपकी विलादत क़ुत्बुल मदार हज़रत सैयद बदीउद्दीन ज़िंदा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह की दुआ से हुई है।आप उनके रिश्तेदार भी लगते हैं क्योंकि वो भी हसनी/हुसैनी सादात हैं और आप भी तो इस तरह से आगे जाकर हसनी/हुसैनी सादातो का शजरा ए नसब किसी न किसी रिश्ते में मिल जाता है।

एक बार मदारुल आलमीन सफर करते हुए बगदाद शरीफ़ आये तो आपकी आमद की खबर सुनकर लोग आपके पास इकट्ठा हो गए उसी वक़्त जब आपकी वालिदा सैयदा ताहिरा नसीबा बीबी भी आपके पास आई और कहा सरकार दुआ करें कि अल्लाह हमे औलाद अता फ़रमा दे।मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह ने दोनों हाथ उठाकर कहा ए अल्लाह इन्हें दो बेटे अता फरमा।उसके बाद उन्होंने कहा जाओ अल्लाह ने दुआ सुन ली।कुछ अरसे के बाद औलादे हुईं जिनमे आपका नाम मुहम्मद और आपके छोटे भाई का नाम अहमद रखा गया।

मदारुल आलमीन की ज़ियारत

आप जब से पैदा हुए थे आपने मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह का सिर्फ नाम ही सुना था कभी माथे की

निग़ाहों से उनकी ज़ियारत(दर्शन) नही की थी।एक बार मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह दीन की तब्लीग करते करते बग़दाद शरीफ पहुंचे तो आपके आसपास लोगो का हुजूम इकठ्ठा हो गया।आपकी माँ भी सैयदना मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह के पास ही तशरीफ़ फरमा थीं।आपने जब भीड़ का शोर शराबा सुना तो छत पर जाकर देखा देखते ही आप छत से गिर पड़े।आपके गिरने के बाद लोग दौड़ कर आये आपको उठाया फिर जब मां ने देखा तो रोने लगी और कहा मेरा बेटा तो मर चुका है वो दौड़ कर आप के पास गई और कहा या सरकार मदारुल आलमीन आप अल्लाह से दुआ करे हमारा बेटा फिर से जिंदा हो जाए।

आपने उनकी बातों को सुनने के बाद कहा ए मोहम्मद अल्लाह के हुक्म से उठ जाओ।इतना कहना था कि आप फौरन उठ गए आपकी करामत देखकर वहाँ मौजूद लोग हैरान हो गए माँ ने कहा अब मेरा बेटा आपकी अमानत है इसे अपने साथ रखिये इसकी तालीम और तरबियत अब आपके जिम्मे है।

(नोट)--बहुत ही प्यारी हदीस है अल्लाह के रसूल फरमाते हैं कि मेरी उम्मत के उलेमा ऐसे होंगे जैसे बनी इस्राईल के अम्बिया।अब यहाँ उलेमा से मुराद 4-5 किताबें पढ़कर सूफिया/औलिया की गुस्ताखी करने वाला मौलवी नही बल्कि उलेमा तो वो होता है जो शरीयत और तरीक़त दोनो का आमिल व आलिम होता है और अगर कोई बदअक़ीदह कहे कि मुर्दो को तो बस ख़ुदा ही ज़िंदा कर सकता है तो उससे कहना चाहता हूँ हजरत ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुदा नही बल्कि अम्बिया है और रसूल ए अकरम की हदीस है कि मेरी उम्मत के औलिया ऐसे होंगे जैसे बनी इस्राईल के अम्बिया तो जब अम्बिया अल्लाह के हुक्म से मुर्दो को ज़िंदा कर देते थे तो हदीस ए मुस्तफ़ा के मुताबिक औलिया भी मुर्दो को ज़िंदा करते हैं और अल्लाह की अता से ये क़ुव्वत रखते हैं)

तालीम

आप और आपके भाई अहमद हज़रत सैयदना मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह के साथ चल दिये पहले उन्होंने आप दोनों भाइयो को नजफ़ अशरफ और कर्बला शरीफ़ की हाजरी दिलवाई क्योंकि मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह

अलैह जानते थे कि दुनिया मे कोई तबतक वली नही बनेगा जबतक मौलाए क़ायनात की निगाहें क़रम और मंजूरी नही होगी।आसान जुबान में इसका मतलब ये है कि जबतक मौलाए क़ायनात शेरे खुदा हज़रत अली करमल्लाहु वजहुल क़रीम की सिग्नेचर नही हो सकती विलायत का सर्टीफिकेट एक रद्दी क़ागज़ के सिवा कुछ भी नही है।

उसके बाद आप दोनों भाइयो को लेकर हज पर गए फिर मदीना मुनव्वरा में हाजिरी दी और नाना जान की बारगाह में सलाम पेश करवाया।वहां से लौटकर आप तुर्की आये और यहीं से तालीम शूरु हुई।जब तालीम मुक़म्मल कर चुके तो मदारुल आलमीन ने कहा बेटो चलो तुमको तरीक़त की तरफ ले चले।यहां ये जान लेना बहुत ज़रूरी है कि पहले के उलेमा तसव्वुफ़ का इल्म जरूर रखते थे यही वजह थी की ज्यादातर उलेमा तसव्वुफ़ के आला दर्ज़े पर फ़ायज़ थे और सूफिया की ताज़ीम करते थे।जब आप तालीम हासिल कर चुके तो फिर बगदाद पहुंचे।जहाँ पर आने के बाद ये मालूम हुआ कि आपके वालिदा और वालिदा का इंतेक़ाल हो गया है।आप दोनों भाई और मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह

अलैह उनकी क़ब्र पर गए वहाँ फ़ातिहा पढ़ा और दोनों भाइयों को अपने साथ लेकर हिन्द चले आए।

हिन्द में आमद

सैयद जमालुद्दीन जानेमन जन्नती मदारी रहमतुल्लाह अलैह ने अपने छोटे भाई औऱ मुर्शिद सैयदना मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह के साथ हिन्द आने का इरादा किया।रास्ते मे खुरासान,समरकन्द,मुल्तान से होते हुए आप राजस्थान आये।आप उस वक़्त तरीक़त और रूहानियत की तरफ़ बढ़ रहे थे।जब आप रास्ते मे सफर कर रहे थे तो दो हफ़्तों तक आपने कुछ न खाया उधर आपके मुर्शिद सैयदना मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह तो तसव्वुफ़ के उस अज़ीम दर्ज़े पर फ़ायज थे कि उन्हें न भूख लगती और न प्यास।लेकिन जब 2 हफ्ते बीत गए तो आप दोनों भाइयों को प्यास की सिद्दत महसूस हुई आपने मुर्शिद से कहा तो मदारुल आलमीन ने कहा कुछ दूरी पर एक कुआं है वहां जाओ एक आदमी रोटी देगा तुम उसे दुआ देना की ए अल्लाह इनकी सल्तनत इन्हें अता कर दे।वैसे ही हुआ जब आप एक कुंआ के पास गए तो एक शख्श ने आपको रोटी दी रोटी लेने के बाद आपने दुआ दी ए अल्लाह इनकी सल्तनत इन्हें अता

कर दे।तारीख़ मे मिलता है कि वो शख्श कोई और नही बल्कि तैमूर लंग था वही कुछ इतिहासक़ारो का कहना है कि वो बादशाह कोई दूसरा था।

योगी

जब आप हिन्द की सरज़मीं पर पहुँचे तो उस वक़्त यहाँ योगियो का बोलबाला था।क्योंकि वो योग करके लोगो को प्रभावित करते थे।और उस समय के योगी में 13 लक्षण/विशेषता होनी आवश्यक थी।

1--शादी नही करेगा

2--अहिंसा का पुजारी

3--सच्चाई पर रहेगा

4--चोरी नही करेगा

5--लोगो पर दया करेगा

6--साफ बात करेगा

7--मुनाफिकत नही रखेगा

8--कम खाएगा

9--मुजाहिदा(अभ्यास)करेगा

10--पाकीज़गी वाला होगा

11--मुराकबे(तपस्या)में रहेगा

12-- हर चीज से बेखौफ रहेगा

13--खैरात करेगा और किसी चीज़ का लालची नही होगा।

अब आप सोच रहे होंगे योगियो वाली सिफत अगर इंसान में आ जाए तो इंसान वली हो जाए।तो यकीनन मगर ईमान न होने की वजह से हम इन्हें वली नही बल्कि योगी कहते हैं।

योगियों से मुकाबला

जब योगियो ने आपक़ो देखा तो आपके पास आये और 13 खूबियों को गिनवाया क्योंकि उन योगियो को ये तकब्बुर था कि शायद ये खूबियां सिर्फ सनातन धर्म के योगियों मे ही पाई जाती थी।जब उन्होंने आप से अपनी खूबी बताई आपने उनके जवाब में सुन्नते मुस्तफ़ा को सामने रखते हुए जवाब दिया जब वो हार गए तो उन्होंने कहा अच्छा चलो योग करते

है जो ज्यादा दिन तक योग कर लेगा उस का मजहब क़बूल किया जाए आपने कहा ठीक है मेरे मुर्शिद को आ जाने दो इजाजत ले लूँ फिर में तैयार हूं उधर जैसे ही मदारुल आलमीन आये आप ने उनसे इजाजत ली उन्होंने कहा ठीक है।योगियो ने योग शुरू किया आपको मदारुल आलमीन ने एक पहाड़ में बिठा दिया और नज़रे क़रम की आप ज़ज़्ब की केफियत में चले गए उसके बाद मदारुल आलमीन ने आपके ऊपर तजल्ली डाली आप आलमे इस्तेग्राक में चले गए।

योगी कुछ साल तक तो बैठे थे फिर उनमें से कुछ मरने लगे कुछ हार कर उठ गए एक दो साल नही बल्कि पूरे **100** साल गुजर गए मलंग ए आज़म सैयद जमालुद्दीन जानमेंन जन्नती रहमतुल्लाह अलैह के सर से खून टपकने लगा ये देखकर सैयद बदिउद्दीन ज़िंदा शाह मदार अलमारूफ़ मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह जो खुद चिल्ले में बैठे थे फौरन आपके पास आये आपको उठाया और कहा उठो बेटे तुम्हारी मंज़िल पूरी हुई अब आज के बाद कोई योगी तुम्हारे मुक़ाबले का नही हो सकता।इस कारनामे के बाद

उन सात योगियो ने इस्लाम कबूल कर लिया था जिनकी क़ब्रे आज भी आपके आस्ताने के बगल में है।

(नोट--) ये वो दौर था जब हिन्द में ख्वाज़ा मोइनुद्दीन चिश्ती हसन संजरी रहमतुल्लाह अलैह और सैयद सालार मसऊद गाज़ी रहमतुल्लाह अलैह नही आये थे।और उस दौर में सिलसिला ए चिश्त को अफगानिस्तान में वो उरूज़ नही मिला था और हमे ये भी नही भूलना चाहिए कि हज़रत सैयद बदिउद्दीन ज़िंदा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह और सैयद जमालुद्दीन जानेमन जन्नती रहमतुल्लाह अलैह को सिलसिला ए चिश्त के वली ए क़ामिलो की तरह बादशाहो का वो सपोर्ट भी नही मिला जो बाद के औलिया अल्लाह को मिला है)

आपने कभी बाल नही कटवाए

जब आप होश में आये तो आपने क़भी बाल नही कटवाए क्योंकि आपके सर पर आपके मुर्शिद सरकार मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह ने हाथ फेरा था।मुर्शिद के अदब में आपने कभी बाल नही कटवाए।

(नोट)--अक्सर बद मज़हब मौलवी कहा करते हैं कि बाल लंबे रखना मर्दो को मना है तो वो सबसे पहले ये समझ लें कि हमारे नबी क़रीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के बाल मुबारक कंधे तक होते थे।आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया की लम्बे बाल वालो की इज़्ज़त किया करो**(किताबुत तरज्जुल,अबू दाऊद शरीफ)** आप के बाल मुबारक के लम्बे होने की गवाही तिर्मज़ी शरीफ़, अबु दाऊद,इबने माज़ा जैसी किताबें दे रही हैं तो यहाँ ये जानना जरूरी है कि लम्बे बाल रखना ये हराम किसी सूरत में नही है बल्कि सुन्नते मुस्तफ़ा जरूर है

इबादत

आपने फिर जंगलो में **100-100** साल के चिल्ले किये।जहाँ पर आप बैठते थे वहां शेर हाथी चीता साँप हत्ता की जंगल के सारे जानवर आपके इर्द गिर्द बेठ जाते थे।आप की तरफ हर मख़लूक़ खिंची चली आती थी आप शेर पर बैठते तो वो आपकी सवारी बन जाता साँप को हाथ से पकड़ लेते वो रस्सी बन जाता मानो की उम्मत को ये इशारा दे रहे हो कि सुनो जब बन्दा ख़ुदा का हो जाता है तो सारी खुदाई उसकी

हो जाती है और जब हम अल्लाह से दूर होते है तो वही जानवर आपक़ो नुकसान पहुंचाते हैं।

जानेमन

आपका नाम जानेमन इसीलिए पड़ा क्योंकि एक दिन आपके पीरो मुर्शिद हज़रत सैयद बदीउद्दीन ज़िंदा शाह मदार मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह ने लोहे महफूज़ पर देखा तो कहा "जानमेंन जन्नती अस्त" मदारे पाक ने कहा जानमेंन तुम जन्नती हो और एक मर्तबा आपने कहा जमालुद्दीन मेरी जान है और मेरा मन है तभी से आपका नाम जानेमन जन्नती पड़ गया।आपक़ो जुम्मन जन्नती और जुम्मन बिहारी भी कहा जाता है।

मदारी

आप क़ुत्बुल मदार हुज़ूर सैयद बदिउद्दीन ज़िंदा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा हैं इसीलिए आपके नाम के आगे मदारी लगता है।दस्तूरुल फुकरा व आईने फरीदी में मिर्ज़ा अहमद अख़्तर साहब लिखते हैं कि आप के चार ख़लीफ़ा हैं।

जिनमे सबसे पहले ख़लीफ़ा सैयद जानमेंन जन्नती रहमतुल्लाह अलैह हैं।जिनसे दीवान गिरोह भी चला है जिसकी 72 शाखाएं निकली हैं।

सच्चे मलंग

आजकल के मलंगों को देखकर लोगो के मन में ये ख़्याल आता है कि मलंग ऐसे ही होते हैं जबकि हक़ीक़ी मलंग के मिजाज़ और अंदाज़ अलग होते हैं जो भी मलंग बनता है वो दुनिया से कट जाता है उसके बाद बड़े बड़े मलंगों के दरबार मे जाना पड़ता है उसके चक्कर लगाना पड़ता है अब तीन चक्कर लगाना पड़ता है।तीनो चक्कर लगाते समय बदन से तीन बाल निकाला जाता है जिसका मतलब होता है कि अब ये शख्स हसद,बुग्ज़,कीना से दूर रहेगा।उसके बाद सर मुंडाया जाता है फिर ग़ुस्ल कराया जाता है फिर उसे तस्मा लँगोट दिया जाता है लंगोट बांधते बांधते क़ुरआन क़रीम की सूरह मुल्क की आयत नम्बर **22** पढ़ाया जाता है उसके बाद तहमद पहनाई जाती है और सूरह इमरान की आयत पढ़ी जाती है फिर सवा तीन गज़ का कपड़ा दिया जाता है ये बांधते हुए सूरह बकरा की आयत नम्बर 117 पढ़ी जाती है

जिसका इशारा होता है कि बन्दा जहन में बिठा ले कि हर काम अल्लाह के हुक्म से होता है

फिर उसके बाद सर पर **2** गज़ का रुमाल बांधा जाता है और फिर कमर बस्ता बांधा जाता है सूरह नाजिया आयत **नम्बर 40-41** पढ़ी जाती है इसका इशारा होता है कि जन्नत तेरा ठिकाना होगा ओर अब बन्दा नफ़्स के खिलाफ काम करेगा। फिर तस्बीह दी जाती है सन्दल को सर पर मला जाता है फिर मुर्शिद के हाथों पर हाथ देता और मुर्शिद उसे **14** मुख़्तलिफ़ आयते पढ़ाकर बैत करता है तो अज़ीज़ों ये होते है असली मलंग।सैयद जमालुद्दीन जानमेंन जन्नती रहमतुल्लाह अलैह तो मलंग ए आज़म हैं।आज जानमेंन जन्नती रहमतुल्लाह अलैह के लम्बे बालो में वो भी एतराज़ करते हैं जो खुद की दाढ़ी अपनी मर्ज़ी से रखते हैं कुर्ता पायजामे में भी डिजाइन बनवाते रहते हैं क्लबो और क़सीनो में जाने वाले नचनिया टाइप के लोग भी सैयद जानमेंन जन्नती रहमतुल्लाह अलैह की शान में एतराज़ करते हैं।हद है हां आजकल के मलंग अगर आप रहमतुल्लाह अलैह के रास्ते से हट गए हैं तो उनकी ताज़ीम नही की जानी चाहिए जो भी मलंग नशा वगेरह करता है वो भी हक़ीक़ी नही है बल्कि

ढोंगी है।**14** मुहर्रम **951** हिजरी में आपका बजाहिर इंतेक़ाल हो गया।आपके मुरीदों में हज़रत ख्वाजा कुतबुद्दीन गौरी जौनपुरी रहमतुल्लाह अलैह सबसे खास व मशहूर हैं। उसके बाद

हज़रत शाह आदम

हज़रत उस्मान

सैयदना फ़रीद

हज़रत जगत

हज़रत महमूद

सूफिया फरमाते है कि क़ारोबार के वक़्त आपके नाम का फ़ातिहा दिलाने से कारोबार में बरकत होती है।अल्लाह के नज़दीक आप बहुत ही मक़बूल है मौला आपके सदके हम सब के गुनाहों को माफ़ फरमाए।

ख्वाज़ा क़ुतुब शाह गौरी रहमतुल्लाह अलैह

ख्वाजा क़ुतुब शाह गौरी रहमतुल्लाह अलैह आले रसूल हैं। फातमी सादात हैं आपकी शान बहुत ही निराली है।आपको सरकार कुतब ए आलम, शहनशाहे औलिया, कुतब ए कोलार कहा जाता है।

पीरो-मुर्शिद

आपके पीरो-मुर्शिद मलंग ए आज़म सैयद जमालुद्दीन जानेमन जन्नती रहमतुल्लाह अलैह हैं जो कि हुज़ूर क़ुत्बुल मदार सैयद बदिउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रजिअल्लाहू अन्हू के ख़लीफ़ा हैं और सैयदना सरकार गौसे आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हू के सगे भांजे है।

आपके मुर्शिद को मलंग ए आज़म कहा जाता है जबकि हुज़ूर मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह ने उन्हें दुनिया मे ही जन्नती होने की बशारत दे दी थी एक बार मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह आसमान की और देख रहे थे तो उन्होंने कहा जमालुद्दीन में लोहे महफूज़ पर देख रहा हूँ उसमे जन्नतियो में

तुम्हारा नाम भी लिखा हुआ और आज से तुम हमारी जान और मन हो तभी से उनका नाम जानेमन जन्नती पड़ गया।

100 साल तक जनाजा चलता रहा

यूँ तो औलिया अल्लाह से सैकड़ो क़रामते सादिर होती रहती हैं लेकिन कुछ क़रामते ऐसी होती हैं जिनसे उस जात का तारुफ़ हमेशा के लिए हो जाता है जैसे ही ये वाकिया हम पढ़ते है कि किसी वली का जनाजा 100 साल तक लगातार चलता रहा तो फौरन ज़हन में एक नाम आता है और वो नाम है सैयद शाह क़ुतुब गोरी रहमतुल्लाह अलैह का।आपने विसाल से पहले मुरीदीन को ये वसीयत की थी कि जब मेरा विसाल हो जाये तो मेरे जनाज़े को लेकर घूमना और जहां पर जनाजा न उठे यानि तुम उठा न पाओ वहां पर मेरा आस्ताना होगा आपके विसाल के बाद मुरीदों ने वैसे ही किया जनाज़े को लेकर चलते रहे मोअल्लिफ लिखते हैं कि क़रीब 100 साल तक आपका जनाजा लेकर आपके मुरीदीन चलते रहे और जैसे जैसे दिन बीतते जाते आपके जिसमे अक़दस से खुशबू आती रहती अल्लाहु अक़बर ये होते हैं अल्लाह वाले आप के जनाज़े की ये क़रामत देखकर करीब 12 लाख लोगों ने कलमा पढ़ा और इस्लाम मे दाखिल हुए अज़ीज़ों ये अल्लाह वाले हैं जिनके जनाज़े देखकर 12 लाख लोग कलमा पढ़ते हैं एक हम और आप है जिनके बजाहिर ज़िन्दगी में

कारनामें देखकर काफ़िर तो काफिर शैतान भी शर्मिंदा होते होंगे। आपके मुरीद आपका **जिस्म ऐ** अक़दस लेकर लगातार चलते रहे कोलार में एक जगह जो रानी के लिए पवित्र मानी गई थी वहीं आपका जनाजा रखकर मुरीदों ने नमाज़ अदा की उसके बाद जब मुरीदों ने जनाजा उठाना चाहा तो न उठा इस पर वो समझ गए कि यही वो जगह है जिसके लिए मेरे मुर्शिद ने हुक्म दिया है उधर जब रानी के सैनिकों ने देखा तो कहा इसे यहां से उठाइये लेकिन मुरीदों ने उनकी बात न मानी हर तरफ हाहाकर मच गया फिर बात रानी के दरबार तक जा पहुंची रानी ने हाथियों को भेजा और जंजीर में बांधकर जनाजा उठाने की नाकाम कोशिश की गई लेकिन उनसे जर्रा भर भी इधर से उधर न हुआ अब रानी और सैनिक भी हैरान हो गए जब उनकी तरफ से सारे पैंतरे आज़माये गए और सब नाकामयाब रहे तो मजबूरन उन्होंने मुरीदों की बात मानी और आज भी आपका आस्ताना वहीं कोलार में है जहां पर लाखो की तादाद में अकीदतमंद हाजिरी देते हैं और फेज़याब होते रहते हैं बेशक ये होते हैं औलिया अल्लाह इनकी शान ही अलग है अज़ीज़ों।

हज़रत बू अली शाह क़लन्दर

हैदरियम क़लन्दरम मस्तम

बन्दा ए मुर्तज़ा अली हस्तम

पेशवा ए तमाम रिंदानम

सगे पाए शेरे यजदानम

विलादत, नाम,नसब

आपकी विलादत 1209 ईस्वी को हरियाणा के शहर पानीपत में हुई।आपके वालिद का नाम सालार फखरुद्दीन ईराकी अलैहिर्रहमा और वालिदा (माँ) का नाम सैयदा हाफिजा जमाल था।

नाम

आपका पूरा नाम हज़रत सरफ़ुद्दीन बू अली शाह नोमानी है

नसब

आप का शजरा ए नसब वालिद की तरफ से इमाम ए आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह से मिलता है और मां की तरफ़ से माँ

सैयदा तैयबा हज़रत फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा से मिलता है।यानी दोनो तरफ से आप एक अज़ीम खानदान से ताल्लुक रखते है।

शजरा ए नसब

हज़रत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत सालार फखरुद्दीन ईराकी अलैहिर्रहमा

हज़रत सालार हसन अलैहिर्रहमा

हज़रत सालार अज़ीज़ अलैहिर्रहमा

हज़रत अबू बकर ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा

हज़रत बिन फारिस अलैहिर्रहमा

हजरत अब्दुर्रहमान अलैहिर्रहमा

हज़रत अब्दुर्रहीम अलैहिर्रहमा

हज़रत वानिक अलैहिर्रहमा

हज़रत इमाम ए आज़मनोमान बिन साबित अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह

सालार फखरुद्दीन ईराकी

उस ज़माने में हज़रत बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी नक्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह के दामाद का नाम भी फखरुद्दीन ईराकी अलैहिर्रहमा था लेकिन आप वो नही है बल्कि आप ईराक के मशहूर शहर किरमान से ताल्लुक रखते है जब तातारियों ने किरमान पर हमला किया उस वक़्त आपके खानदान के लोगो ने लोगो को मुत्तहिद करके उनसे जंग की और उन्हें शिकस्त दी उसके बाद से आपके खानदान में सालार का लफ्ज़ जुड़ने लगा।इस जंग की कामयाबी के बाद आप तसव्वुफ़ की तरफ बढ़ने लगे और आपने हज़रत सैयद नियामतुल्लाह रहमतुल्लाह से बैत की और 14 साल तक रियाजत व इबादत की उसके बाद उन्होंने आपकी शादी अपनी बेटी शादी से ही कर दी।आप एक मोतबर आलिम और सूफी वली ए क़ामिल थे। शादी के बाद आपको एक औलाद हुई उसका नाम निजामुद्दीन रखा गया वो अपने मामू के पास रहने लगे।

आपके भाई निजामुद्दीन

आपके बड़े भाई निजामुद्दीन घोड़ो की बीमारियों के बारे में बहुत अच्छी पकड़ रखते थे ये बात हर जगह फैल गई क्योंकि उन दिनों घोड़ो को बहुत इज्जत दी जाती और उनके डॉक्टर नही पाए जाते

थे लेकिन आपके अंदर जब ये खासियत देखी गई वहां की सेना ने आपको अपने यहाँ नोकरी पर रख लिया आप का काम था घोड़ो की रखवाली करना उनकी देखभाल करना।

पानीपत में आमद

जब निजामुद्दीन को वहां की आर्मी ने अपने यहाँ रख लिया तो वो जहाँ जाते आप भी उनके साथ रहते एक दिन आर्मी घूमते घूमते हरियाणा के शहर पानीपत पहुंची तो ये यही रुक गए जब आपके वालिद और वालिदा को पता चला तो वो भी वहां से आपके पास पानीपत चले आये।और यही रहने लगे यही पर 1209 ईस्वी को हज़रत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह की विलादत हुई जिस वक्त आपकी विलादत हुई उस वक्त दिल्ली का बादशाह कुतबुद्दीन ऐबक था।

तालीम

इब्तिदाई(प्रारंभिक) तालीम के लिए बामे बहिश्त मदरसे में हुई।जहां अल्लामा सिराजुद्दीन दमिश्क़ी,अल्लामा रुकनुद्दीन साहब,अल्लामा सैयद मोइनुद्दीन इमरानी जैसे उस्तादो ने आपको तालीम दी।फिर उसी मदरसे में आपने पढाया पास ही कि मस्जिद क़ुव्वतुल इस्लाम मे बतौर ख़तीब(बयान करने

वाला)मुक़र्रर हुए।12 साल तक आप उस मस्जिद में बतौर खतीब व इमाम रहे।एक दिन आप बयान कर रहे थे तभी मजमे(सुनने वालों की भीड़) से एक शख्श बोला कि ए सरफुद्दीन तुम जिस मकसद के लिए पैदा हुए हो वो काम भूल गये कबतक ये सब करते रहोगे ये सुनना था कि आप एक किनारे पर बेठ गये ।

क़ुव्वते अब्दाली का अता होना

आप जामा मस्जिद में एतिकाफ बैठ गए जिसके बाद आपको "क़ुव्वते अब्दाली"मनसब अता हुआ ये वो मनसब है जिसे हासिल करने के बाद इंसान के उपर जज़्ब तारी हो जाता है फिर आपने अपनी सारी किताबें उठाई और ले जाकर यमुना नदी में फेंक दी।फिर आपने रियाजते और मुशहिदा शुरू किया

बू अली शाह क्यों

आप ने मुशहिदा व मुजाहिदा करना शुरू किया आपको बू अली शाह कहा जाता है इसके पीछे दो रिवायात है।

1-एक बार आप 36 साल तक पानी मे खड़े रहे जब आप चिल्ला कर रहे थे आपकी पिंडली में मछली ने काटना शुरू कर दिया और गोश्त तक खा लिया था उसके बाद आपको हज़रत मुहम्मद

मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम की जियारत हुई आपने फ़रमाया ए सरफुद्दीन मांगो जो मांगना चाहते हो आपने फ़रमाया कि मुझे अली जैसा बना दो आपने फ़रमाया सरफुद्दीन अली इस दुनिया मे सिर्फ़ एक है दूसरा कोई नही फिर आपने कहा कि तो फिर बू अली ही बना दो आपने ये दुआ क़बूल फ़रमाई तबसे आप क़ो बू अली शाह क़लन्दर कहा जाने लगा|

2--दूसरी रिवायत में है कि आप दरिया ए करनाल में खड़े होकर चिल्ला काट रहे थे तभी ग़ैब से आवाज़ आई कि ए सरफुद्दीन तुम्हारा चिल्ला मुकम्मल हुआ अब तुम बाहर निकल आओ लेकिन आप वहीँ खड़े रहे जब एक बुजुर्ग ने आपको अपने हाथों से उठाया और उठाकर नदी के किनारे लाकर बिठाया आपने आँखे खोली और कहा कि तुम कौन हो और क्यो मेरे चिल्ले के बीच मे आ गए तो उन बुजुर्ग ने जवाब दिया कि दामादे मुस्तफा सैयदुल औलिया मोला अली अलैहिस्सलाम हूँ फिर उसी वाकिये के बाद से आपको बू अली शाह क़लन्दर कहा जाने लगा।जब मौला अली से आपको फेज़ मिला तो आपकी जुबान से निकल पड़ा

हैदरियम क़लन्दरम मस्तम

बन्दा ए मुर्तज़ा अली हस्तम

पेशवा ए तमाम रिंदानम

सगे पाए शेरे यज़दानम

अल्लाह अल्लाह ये शेर आज भी सूफिया की जमात में इश्क़ व अदब के साथ पढा जाता है।आपको सिलसिला ए ओवेशिया का अज़ीम फर्द माना जाता है।

सिलसिला ए ओवेशिया

ये वो सिलसिला है जहाँ इंसान बजाहिर मुलाकात के बगैर फ़ैज़ हासिल करता है और फेज़ हासिल करने वाली जात से रूहानी मुलाकात हुई हो।

(नोट-) हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम के जमाने में एक सहाबीए रसूल हज़रत ओवेस करनी रजिअल्लाहो तआला अन्हू हुए हैं आपने कभी रसूल ए खुदा का बाजहिर दीदार नही किया था लेकिन आपने रूहानी दीदार किया हुआ था और आपको रसूल ए खुदा की मुबारक दाढी के बारे में हज़रत

उमर फारूक ए आज़म रजिअल्लाहो तआला अन्हू से ज्यादा मालूम था आपने कभी नबी क़रीम का बाजहिर दीदार नहीं किया फिर भी आपको सहाबा होना का मर्तबा हासिल है यही है सिलसिला ए ओवेशिया|

लाल शहबाज़ क़लन्दर से मुलाकात

जब बात कलंदरों की हो और ये नाम अगर न आये तो शायद बात ही न पूरी हो।हज़रत लाल शहबाज़ क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह की मुलाकात आपसे हुई उस वक़्त आप मदरसा बामे बहिश्त में तालीम हासिल कर रहे थे।आप लाल शाहबाज़ क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह से 32 साल छोटे हैं।

(नोट--) अक्सर कहानियों या किस्सों में ये देखने को मिलता है आप और लाल शहबाज़ कलंदर रहमतुल्लाह अलैह में आपस मे लड़ाई होती तो वो कहते ये मेरा इलाक़ा है यहां मत आना इस तरह की बातें झूठी है सच तो ये की जब हज़रत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह मदरसे में तालिब इल्म की हैसियत से सिर्फ **ज़ाहिरी** तालीम हासिल कर रहे थे तब उस वक़्त हज़रत

लाल शहबाज़ क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह कलंदर के मर्तबे पर फ़ायज थे अल्लाह अल्लाह इन दोनों हस्तियों का मक़ाम अपनी जगह है दोनो कलन्दर है दोनो हक़ पर है दोनो अल्लाह और उसके रसूल के प्यारे है हमे और आपको हक़ नही बनता की इनकी शान में मनगढ़ंत किस्से बनाकर जाने अनजाने में इनकी बेअदबी व तौहीन करे)

सैयद शमशुद्दीन तुर्क पानीपती से मुलाकात

सैयद शमशुद्दीन तुर्क क़लन्दर पानीपती रहमतुल्लाह अलैह से भी आपकी मुलाकात हुई है।सैयद शमशुद्दीन तुर्क क़लन्दर पानीपती रहमतुल्लाह अलैह हज़रत सैयद मख्दूम अलाउद्दीन अली अहमद साबिर क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा है।आप दोनों एक दूसरे की ताजीम करते आपके बाद आपके मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत जलालुद्दीन क़बीरुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह ने इन दोनों हस्तियों से फेज़ लिया है लेकिन आपको खिलाफत हज़रत सैयद शमशुद्दीन तुर्क पानीपती रहमतुल्लाह अलैह से हासिल हुई।

(नोट--) यहाँ भी गौर करें कि लोगो को ये सब बातेँ बताई गई कि जब हज़रत सैयद शमसुद्दीन तुर्क क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह पानीपत आये तो आपने वहां से जाने के लिए कहा।

अरे जाहिलो/नादानों ज़रा गौर करो एक तो दोनों कलन्दर और ऊपर से **वो मौला ए काएनात के बेटे** की हज़रत इमाम ए आज़म अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह का **ख़ून क्या** गुस्ताखी कर सकता है।अरे नादान इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह ने इमाम जाफर ए सादिक **रज़िअल्लाहु अन्हू** को अपना इमाम व पेशवा माना है तो इन सबमनगढ़ंत बातों में न आये निस्बत जरूर देखा करे क़लन्दर वो होता है जो मौला अली अलैहिस्सलाम का दीवाना हो जाये तो क्या अली अलैहिस्सलाम का दीवाना अली के बेटे सैयद शमशुद्दीन तुर्क क़लन्दर पानीपती रहमतुल्लाह अलैह की शान में ऐसी गुस्ताखी करेंगे नही कभी नही दोनो क़लन्दर हक़ पर थे है और रहेंगे।

अमीर खुसरो अलैहिर्रहमा से मुलाकात

सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी आपके मुरीद थे लेकिन आपके पास नज़राने व तोहफे भेजने से डरते थे क्योंकि आपके जलाल की हद उन्हें मालूम थी और डरते थे कहीं इंकार न हो जाये या आपक़ी शान में कोई बेअदबी न हो जाये एक बार सुल्तान को आपकी

बारगाह में कुछ नज़राने भेजने की ख्वाहिश हुई तो वो निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह के पास गए और कहा हज़रत कुछ कीजिये मुझे अपने मुर्शिद सैयदना सरफुद्दीन बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह के पास नज़राने और सलाम को भेजना है सुल्तान की ये बातें सुनकर ख्वाजा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह ने अपने मुरीद तूती ए हिन्द हज़रत अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह को बुलाया और कहा तुम्हे पानीपत में एक क़लन्दर के पास जाना है लेकिन हाँ ये कोई आम हस्ती नही हैं इनके पास जब जाना तो आज़िज़ी और इन्किसारी दिखाना और नज़रें नीची किये हुए खड़े रहना और कुछ बोलना मत वो जो कहेंगे तुम करते जाना ये नसीहते करने के बाद आपने उन्हें उनके दरबार मे जाने की इजाजत दी।

अज़ीज़ों ध्यान दो आप के दरबार मे जाने से पहले इतनी नसीहतें दी गई लेकिन गौर करो कि आपके दरबार मे जाने वाला शख्श भी कोई आम मुखबिर या दरबारी नही बल्कि तसव्वुफ़ के आला दर्ज़े पर फ़ायज़ वक़्त के वली ए क़ामिल हज़रत अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह जैसी शख्सियत का हाल जब आपके सामने ये था तो आम इंसान की बात ही क्या--?यहीं से पता चलता हज़रत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह की शान व मर्तबा का।

फिर जब अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह वहां पहुंचे तो उनको अंदर ले जाया गया आपने दश्तपोशी(हाथ चूमना)किये और हाथ बांधे खड़े रहे ।आपने कहा तुम्ही खुसरो हो उन्होंने कहा हां ।आपने फ़रमाया कुछ सुनाओ बहुत सुना है तुम्हारे बारे में आपने कलाम पेश किया वो खुश हुए और दुआएं दी उसके बाद हज़रत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह ने अपना कलाम सुनाया तो अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अलैह रोने लगे आपने पूछा क्या हुआ खुसरो

"कुछ समझ मे नही आया इसलिए रो रहे हो या कुछ समझ गए इसलिए रो रहे हो"

सवाल सुनकर तसव्वुफ़ के फ़र्ज़ को अदा करते हुए उन्होंने जवाब दिया नही हुज़ूर कुछ समझ मे नही आया इसलिए रो रहा हूँ।फिर आप तीन दिन मेहमान रहे।

(नोट--) ये आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का फरमान ए मुबारक है कि किसी महमान की महमान नवाज़ी सिर्फ तीन दिन तक लाज़िम है उसके बाद आप पर डिपेंड करता है आप महमान से कैसे पेश आते हैं-?

फिर आपने सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी को एक खत लिखा और कहा जाकर इसे हमारे मुरीद सुल्तान को दे देना जिसमे उनके जुमले थे

"ए दिल्ली के कोतवाल अलाउद्दीन तुझे याद रखना चाहिए अल्लाह के बन्दों की खिदमत तुझ पर लाज़िम है तू ये नज़राने मेरे यहां न भेजा कर बल्कि उन ज़रुरत मन्दो में तक़सीम कर दिया कर जिन्हें इसकी सख़्त ज़रूरत है"

जब ये खत दरबार के वजीर ने पढ़कर सुनाया तो वहां बैठे मंत्रियों और सलाहकारों ने कहा ये केसा क़लन्दर है बादशाह का नाम अलक़ाब ओ अदब के साथ लिखने के बजाय मुकम्मल नाम तक नही लिखा ये सुनकर अलाउद्दीन खिलजी ने मुस्कुराते हुए आफरीन कहा और बोले नादानो उनकी हज़ार महरबानी है।

अज़ीज़ों यही तो क़लन्दर होता है जो किसी को खातिर में नही लाता वो सबकुछ भूल जाते हैं सिर्फ खुदा की जात याद रहती है।

क़रामते

क़रामते तो आपकी बेशुमार हैं।

एक दिन आप पानीपत के बाज़ार में खड़े थे वही एक आदमी भी मुंह पर कपड़ा लगाए कुछ दूरी पर खड़ा था और बड़े ही फिक्र में

मालूम होता था।आपने उसे आवाज़ दी ए अमर सिंह ये सुनकर वो हैरत में पड़ गया कि उसे तो यहां कोई जानता भी नही है आखिर ये कौन हैं जब उसकी नज़र आप पड़ पड़ी तो आपके पास आया और कहने लगा बाबा आपको मेरा नाम केसे मालूम है जबकि मेने आपको पहले क़भी नहीं देखा है आपने फ़रमाया कि में तुझे और तेरे बाप दादा को भी जानता हूँ ये सारी ज़मीन तेरी है लेकिन बादशाह ने हमला करके क़ब्ज़ा कर लिया था अब तुम अपनी मां के साथ सहारनपुर में रहते हो।ये सुनकर वो कहने लगा हज़रत ये सब आपको कैसे पता है आपने कहा ये सब छोड़ और चल कलमा पढ़ तुझसे मुझको वफ़ा की खुशबू आती है फिर उसने कहा हुजूर एक बार माँ की इजाजत ले लूँ बस फिर कलमा पढ़ लेता हूँ।उसके बाद वो भागते भागते घर पहुंचा तो वहां का माज़रा देखकर उसके पांव के नीचे से ज़मीन खिसक गई क्योंकि आप वहाँ पहले से ही मोजूद थे उसके बाद उसने मां से इजाजत ली और कलमा पढ़कर इस्लाम मे दाखिला लिया जिसके बाद आपने सुल्तान क़ो खत लिखकर भेजा कि ये सारी ज़मीन आपके मुरीद की हैं सुल्तान ने फौरन उसकी जमीन को छोड़ दिया।

एक बद अक़ीदह मुफ्ती

अक्सर इल्म के घमण्ड में आकर उलेमाओ ने वलियों/फकीरों/सूफियों/दीवानो/आशिको/ पर फतवे लगाए हैं लेकिन हर बार हार इन्ही की हुई है क्योंकि अगर कोई तसव्वुफ़ का असल सूफी है तो फिर उसके आगे उलेमा टिक नही सकता ये आज का मामला नही बल्कि हज़ारो सालो की तारीख रही है।

ऐसे ही एक बार आप पर शदीद जज़्ब तारी हो गया जिसके बिना पर शरीयत की पाबंदी में कमी आने लगी यहाँ तक नमाज़ भी आपकी तर्क होने लगी जब लोगो ने आपका ये हाल देखा तो उस वक़्त के बड़े मोतबर आलिम मुफ्ती जियाउद्दीन सियाही आपकी ख़िदमत में पहुचे और कहने लगे ये क्या क़लन्दर साहब नमाज़ क्यों नही अदा कर रहे हो--? आपने जवाब देते हुए कहा बे ऐब जात सिर्फ अल्लाह की अल्लाह बस बाकी हवस मुफ्ती साहब ने जवाब दिया ये सब ठीक है लेकिन नमाज़ माफ नही आपने कहा मुझ पर नमाज़ माफ हुई ये सुनकर मुफ्ती साहब को गुस्सा आ गया और कहने लगे नही नमाज़ तो पढ़नी ही पढ़ेगी।आपने कहा ठीक है वज़ू की तैयारी करो वो खुश हुआ उसने वजु किया आप ने कहा मुफ्ती साहब नमाज़ शुरू करो उसने इमामत की आपने मुक़तदी बने नमाज़ शुरू हुई जब मुफ्ती ने सलाम फेरा तो आप फरमाने लगे

"एक घोड़ी है उसने एक बच्चा दिया है और वो बच्चा ऐसी जगह पर है जहां पर गन्दम रखने के लिए कुंआ के आकार का गड्ढा है और मुफ्ती साहब को पूरी नमाज़ में सिर्फ यही डर सता रहा था कि कहीं वो घोड़ी का बच्चा उस कुंए न गिर जाए"

ये सुनकर मुफ्ती साहब शर्मिंदा हुए आपके क़दमो में गिर गए और माफी मांगने लगे और कहा हां हुज़ूर में यही सब सोच रहा था!

बाराती गायब हुए

कभी कभी आप पर जलाल की ऐसी कैफ़ियत तारी होती कि उस वक़्त आपकी नज़र जिस चीज़ पर पड़ती वो जल जाती।एक बार आप अपने हुजरे में बैठे इबादत कर रहे थे उसी रास्ते से एक बारात जा रही थी जिसमें बाराती आपस मे मस्त थे और काफी शोर शराबा हो रहा था जिससे आपक़ी इबादत में खलल हुआ तो आपको जलाल आया आपने हुजरे से निकलकर एक नज़र बारात पर डाली तो सारे के सारे बाराती गायब हो गए उधर दुल्हन के घर मे वक़्त पर बारात ना आने की बात से सभी परेशान थे और फिर जब कुछ वक्त और बीता फिर लोगो ने तलाश शुरू की क्योंकि बारात आने की खबर उन्हें लोग दे रहे थे लेकिन बारात कहाँ चली गई ये किसी को मालूम नही था तभी तलाश

करते करते उन्हें एक बुजुर्ग मिले लोगो ने उनसे सारा माजरा सुनाया तो सुनते ही उन्होंने कहा गज़ब हुआ जाओ बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह के पास लोग सुनते ही आप के पास आये शाम का वक़्त था आप एक तालाब के किनारे बैठे लहरों को ध्यान से देख रहे थे उतने में कुछ शख़्स आपके पास आये और कहा हुज़ूर हम पर रहम करे हुजूर हमे माफ करे आपने कहा ठीक है लेकिन तुमको तीन मन खाना पकवाना पड़ेगा उन लोगो ने तीन मन खाना पकवा**या** आपने उस खाने को

गरीबो/यतीमो/बेसहारो में तक़सीम कर दिया फिर एक नज़र आसमान की तरफ की उधर दसूरी तरफ से फिर से बारातियों का शोर सुनाई देने लगा उन लोगो ने आपका शुक्रिया अदा किया और माफी मांगते हुए अपने घर चले गए।

किताबें

आपने बहुत सी किताबे लिखी हैं।जिनमे दो बहुत मोतबर किताबें यूँ हैं

1-दीवाने बू अली शाह क़लन्दर

2--हुकुमनामा सरफुद्दीन

क़लन्दर कौन होता है--?

लफ्ज़ ए क़लन्दर आप सबने पहले भी सुना है इन्शाल्लाह तआला मेरी अगली किताब "तसव्वुफ़ ओर सूफ़ीज़्म" में इन अलक़ाबो और दरज़ात के मायने तफसील से तहरीर होंगे खैर यहाँ आसान और मुख्तसर वक़्त में समझे।

1--क़लन्दर वो होता है जो हर वक़्त अल्लाह अल्लाह का विर्द करता हो।

2-- क़लन्दर वो होता है जो किसी को खातिर में नही लाता।

3--कलन्दर वो होता है जो अल्लाह के अलावा सबकुछ भूल जाता हो।

4-- क़लन्दर वो है जो डायरेक्ट मोलाए क़ायनात से रूहानी निस्बत रखता है

5--शाह नियामतुल्लाह अलैहिर्रहमा ने अपनी किताब रिसाला क़लन्दरिया में लिखा है कि सूफी जब तसव्वुफ़ की इंतिहा पर पहुंच जाता है तो वो क़लन्दर बन जाता है।

6--सरकार बन्दानवाज़ गेसुदराज़ रहमतुल्लाह अलैह फरमाते है

ज़मीनों आसमान हर दो शरीफंद
क़लन्दर दनी हर दो मक़ामे आस्त

1324 ईस्वी को आपने बजाहिर इस दुनिया ए फानी को अलविदा कहा लेकिन तसव्वुफ़ के जानकार और पैरोकार आपका अदब व ज़िक्र ताक़यामत तक करते रहेंगे आपका आस्ताना ए आलिया पानीपत मे है जिसकी तामीर सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक ने कराई थी जहाँ 9 से 12 शव्वाल तक आपका उर्स ए पाक मनाया जाता है।

मख्दूम अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कलियरी अलैहिर्रहमा

विलादत, नाम,नसब

आपकी विलादत 1196 ईस्वी में अफगानिस्तान के शहर हिरात में हुई।आपके वालिद का नाम सैयद अब्दुर्रहीम जीलानी अलैहिर्रहमा और वालिदा का नाम मख्दूमा हाजिरा है।

नाम

आपका नाम अलाउद्दीन अली अहमद था।बाद मे मुर्शिद ने आपके सब्र की इंतेहा को देखकर साबिर का लक़ब दिया।

नसब

आप वालिद की तरफ़ से हुसैनी सैयद है और मां की तरफ से फारूकी शेख़ हैं ।यानी कि आप के वालिद सैयदुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा अलैहिस्सलाम की औलाद में से हैं और आपकी वालिदा खलीफ़ा ए दोम हज़रत उमर फ़ारूक़ ए आज़म रजिअल्लाहू अन्हु की औलाद में से है।आप के वालिद सुल्तानुल औलिया शेख़ अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह की नस्ल से हैं यानी आपको जीलानी सैयद भी कहा जा सकता है।

वालिद

आपके वालिद बगदाद से हिरात पहुंचे तो एक गली से गुजर रहे थे तभी दरवाज़े पर एक बुजुर्ग खड़े थे जिनका नाम शेख जमालुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह था।उन्होंने आपके वालिद को देखकर कहा सैयद ज़ादे रुको कहाँ जा रहे हो--इधर मेरे घर मे आओ यही तुम्हारी मंज़िल है? उन बुजुर्ग की जुबान से ये अल्फ़ाज़ सुनकर वो हैरान रह गए और उनके कहने से उनके घर तशरीफ़ ले गए जहाँ बुजुर्ग ने उनको मुरीद किया और तरबियत शुरू क़र दी।जब शेख़ जमालुद्दीन अलैहिर्रहमा ने आपके वालिद को मंज़िल पर पहुंचा दिया तो अपनी बेटी हाजिरा का निकाह उनसे कर दिया।उन बुजुर्ग के तीन बेटे थे।

1__शेख़ एजाजुद्दीन अलैहिर्रहमा

2__शेख फरीदुद्दीन गंज शकर अलैहिर्रहमा

3__शेख़ नजीबुद्दीन अलैहिर्रहमा

जब उनकी शादी मुर्शिद की बेटी से हुई तो वहीं रहने लगे कुछ अरसे बाद अल्लाह ने एक बेटा अता किया जो आगे चलकर सैयद मख्दूम अलाउद्दीन अली अहमद साबिर क़लन्दर कलियरी रहमतुल्लाह अलैह के नाम से सारे आलम में मशहूर हुए।

विलादत की अनमोल दास्तां

आप विलादत से ही वली ए क़ामिल थे।जिसका अंदाज़ा आपकी मुकम्मल सवाने हयात को पढ़ने के बाद **लोगों** को बहुत आसानी से हो जाता है आपके तक़वे और तस्सवुफ से आपका दर्जा समझ मे आता है।आप पैदा हुए तो रमज़ान में आपने मां का दूध नही पिया।आप एक दिन दूध पीते और रोज एक दिन रोज़ा रखते।ये आपके बचपन की सबसे बड़ी निशानी है कि आप अल्लाह के यहाँ कितने पसंदीदा थे।

ख़्वाब और नाम

जब आप मां के पेट मे थे तो आपकी मां हाजिरा बीबी ने दो ख्वाब देखे एक मे ताजदारे मदीना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम और दूसरे ख्वाब में सैयदुल औलिया ताजदारे हल अता मुश्किल कुशा शेरे खुदा हज़रत अली क़रमल्लाहु वज़हुल करीम का ख्वाब आया और आपको बेटे की बशारत दी जिसके बाद आपकी मां ने आपका नाम पहले ख्वाब की बुनियाद पर अहमद और दूसरे ख्वाब की बुनियाद पर अली रखा जबकी आपके वालिद आपको अलाउद्दीन कहते थे।

अपने मुर्शिद व मामू के पास आमद

जब आपकी उम्र 5 साल हुई तो आप के वालिद का इंतेक़ाल हो गया उसके बाद आप अपने ननिहाल आ गए फिर जब आपकी उम्र 9 साल हुई तो आप अपनी वालिदा के साथ अपने मामू जान हज़रत मख्दूम शेख़ बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह के पास गए।

आप अपनी वालिदा के साथ वही रहने लगे जब 2 साल मुक़म्मल हुए तो आपकी उम्र 11 साल थी।2 साल में आपने वो तालीम हासिल कर ली जो आम बच्चें 7 साल में नही हासिल कर पाते हैं।फिर जब 2 साल हो गए तो आपकी वालिदा ने कहा देखो फरीद ये मेरा बेटा आपके पास रहेगा इसकी तरबियत की जिम्मेदारी अब तुम्हारी है आज से ये तुम्हारे ज़िम्मे है और मेरे बेटे की देखभाल करना भूखा मत रहने देना बाबा फरीद रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी बहन को तसल्ली देने के लिए कहा आओ बेटा साबिर मेरे साथ आओ आप अपनी वालिदा और मामू के साथ चल पड़े जहाँ लंगर तकसीम होता था वहाँ जाकर वो रुके और फ़रमाया देखो बहन आज से इनकी ड्यूटी लँगर तक़सीम करने की लगा दी गई जब इतना लँगर रोज़ तक़सीम होता है तो ये खुद भी खा लेंगे आपने कहा बेटे आज से तुम इसी मिशन पर

रहना।सूफिया और फुकहा को खाना खिलाना इतना कहकर वो चले गए आपकी वालिदा भी अपने घर चली आई।

(अज़ीज़ों एक बात जरूर ध्यान में रखना है कि आप इस उम्र में भी आलमे इस्तेग्राक में रहते थे यानी जब आपकी उम्र 11 साल थी तब भी आप आलमे इस्तेग्राक मे रहते और कभी कभी आप पर जज़्ब व कैफ़ियत भी तारी हो जाया करती थी लिहाज़ा हमे ये नही समझना है कि जब आप कलियर गए हैं तब आपसे क़रामत सादिर हुई या आप आलमे इस्तेग्राक में गए बल्कि आप बचपन से ही तसव्वुफ़ के आला मनसब पर फ़ायज थे और मादरजात वली हैं।जिनकी विलादत की बशारत खुद सैयदुल अम्बिया और सैयदुल औलिया इमामुल औलिया आकर दे उस हस्ती के बारे में आम इंसान के अक्ल के घोड़े भी वो दूरी नही तय कर सकते हैं कि उसकी शान का अंदाज़ा लगा पाए।)

अली अहमद से साबिर बन गए

आपके मुर्शिद ने आपको लँगर तक़सीम करने की ड्यूटी लगा दी थी अब अगर आम इंसान का ज़हन हो तो ये जरूर सोचेगा की जब सारा लँगर आपके पास हो तो आप भूखे कैसे रहेंगे।अज़ीज़ों यही तो होते हैं क़लन्दर जिन्हें कोई आज़ तक समझ ही नही पाया।आपने 12 साल तक खाना नही खाया जब कभी आपको

छटवे सातवें दिन भूख लगती तो आप जंगलो में निकल जाते और गूलर खाते फिर वापिस ख़ानक़ाह आते और अपने फ़र्ज़ को पूरा करने में लग जाते।जब आपकी वालिदा 12 साल बाद ख़ानक़ाह आई तो आपको देखकर दंग रह गई क्योंकि आप के बदन पर गोश्त का नामोनिशान नही था सिर्फ हड्डियां ही हड्डियां ये माजरा देखकर उनके होश उड़ गए।ये देखकर गुस्से में अपने भाई के पास गई और कहा फरीद मेने तुमसे क्या कहा था कि मेरे बेटो को भूखा मत रखना बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह ये सुनकर आपके पास दौड़े आये और कहा बेटा साबिर तुम्हारी ये हालत इस तरह क्यों है क्या तुमने 12 साल तक कुछ न खाया--?

आपने जवाब दिया मुर्शिद आपने सिर्फ यही कहा था कि बेटा सूफिया और फुकहा को खाना खिलाना जबकि आपने ये नही कहा था कि बेटा तुम भी खा लेना और में अपने मुर्शिद की इज़ाज़त के बगैर केसे खा लेता ये अताअत फ़रमाबरदारी सब्र की इंतिहा देखकर बाबा फरीद रहमतुल्लाह अलैह बोल पड़े की मेरा अली अहमद तो साबिर है और ये लक़ब इतना मशहूर हुआ की आजतक लोग आपको इसी नाम से जानते हैं।

आपकी शादी

अक्सर हम किस्सों में और **लोगों** के मुंह से ये सुनते चले आ रहे हैं कि आप की शादी के पहली ही रात जैसे ही आपकी नजर अपनी शरीक ए हयात पर पड़ी वो जल कर खाक हो गई जबकि ऐसा कुछ भी नही है आपक़ी बीवी शादी के कई साल तक जिंदा रही तसव्वुफ की आला दर्जे की किताब सियरुल आरफ़ीन,अखबारुल अख़्यार,फवाएदुल फवाएद में जैसी मोतबर किताबो के जरिये ये अहम जानकारी निकल कर सामने आती है कि शादी के बाद कई सालों तक वो ज़िंदा थी एक तो खुद वलीया था उनके वालिद अपने वक़्त के कुतब,गौस,ख्वाज़ा, मख्दूम, शेख़ थे दादा भी वली ए क़ामिल थे तो वो भी वलीया थी

आपकी वालिदा ने अपने भाई से कहा कि मेरे बेटे की शादी अपनी बेटी से कर दीजिए ये सुनकर बाबा फरीद अलैहिर्रहमा ने कहा बहन तुम नही समझती हो हमारा साबिर फना फिल्लाह के मक़ाम पर फ़ायज है वहाँ इसे दूसरा कोई नही चाहिए इसे **अ**ब किसी औऱ की ज़रूरत नही है वो अपने इश्क़ में किसी दूसरे को शामिल नही कर सकता है फिर भी माँ ने उनकी एक न सुनी और आखिरकार शादी हो गई।आपकी तीन बेटियां थी पहली बेटी बीबी मस्तूरा,बीबी फ़ातिमा,बीबी शरीफ़ा।जिनमे बीबी फ़ातिमा की शादी शेख़ बदरुद्दीन इस्हाक़ अलैहिर्रहमा से हुई और

आपकी शादी बीबी शरीफ़ा से हुई।निकाह के बाद जब आप कमरे में गए तो आप रो रहे थे आपकी आवाज सुनकर बाबा फरीद अलैहिर्रहमा दौड़ कर आये और कहा क्या हुआ बेटे रो क्यों रहे हो आपने फ़रमाया ए मुर्शिद आप तो जानते हैं कि अल्लाह ने मुझे दुनिया से अलग कर दिया है औलिया अल्लाह के सिवा मुझे कोई मिल नही सकता मे उसके इश्क़ में दूसरा यार नही ला सकता मुझे किसी दूसरे की जरूरत नही है ये कहकर आप बाहर चले आये उस दिन के बाद से बीबी शरीफ़ा कमरे मे ही रहती एतिकाफ में वक़्त गुजरता अल्लाह की इबादत में मशगूल रहती और उन्होंने ऐसे ज़िंदगी जी है जैसे कि उनकी शादी ही नही हुई हो।

ख्वाज़ा बाख्तियार काकी अलैहिर्रहमा का ख्वाब

एक दिन शेख़ फरीद रहमतुल्लाह अलैह ने ख्वाब देखा कि ख्वाज़ा कुतबुद्दीन बाख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह आये हैं और आपका और सैयदना मख्दूम साबिर ए पाक रहमतुल्लाह अलैह का हाथ पकड़ा और ले जाकर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के सामने पेश कर दिया आक़ा अलैहिस्सलाम ने मख्दूम साबिर ए पाक को अपने पास बुलाया और कहा ये अल्लाह का वली और महबूब है।इसके बाद जब बाबा फरीद अलैहिर्रहमा ख्वाब से उठे तो आपने सुबह सारे

मुरीदों को इकट्ठा करते हुए एलान कर दिया कि साबिर जाओ आज से हमने कलियर की विलायत तुम्हारे सुपुर्द कर दी।

कलियर शरीफ में आमद और शेख जमालुद्दीन अलैहिर्रहमा से मुलाकात

जब मुर्शिद ने कलियर जाने की इजाजत दी तो कहा सुनो दिल्ली में मेरे मुरीद शेख़ जमालुद्दीन अलैहिर्रहमा रहते हैं उनसे मुलाकात करके दुआएँ लेते हुए जाना।आपने मुर्शिद के हुक्म से शेख से मुलाकात की और उसके बाद कलियर की और निकल पड़े।

(नोट--) आम तौर पर ये सुना और पढ़ा जाता है कि जब आप दिल्ली पहुंचे तो आपने वो लेटर दिखाया तो शेख़ जमालुद्दीन ने वो कागज़ फाड़ दिया और आपने कहा कि आज से तेरा सिलसिला भी चाक हो गया अज़ीजो यहाँ ध्यान दो ऐसा कुछ भी नही है बल्कि आप सब खुद सोचो की क्या बाबा फरीद गंज शकर अलैहिर्रहमा ने ये कहा था कि उनसे पढ़वा लेना वो जहाँ बताये वहां चले जाना। क्या उन्होंने जाते वक्त अपने भांजे व ख़लीफ़ा को

ये नही बताया था क्या शेख़ जमालुद्दीन अलैहिर्रहमा अपने मुर्शिद के हाथों से लिखी गई तहरीर को फाड़ सकते हैं मियाँ वो आज के मुरीद नही है वो उस दौर के मुरीद थे जैसे ही उनको पता लगा मुर्शिद ने लिखा है वो चूमने लगे ये वही जमालुद्दीन हाशमी अलैहिर्रहमा है जिनके बारे में हज़रत शेख बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी रहमतुल्लाह अलैह कहा करते थे कि फरीद मेरे सारे मुरीद ले लो बस हमे जमालुद्दीन हाशमी दे दो अल्लाह अल्लाह ये अल्लाह के वो महबूब दोस्त हैं जिनके बारे में हमे ऐसे जुमले हरगिज़ नही इस्तेमाल करना चाहिए कि जिससे उनकी शान में तोहीन होती हो क्योंकि तसव्वुफ़ में अदब और इश्क़ इन दोनों का मक़ाम आला है। एक दूसरे से बहुत प्यार से मिले उसके बाद आप कलियर की तरफ रवाना हो गए)

कलियर में आमद

आप और पीर भाई अलीमुल्लाह अब्दाल एक साथ कलियर पहुंचे जहां एक बूढ़ी औरत के घर पर आप रुके।उस बूढ़ी औरत का नाम गुलज़ारी था उसने आप की बहुत खातिरदारी की आपको सर आंखों पर रखा।वही एक जामा मस्जिद थी जिसके क़ाज़ी का नाम तबर्रूक था और वहां का सबसे रईस आदमी जिसका नाम कयामुद्दीन था।क़ाज़ी उसी का नोकर बना हुआ था आप उसके पास गए आपने कहा सुनो मेरे पीरो मुर्शिद बाबा फरीद गंज

शकर रहमतुल्लाह अलैह ने मुझे कलियर की विलायत अता की है।ये सुनकर उसने कहा यहां ये सब नही चलता उसके बाद वो अपने मालिक कयामुद्दीन के पास गया और कहने लगा एक शख्श आया है और ऐसा ऐसा कहता है मुझे लगता है वो अब तुम्हारी जगह क़ब्ज़ा कर लेगा और प्रजा को हमारे खिलाफ़ भड़कायेगा।उसके बाद वो और साहूकार,जमींदार सबने एक होकर गरीबो को डराना धमकाना शुरू किया और कहा खबरदार किसी ने उसकी कोई मदद की तो।

दरसअल अज़ीज़ों वहां की जामा मस्जिद में भी भेदभाव था यानी अमीर अगली शफ में और गरीब बाहर नमाज़ पढ़ते थे अब जरा अंदाज़ा लगाओ कि जब मस्जिद जैसी पाक साफ जगहों पर भेदभाव होता हो तो आप खुद अंदाज़ा लगाए की मस्जिद के बाहर लोग केसे रहते होंगे,उस मस्जिद में अमीरी और गरीबी का फ़र्क़ था।आपने वहाँ तब्लीग करना शुरू कर दीं लोगो को समझाने लगे दीन की असल बताने लगें ये देखकर वो क़ाज़ी तबर्रूक बहुत ज्यादा डर गया था और वो कयामुद्दीन को भड़काने का काम करता रहा।

आपके खत मुर्शिद के नाम

जब जमीदारो और साहूकारों ने मिलकर आपको सताना और लोगो को डराना शुरू किया तो लोग आपसे दूर होते गए और

आखिर में सिर्फ 5 बन्दे बचे।उसके बाद आपने पहला खत लिखा कि ये क़ाज़ी बहुत शरारत करता है और फिर जब खत का जवाब आया तो आपने वो क़ाज़ी को दे दिया क़ाज़ी ने खत को पढ़कर फाड़ के फेंक दिया।फिर आपने दूसरा खत लिखा और पहला वाला खत जोड़कर भेजा और कहा देखो मुर्शिद उन्होंने आपका पहला खत फाड़कर फेंक दिया है तो दूसरा खत आपने कयामुद्दीन के नाम लिखा जिसका जवाब आने के बाद आप कयामुद्दीन के पास गए वो खत पढ़कर सुनाया उतने में वो क़ाज़ी तबर्रूक ने कहा हुज़ूर इनकी बातों से डरिये मत ये रोज़ रोज़ ऐसे ही खत का खेल खेल रहे हैं।उसके बाद आपने तीसरा ख़त लिखा फिर जाकर मुर्शिद बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह ने जलाल में आकर कहा कहा बेटा साबिर हमने कलियर तुम्हारे ज़िम्मे कर दिया है ये तुम्हारी बकरी है तुम जैसे चाहो गोश्त खाओ या दूध दूहो.

क़लन्दर का जलाल ,सब हुए बेहाल

मुर्शिद के तीसरे ख़त के जवाब ने ये लाइसेंस दे दिया कि ए साबिर अब ये हमने तुम्हारे ज़िम्मे कर दिया तुम्हे जो अच्छा लगे तुम करो।जुमा का दिन था आप मस्जिद में बैठे थे क़ाज़ी के कुछ आदमी आये कहा उठो वहां से वो क़ाज़ी की जगह है आपने फ़रमाया मे क़ुतुब हूँ और क़ुतुब का मक़ाम क़ाज़ी से बड़ा होता है

लेकिन उन्होंने आपकी कोई बात न सुनी और आपको बाहर कर दिया।आप बाहर खड़े हो गए फिर नमाज़ शुरू हुई जब वो सब नमाज़ी सजदे में गए तो उस वक़्त जलाल का आलम था आपने मस्जिद से कहा तू सज़दा क्यों नही करती आप का हुक्म पाते ही मस्जिद भी सजदे में चली गई और क़ाज़ी समेत सब उसी में दबकर मर गए।उसके बाद शहर में सूखा हुआ तरह तरह की वबाये फैलने लगीं बच्चे और औरते भूख और प्यास से मरने लगी हर तरफ आग की लपटें निकल रही थी सूफिया बयान फरमाते हैं कि 10 मुहर्रमुल हराम को 12 12 मील तक आग की लपटें निकल रही थीं जिस तरफ आप की नज़र उठ जाती वो इलाका जल जाता।

सारे शहर को आतिश कदा बना डाला
नज़र के सामने जो आ गया जला डाला

अल्लाहु अक़बर तारीख ये मंजर देख रही थी कलंदर के जलाल को आज न सिर्फ कलियर बल्कि सारा आलम देख रहा था।उसके बाद आप एक गूलर का पेड़ पकड़ कर खड़े हुए और आलमे इस्तेग्राक में चले गए और 12 साल का वक़्त बीत गया तो

आपके मुर्शिद ने अपने मुरीदों से मुखातिब होकर कहा तुममे से ऐसा कौन है जो मेरे साबिर को अफ्तार करा सके क्योंकि आपके जलाल को देखकर बड़े बड़े वली ए क़ामिल की नज़र झुक गई उसी मजमे से एक नोजवान जो की बहुत वक़्त पहले बाबा फरीद अलैहिर्रहमा के पास मुरीद बनने आया था लेकिन आपने कहा था तुम्हारा फेज़ हमारे पास नही है लेकिन वो नोजवान उसके बाद भी आपकी महफ़िल में बैठा रहता उसको देखकर आपने कहा हां हां तुम्हारा फेज़ मेरे साबिर के पास हे सिर्फ तुम्ही उसे इफ्तार क़रा सकते हो वो नोजवान लड़का क़ोई और नही बल्कि सैयद शमसुद्दीन अल्वी तुर्क क़लन्दर पानीपती रहमतुल्लाह अलैह थे।

सैयद शमसुद्दीन अल्वी पानीपती अलैहिर्रहमा की आमद

बाबा फ़रीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह ने कहा सुनो शमसुद्दीन ये तेल रख लो उसके जिस्म पर लगाना है और एक नसीहत दी कि यकायक मेरे साबिर के सामने मत जाना जब तक वो इजाजत न दे ये नसीहत देकर आपको रवाना किया जैसे ही आप कलियर पहुंचे तो दूर से आपको देखा और क़ुरआन क़रीम का दिल यानी सूरह यासीन की तिलावत शुरू कर दी एक तो आप खुद सादात घराने से ऊपर आपकी आवाज शानदार जिसे सुनकर मख्दूम साबिर ए पाक अलैहिर्रहमा ने अपनी आँखें

खोली और कहा पीछे खड़े होकर क़ुरआन क्यों पढ़ते हो आगे आकर सामने से क़ुरआन पढो।उसके बाद वो चुप हो गए आपको उन्होंने इशारे से उठाया और उठाकर दरख़्त के साये में लिटाया और क़ुरआन सुनाने लगे फिर आप रूक गए तो मख्दूम ने कहा रुक क्यों गए उन्होंने कहा मुझे पाक पटन वापिस जाना है अब बाद में सुनाऊंगा।जैसे ही पाक पटन का नाम सुना आप बहुत खुश हुए और कहा क्या तुम मेरे शेख़ के शहर से आये हो उन्होंने कहा हाँ उन्होने ही मुझे भेजा है आपने कहा मेरे शेख केसे हैं-?उन्होंने कहा ठीक हैं अगर आप मुझे अपने यहाँ रख लेते है तो में रुक जाता हूँ नही तो में पाक पटन जा रहा हूँ मख्दूम ने कहा नही आज से तुम यही रहोगे हमारे पास।उसके बाद उन्होंने गूलर तोड़ी और कहा हुज़ूर पहले आप खाए वरना जबतक आप न खाएंगे शमसुद्दीन भी न खाएगा।फिर मेरे मख्दूम साबिर ए पाक ने 12 साल बाद जाकर पहला लुकमा खाया है अल्लाह अल्लाह उसके बाद आपके जिस्म पर तेल लगाया।

में शेख़ हूँ

उधर बाबा फ़रीद अलैहिर्रहमा ने मुरीदो से कहा सुनो आज से में शेख़ हूँ,मुरीद कहने लगे हुज़ूर आप तो बहुत दिन से शेख़ हैं तो आज क्यों कह रहे हो आपने जवाब दिया हां में बहुत दिनों से शेख हूँ लेकिन आज मेरे साबिर ने मुझे अपनी जुबान से शेख़ कहा है

इसलिए में शेख हूँ और आपने कहा देखो मुरीदों मेरे साबिर को इतने बड़े मकाम पर फ़ायज होने के बाद भी अपने मुर्शिद को नही भूला ये कहकर वो रोने लगे।

मुर्शिद और मुरीद

आपने सैयद शमसुद्दीन तुर्क अल्वी पानीपती अलैहिर्रहमा से कहा पानी लाओ हमे वज़ू करना है और जब इशा की नमाज़ हो जाए तो तहज्जुद तक मेरे पीछे मत आना।फिर जब सुबह हुई तो वो आपके पास आये आप आलमे इस्तेग्राक से वापिस आए वजू किया तहज्जुद फिर फ़ज़र,फिर इशराक,फिर चाश्त पढी और फिर आलमे इस्तेग्राक में चले गए। शमसुद्दीन अल्वी ने घास काटकर दो झोंपड़ी बना दी एक आपके लिए और एक अपने लिए।फिर जैसे जैसे दिन गुजरता गया आपका आलमे इस्तेग्राक में जाना कम होता गया अब वो आपको तालीम देते ओर सिर्फ इशा के वक़्त ही इस्तेग्राक में जाते बाकी दिनों में आप अपने मुरीद व जानशीन सैयद शमसुद्दीन तुर्क अल्वी पानीपती रहमतुल्लाह अलैह को तरबियत और तालीम देते।जब कोई महमान दिल्ली से आने वाला होता तो आप कहते शमसुद्दीन आज

जरा नमक ज्यादा डाल देना क्योंकि आज हमारे भाई महबूबे इलाही के मरकज़ से कुछ लोग आ रहे हैं।

हसन क़व्वाल की हिन्द आमद

बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह के दरबार का एक क़व्वाल था जिसका नाम हसन क़व्वाल था एक दिन उसने बाबा से इजाजत लेकर उनके मुरीदों से मिलने हिन्द की तरफ निकल पड़ा।सबसे पहले वो दिल्ली ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह के पास आया तो वहां से खूब नज़राना मिला ये सोचकर उसने कहा चलो क़लियर चलते है वहां भी कुछ न कुछ मिलेगा।जब वो कलियर पहुंचा तो आप आलमे इस्तेग्राक में थे आपने फ़रमाया ए शमसुद्दीन ये हमारे शेख की ख़ानक़ाह से आये हैं इन्हें गूलर दे दो ये सुनकर वो हैरान रह गए और जब वापिस गए तो ख़ानक़ाह में सारे मुरीदीन और बाबा फरीद अलैहिर्रहमा के सामने हिन्द के सफर की दास्तान बताने लगे कि वहां से ये मिला वहां से ये मिला बाबा फरीद अलैहिर्रहमा ने कहा हसन मेरे साबिर ने क्या दिया है ये सुनकर हसन क़व्वाल ने कहा की आप हर वक़्त साबिर साबिर का विर्द करते हैं लेकिन वहां से सिर्फ गूलर मिली हे ये सुनकर बाबा फरीद गंज शकर अलैहिर्रहमा ने कहा लाओ वो गूलर मुझे दे दो आपने वो गूलर खुद बड़े प्यार से खाई और सबको बाँट दिया।

महफिले शमा के शौकीन

अहले तसव्वुफ़ में महफिले शमा का अपना मक़ाम है।इसकी अहमियत वही समझ सकता है जिसे तसव्वुफ़ की समझ होती है वरना आम इंसान या बे अमल मौलवी इसे नही समझ सकता है।आप महफिले शमा के बहुत शौकीन थे आप खुद आला दर्जे के शायर थे।कभी कभी तो आप आलमे इस्तेग्राक में भी क़व्वाली करने लगते थे।

इम रोज़ शाहे शाहा महमान सुद अस्त मारा

जिब्रील ब मलाइक दरबान सुद अस्त मारा

अहमद बहिश्त दोज़ख बर आशिकां हराम अस्त

ई जां रज़ाए जाना रिज़वान सुद अस्त मारा

वही दूसरे मौके पर आपने फ़रमाया

निगाहे उफतदे चूँ ब सिदरा साबिर

जे गर्मीए निगाहें मन सिदरा सोख्त

ये शायरी बयान कर रही है कि ये किसी क़लन्दर की ही जुबान से अदा हो सकती है आम इंसान का ज़हन वहां तक सोच भी नही सकता।

फना और बक़ा

आपने अपने मुरीद और ख़लीफ़ा सैयद शमसुद्दीन अल्वी तुर्क पानीपती रहमतुल्लाह अलैह से कहा जाओ अब तुम रोज़ी रोटी कमाओ और जब मेरा विसाल हो जाए तो कफ़न लेते आना खुशबू मत लाना वो फ़रिश्ते ले आएंगे और सिर्फ बैठे रहना न ग़ुस्ल देना न कफ़न पहनाना उन्होंने कहा मुर्शिद मुझे पता केसे चलेगा आपने कहा जब सबके चराग बुझ जाएंगे और तुम्हारा चराग जलता रहै तो समझ लेना कि तुम्हारे मुर्शिद का इंतेक़ाल हो गया है।वो चले आये उन्होंने फ़ौज में नोकरी कर ली एक दिन रात में बहुत जोर का तूफान आया बारिश शुरू हुई सबके खेमे का चराग बुझ गया लेकिन आपके खेमे का चराग़ जलता रहे आपने जब ये माजरा देखा तो समझ गए और सुबह कफ़न लेकर चलने लगे तो सोचा कि इतनी दूर कब पहुँचूंगा इतनी देर में आपका सर किसी चीज़ से टकराया आप ज़मीन पर गिर गए जब आँख खुली तो खुद को मुर्शिद की झोपड़ी के सामने पाया और देखा कि झोपड़ी के बाहर एक शेर बैठा है आपके उठने के बाद वो उठकर चला गया।आपने कफ़न अंदर ले जाकर रख दिया फ़िर

जब आपने देखा कि ग़ुस्ल हो चुका है और कफ़न में मुर्शिद का जिस्म ए अक़दस लिपट चुका है तो आपने नमाज़े जनाज़ा के लिए मुर्शिद के जनाज़े को मैदान में रखा तो देखा कि उस वक़्त वहां आपके सिवा क़ोई भी नही लेकिन कुछ ही देर में जब दुबारा सर पीछे की ओर घुमाया तो देखा औलिया अल्लाह की जमात से मैदान भर गया तभी एक घुड़सवार घोड़े पर चलकर आया और उसने नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ाई।जब वो वापिस जाने लगा तो आपने दौड़कर उसे रोक लिया कहा तुम कौन हो अपना नाम तो बताते जाओ वरना कल तारीख में जब मुझे लिखना पड़ा कि मेरे मुर्शिद के जनाजा की नमाज़ किसने पढ़ाई है तो में क्या लिखूंगा ये सुनने के बाद उन्होंने अपने चेहरे से नक़ाब हटाया चेहरा देखकर सैयद शमसुद्दीन अल्वी तुर्क पानीपती रहमतुल्लाह अलैह हैरान रह गए और बेहोश होकर गिर पड़े क्योंकि वो कोई और नही बल्कि खुद सैयदना मख्दूम अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कलियरी रहमतुल्लाह अलैह थे जिन्होंने अपने जनाज़े की नमाज़ खुद पढ़ाई थी अल्लाह अल्लाह ये होते है क़लन्दर जब हम और आप इनके मक़ाम तक नही पहुँच सकते हैं तो आक़ा अलैहिस्सलाम और मौलाए क़ायनात का मक़ाम और मर्तबा तो बस अल्लाह ही बहतर जानता है।अज़ीज़ों इनक़ी शान में हमे कुछ भी कहने से पहले इनकी सवानेह पढ़नी चाहिए कि आखिर कैसे इन्होंने इस्लाम को फैलाया है इस्लाम को बचाया है अपना सब कुछ

लुटाकर इन्होंने अल्लाह और उसके रसूल को राज़ी किया है यही वो महबूब है जिनके बारे में अल्लाह ने क़ुरआन क़रीम में कहा है कि बेशक अल्लाह के दोस्तो का न किसी चीज का ख़ौफ़ होता है न ग़म बेशक मेरे मख्दूम को किस चीज का गम ख़ौफ़ अल्लाह हम अबको नेक सालेह मोमिन बनने की तौफ़ीक़ अता करे।

हज़रत ख्वाजा शमसुद्दीन तुर्क पानीपती रहमतुल्लाह अलैह

विलादत, नाम,नसब

आपकी विलादत तकरीबन 630 हिजरी मानी जाती है आपकी विलादत तुर्किस्तान में हुई थी।

नाम

आपका पूरा नाम हज़रत शम्सुल अर्ज़ ख्वाजा सैयद शमसुद्दीन तुर्क अल्वी पानीपती क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह है।

नसब

आपका शजरा ए नसब इमामुल औलिया हज़रत अली करमल्लाहु वजहुल करीम से मिलता है आप अल्वी सादात हैं इसीलिए आपके नाम मे कहीं कहीं पर अल्वी लगा मिलता है आमतौर से आपके नाम से पहले शेख लगा रहता है।

तुर्क क्यों

आप की पैदाइश तुर्कीस्तान में हुई थी इसीलिए आपके नाम के साथ तुर्क लगा मिलता है जो कि आम व खास में बहुत मशहूर है।

तुर्क या तर्क

आमतौर पर सूफिया का एक तबका इसे तर्क भी पढ़ता है जिसके मायने होते हैं "त्याग" या छोड़ना अब अगर सैयदना ख्वाजा शमसुद्दीन तुर्क पानीपती रहमतुल्लाह अलैह की नमूना ए ज़िन्दगी पर गौर किया जाए तो मालूम होता है कि आपने भी अपनी सारी जिंदगी अल्लाह की राह में शरफ़ कर दी और अपने मुर्शिद मख्दूम अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कलियरी रहमतुल्लाह अलैह के तर्ज पर ज़िन्दग़ी गुजारी है आपने नफ़्स को कुचलकर रख दिया और दुनिया से दूरी बढ़ाई अक्सर आप भी आलमे इस्तेग्राक या जज़्ब की केफियत में रहते उसके बाद जो वक़्त मिलता ज़िक्रे इलाही में मशगूल हो जाते इसीलिए आप पर लफ़्ज़े तर्क भी सटीक बैठता है।

क़लन्दर

आपको क़लन्दर भी कहा जाता है और तसव्वुफ़ में क़लन्दर उसे कहते हैं जिसे अल्लाह के सिवा और कुछ भी न दिखाई दे जो यादे इलाही में इस क़दर मशगूल हो जाये कि उसे खुद की फ़िक्र न हो।यानी "अल्लाह बस बाकी हवस" वाली कैफियत में रहे और उसका रूहानी रिश्ता डायरेक्ट मौलाए क़ायनात से हो उस हस्ती को क़लन्दर कहा जाता है आपके मुर्शिद सैयदना अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कलियरी रहमतुल्लाह अलैह भी कलंदर के मर्तबे पर फ़ायज़ थे।

शमसुल अर्ज़

इसके मायने होते हैं ज़मीन का सूरज और ये लक़ब आपको आपके पीर मुर्शिद मख्दूम सैयद अलाउद्दीन अली अहमद साबिर क़लन्दर कलियरी चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह ने दिया है।इसीलिए आपके नाम से पहले शम्सुल अर्ज़ भी लिखा मिलता है।

तालीम और पाक पटन आमद

आपने बचपन ही से तालीम और तसव्वुफ़ की तरफ तवज़्ज़ो देनी शुरू कर दी थी।आपने तुर्की में ही तफ़्सीर,हदीस,फ़िक़्ह

की तालीम मुकम्मल कर ली और उसके बाद पीरो-मुर्शिद की तलाश में तुर्की से निकल पड़े उन दिनों पाकिस्तान के पाक पटन में सुल्तानुल आरेफीन हज़रत ख्वाजा फ़रीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह की विलायत और बुजुर्गी का डंका बज रहा था जब आप उनकी बारगाह में पहुंचे तो आपको देखते ही हुज़ूर ख्वाजा फ़रीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि बेटे तुम्हारा फ़ैज़ मेरे पास नही बल्कि किसी और के पास है उसके बावजूद आप उन्ही की बारगाह में रहने लगे और उनकी खिदमत में दिलो जान से लगे रहे।

कलियर आमद और साबिर ए पाक की खिदमत

उन दनो कलियर शरीफ में सैयदना साबिर ए पाक रहमतुल्लाह अलैह 12 बरस से बगैर कुछ खाये पिये आलमे इस्तेग्राक में थे इधर आप अपने दादा पीर बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह की महफ़िल में बैठे हुए थे बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह ने अपने सारे मुरीदों को इकठ्ठा करके कहा क्या कोई ऐसा भी मुरीद है जो मेरे साबिर को अफ्तारी करा सके क्योंकि मेरे साबिर ने 12 साल से कुछ भी नही खाया-पिया है और आलमे इस्तेग्राक की कैफियत में

है ये सुनकर कोई भी मुरीद तय्यार न हुआ अचानक उसी मजमे से एक़ नोजवान खड़ा हुआ उसने कहा में जाऊँगा कलियर शरीफ़ और सैयदना साबिर ए पाक रहमतुल्लाह अलैह को अफ्तारी कराउंगा तारीख़ गवाह है कि वो नोजवान कोई और नही बल्कि आप रहमतुल्लाह अलैह ही हैं।आप को देखकर बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह ने कहा वाकई तुम मेरे साबिर के फेज़ से मालामाल होगे उसके बाद आप ने कलियर जाने की तैयारी की तो बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह ने आपको नसीहत और दुआ देते हुए कहा सुनो मेरे साबिर के पास जब भी जाना पीछे से जाना उसकी नज़रो का ताब आलमे जलाल में तुम बर्दाश्त नही कर पाओगे।उसके बाद आप कलियर शरीफ पहुंच गए जहाँ आपकी मुलाकात हज़रत जमालुद्दीन अब्दाल अलैहिर्रहमा से हुई कुछ दिन उनके साथ रहे उसके बाद हज़रत अलीमुल्लाह अब्दाल अलैहिर्रहमा से मिले जो कि मख्दूम सैयदना साबिर ए पाक रहमतुल्लाह अलैह के खादिम भी रह चुके थे वो आपको उनके पास ले गए उस वक़्त भी वो आलमे इस्तेग्राक में थे आपने दूर ही से क़ुरआन करीम की तिलावत करना शुरू कर दिया आपकी आवाज सुनकर मख्दूम सैयदना साबिर ए पाक रहमतुल्लाह अलैह पर अजीब कैफ़ियत हुई और होश में आये

तो कहा कौन है जो क़ुरआन की तिलावत पीछे खड़ा होकर कर रहा है मेरे सामने आओ वहीं एक रिवायत में मिलता है कि आपने 21 दिन तक लगातार क़ुरआन की तिलावत की 22वें दिन जब आप थक गए तो मख्दूम ने आवाज़ दी क्यों रुक गए पढ़ते जाओ।उसके बाद आपने तिलावत शुरू की आप पीछे से उनके पास गए और कहा एक शर्त पे में क़ुरआन सुनाऊंगा अगर आप मुझे अपने साथ ठहरने दे तो वरना में पाक पटन लौट जाऊंगा पाक पटन का नाम सुनते ही मख्दूम के आंखों से आंसू जारी हो गए और कहा क्या तुम्हें मेरे मुर्शिद ने भेजा है बताओ केसे है मेरे मुर्शिद मेरे मुर्शिद ने क्या कहा है आपने जवाब दिया वो ठीक हैं और उन्होंने कहा है कि आप भी आज अफ्तारी कर ले ये सुनकर उन्होंने कहा बैठो शमसुद्दीन आपने जवाब दिया कि मख्दूम खड़े रहे और खादिम बैठ जाये ये तो उसूले ए तसव्वुफ़ और उसूल ए ज़माना के भी खिलाफ है ये सुनकर मख्दूम साबिर ए पाक रहमतुल्लाह अलैह 12 साल बाद जाकर ज़मीन पे बैठे और फ़रमाया की अल्लाह का सूरज आसमान पर है और मेरा सूरज इस जमीन पर है यानी आपको अपना सूरज कहा अल्लाहु अकबर क्या शान है मेरे शमसुद्दीन तुर्क पानीपती रहमतुल्लाह अलैह की जिस पर अहले इश्क़ क़ुरबान।उसके

बाद से धीरे धीरे साबिर ए पाक रहमतुल्लाह अलैह का जलाल जमाल में बदलने लगा और ये आप रहमतुल्लाह अलैह ही के बस में था वरना उस दौर में मख्दूम सैयदना साबिर ए पाक रहमतुल्लाह अलैह के जलाल के सामने बड़ा से बड़ा अब्दाल,क़ुतुब,सूफी जाने से परहेज़ करता था।आप धीरे धीरे इल्मे बातिन सीखने लगे और फिर उन्होंने आपको अपना मुरीद बनाया उसके बाद **आपसे** कहा जाओ अब पाक पटन चले जाओ और मेरे मुर्शिद की ख़िदमत में रहो जब वो बज़ाहिर ज़िन्दगी को अलविदा कह दें तो फिर मेरे पास चले आना।उसके बाद आप पाक पटन बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह की खिदमत में मशगूल व मशरूफ रहे फिर उनके बज़ाहिर इंतेक़ाल के बाद आप कलियर शरीफ़ आये तो कुछ अरसे के बाद 12 मुहर्रमुल हराम 661 हिजरी को आपको सिलसिला ए चिश्तिया की खिलाफत अता हुई। आप मख्दूम साबिर ए पाक रहमतुल्लाह अलैह के एकलौते मुरीद व ख़लीफ़ा थे आपने फ़रमाया शमसुद्दीन तुम मेरे बेटे हो और अल्लाह से दुआ है कि मेरा सिलसिला तुमसे क़ायम हो और ता क़यामत तक कायम रहे।

इबादत व मुजाहिदा

ख़िलाफ़त व इजाजत अता होने के बाद आपने 6 साल का मुजाहिदा किया जिसे तसव्वुफ़ में "हबसे कबीर" कहा जाता है जो कि क़ब्र के अंदर बेठकर किया जाता है।आपने क़ब्र में बैठकर 6 साल का मुजाहिदा किया जब भी भूख की सिद्दत होती तो हज़रत अलीमुल्लाह अब्दाल अलैहिर्रहमा एक गिलास पानी और थोड़ी रोटी मुहैया करा देते थे और जिस क़ब्र में बैठकर आपने मुजाहिदा किया उस क़ब्र को आपके मुर्शिद मख्दूम साबिर ए पाक रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी ही हाथों से तैयार की थी उसके बाद आपने मुजाहिदा पूरा किया।

मुर्शिद की मर्ज़ी से फ़ौज़ में भर्ती

आप मुजाहिदा करके जब बाहर आये तो मुर्शिद ने कहा शमसुद्दीन अब तुम फ़ौज़ में चले जाओ और सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी की मदद करो ये सुनकर आप रोने लगे क्योंकि आज आप मुर्शिद से बिछड़ रहे थे और अब आप जहिरी तौर पे आखिरी बार मिल रहे थे क्योंकि मख्दूम ने पहले ही कहा था कि तुम पानीपत में सुकुनियत अख्तियार करना और जब मेरा इंतेक़ाल हो जाये तो कफ़न ले आना और रख देना मुझको ग़ुस्ल मत देना और नमाज़े जनाजा भी न पढ़ाना ये

सुनकर आप रोने लगे और रोते रोते सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी की फ़ौज़ मे शामिल हुए और अम्बर का किलह कुछ ही दिनों में फतेह कर लिया उसके बाद आप पानीपत चले गए उन दिनों पानीपत में हजरत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुलल्लाह अलैह पानीपत की शान व अज़मत को ज़ीनत बख्श रहे थे।

पानीपत आमद

मुर्शिद के बज़ाहिर विसाल के बाद आप तुर्की चले गए थे उसके बाद आप काशान,तेहरान,काबुल क़लन्दर,लाहौर होते हुए 4 ज़ीकादह 693 हिजरी को पानीपत पहुंचे।उन दिनों पानीपती की मिल्कियत रूहानी तौर पर हज़रत सैयदना सरफुद्दीन बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह के पास थी।आपकी आमद की ख़बर सुनकर वो आपके पास आये और आपने सलाम किया और दूध से भरा हुआ एक गिलास पेश किया।ये देखकर हज़रत सरफुद्दीन बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह खुश हुए और आपके सलाम का जवाब देते हुए आपको दूध के साथ एक गुलाब का फूल भी बतौर तोहफा पेश किया इस बार आप मुस्कुराए।ये देखकर वहां मौजूद लोग हैरान हो गये और कहा हुज़ूर ये मामला क्या है

आपने फ़रमाया की इसका मामला ये है कि पानीपत में हज़रत सैयदना सरफुद्दीन बू अली शाह क़लन्दर और मेरा रूहानी इलाक़ा रहेगा यानी यहाँ की रूहानियत के हम दोनो बादशाह हैं।उसके बाद से आप वही रहने लगे इसीलिए आपके नाम के आगे पानीपती भी लगा रहता है।

आपके मुरीद

यूँ तो पानीपत में आपके कई मुरीद थे उनमें सबसे मशहूर शख्शियत हज़रत जलालुद्दीन क़बीरुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह हैं जो कि साहिबे तोशा मख्दूम शेख अब्दुल हक़ रूदौलवी रहमतुल्लाह अलैह के पीरो-मुर्शिद हैं।आपने भी हस्बे कबीर किया है और हुज़ूर शैखुल आलम रूदौलवी अलैहिर्रहमा ने भी हबसे कबीर यानी क़ब्र के अंदर बेठकर मुजाहिदा किया है।

महफिले शमा के कायल

सिलसिला ए चिश्त में महफिले शमा जायज़ है और इस सिलसिले के अकाबिर इसका बड़ा ऐहतराम व एहतमाम करते थे एक बार महिफले शमा के दौरान आप पर वज़द तारी हो गया उतने में एक दरवेश आपके सामने आए लेकिन आपको आलमे वज़द में पाकर वापिस चले गए जब आप को

होश आया तो कहा ये क्या गज़ब हुआ आज मेरे मुर्शिद मख्दूम सैयदना साबिर कलियरी रहमतुल्लाह अलैह मेरे पास आये थे और में उनकी खिदमत न कर सका और न ही उन्हें विदा कर सका उसके बाद आपको गहरा सदमा लगा और आपने बोलना बन्द कर दिया सिवाय अपने जानशीं हज़रत जलाउद्दीन क़बीरुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह को छोड़कर आपने किसी से कलाम नही किया।आखिकार वो दिन आ ही गया जब आपको इस दुनिया ए फानी को बज़ाहिर अलविदा कहना पड़ा 10 जमादिल आखिर 699 हिजरी में आपने इस दुनिया से फानी से कूच किया आपका आस्ताना वही पानीपत में है।

मख्दूम जलालुद्दीन क़बीरुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आप रहमतुल्लाह अलैह की विलादत तकरीबन 600 हिजरी को मुल्क हिंदुस्तान के शहर पानीपत में हुई थी।आपका आस्क नाम जलालुद्दीन था।

नसब

आप ख़लीफ़ा ए सोम हज़रत उस्मान ग़नी रजिअल्लाहू तआला अन्हु की औलाद में से हैं यानी उस्मानी शेख हैं।आप की शान निराली बुलन्द व बाला हे।

पीरो--मुर्शिद

आपके पीरो मुर्शिद ख्वाजा शमशुद्दीन तुर्क पानीपती रहमतुल्लाह अलैह हैं मुर्शिद से आप बेपनाह मोहब्बत करते थे।मुर्शिद की रहनुमाई में ही आपने "हब्से कबीर" किया है यानी 6 महीने कब्र के अंदर बेठकर इबादत/मुजाहिदा किया है आप ने अपनी सारी जिंदगी अपने मुर्शिद की ख़िदमत में शरफ़ कर दी और उनके विसाल के बाद सज्जादानशीं हुए।

मख्दूम जहांनीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह के लिए दुआ

एक बार मख्दूम सैयद जलालुद्दीन जहानीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह बहुत बीमार थे,आप उनको देखने दिल्ली तशरीफ़ ले गए जहां उनकी तबियत बहुत नासाज़ पाई उसके बाद आप ने उनके लिए दुआ फ़रमाई **जिसके बाद** उनकी तबियत एकदम से ठीक हो गई और उसके बाद आप कुछ दिन उनके साथ भी रहे।

शादी

पीरो-मुर्शिद के हुक्म की तामील करते हुए आपने शादी की जिससे 5 बेटे और 2 बेटियाँ हुई।

मुरीद व खलीफ़ा

आपके मुरीद व ख़लीफ़ा का अगर ज़िक्र न हो तो शायद आपकी सवानेह मुकम्मल ही न हो पाए।आप का रिश्ता अपने मुरीद से कुछ ऐसा था कि उसकी मिसाल नही मिलती।आपके ख़लीफ़ा हुज़ूर साहिबे तोशा शेख अहमद अब्दुल हक़ रूदौलवी अलमारूफ़ शैखुल आलम रूदौलवी रहमतुल्लाह अलैह हैं जिनका आस्ताना शरीफ़ यूपी के जिला अयोध्या के

रूदौली शरीफ में वाके है।हुज़ूर शैखुल आलम रहमतुल्लाह अलैह की जात ए अक़दस से सिलसिला काफी उरूज़ पर पहुँचा वो आपकी ख़िदमत/ताज़ीम में मशरूफ रहे आप ने भी अपने प्यारे ख़लीफ़ा को अपना सारा फैज़ान अता कर दिया है।

महफिले शमा

अपने सिलसिला के दीगर बुजुर्गों की तरह आप भी महफिले शमा के कायल थे।अक्सर आप महफिले शमा के दौरान वज़्द में आ जाते और कई कई घण्टो तक उसी केफियत में रहते।आप औलिया अल्लाह के उर्स भी बड़ी अक़ीदत के साथ मनाते थे।

आप हर वक़्त आलमे इस्तेग्राक में रहते,वज़्द की केफियत आप पर तारी रहती आप खामोश रहकर यादे इलाही में मशगूल रहते।वक़्त के क़लन्दर हज़रत सैयदना सरफुद्दीन बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह से भी आपने मुलाकात की और फेज़ लिया है।आपने 170 साल की उम्र के बाद 765 हिजरी में आपने इस दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया लेकिन अहले तसव्वुफ़ आपका तज़किरा ता क़यामत तक करते रहेंगे आपके मक़ाम का अंदाज़ा लगा पाना नामुमकिन

है आपने सैय्यदना मख्दूम जलालुद्दीन जहानीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह,सैयदना बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह,ख्वाजा कुतब आलम पाण्डवी, सैय्यदना शमसुद्दीन तुर्क पानीपती रहमतुल्लाह अलैह जैसे दरवेशों की सोहबत पाई है।

हुज़ूर शैखुल आलम रूदौलवी अलैहिर्रहमा

अज़ीज़ों जिस हस्ती के बारे में मुझ सा नाचीज़ क़लम चलाने जा रहा है ये वो हस्ती है जिस पर तसव्वुफ़ नाज़ करता है जिनका शुमार हिन्द के अव्वल दर्जे के औलिया क़राम में होता है।जिनकी बारगाह से हज़ारो औलिया अल्लाह ने फेज़ हासिल किया है जिनके मर्तबे का अंदाजा लगा पाना नामुमकिन है!

विलादत,नाम,नसब,लक़ब

आपका नाम अहमद,लेकिन मुर्शिद के ज़रिए अताई लक़ब "अब्दुल हक़" है।आपके वालिद का नाम हज़रत उमर अलैहिर्रहमा और दादा का नाम शेख दाऊद अलैहिर्रहमा था.आपक़ी विलादत 729 हिजरी में हुई।आप का नसब नामा 22 वास्तो से ख़लीफ़ा ए दोम हज़रत उमर फारुक ए आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हू से मिलता है।

नसब नामा

हज़रत शेख अहमद अब्दुल हक़ रूदौलवी अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख उमर अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख दाऊद अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख शुएब अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख सुल्तान मुहम्मद अहमद अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख मोहम्मद यूसुफ सानी अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख मोहम्मद अक़बर अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख अहमद यूसुफ अलैहिर्रहमा

ख्वाजा शेख़ सहाबुद्दीन मारूफ़ फ़र्ख शाह काबुली अलैहिर्रहमा

हज़रत ख़्वाज़ा नसीरुद्दीन अलैहिर्रहमा

हज़रत ख़्वाज़ा फखरुद्दीन महमूद अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख़ मसऊद अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख़ अब्दुल्लाह वाजुल असगर अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख़ अब्दुल्ला वाजुल अक़बर अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख अबुल फतह अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख़ सुल्तान इब्राहीम इसहाक अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख़ उधम अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख सुल्तान अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख मंसूर अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख़ नासिर अलैहिर्रहमा

खलीफ़ा ए दोम हज़रत उमर फारूक ए आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हू

इस तरह से आपका शजरा ए नसब सहाबीए रसूल हज़रत उमर फारूक ए आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हु से मिलता है।

शजरा ए तरीक़त

हज़रत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती हसन संजरी रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत ख्वाजा सैयद कुतबुद्दीन बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत ख्वाजा बाबा फरीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत मख्दूम अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कलियरी रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत हाफिज़ सैयद शमसुद्दीन तुर्क अल्वी पानीपती अलैहिर्रहमा

हज़रत मख्दूम जलालुद्दीन क़बीरूल औलिया रहमतुल्लाह अलैह

हजरत मख्दूम शेख़ अहमद अब्दुल हक़ रूदौली शैखुल आलम अलैहिर्रहमा

तालीम

जब आप तालीम के लिए बड़े भाई शेख़ तकीउद्दीन अलैहिर्रहमा के पास गए तो वहाँ भी अजब रंग का जहूर था जज़्बी कैफ़ियत अक्सर तारी रहती और आप का मन पढ़ाई में नही लगता।जब आपके भाई हज़रत अल्लामा तकीउद्दीन अलैहिर्रहमा आप को पढ़ाने की कोशिश करते तो आप कहते ये सब इल्म मुझें न पढ़ाओ बल्कि इल्मे बारी का दरस दो.जब

वो नाकामयाब हुए तो आपको दूसरे उलेमाओ के हवाले कर दिया लेकिन वहां भी यही मामला पेश आता आप फ़रमाते कि मुझे इस इल्म की ज़रूरत नही है बल्कि मुझे वो इल्म दीजिये जिससे मारफत ए इलाही **हासिल** हो।जब आपकी ये कैफ़ियत देखी गई तो उन उलेमाओ ने आपके बड़े भाई से फ़रमाया कि बाबा इस बच्चे के चक्कर मे न पड़े इसके पास इल्म है।

इन वाकियात को पढ़कर क़ोई ये न समझे कि आप को जाहरी इल्म नही था बल्कि आप आयाते कुरआनिया,अरबी मकूले इस्तेमाल करते रहते थे।आपके इल्म को समझना आम इंसान की समझ से बाहर है।

इबादत

जब आपकी वालिदा माजिदा तहज्जुद के लिए उठती तो आप भी चुपके से उठते और घर के किसी कोने में बैठ कर इबादत शुरू कर देते जब आपकी वालिदा नमाज़ से फारिग होती और आपको बिस्तर पर न पाती तो आपकी तलाश करती तो आपको इबादत में मशगूल(लगनशील)पाती तो कहती बेटा तुम्हारे बाप दाऊद रहमतुल्लाह अलैह भी शेख(यहाँ शेख से

मुराद वली) थे लेकिन तुम्हारे जैसे नही तुम पर अभी नमाज़ ए फ़र्ज़ भी फर्ज नही है और तुम नफिल के लिए अपनी जान क्यो खपाते हो-?

लेकिन आप बाज न आते आप पर फर्क न पड़ता एक दिन वालिदा के ताने से तंग आकर फ़रमाया ये माँ नही बल्कि राहजन है अपना काम तो करती चली है और मुझ को खुदा के क़रीब आने से रोकती है।

अज़ीज़ों ये है आम बच्चो की ज़िंदगी और औलिया अल्लाह के बचपन के ज़िंदगी अल्लाह अल्लाह मखदूम ए रूदौली की अज़मत को समझ पाना आसान नही है ।

पीरो मुर्शिद

दिल्ली में जब आप की प्यास न बुझी तो आप ने दिल्ली को अलविदा कह दिया और जहां किसी बुजुर्ग का नाम सुनते आप वहाँ पहुंचते और अपने दिल के दर्द की दवा तलब करते लेकिन किसी से आपको सुकून ए क़ल्ब मिलता नज़र नही आया आखिर में आप पानीपत जाकर हज़रत जलालुद्दीन क़बीरुल औलिया से मुरीद हुए और क़ल्ब को सुकून मिला।

हज़रत शेख जलालुद्दीन क़बीरुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह ने आपको ख़िरका-ए-खिलाफत अता फ़रमाई और अपने बेटों की तरबियत की जिम्मेदारी आप के सुपुर्द कर दी और फ़रमाया की मैंने खुदा से दुआ की है कि मेरा सिलसिला तुम से जारी हो तुम सारे आलम को नूर ए मारफत से ऐसा मुनव्वर करो कि उसका असर क़यामत तक बाकी रहे।

(सीरतुल-अकताब -सफा-116)

हज़रत नूर कुतुबे आलम पांडवी अलैहिर्रहमा से मुलाकात

हज़रत शैखुल आलम अलैहिर्रहमा ने अपने पीरो मुर्शिद हज़रत जलालुद्दीन क़बीरुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में रहकर तमाम मंजिले तय की।अनवारे तजल्लियात की आप पर बरसात होने लगी मगर चूँ की आप जोक व तलब के प्यासे थे सो आप वहां से चले आये।और रास्तो में कई ख़ानक़ाहो में गए,मजारात में हाजरी दी,मुख़्तलिफ़ मक़ामात के उलमा व मशायख की ज़ियारत(दर्शन) की।आपने सिंध,पंजाब,बिहार बंगाल का दौरा किया।बंगाल में हज़रत कुतुबे आलम अलैहिर्रहमा से मुलाकात हुई।और नहर के किनारे का कुछ शब्ज़ा हज़रत कुतुबे आलम अलैहिर्रहमा को नज़र(गिफ्ट) दिया और फ़रमाया बाबा "बाबा सफा अस्त"

हज़रत नूर कुतुबे आलम अलैहिर्रहमा ने फरमाया "बाबा इज़्ज़त अस्त" और कुछ देर दोनो एक दूसरे को देखते रहे लेकिन दोनों बुजुर्गों में कोई गुफ़्तुगू नही हुई उसके बाद आप वापिस चले आएं।किसी शायर ने क्या खूब कहा है

में नज़र से पी रहा हूँ कहीं शमा ढल न जाए

न झुकाओ तुम निगाहे कहीं रुत बदल न जाए

मेरे ज़िंदगी के मालिक मेरे दिल पे हाथ रख दे

तेरे आने की खुशी में कहीं मेरा दम निकल न जाए।

तहफ़्फ़ुज़ ए शरीयत

क़ामिल इस्तेगराक व वज्द में रहने के बावजूद आप शरीयते मुतहरा का पूरा पूरा लिहाज व ख्याल रखते हुए नमाज़ पंज वक़्ता जमात के साथ अदा करते।सुन्नते मुस्तफा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की पैरवी व इत्तिबा में कोई कसर न छोड़तें अगर कभी जज़्ब व कैफियत में भी कोई जुमला अदा हो जाता तो होश में आने के बाद उसके कफ़्फ़ारे के लिए खास मुजाहिदा करते चुनांचा बज़्मे सूफिया के मुसन्निफ़ लिखते है कि एक मर्तबा आप पँजाब में थे जज़्ब व कैफ़ियत के दोरान

आपकी जुबान से कुछ जुमले निकल गए जब आप होश में आये तो लोगो ने कहा कि हुज़ूर ऐसे ऐसे कलमात आपकी जुबान से निकले हैं।आपने सुनकर फ़रमाया की अउजुबिल्लाह मिन्हा में ये तो मुझसे गुनाह कबीरा हो गया फिर उस गुनाह के कफ़्फ़ारे के लिए आपने सर्दी के मौसम में सिंध नदी में गर्दन के बराबर पानी मे उतर गए और कई महीने रात दिन "दीन मोहम्मद क़ायम दायम,दीन मोहम्मद क़ायम दायम का विर्द करते रहे।सर्दी की सिद्दत से बदन की खाल फट गई और खून जारी हो गया।

(बज़्मे सूफिया-सफा-63)

ज़िक्रे हक़

हज़रत शैखुल आलम अलैहिर्रहमा के यहां ये दस्तूर था कि जब नमाज़ का वक़्त होता या कोई मुलाक़ात के लिए आता खादिम तीन मर्तबा"हक़ हक़ हक़" की सदा(आवाज) लगाता था तो आप आलम ए इस्तेगराक(ईश्वर की तपस्या में लीन अवस्था)से निकलते और आने की वजह दरयाफ्त(मालूम) करते।पहली दफा हक़ की आवाज़ सुनकर आप आलमे लाहूत से आलमे जबरूत में आते और दूसरी मर्तबा में आलमे

जबरुत से आलमे मलकूत में आते फिर तीसरी मर्तबा में आलमे मलकूत से आलमे नासूत में आते।

1-आलमे लाहूत-इसे आलम ए तजल्लियात भी कहा जाता है ये सबसे आखरी मकाम होता है ये अर्श का सबसे बुलन्द मक़ाम है इसे मक़ामे महमूद भी कहा जाता है

2-आलमे जबरुत-जब बन्दा इल्म और अमल से अल्लाह को राज़ी कर लेता है और मुशाहिदा करता है तो अल्लाह उसे आलमे जबरुत की शेर करवाता है कई वली अल्लाह को अल्लाह ने आलमे जबरूत की शेर कराई और खजाने दिखाए

3-आलमे मलकूत--इसे आलम ए अरवाह भी कहा जाता है यानी तमाम इंसानो की रूह यही पर होती है)

निकाह और औलाद

आपकी रजाई मां ने आपसे फ़रमाया बेटा मेरी ख्वाहिश है कि आप शादी कर लें आपने फ़रमाया की में इसकी सलाहियत नही रखता।फकीरी,दीवानगी और बुढ़ापे में एक दरवेश के लिए ये मुनासिब नही की अपनी दरवेशी में किसी और को दाखिल करें।रजाई माँ ने किसी तरह की कोई बात नही मानी

और आखिरकार हज़रत शेख़ सलाह सियाह सोहरवर्दी अलैहिर्रहमा की मज़ार पर आपकी वालिदा हाजिर हुई यहाँ से शादी की इजाजत मिली आपकी रजाई माँ बहुत खुश हुई और अपने खानदान की एक लड़की के साथ आपका निकाह कराया।उनसे चार शहज़ादे और चार शहज़ादियो की विलादत हुई।जब कोई लड़का पैदा होता था तो पैदा होते ही " हक़ हक़ हक़"का विर्द उसकी जुबान पर रहता आप फरमाते अहमद को शोहरत पसन्द नही ये बच्चा चाहता है कि दुनिया **में** शोर पैदा करे **ये** ज़िंदा रहने के काबिल नही जैसे ही आपकी जुबान से ये जुमले निकलते उधर उनका इंतेक़ाल हो जाता।कुछ अरसा बाद चौथे शहज़ादे हज़रत शेख़ आरिफ अलैहिर्रहमा पैदा हुए और पैदा होते वक़्त आपकी ज़ुबान से "हक़ हक़ हक़" की सदा नही आई ये देखकर आपने फ़रमाया ये लड़का निगाह दाश्त के काबिल है और फिर आगे चलकर आप के इन्ही शाहबाज़ादे ने आपके बाद सिलसिला को आगे बढ़ाया।

विसाल

15 जमादिस सानी 837 हिजरी को 108 साल की उम्र में आप बाजहिर इस दुनियाए फानी से अलविदा कह गए।आपका

आस्ताना उत्तर प्रदेश के जिला अयोध्या के मशहूर कस्बा रूदौली शरीफ़ में है।पूरी दुनिया से लोग आपके उर्स में आते हैं ।आपको शैखुल आलम के नाम से जाना जाता है।पूरी दुनिया में आपके चाहने वाले है सिलसिला ए साबरिया चिश्तिया आपकी वजह से बहुत ही ज्यादा क़ामयाब हुआ।हम अहले रूदौली वाले अपने किस्मत पर जितना नाज करे कम है मौला आपके सदके में हम सब को अपने इश्क़ में मुब्तिला करे यही दुआ है

हक़ हक़ हक

शाह अब्दुल कुद्दुस गंगोही रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 23 जमादिस, सानी 852 हिजरी को जिला अयोध्या के रूदौली शरीफ में हुई थी।आपका पूरा नाम शेख मज़हरुद्दीन अब्दुल कुद्दुस था आपका लक़ब कुतब ए ज़माना,क़ुत्बुल अकताब है।

नसब

आप रूदौली शरीफ के क़ाज़ी घराने में पैदा हुए।आपके दादा हज़रत शेख शफीउद्दीन अशरफी अल नोमानी रहमतुल्लाह अलैह हैं जो कि हुज़ूर सैयद मीर मख्दूम जहाँगीर अशरफ़ सिम्नानी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा हैं।आपके नाम मे नोमानी इसलिए भी लगता है क्योंकि आपका शजरा ए नसब इमाम ए आज़म हज़रत अबु हनीफा रहमतुल्लाह अलैह से मिलता है और ये शजरा इमाम ए आज़म से होता हुआ हज़रत नूह अलैहिस्सलाम तक जाता है।

विलादत से पहले की पेंशनगुई

एक बार आपके वालिद हज़रत शेख इस्माइल अलैहिर्रहमा रूदौली में बच्चो के साथ खेल रहे थे खेलते खेलते वो शेखुल आलम रूदौलवी रहमतुल्लाह अलैह के हुजरे के सामने से गुजरे तो उन बच्चो ने कहा चलो आज मख्दूम साहब का हम सब दीदार करते हैं ये कहकर सारे बच्चे लाइन में लगकर बारी बारी से हुज़ूर शैखुल आलम अलैहिर्रहमा का दीदार कर रहे थे जब हज़रत शेख इसमाईल अलैहिर्रहमा ने आपका दीदार किया तो आपने उनकी तरफ देखकर कहा इस्माईल यहां आओ वो आपके पास चले गये और उनके पास बैठ गए हुज़ूर शैखुल आलम अलैहिर्रहमा ने उनकी पेशानी को तीन मर्तबा बोशा दिया जब हज़रत शेख इस्माइल अलैहिर्रहमा वहां से उठकर चले गए तो मौके पर मौजूद मुरीदों ने कहा हुज़ूर ये क्या माज़रा था की इतने बच्चो ने आपकी जियारत की लेकिन आपने किसी को अपने पास नही बुलाया सिर्फ इन्ही को अपने क्यों बुलाया ये सुनकर हुज़ूर शैखुल आलम रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया इसकी वजह ये है की इनकी पुश्त में एक बेटा

होगा जो वक़्त का क़ुतुब होगा और उसे मेरा फेज़ मिलेगा जिसका एहतराम क़यामत तक के क़ुतुब अब्दाल करेंगे।

दूसरी पेशनगुई

सैयद मीर मख्दूम अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी रहमतुल्लाह अलैह ने आपके दादा शेख शफीउद्दीन नोमानी अशरफी रहमतुल्लाह अलैह से भी एक बार कहा था कि शफीउद्दीन तुम्हारी पुश्त से एक बेटा होगा जो ज़माने का क़ुतुब होगा लिहाजा आप की विलादत से पहले ही आपकी विलायत और कुतबियत की पेशनगुई वक़्त के बड़े बड़े वली ए क़ामिलो ने कर दी थी।

बचपन

आप बचपन ही से तल्बे इश्क़ में रहते आम बच्चों से बिल्कुल अलग शोर शराबे से दूर रहते।आप सिर्फ अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करने की फिक्र में रहते दुनियादारी से आप कोशो दूर थे।

आजिज़ी और इन्किसारी

अगर सालिक में आजिज़ी और इन्किसारी नही है तो वो सूफिया के जुमरे में कभी शामिल नही हो सकता हां नाम का

सूफ़ी बन्ना और बात है लेकिन हक़ीक़ी सूफी होने के लिए आजिज़ी और इन्किसारी दो बहुत ही जरूरी मरहले अहले तसव्वुफ़ के दरमियान पाए जाते हैं आप की आजिज़ी और इन्किसारी का आलम ये था कि आप मस्जिद की आखिरी सफ में नमाज़ अदा करते थे हत्ता की मस्जिद के बाहर नमाज़ियों की चप्पलो को आप अपने हाथों से तरतीब से लगाते ये मामूल आपका कई अरसो तक़ रहा जब आपके इस प्यारे और अनोखे निज़ाम के बारे में आपके वालिद हज़रत शेख इसमाईल अलैहिर्रहमा को पता चला तो उन्होंने आपको बुलाकर समझाया और कहा मज़हरुद्दीन ये कुछ ज्यादा ही हो गया है अपने आप को काबू में रखो लेकिन आप तो अपनी धुन में ही लगे रहते क्योंकि आपका मिशन था कि नफ़्स ए तममारा को काबू में करना।आप दुनियावी ख्वाहिशात पर काबू पाना चाहते थे आप रहमतुल्लाह अलैह अपने इस मिशन में क़ामयाब भी हुए।

आपकी शादी

आप की शादी के पीछे भी अजीबोगरीब दास्तान मिलती है।आप की सोच बचपन ही से थी कि बड़ा होकर जंगलों बियाबानो की तरफ निकल जाऊंगा और दुनिया से रिश्ता

तोड़ लूंगा और अल्लाह की राह में खुद को शरफ़ कर दूंगा।लेकिन अल्लाह रब्बुल इज्जत को कुछ और ही मंजूर था।दरसअल हुज़ूर शेखुल आलम रहमतुल्लाह अलैह के बेटे और दरगाह के सज्जादानशीं हज़रत शेख आरिफ अलैहिर्रहमा की दो शहज़ादी थीं बड़ी वाली शहज़ादीं की शादी जिस घर मे हुई थी वहां उनके शौहर के मामलात दुरस्त नही थे यानी वो बुराईओ में मुल्लविस थे।इसीलिए वो शादी ज्यादा दिनों तक नही चली और आखिरकार उन्होंने तलाक़ ले ली।अब जब दूसरी बेटी की शादी का वक़्त क़रीब आया तो उम्मे कुलसूम जो कि हज़रत शेख मोहम्मद आरिफ अलैहिर्रहमा की हमशीरा थी उन्होंने सोचा इस बार दूसरी बेटी की शादी में हुज़ूर शैखुल आलम अलैहिर्रहमा की रजामंदी जरूर ली जायेगी।एक दिन वो सो रही थी उन्हें रात में शैखुल आलम अलैहिर्रहमा का दीदार हुआ जिसमें उन्होंने बशारत दी कि मज़हरुद्दीन अब्दुल कुद्दुस अलैहिर्रहमा कुतब ए आलम हैं और बहुत बड़े मर्तबे पर फ़ायज़ हैं लिहाज़ा अपनी बेटी की शादी उन्ही के साथ कर दो। जब सुबह इसपर बात हुई तो शेख मोहम्मद रहमतुल्लाह अलैह जो कि आप रहमतुल्लाह अलैह के पीरो मुर्शिद और हुज़ूर शैखुल आलम रहमतुल्लाह अलैह के पौते हैं।उन्होंने अपनी बहन की शादी के लिए

आपसे कहा आपने फ़रमाया में इस काबिल कहाँ जवाब सुनकर उनको गुस्सा आया तो उन्होंने फ़रमाया कि फिर क्या है तुम्हारे बस में तो आपने फ़रमाया में तो एक ढेला हूँ आपका गुलाम हूँ आप जैसा चाहे वैसा रखे फिर इसके बाद आपकी शादी तय हुई और वो दिन भी आया लेकिन आपकी तबियत और केफीयत में कोई बदलाव नही आया ।शादी वाले दिन भी अपने रोज़ाना के मामुलात ही करते रहे आपके ददिहाल के कुछ लोग आए और आपको तैयार करके ले गए फिर जब मुंह दिखाई की रस्म हुई जो कि यूपी के कुछ जगहों पर पाई जाती है फिर आप गरी कटाई मे गये जहां पर कुछ औरतें गा रही थी आप रहमतुल्लाह अलैह जब अंदर पहुंचे तो उनके गीतों को सुनकर आपके ऊपर अजीब वज़्द तारी हुआ और आप तख्त पर से नीचे उतर गए आपने अपने नए कपड़ो को फाड़ डाला ये माज़रा देखकर पास मे खड़ी औरतो ने कहा कि ये किस मज़्ज़ुब से लड़की की शादी तय कर दी है उम्मे कुलसूम ने औरतो को जवाब देते हुए फ़रमाया जहाँ से अल्लाह और उसके महबूब कि मर्ज़ी थी वहीँ से शादी तय हुई है।

शैखुल आलम से मोहब्बत

आप हुज़ूर शैखुल आलम रहमतुल्लाह अलैह से बेपनाह अक़ीदत रखते थे और यूं कहना ज्यादा मुनासिब होगा कि आप हुज़ूर शैखुल आलम रहमतुल्लाह अलैह के हक़ीक़ी जानशीन और बातनी मुरीद भी हैं आपको हुज़ूर शैखुल आलम अलैहिर्रहमा से बेपनाह फैज़ान मिला है।एक़ रात आप उनके आस्ताने पर हाज़री दे रहे थे आपके हाथों में किताबें क़ाफ़िया थी अचानक से आप पर ऐसी केफीयत तारी हुई कि आप बेहोश होकर गिर पड़े फिर आपको हुक्म हुआ कि ये लिखना पढ़ना बन्द करो और जिस मक़सद के लिए आये हो वो पूरा करने में लग जाओ ये हुक्म पाकर आपने किताबो को उस दिन से पढ़ना बन्द कर दिया।एक दिन आप अपने वालिद के घर चले आये तीन दिन गुजर गए चौथे दिन जब आप नींद में थे हुज़ूर शैखुल आलम रहमतुल्लाह अलैह ख्वाब में आये और कहा हमने तुम्हारे घर मे आग लगा दी है क्या अब भी तुम ये घर नही छोड़ोगे उसके बाद जैसे ही उन्होंने आँख खोली तो देखा कि घर जल रहा है आप फौरन वहां से चले आये और उसके बाद आप कभी भी अपने वालिद के घर नही गये।एक बार आपने सोचा कि शैखुल आलम रहमतुल्लाह अलैह ने तो

मुझे बातनी मुरीद किया है और तसव्वुफ़ का क़ायदा ये है कि मुर्शिद का ज़िन्दा रहना बहुत जरूरी है अगर च साहिबे आस्ताना से आपका ताल्लुक किस कदर ही मज़बूत क्यों न हो लेकिन जब भी कोई पीर किसी को मुरीद करे तो उसका बज़ाहिर भी जिंदा रहना जरूरी है ये सोचना था कि इतने में हुज़ूर शैखुल आलम रहमतुल्लाह अलैह हाज़िर हुए और कहा कुद्दुस क्या तुम्हे अब भी शक है कि में ज़िन्दा नही हूँ ये सुनकर आप उनके क़दमो में गिर पड़े और मुरीद हुए उसके बाद आप गंगोह शरीफ तशरीफ़ ले गए आप का ताल्लूक साहिबे तोशा से इतना मजबूत था कि अगर आप तहज्जुद के वक़्त सो जाते तो आप रहमतुल्लाह अलैह आकर उन्हें उठाते और कहते उठो कुद्दूस नमाज़ का वक़्त निकला जा रहा है आप रहमतुल्लाह अलैह उठते और नमाज़ अदा करते।

(नोट--) यहाँ ये जरूर ध्यान रखना है जब आप की विलादत भी नही हुई थी उससे पहले ही हुज़ूर शैखुल आलम रूदौलवी रहमतुल्लाह अलैह बज़ाहिर इस दुनिया ए फानी को अलविदा कह चुके थे लेकिन ये आपका रिश्ता और आपकी बुजुर्गी का आलम ही था कि उसके बाद भी आप लगातार उनके दीदार से सरफराज होते रहे हैं

वहदतुल वजूद पर एतराज़ और आपका जलाल

एक बार गंगोह में आप एक हुजरे में बैठे हुए थे आपके साथ आपके दो बेटे हज़रत शेख हमीदुद्दीन अलैहिर्रहमा और हज़रत शेख रुकनुद्दीन अलैहिर्रहमा भी थे इतने मे वहदतुल वजूद पर बहस शुरू हुई आपके दोनों बेटे शुरू में इसके मुन्किर थे फिर आपने दलील पेश की जिसपर वो शांत हुए लेकिन आपका मन अब सुकून व चैन से बहुत दूर था आप को लगा कि शायद ये दोनों बेटे मेरे मशरफ और मसलक से हट गए हैं।ये सोचकर आप जलाल की केफीयत में वहां से निकल पड़े आप के जलाल को देखकर किसी मे इतनी हिम्मत न हुई कि आप को रोक ले सारे बेटे भी आपके पीछे पीछे चलने लगे आप आगे आगे ये सोचकर जा रहे थे कि आज अपने ख़लीफ़ा जलालुद्दीन थानेसरी अलैहिर्रहमा के पास जाऊंगा और उनसे भी यही सवाल करूँगा अगर उनका मशरफ मेरे मशरफ से अलग हुआ तो फौरन सारे रिश्ते तोड़ लूँगा।आप चलते चलते लखनोती पहुंचे इतने में गंगोह के दरोगा को खबर हुई जो आपका मुंहबोला मुरीद भी था वो फोरन बिजली की रफ्तार से आपके पास आया और कहने लगा हुज़ूर अगर राजा को पता चला कि आपने गंगोह छोड़ दिया है तो वो इसका जिम्मेदार

मुझे समझेगा और मेरी जान ले लेगा इससे अच्छा है कि में आपके हाथों से मारा जाऊं दरोगा कि बातेँ सुनकर आपका दिल नरम पड़ा और फिर आप वापिस गंगोह लौट आये ये खबर जब आपके ख़लीफ़ा जलाउद्दीन थानेसरी अलैहिर्रहमा को पता चली तो वो आपकी बारगाह में हाज़िर हुए आपने सबसे पहले उनसे भी वहदतुल वजूद के ताल्लुक़ से सवाल पूछा जिस पर उन्होंने क़ुरआन करीम की कुछ आयते तिलावत की आपने वो सुनकर कहा आओ मेरे पास बैठ जाओ फिर धीरे धीरे आपके जलाल में कमी आने लगी और आपके बेटो ने भी आपके मशरफ को क़बूल किया और माफ़ी मांगी।

ख्वाजा निजामुद्दीन महबूबे इलाही से आपका ताल्लुक

एक बार आप देहली में अपने मुरीदो के साथ थे ये वो वक़्त था जब इब्राहिम लोधी और बाबर के बीच सल्तनत हासिल करने की जंग चल रही थी।आप आराम फरमा रहे थे आपके एक मुरीद आपके लिए रोटी पकाने के लिए चक्की से आटा पीस रहे थे इतने में उन्हें नींदा आ गई तो उन्होंने देखा कि ख़्वाजा निजामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह अपने हाथों से चक्की चला रहे हैं औऱ खादिम से कहा तुम सो रहे हो वहां मेरे कुद्दुस को भूख लगी है उठो और मेरे कुद्दुस के लिए रोटी

पकाओ जब वो मुरीद उठा तो उसने देखा कि चक्की चल रही है उसने रोटी पकाई और आपको खिलाई।

साबिर ए पाक रहमतुल्लाह अलैहि से आपकी अक़ीदत

आपका नाम कुछ यूँ भी बहुत ज्यादा मशहूर हुआ है कि क्योंकि आपको ही कलियर शरीफ़ में पहला उर्स कराने का शरफ़ हासिल है आप से पहले कलियर में उर्स नहीँ होता था आप रहमतुल्लाह अलैह ने पहला उर्स कराया और आस्ताने की तामीर की शुरुआत की दरसअल इसके पीछे ये रिवायत बयान की जाती है कि एक बार हुज़ूर शैखुल आलम रूदौलवी रहमतुल्लाह अलैह के आस्ताने पर झाड़ू दे रहे थे इतने में एक बुजुर्ग शख्स आपके पास आये और कहा कुद्दूस कभी हमारे यहां भी झाड़ू देने आ जाया करो आपने बुजुर्ग की बात पर तवज़्ज़ो न दी लेकिन अचानक से याद आया तो सोचने लगे कि आखिर ये बुजुर्ग कौन थे और इनका माज़रा क्या है आप इसी कशमश में उलझे रहते तभी एक रात हुज़ूर शैखुल आलम रहमतुल्लाह अलैह ने ख्वाब में आकर फरमाया कि कुद्दूस वो बुजुर्ग कोई और नही बल्कि हुज़ूर सैयदना अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कलियरी रहमतुल्लाह अलैह हैं उसके बाद आप उनके आस्ताने को तलाश करते करते कलियर शरीफ़

पहुंच ही गये तो इसीलिए आज भी आपकी ही औलादे वहां की गद्दीनशीन हैं और आपकी औलादो को हुज़ूर सैयद अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कलियरी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी रूहानी औलाद कहा है।ये आपकी शान व अज़मत की निशानिया हैं आप पर अहले रूदौली जितना फ़ख्र करे उतना कम हे मौला आपकी निस्बत और फैज़ान से हम सभी को मालामाल करे।

आपके खुल्फा

यूं तो आपके करीब पांच हज़ार से ज़्यादा खुल्फा हैं।जिनमे कुछ मोतबर और मशहूर खुल्फा ये हैं।

1--हज़रत शेख हमीदुदीन नोमानी रहमतुल्लाह अलैह

2--हज़रत शेख रुकनुद्दीन नोमानी रहमतुल्लाह अलैह

3--हज़रत शेख अब्दुल गफ्फूर रहमतुल्लाह अलैह(आज़मगढ़)

4--हज़रत शेख ख़्वान जौनपुरी रहमतुल्लाह अलैह

5--हज़रत शेख अब्दुल अहद रहमतुल्लाह अलैह

(हज़रत शेख अब्दुल अहद रहमतुल्लाह अलैह इमामे रब्बानी हुज़ूर मुजद्दीद ए अल्फे सानी रहमतुल्लाह अलैह के वालिद-माज़िद हैं)।

1537 ईस्वी को आपने को दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया लेकिन आपका नाम ता क़यामत तक ऐसे ही जगमगाता रहेगा।

सैयद मख़्दूम अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 712 हिजरी अंग्रेजी कैलेंडर के मुताबिक 1312 ईस्वी में ईरान के सूबा सिमनान में हुई थी।आप वालिद की तरफ है फ़ातमी सादात हैं और माँ की तरफ से भी आला निस्बत रखते हैं।आपके वालिद और वालिदा भी तसव्वुफ़ के दर्ज़े पर फ़ायज़ थे जिसका असर आप पर भी पड़ा।

नाम

आपका पूरा नाम मीर सैयद मख़्दूम सुल्तान अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह है।

सुल्तान क्यों--?

सुल्तान का लफ़्ज़ क़ुरआन क़रीम में कई जगहों पर आया है जहाँ उसके मायने हैं दलील के या हुज्जत के और आप ने खुद फरमाया है कि में तसव्वुफ के हक़्क़ानियत की रोशन दलील

और सूफिया की हुज्जत हूँ।वहीँ उर्दू में सुल्तान के मायने हैं बादशाह से आला के तो आप हर चीज में आला मक़ाम रखते हैं हसब नसब तसव्वुफ़,फकीरी, सूफिया,उलेमा हर हिस्से में आप इन सब की जमात के सुल्तान हैं इसीलिए आपके नाम से पहले सुल्तान का लफ्ज़ जुड़ा हुआ है।पहले ये **लक़ब** सलाहुद्दीन अय्यूबी अलैहिर्रहमा के खानदान के लिए सुल्तान का टाइटल लगाया जाता था।

अशरफ़

अशरफ ये नाम आपका वालिद साहब ने रखा है यानी कि बुलंदी को छूने वाला,आला,तो अब वो बुलंदी मर्तबे की है या फ़ज़ीलत की या तसव्वुफ़ की ये देखा जाए

अगर मर्तबा की बुलंदी देखनी है तो नबी के बेटे है आप यानी इब्ने रहमतुल लिलआलमीन हैं अब अगर तसव्वुफ़ की बुलंदी देखनी है तो आपने हज़ारो औलिया अल्लाह से फेज़ लिया है अब अगर फ़ज़ीलत की बुलंदी देखनी है तो आजतक आपका रोज़ा ए अक़दस और आपकी नस्लें आपकी शान का परचम सारे आलम पर फहरा रहीं है और ये सिलसिला ता क़यामत तक जारी व सारी रहेगा आप हर लिहाज से अशरफ़ हैं।

अशरफी सिलसिला

ये सिलसिला आप ही से मंसूब है।ध्यान देने की बात है अलिफ से इसका पहला लफ्ज़ और या से आखरी लफ्ज़ खत्म हो जाता है गोया की इशारा हो कि अशर्फियो अपनी किस्मत पर जितना नाज़ करो कम है क्योंकि अलिफ से या तक तमाम सिलसिला का फेज़ उसकी जानिब हो गया एक और बात की मख्दूम अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी रहमतुल्लाह ने हर मशहूर व मारूफ दरगाह से फेज़ लिया है।

जहाँगीर

जहाँ--दुनिया

गीर-पकड़ने वाला

यानी जहांन पर कब्ज़ा करने वाला अल्लाह अल्लाह आप की शान बहुत ही अज़ीम व आला है।

दुआ और आपकी विलादत

आपके वालिद साहब को अल्लाह ने बेटियां अता की थी लेकिन उनकी एक ही आरज़ू थी कि अल्लाह एक बेटा अता फ़रमा दे जो आगे चलकर मेरा तख़्त सम्भाल सके।एक दिन आपकी वालिदा ने इशा की नमाज़ पढ़कर बेटे के लिए दुआ

मांगी और रोने लगी रोते रोते उसी दर पर आँख लग गई तो ख्वाब में उनके ही जद्दे अमज़द शेख़ अहमद यासवी अलैहिर्रहमा **को** ख्वाब में देखा जो फरमा रहे थे कि बेटी ग़म न करो तेरी दुआ क़बूल हुई उसके बाद फ़ज़र का वक़्त हुआ आपकी वालिदा आपके वालिद से ये ख्वाब बयान ही कर रही थी कि सिमनान के मशहूर फ़क़ीर मज्जूब जिनका नाम शेख इब्राहिम अलैहिर्रहमा था वो अचानक से हाज़िर हुए हालांकि पूरे सिमनान में वही एक हस्ती थे जो महल मे कहीं भी कभी भी घूम सकते थे लेकिन फ़ज़र के वक़्त वो भी यकायक उनको देखकर आप के वालिद खड़े हो गए तो फ़क़ीर ने कहा खुश रहो सुल्तान।उसके बाद फ़क़ीर ने कहा सुल्तान अगर तुम बेटा चाहते हो तो एक सौदा करो।सुल्तान ने कहा सौदा बताए बाबा हमे सब मन्जूर है उन फ़क़ीर ने फ़रमाया की 1000 अशर्फियां हमे दे दो और अशरफ़ ले लो।आपके वालिद ने एक हज़ार अशरफी उनको दे दी।वक़्त पूरा होने पर आपकी विलादत हुई।

बचपन

तसव्वुफ़ आपके डीएनए में था।आपके वालिद ओर वालिदा तसव्वुफ़ की तरफ़ हामिल थे।जब आप 4 साल 4 महीना 4

दिन के हुए तो आपकी रस्मे बिस्मिल्लाह हज़रत इमामुद्दीन तबरेज़ी अलैहिर्रहमा के हाथों से अदा हुई।

तालीम

जब आपकी उम्र 7 साल हुई तो आप 7 तरह की किरात के साथ क़ुरआन शरीफ खत्म कर चुके थे।आपके उस्ताद में किरात के मशहूर ज़माना कारी अली बिन हमज़ा कुफी और शेख़ रुकनुद्दीन अलाउद्द दौला इनसे आपने सीखा है।जब क़ुरआन पढ़ना जान गए तो क़ुरआन और हदीस को समझने में लग गए।आप तसव्वुफ़ की तरफ अपने मुबारक क़दम **बढ़ा** चुके थे आप ज्यादा वक्त तदब्बुर और तकफ़्फ़ुर में रहते।आप हुजरे में अकेले बैठे रहते। हज़रत खिज्र अलैहिस्सलाम ने आपको इसमें जात का वजीफ़ा अता किया और असकरे ओवेशिया की भी तालीम दी।

सिमनान के सुल्तान

जब आप 15 साल के थे तब आपके वालिद का इंतेक़ाल हो गया उसके बाद जिम्मेदारों की राय मशवरे के बाद आप को सिमनान का सुल्तान बनाया गया ।10 साल तक आप सिमनान के सुल्तान रहे।फिर 27 रमज़ान को हज़रत खिज्र

अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और आपको तख़्त छोड़कर हिन्द रवानगी की और ताकीद करते हुए कहा जल्दी जाओ आपके पीरो मुर्शिद आपके इंतज़ार में है।ईद के दिन आपने तख्त छोड़ दिया और अपनी माँ से कहा कि मुझे मेरे पीरो मुर्शिद और अल्लाह की रज़ा के लिए हिन्द जाना ही पडेगा लिहाजा मुझे इजाजत दे आपकी माँ खुद एक वलीया थी वो तसव्वुफ़ के रास्ते मे आने वाले इम्तिहानो को समझती थी उन्होंने कहा ठीक है मेरे लाल लेकिन अपने साथ फ़ौज रख लो आपने माँ को मना नही किया और जब सिमनान की सरहद पर पहुंचे तो फ़ौज से कहा जाओ मेरे भाई की खिदमत में रहो इसकी जरूरत मुझसे ज्यादा उन्हें है क्योंकि में मुल्क फतेह करने नही जा रहा हूँ बल्कि दिलो पर कब्ज़ा करने जा रहा हूँ।ये कहकर आपने लश्कर को वापिस कर दिया और हिन्द के लिए निकल पड़े आपके साथ दो-तीन साथी और भी थे जो आपके साथ चल रहे थे।

बुखारा में आमद

आपकी आमद सबसे पहले बुखारा में हुई जहाँ एक मज्ज़ूब ने अपना सर आप के हाथ पर रगड़ा उसके बाद आपको जाने का रास्ता और **मंज़िल** अपने हाथो में नज़र आने लगी।उन

मज्जूब फ़क़ीर ने आपको हिदायते,नसीहते,दुआएँ दी उसके बाद आपने मुल्तान तक किसी से रास्ता नही पूछा उन्होंने कहा जल्दी करो आपके मुर्शिद आपका इंतज़ार कर रहे हैं।

समरकन्द में आमद

बुखारा से लगभग 256 किलोमीटर दूरी पर समरकन्द जब आप पहुंचे तो वहां की मस्जिद में एतिकाफ की नीयत कर ली आप जहां भी जाते ज्यादातर मस्जिद में ही रुकते थे क्योंकि आप नमाज़ बा जमात ही पढ़ने के कायल थे।आप मस्जिद में आराम फरमा थे रात हुई तो आपके साथी जैसे ही नींद की आगोश में आये आप चुपके से वहाँ से चले आये और कहा मंज़िल मुझे पाना तो क्यों बेचारो को पैदल चलाया जाए जबतक सुबह होती वो आपको तलाश करते आप बहुत दूर निकल आए थे।

मख्दूम जहानीया जहां गश्त रहमतुल्लाह अलैह से मुलाकात

सम**र**कन्**द** से निकलने के बाद आप अफगानिस्तान होते हुए मुल्तान पहुंचे जहां पर ऊंच शरीफ में आपकी मुलाकात वक़्त

के मख्दूम क़ामिल वली अल्लाह हज़रत सैयद मख्दूम जहानीया जहाँगश्त रहमतुल्लाह अलैह से हुई ।आपको देखकर वो बहुत खुश हुए कहा आज बड़े अरसे बाद ऐसे सैयद ज़ादे से मुलाकात हुई जो राहे तसव्वुफ़ में सादिक़ और खालिस है।दो सैयद जादे इकट्ठा हुए एक सैयद ने दूसरे सैयद को देने में बखीली नही की यानी झोली भर के फेज़ दिया और लिया गया।उसके बाद आपने "या गफूर" की इजाजत देकर कहा जाओ अशरफ आपके शेख़ आपका इंतजार कर रहे हैं।

क्या आपने सैयदना मख्दूम यहया मनेरी रहमतुल्लाह अलैह का नमाज़ ए जनाजा पढाया है

अमूमन ये भी देखा जाता है कि लोग अक्सर कहते रहते है कि हज़रत सैयद मख्दूम अशरफ जहाँगीर सिमनानी अलैहिर्रहमा ने मख्दूम ए बिहार अलैहिर्रहमा का नमाज़ ए जनाज़ा पढाया है जबकि ये रिवायत सही है जब आप मुल्तान से दिल्ली ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह,और ख्वाज़ा कुतबुद्दीन बाख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह के आस्ताने पर हाजिरी देकर आप बिहार से गुजरे हैं उस वक़्त सैयदना मख्दूम शेख सरफुद्दीन यहया मनेरी रहमतुल्लाह अलैह का इन्तेकाल हो गया था और उनकी

नमाज़े जनाज़ा आप ने ही पढ़ाई है **और आप को मख्दुमे बिहार का असा मुबारक भी अता किया गया।**

पीरो मुर्शिद की बढ़ती तड़प

उधर पांडवा में जैसे ही खबर हुई कि आप बिहार आ चुके हैं आपके पीरो मुर्शिद हुज़ूर शेख अलाउल हक पांडवी रहमतुल्लाह अलैह ख़ानक़ाह से बाहर खड़े हो गए क्योंकि हज़रत खिज्र अलैहिस्सलाम ने आपको खबर कर दी थी। जिस रोज़ आपको पांडवा पहुंचना था उस दिन आपने मुरीदों से कहा आज दो पालकी तैयार करो आपके हुक्म के मुताबिक दो पालकी तैयार हो गई खादिम लेकर गांव के बाहर आये साथ मे आशिको का हुजूम था।एक शख्स आता दिखाई दिया आपने कहा जाओ देखो क्या ये अशरफ हैं-?।वो घुड़सवार आपके पास आया और कहा मियाँ क्या आप अशरफ हैं आपने कहाँ हाँ में अशरफ हूँ ये सुनते ही घुड़सवार आप के पास आये और कहा हां हुज़ूर वो आपके अशरफ ही है।जैसे **ही आप** करीब **पहुँचे** है आपने सीने से लगा लिया मानो शेख अलाउल हक अलैहिर्रहमा बहुत दिन से बिछड़े यार से मिले हो शायर ने क्या खूब नक्शा खींचा है कि

मेरे ज़िंदगी के मालिक मेरे दिल पे हाथ रख दो
तेरे आने की खुशी में कहीं मेरा दम निकल न जाए

फिर आपके मुर्शिद ने कहा ए अशरफ पालकी में बैठो आपने कहा हुज़ूर में पैदल ही चलूंगा आपकी बराबरी नही करूँगा। उन्होंने कहा ये मेरा हुक्म है अब आप मजबूर थे उसके बाद आपने कहा ठीक है लेकिन मेरी पालकी पीछे रहेगी।क़ाफ़िला चलने लगा जैसे ही ख़ानक़ाह आने वाली थी आप पालकी से कूद गए और दौड़कर अपने मुर्शिद के इस्तेकबाल के लिए दरवाज़े पर खड़े हो गए आप के मुर्शिद ये देखकर बहुत ही खुश हुए।

अज़ीज़ों ये होता है पीरो मुर्शिद का मक़ाम यहां एक बात और गौर करने वाली है आज लोग कहते हैं कि में सैयद हूँ मै क्यों किसी का एहतराम करूँ जबकि तसव्वुफ़ जात/रिश्तदारी से नही अता होता जो भी शख्श खुद को अल्लाह की राह में मुर्शिद की ख़िदमत में फना कर देता है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त

उसे अज़ीम मर्तबा अता कर देता है और क़ुरआन क़रीम में साफ साफ़ इरशाद फ़रमा दिया है कि सुनो लोगो तुम में से वही लोग अल्लाह के क़ुर्ब को हासिल करेंगे जो मुतक़्क़ी और परहेज़ गार हैं।यहाँ रूहानी मंज़र तो देखिए मख्दूम अशरफ़ खुद सैयदाए क़ायनात के बेटे हैं फ़ातमी सैयद है लेकिन हज़रत कुतुबे बंगाल हज़रत ख्वाज़ा अलाउल हक पांडवी रहमतुल्लाह अलैह की ताज़ीम करते हुए एक मुरीद की तरह ही पेश आते हैं और दुनिया को एक सबक भी दे रहें हैं।

उन्होंने अपने बावर्ची मुरीद से खाना तैयार करने को कहा जबकि वो बावर्ची खुद तहज्जुद गुजार था।अल्लाह अल्लाह आज 2-4 किताब पढ़कर औलिया अल्लाह पर भोंकने वाले देखो उनके घर के बावर्ची भी शरीयत पर तुमसे ज्यादा अमल करने वाले होते थे यूं ही नही दुनिया इन्हें आज भी याद करती है यूं ही नही इस्लाम हिन्द की सरजमीं पर फैला है।

जहाँगीर

जहाँ--दुनिया

गीर--पकड़ने वला

जैसे की ऊपर आपने पढ़ा कि किस तरह आपके नाम के मायने निकल रहै और अहले तसव्वुफ़ इस मायने को तस्लीम करते हैं क्योंकि मेरे मख्दूम आपकी शान ही निराली है आपकी शान बयान करना मुमकिन ही नहीँ।

जब मुर्शिद के पास रहते हुए 4 साल गुजर गए तो एक दिन मुर्शिद के मन मे ख्याल आया कि आपको कोई टाइटल दिया जाए वो तहज्जुद की नमाज़ पढ़कर बैठे ही थे कि जहाँगीर जहाँगीर की आवाज़ें ग़ैब से आनी शुरू हुई।उसके बाद से आपको जहाँगीर का खिताब दिया गया सारे मुरीद आपके पास आते कहते खिताब ए जहाँगीरी मुबारक हो।एक बात याद रखना सूफिया को लक़ब ख़ुदा अता करता है इसलिए बे साख्ता इंसान के दिल में हज़ारो साल बाद भी वही **लक़ब** जुबान से अदा होता है और ताक़यामत तक उन्हें वही लक़ब से पुकारा जाएगा जिस लक़ब को खुदा ने अता किया है।

उसके बाद आपको जाने का फरमान सुनाया गया आप रोने लगे मुर्शिद से कहा अभी मुझे यही रहने दीजिए हुजूर उसके बाद आपको 2 साल और रहने का शरफ़ हासिल हुआ।

जौनपुर में आमद

जब 27वीं शब को आपको मुर्शिद ने बुलाया तो एलान हुआ कि आप जौनपुर जाएंगे।उसके बाद आप जौनपुर के लिए रवाना हुए मुरीदों के साथ पीरो मुर्शिद भी आपको गाँव के बाहर छोड़ने आए।जब आप जौनपुर आए तो बहुत ही शान के साथ 745 हिजरी में आपकी आमद हुई लोग एक दूसरे से पूछते ये हसीनो जमील नोजवान कौन है हर तरफ आपकी आमद के चर्चे थे उसके बाद आपने मस्जिद में एतिकाफ करके क़याम किया।

हज के लिए रवाना

डॉक्टर सैयद मोहम्मद अशरफ जीलानी ने अपनी किताब में लिखा है कि आप 15 साल तक हिजरत में रहे यानी 760 हिजरी तक आप मक्का,मदीना,शाम,यमन,मिस्र, बल्ख,मुल्तान जैसे मुख़्तलिफ़ मुल्कों में रहे।

मक्का में आपकी मुलाकात हज़रत अब्दुल्लाह साफई यमनी अलैहिर्रहमा से हुई।आप उस वक़्त के वली ए क़ामिल दरवेश थे।आप यमनी अलैहिर्रहमा **की** मज़ार मक़्का में ही है।

सैयद अली हमदानी से मुलाकात

उसी वक़्त के मशहूर आलिमे दीन सैयद अली हमदानी अलैहिर्रहमा भी हज करने गए हुए थे।एक दिन एक महफिल में बैठे थे जहां सूफिया/उलेमा की जमात थी आप की मुलाकात भी यही हुई थी उस वक़्त वो "अवारीफुल मआरिफ़"का अयादा फरमा रहे थे।फिर सैयद अली हमदानी मदीना मुनव्वरा चले गए एक दिन वो 400 औलिया अल्लाह की झुरमुट के पेशवा की शक्ल में बैठे थे इतने में मेरे मख्दूम ए किछोछा की आमद हुई आप को देखते ही सारे औलिया अल्लाह आपकी ताज़ीम के लिये खड़े हो गए ये देखकर सैयद अली हमदानी अलैहिर्रहमा सोचने लगे वल्लाह ये मर्दे मुजाहिद किस मनसब पर फ़ायज होगा जिसका ऐहतराम हरम के औलिया अल्लाह करें उसके बाद वो भी आपके साथ हो लिए

मिस्त्र में आमद और फतह का पहाड़

ये वो पहाड़ है जो मिस्त्र में है जहां पर औलिया अल्लाह चिल्ला कशी करते थे जिससे उनके दर्ज़े बुलंद होते थे यहाँ फतुहात का दर्जा मिलता है।आपने यहां पर भी 40 दिन का चिल्ला काटा उसके बाद आप को वो मर्तबा अता हुआ कि आलम का हर वली आपको मुबारकबाद दे रहा था यहाँ तक कि वलियों

के सुल्तान शेख अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह भी वहां मौजूद थे।

यमन वलियों की ज़मीन

जैसा कि हमारे नबी क़रीम ने फ़रमाया है कि शाम नबियो की ज़मीन है और यमन वलियों की।यमन को वलियों की सरजमीं इसलिए भी कहते है क्योंकि यहाँ पर मौलाए क़ायनात रजिअल्लाहू तआला अन्हू के हाथों पर लोगो ने इस्लाम कबूल किया था।आप रहमतुल्लाह अलैह भी जब यमन पहुंचे तो 15 शाबान की रात आई तो आपने मस्जिद में क़याम किया और इबादत की।

अज़ीज़ों यहाँ पर ये गौर करना जरूरी है कि 15वीं शाबान में रात जागकर इबादत करना ये सूफिया/औलिया/का तरीका रहा है आज अगर कोई आप पर फतवे लगाता है तो उसको फतावे लगाने दो आप अपने औलिया अल्लाह की तरीक़ो पर चलते रहे इसी में ईमान की सलामती है आला हजरत अजीमुल बरकत के इस शेर से पता चलता है कि ईमान की सलामती किसमे है जरा गौर करें

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार असहाबे रसूल
नज़्म है और नाव है इतरत रसूल अल्लाह की

यहाँ पर इतरत(आल)तो मख्दूम ए अशरफ जहाँगीर सिमनानी रसूलल्लाह की इतरत हैं अल्लाह अल्लाह अशर्फियो अपनी किस्मत पर जितना नाज़ करो कम है।

निजाम गरीब यमनी से मुलाकात

आपकी मुलाकात उसी रात को निजाम गरीब यमनी अलैहिर्रहमा से हुई उन्होंने जैसे ही आपको देखा आपके ही होकर रह गए उसके बाद आपके सवानेह पर सबसे मोतबर किताब लाताएफ ए अशरफी उन्ही की देन है जो आपकी सवानेह की बुनियाद है।इसमें आपके वाकियात,करामात,इबादात,कुर्बानियों,रियाजत,हुस्न ओ एखलाक का तज़किरा है वो सन और वक़्त के पीछे नही पड़े अक्सर औलिया अल्लाह की रिवायत और वक़्त में तब्दीली

देखने को मिल सकती है लेकिन हकीकत वही रहती है बस वक़्त थोड़ा बहुत इधर उधर हो सकता है आपकी शान नही.

फिर वो और सैयद अली हमदानी अलैहिर्रहमा भी आपके साथ रहने लगे आप पूरी दुनिया में आफताब की मानिंद दीन इस्लाम के लिए घूम रहे थे।

मुर्शिद की याद में वापसी

जब आपको मुर्शिद की याद आई तो आप 15 साल बाद मुर्शिद के पास हाज़िर हुए तो अगले दिन मुर्शिद ने लोगो से पूछा मेरे अशरफ़ को कहीं देखा है मुरीदों ने कहा हुज़ूर वो अपने हुजरे में हैं कपड़े बदल रहे हैं।ये कहकर उन्होंने कहा चलो मुझे ले चलो वहाँ मुरीद आपको लेकर गए वो आपके हुजरे में दाखिल हुए उधर मख्दूम अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी से पूछा क्या कर रहे हो अशरफ।आपने जवाब दिया हुजूर कमरबन्द बांध रहा हूँ पीरो मुर्शिद ने कहा ज़रा मजबूती से बांधना अशरफ़ ।आप मुर्शिद का ये इशारा समझ गए की आप शादी नही करेंगे अल्लाह अल्लाह ये होते हैं अल्लाह वाले।आपने कमरबन्द मजबूती से बांध लिया लेकिन आप मन मे सोच रहे थे कि चलो में शादी नही करूँगा लेकिन मेरा खानदान कहाँ से चलेगा।आप मन में सोच रहे थे कि मुर्शिद ने

मुस्कुरा कर कहा परेशान मत हो प्यारे मेने उसके बारे में सोच लिया है।

दूसरा हज और आपके जानशीन

फिर आप रहमतुल्लाह अलैह 764 हिजरी में दूसरे हज पर गए वहां से दमिश्क़ के लिए रवाना हुए जहाँ सीरिया में आपकी बहन रहती थी इनका निकाह आले रसूल औलादे गौसे आज़म सैयद अब्दुल गफूर अलैहिर्रहमा से हुआ था।आप जब अपनी बहन के यहाँ से चलने लगे तो सैयद अब्दुर्रज़ाक़ नूरुलएन रहमतुल्लाह अलैह उस वक़्त 12 साल के थे वो भी आपके साथ आने की ज़िद करने लगे कि मुझे भी मामू के साथ जाना है अज़ीज़ों यहां एक ध्यान देने वाली बात है कि आपके भांजे का ज़िद करना भी हिकमत थी क्योंकि आप शादी नही करेंगे ये आपको आपके मुर्शिद ने पहले से ही इब्तिला कर दिया था और आपके खानदान को चलाने की भी जिम्मेदारी उन्होंने ले ली थी तो मुर्शिद की बात खाली कैसे हो सकती है क्योंकि वो तो अल्लाह और उसके रसूल के सच्चे आशिक थे।

उसके बाद आप अपने भांजे को लेकर आ गए और खुद उनको तालीम देते अपनी सोहबत में रखते।1 साल में उन्होंने क़ुरआन हिफ़्ज़ कर लिया।

सैयद अब्दुर्रज़ाक़ नूरुलएन

आप हुज़ूर गौसे आज़म की औलाद में से हैं आजतक जितने भी अशरफी सादात हुए हैं सब आपकी औलादे हैं क्योंकि मख्दूम अशरफ जहाँगीर सिमनानी रहमतुल्लाह अलैह ने शादी नही की थी और आपको अपना जानशीन बनाया था।आपका शजरा ए नसब कुछ यूं है

सैयद अब्दुर्रज़ाक़ नूरुलएन रहमतुल्लाह अलैह

सैयद अब्दुक गफ़ूर अलैहिर्रहमा

सैयद अब्बास अलैहिर्रहमा

सैयद बदरूद्दीन क़ादरी अलैहिर्रहमा

सैयद अली अलाउद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयद मोहम्मद शमसुद्दीन क़ादरी अलैहिर्रहमा

सैयद सैफ़ुद्दीन अली क़ादरी अलैहिर्रहमा

सैयद जहीरुद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयद अबू नसर अलैहिर्रहमा

सैयद अबू सालेह अलैहिर्रहमा

सैयद ताजुद्दीन अबू बकर अलैहिर्रहमा

सुल्तानुल औलिया शेख अब्दुल कादिर ज़ालानी रहमतुल्लाह अलैह

इस तरह आपका खानदान बहुत ही आला खानदान है।हुज़ूर सरकारे कलां अलैहिर्रहमा, सरकार आला हजरत अशर्फी मियाँ,हुज़ूर मुहद्दिस ए किछोछवी,अल्लामा शैखुल इस्लाम सैयद मदनी मियाँ,हुज़ूर ग़ाज़ी ए मिल्लत सैयद हाशमी मियाँ आपकी ही औलाद में है।

मौलाना रूम रहमतुल्लाह अलैह के घर पर आपकी आमद

तसव्वुफ़ के आला दर्ज़े पर फ़ायज मसनवी शरीफ के मुसन्निफ़ सुल्तानुल उलेमा,सुलतानुश शोअरा हज़रत मौलाना जलालुद्दीन रूमी तबरेज़ी रहमतुल्लाह अलैह के घर पर

आपकी आमद हुई और उनके बेटे से मुलाकात की उन्होंने आपके क़दमो को बोसा दिया और इस्तेक़बाल किया ।एक जलसे का प्रोग्राम तय हुआ उस वक़्त रोम में एक शैखुल इस्लाम होता था वो किसी दूसरे को मौका नहीं देता था उलेमाओ से हसद रखता था खुद को सबसे बेहतर समझता **था**।स्टेज लग चुका था उलेमा बेठ गए आप की आमद हुई उलेमा खड़े हो गए ये देखकर वो जल गया उसने सोचा लाओ इन बुजुर्ग से एक मसला पूछ कर अवाम के सामने इन्हें बेइज्जत करूँ वो मन मे सोच ही रहा था इधर आप ने जैसे ही अपनी तवज़्ज़ो उसकी तरफ डाली तो उसको स्टेज पर 100 चेहरे दिखाई दिए आपने कहा शैखुल इस्लाम साहब पूछो किस्से पूछना चाहते हो वो शर्मिंदा हुआ और वहाँ से भाग खड़ा हुआ।उसके बाद आपने बयान फ़रमाया निजाम गरीब यमनी अलैहिर्रहमा तहरीर करते हैं कभी कभी आपके बयान से ऐसा लगता जैसे आज फिर मौलाना जलालुद्दीन रूमी रहमतुल्लाह अलैह खुद बोल रहे हैं बयान सुनकर रोम की अवाम के आँखों मै आंसुओं की झड़ी थी।उस दौर में आपकी मुलाकात शेख़ अब्दुल वफ़ा ख़्वारजी अलैहिर्रहमा से हुई वो अपने वक़्त के बहुत बड़े उलेमा थे।लेकिन आपके शैदाई बन गए।

(अज़ीज़ों यहां ध्यान दो की पहले के उलेमा क़ुरआन हदीस पढ़ने के बाद तसव्वुफ़ के पीछे भागते थे आज के उलेमा बयानों/टीका टिप्पणी के पीछे भागते है हां कुछ उलेमा आज भी है जो तसव्वुफ़ वालो के साथ है और उन्ही उलेमा को अल्लाह के रसूल ने अपना जानशीन कहा है न कि उन उलेमाओं को जिनके पास इल्म के सिवा कुछ भी नही और वो इल्म इल्म नही होता जो अदब न सिखाये,जो सूफिया की जमात पर हमला करना सिखाए, जो हसद जलन सिखाए इसलिए ऐसे लोगो से दूर रहिए उनका बायकॉट करे ऐसे लोग समाज के लिए शरीयत ओर अवाम के लिए बड़ा खतरा बनते जा रहे हैं)

पत्थर की मूर्ति में जान आ गई

एक बार आप एक राह से गुजर रहे थे साथ में मुरीदों और जानिसारो का क़ाफ़िला भी था।आपके एक मुरीद थे जिनका नाम था हज़रत गुल खनी जो कि अफगानिस्तान से आये थे उन्हें एक बहुत खूबसूरत मूर्ति दिखाई पड़ी वो उसे ही देखते रहे क्योंकि उन्होंने पहले मूर्ति नही देखी थी ये देखकर मख्दूम अशरफ़ जहाँगीर सिम्नानी रहमतुल्लाह अलैह ने कहा गुल

खनी वो मूर्ति बहुत पसंद आ गई क्या मुरीद ने सर झुकाकर जवाब दिया हां हुज़ूर आपने कहा जाओ उसके पास और कहो ए मूर्ति चल तुझे मेरे मख्दूम ए अशरफ़ ने बुलाया है इसके बाद वो उसके पास गए और कहा ए मूर्ति चल तुझे मेरे पीरो मुर्शिद ने बुलाया है इतना सुनना था कि वो पत्थर की मूर्ति चलने लगीं आपने उसी मूर्ति जो कि अब एक हसीनो जमील औरत बन चुकी थी उसी से गुल खनी का निकाह पढ़ाया आज भी उनकी औलादे मद्रास(चेन्नई) में मौजूद है ऐसे कमालात वाले थे मेरे मख्दूम अशरफ़।

किछौछा कैसे और क्यों

आपने सफर जारी रखते हुए रुहाबाद में कई जगहों पर पानी पिया जहाँ के पानी का जायका अच्छा नही था जब आप यहां आए तो आपने पानी पिया और कहा कुछ अछा यानी ये पानी पहले के मुताबिक कुछ अच्छा है उसके बाद से इस जगह का नाम किछौछा ही पड़ गया और इसी नाम से पूरी दुनिया मे मशहूर हो गया।इसके पीछे भी 2-3मुख़्तलिफ़ रिवायत है जिनमे सबसे मोतबर रिवायत यही है।

एक नज़र में

आपके पास किसी चीज़ की कमी नही थी।

आपने 500 औलिया अल्लाह से मुलाकात की है।

आप ईसा अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर हैं यानी उनके ताबे है इसका मतलब ये है कि जो क़ुव्वत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पास थी अल्लाह ने आपको भी वही शरफ़ बख्शा था।कोढो का कोढ़ दूर करना और मुर्दो को ज़िंदा करना ये आपके क़मालात में था।लेकिन एक बात जरूर याद रखना कि अम्बिया का मर्तबा औलिया/सहाबा से बड़ा होता है इसलिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मर्तबा आपसे ज्यादा था इस बात में कोई शक नही।आप का आस्ताना यूपी के जिला अम्बेडकर नगर के किछौछा शरीफ में है जहां 27,28 मुहर्रम को आप का उर्स मनाया जाता है।आप एक बहतरीन खतीब भी थे और आलिमे दीन थे।आपकी औलादे आज भी ज़माने भर में आप का फैज़ान लुटा रही है और ताक़यामत तक आपका फैज़ान जारी व सारी रहेगा।

सर कटाऐं घर लुटाए अहले बैत ए मुस्तफ़ा

हस्र तक ऐसा घराना ढूंढते रह जाओगे

मख्दूम शेख़ सरफ़ुद्दीन यहया मनेरी अलैहिर्रहमा

विलादत, नाम,नसब

आपकी विलादत 29 शाबान 661 हिजरी और अंग्रेज़ी केलेण्डर के मुताबिक 7 जुलाई 1263 ईस्वी को बिहार की राजधानी पटना के करीब मनेर में हुई।आपके वालिद का नाम मख्दूम यहया मनेरी अलैहिर्रहमा था और आपका पूरा नाम सैयदना शेख़ सरफ़ुद्दीन अहमद बिन यहया मनेरी और लक़ब मख्दूम उल मलिक व मख्दूम ए बिहार है।

शजरा ए नसब

वालिद की तरफ आप हाश्मी सादात और वालिदा की तरफ से आप हुसैनी सादात हैं।यानी दोनो तरफ से आपका घराना सैयदुल अम्बिया का घराना है वालिद की तरफ से आपका शजरा ए नसब हज़रत जुबेर इब्ने अब्दुल मुत्तलिब कुरेशी हाश्मी से मिलता है और मां की तरफ से हज़रत सैयदना इमाम जाफर सादिक़ रजिअल्लाहू तआला अन्हु से मिलता है।

आरिफ मोमिन यमनी अलैहिर्रहमा की मनेर में आमद

दीन की तब्लीग के लिए मनेर में आने वाले सबसे पहले दरवेश हज़रत आरिफ मोमिन यमनी अलैहिर्रहमा हैं आप ताजिर थे और कपड़े बेचने की गरज से यहाँ आये थे लेकिन जब आपने यहाँ के लोगो की गुमराही को देखा तो दीन की तब्लीग शुरू की।हर तरफ़ यहां शिर्क ही शिर्क हो रहा था जिसे देखकर शेख़ आरिफ यमनी अलैहिर्रहमा ने यहां तब्लीग करने की ठानी और अपना मिशन शुरु किया लेकिन कुछ ही दिनों बाद जब लोगो का आपसे राब्ता बढ़ता गया तो ये आग की तरह सब तरफ फैलने लगी उसी कड़ी में ये खबर राजा के दरबार तक पहुँची तो राजा ने अपने खादिमो को भेजकर आपसे कहलवाया की सुनो ताजिर आज से तुम अज़ान नही दोगे।आपने कहा ठीक है लेकिन आपने चोरी छिपे नमाज़ पढ़ना जारी रखा लोग आपके पास आते ही रहते थे जिसे देखकर राजा ने आपको शहर से बाहर चले जाने की बात कही आपने राजा की बात मानते हुए मनेर से मदीना मुनव्वरा की तरफ चल पड़े।ये वही मदीना मुनव्वरा है जिसके बारे मे मशहूर शायर जिगर मुरादा बादी कहते हैं कि

यहाँ क़म नज़र का गुजर नही
यहाँ अहले ज़र्फ़ का काम है

आप की आमद मदीना मुनव्वरा में हुई सुनहरी जालियों के पास बैठकर आप रोने लगे और रोते रोते अर्ज़ की हुज़ूर वहां किसी दूसरे को भेजिए उन लोगो ने हमे निकाल दिया है।

आपका खानदान और मनेर

उधर आरिफ यमनी अलैहिर्रहमा रो रो कर प्यारे आक़ा की बारगाह में अर्ज़ कर रहे थे इधर बेतुल मुक़द्दस के पास हाश्मी कुरैशी फ़क़ीर अल्लामा मख्दूम ताज अलैहिर्रहमा को नींद में सैयदुल अम्बिया का ख्वाब आया और उन्हें मनेर जाने की इजाजत मिली।लेकिन वो मनेर के बारे में नही जानते थे लिहाजा उन्होंने भी मदीना की तरफ हिजरत कर दी।जैसे ही आप मदीना मुनव्वरा पहुंचे तो आरिफ मोमिन यमनी ने आकर आपका इस्तेकबाल किया और कहा हज़रत चले में आपको मनेर तक ले चलूँगा आपने कहा आपको बगैर बताए केसे पता चला तो आरिफ यमनी अलैहिर्रहमा फरमाने लगे कि कल मुझे ख्वाब में आपका चेहरा दिखाया गया था इसीलिए मेने

आपको देखते ही पहचान लिया।आप इल्म, क़ुरआन, हदीस, फ़िक़्ह के जबरदस्त आलिम थे।उसके बाद आप हिन्द के लिए रवाना हुए मदीना से आपके साथ सिर्फ 25 लोग चले थे लेकिन रास्ते मे आते आते 300 लोगो की भीड़ साथ हो गई।जब आप और आपके चाहने वाले पटना पहुंचे तो राजा को सेनापति ने बताया कि महाराज कुछ लोग सेना के साथ आये हैं वो आपसे जंग की नीयत रखते हैं ये सुनकर राजा ने कहा उन पर हमला कर दो जिसके बाद राजा के सिपाहियों ने उन निहत्थों को मारना शुरु कर दिया जिसमें सेकड़ो मोमिन शहीद हुए जिनकी क़ब्रे आज भी पटना में है उस के बाद आपने अपनी दिफ़ा में तलवार उठाई और जंग हुई जिसमे राजा मारा गया।जब राजा मारा गया तो वहां की हुकूमत फ़क़ीर अल्ल्लामा ताज हाशमी अलैहिर्रहमा के पास आ गयी उन्ही को वहां का सुल्तान बनाया गया फ़क़ीर ने कहा सुनो लोगो डरो न हमारे पास आओ हमारा दीन समझो अगर तुम्हें पसन्द आए तो क़बूल करो करना हमारे राज्य में जबरदस्ती मजहब नही बदलवाया जाएगा।उसके बाद आपके अदल इंसाफ हुस्नो एखलाक से मुतासिर होकर लोगो ने इस्लाम कबूल किया।आपके साथ आपके बेटे शेख़ यहया मनेरी अलैहिर्रहमा और उनकी बीवी भी आई थी जिनसे आपको 4 शहज़ादे और

एक 1 शहज़ादी है उनमें से ही सैयदना शेख मख्दूम उल मुल्क हज़रत सैयदना शेख सरफ़ुद्दीन अहमद बिन यहया मनेरी अलैहिर्रहमा है।

बचपन और तालीम

आपने बचपन ही में अदब,तहज़ीब और तसव्वुफ़ की तरफ क़दम बढ़ा दिए थे।आप सूफिया और उलेमा की बहुत ताज़ीम करते थे।आप के पास जो भी उस्ताद आता तो आप उसके पास अदब के साथ बैठे रहते और तालीम की ख्वाहिश व तहज़ीब देखकर आपके वालिद अलैहिर्रहमा बहुत खुश हुए।आप उस्ताद की बहुत ख़िदमत करते बचपन मे आपका ये अंदाज देखकर सारा दरबार हैरत में था।

मख्दूम सहाबुद्दीन पीर जगजोत अलैहिर्रहमा

जब आपके उस्ताद और वक़्त के सूफी बुजुर्ग हज़रत मख्दूम सहाबुद्दीन पीर जगजोत अलैहिर्रहमा ने आपकी अक़ीदत और दिलचस्पी देखी तो आपको अपने साथ लेते गए।आपने उनके पास 17 साल रहकर सारे उलूम पढ़े।इन्होंने पढ़ाने में कोई कसर नही छोड़ी और आपने पढ़ने में कोई कसर नही छोड़ी।आप को तालीम से इतना लगाव था कि जब भी आपके घर से कोई खत आता आप उसे बगैर पढ़े ही रख देते क्योंकि

आपको ये डर रहता की कहीं ऐसा तो नही मेरे बाबा मुझे तलब कर लें और मेरी तालीम अधूरी रह जाए।आपसे मुतासिर होकर उस्ताद ने अपनी बेटी की शादी आपके साथ कर दी।और आप वहीँ अपने उस्ताद ससुर और बीवी के साथ रहने लगे।

मनेर में आमद,और मुर्शिद की तलाश

उधर आप अपने उस्ताद और बीवी के साथ रहते थे कि एक रोज़ खबर आई कि आपके वालिद का इंतेक़ाल हो गया और आपका आना जरूरी हो गया।आपने जब ये सुना तो गमगीन हुए क्योंकि एक तो वालिद का साया सर से उठ गया था और दूसरा उस्ताद अलैहिर्रहमा को छोड़कर मनेर जाना था लेकिन आप अपनी बीवी और बच्चे को लेकर मनेर आए।आने के बाद आपका मन दरबार मे नही लगता आपने अपनी मां से कहा की अब मुझे इल्म ए तरीक़त सीखना है और दूसरे को सिखाना है और मुझे इजाजत दे कि में तरीक़त के रास्ते मे जाऊँ।मां से इजाजत लेकर आप और आपके भाई दिल्ली की तरफ रवाना हुए।

बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह से मुलाकात

जब आप और आपके भाई माँ से इजाजत लेकर मनेर से मुर्शिद की तलाश मे दिल्ली की तरफ निकले तो उस वक्त हज़रत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह की विलायत और बुजुर्गी का डंका पूरे मुल्क में बजता था।आप जब उनकी बारगाह में आये तो वो आलमे जज़्ब व कैफ़ियत में थे ये देखकर आपने कहा भाई यहाँ से चलिए यहां मेरे लिए फेज़ नही है उसके बाद आप वहां से आगे की और चल दिये

(नोट--) अज़ीज़ों यहाँ ये ध्यान देना जरूरी है कि आपने बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह के पास देखा कि वो आलमे जज़्ब में है तो आपने कहा यहाँ से मुझे फेज़ नही मिलेगा इसका मतलब ये नही है हज़रत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह की तोहीन या उनके कमालात व अख्तियारात को कमतर किया है बल्कि वो उस वक़्त आलमे जज़्ब व केफियत में रहते और उनके जज़्ब में खलल डालने की हिमाकत कोई दूसरा नही कर सकता एक और बात उस दौर में औलिया अल्लाह को अपने पीर मुर्शिद के बारे में

मालूम हो जाता है आजकल की तरह लोग मुरीद और ख़लीफ़ा नही बनाते बल्कि हुक्में इलाही और प्यारे रसूल की रज़ामन्दी से ही वो सब मंज़िले मिलती थी लिहाजा ये मतलब बिल्कुल न निकाला जाए की हज़रत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह का मक़ाम व मर्तबा कम है वो क़लन्दर है और अहले तसव्वुफ़ में क़लन्दर का मर्तबा कुतुब,अकताब और सूफी से बड़ा होता है।

महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह से मुलाकात

अहले इल्म और अहले तसव्वुफ़ जानते है कि महबूबे इलाही हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह को कहा जाता है।आप 1291 में महबूबे इलाही की बारगाह में गए क्योंकि उस वक़्त दिल्ली में महबूबे इलाही के जैसा वली ए क़ामिल दूसरा नही था।जब आप उनसे मिले तो उन्होंने आपकी खूब महमान नवाज़ी की और वापिस जाते वक्त आपको तीन पान अता किये थे जो कि इशारा था कि आपकी जात उनके नज़दीक कितनी अहमियत रखती है क्योंकि उस दौर में औलिया अल्लाह अपने खास महमान को तोहफे के तौर पर पान का नज़राना देते थे तो इस लिहाज से आपकी

शान और मर्तबा का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।उसके बाद उन्होंने कहा कि आपका फेज़ हमारे पास नही बल्कि आपका फेज़ किसी और के पास है तुम उसके पास खुद पहुंच जाओगे।ये सुनकर आपके भाई को उदासी हुई क्योंकि दौर के दो वली ए क़ामिल जिनकी विलयात, क़रामत,रियाजत,इबादत,शोहरत, का डंका पूरी दुनिया मे बजता था उन दोनों दरवेशों के आस्ताने में आपका फेज़ नही था तो उन्होंने वापस आने का इरादा किया लेकिन मख्दूम ए बिहार ने कहा चलो एक जगह और हे वहां देख लेते हैं अगर वहां भी हमारा फेज़ नही होगा तो हम मनेर वापिस चले जाएंगे।

पीरो मुर्शिद

फिर उसके बाद वो शेख ए कबीर हज़रत ख्वाज़ा नज़बुद्दीन फिरदौसी रहमतुल्लाह अलैह के आस्ताने पर गए दरवाज़े पर पहुंचे तो दिल मे अजीब सी हरकत हुई आपको देखते ही शेख ने फ़रमाया आओ अहमद हम 12 साल से तुम्हारे ही इंतज़ार में थे तुम कहाँ थे-? आओ वक़्त बहुत क़म हे ये कहकर उन्होंने आपको अपने पास बिठाया और एक खत लेकर आये जो आपके लिए मदीना मुनव्वरा से आया था। आपको वो खत

दिया और मुरीद किया खिलाफत अता की और कहा अहमद अब तुम जा सकते हो। आपने अर्ज़ किया मुर्शिद मेरी तरबियत तो फ़रमाए ,मुर्शिद ने कहा जाओ अहमद तुम्हारी तरबियत अब सैयदुल अम्बिया ख़ुद फ़रमाएंगे।

(नोट--) यहां ध्यान दिया जाए कि मुरीद कोई आम शख्स नही बल्कि अगर हसब नसब देखा जाए तो वालिद की तरफ से हाश्मी सैयद और वालिदा की तरफ़ हुसैनी सैयद और तालीम ऐसी ही कि हर उलूम पर कब्ज़ा और **सोहबत ऐसी की** माँ भी सूफिया, सादिका,वलीया और वालिद भी सूफी आलिम,जाहिद फिर भी पीर से कह रहे हैं कि हुज़ूर मेरी तरबीयत फरमाए अल्लाह अल्लाह पीरो मुर्शिद का मर्तबा अब भी अगर न समझ पाए तो कभी नही समझ पाओगे मख्दूम उल मलिक मख्दूम ए बिहार के जैसी शख्सियत को भी मुर्शिद की जरूरत है जबकि आजकल के लोग कहते हैं कि नमाज़ पढो, हज अदा करो,ज़कात दो,बस मुरीद बनने की जरूरत नही है इस तरह के लोगो को ये मिसाल देखनी चाहिए।

मुर्शिद की वसीयत

आपके वापिस होते वक़्त मुर्शिद ने आपको चंद नसीहते करी जो यूं है

1--दुनिया की चीज़ को इतना ही इस्तेमाल करना जितना छत पर चढ़ने के लिए सीढ़ी का करते हो!

2---अल्लाह के अलावा सबसे इतना ताल्लुक़ रखना जितनी जरूरत हो और हुक्म ए शरीयत हो!

3--मुजाहिदा और रियाजत इस तरह होना चाहिए कि "में" मर जाये यानी तकब्बुर की बू बास न रहे।

4--शदीद ठंड हो पानी बर्फ बन जाये फिर भी बे वज़ू मत रहना।

उसके बाद आपने कहा जाओ और अगर कोई खबर सुनना तो वापिस मत आना।अभी आप कुछ ही दूरी तक गए थे कि एक खबर ने आपको झझकोर के रख दिया वो खबर ये थी कि

आपके मुर्शिद ने फानी ए जहाँ को अलविदा कह दिया है।ये खबर सुनकर आप मुर्शिद की वसीयत के आगे मजबूर होकर तड़प रहे थे क्योंकि मुर्शिद ने कहा था कुछ भी सुनना वापिस मत आना।अब आप का दिल व दिमाग एक अजीब केफियत में हो गया।तभी एक बेहयया(एक तरह की झाड़ी) के जंगल के पास पहुंचे तो एक मोर बोला उसकी आवाज़ पर एक वज़्द तारी हुआ और आपने अपने कपड़े फाड़ लिए और क़हीं गायब हो गए आपके भाई ने आपको खूब तलाश किया लेकिन जब आपको नही पाया तो घर चले आये माँ और बीवी को पूरा वाकिया बताया।

शजरा ए तरीक़त

हज़रत सरफ़ुद्दीन यहया मनेरी रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत शेख नजबुद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयदना शेख़ रुकनुद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयदना शेख़ बदरुद्दीन समरकन्दी अलैहिर्रहमा

सैयदना शेख़ सैफ़ुद्दीन ख्वारजी अलैहिर्रहमा

सैयदना शेख़ नजमुद्दीन कुबरा अलैहिर्रहमा

सैयदना शेख़ जियाउद्दीन नजीब सोहरवर्दी अलैहिर्रहमा

सैयदना शेख़ वजदुद्दीन अबु खफस अलैहिर्रहमा

सैयदना शेख़ मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह

सैयदना शेख अहमद सय्याह ख्वाज़ा मिशनाद दीनावरी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना सैयदुत ताइफा हज़रत जुनैद बगदादी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना हज़रत सैयदना शेख सिर्री शक्ति रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना हज़रत सैयदना शेख़ मारूफ करखी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना हज़रत इमाम मूसा रज़ा रजिअल्लाहो तआला अन्हु

आप के साथ फिरदौसी क्यों

सिलसिला ए फिरदौसी के ताल्लुक से ये जानना जरूरी है कि ये सिलसिला ए सोहरवर्दी की ही शाख है उस वक़्त हिन्द में जिन सिलसिला से दीन का सबसे ज्यादा काम हुआ है वो ये हैं।

1-कादरिया

2-फिरदौसिया

3-नक्शबंदिया

4-शत्तारिया

5--सोहरवर्दी

6-चिश्तिया

इस सिलसिले के इब्तिदा हज़रत नजमुद्दीन अल कुबरा से हुई आपको आपके पीर ने खिलाफत अता करते हुए कहा है कि तुम मशायख ए फिरदौस हो।

12 साल तक बेहयया पकड़े खड़े रहे

सूफिया फरमाते है कि अगर तारीख़ औलिया ए हिन्द में मख्दूम सैयद अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कलियरी रहमतुल्लाह अलैह की केफियत के हालत व मुआमलात में कोई दूसरा दरवेश उनके मुकाबले या उनका सानी हो सकता है तो वो मख्दूम ए बिहार हज़रत शेख सरफ़ुद्दीन अहमद यहया मनेरी रहमतुल्लाह अलैह हैं।अल्लाह अल्लाह ये शान है आपकी आपके मकाम का अंदाज़ा लगा पाना मुश्किल है।

बेहयया के जंगल के पकड़े हुए आप आलमे इस्तेग्राक में चले गए पत्तो ने आपको ढांक लिया सांप,पक्षी आपके ऊपर से निकल जाते आप को होश ही नही रहा आपने 12 साल तक एक बून्द पानी तक नही पिया एक दिन एक राजा शिकार खेलने आया उसने गौर से देखा तो उसे लगा कि ये शायद कोई आदमी ही है उसने सिपाहियों को हुक्म दिया कि इनपर से पत्ते हटाओ सिपाहियों ने सफाई शुरू क़र दी।फिर आपको देखकर सब दंग रह गए राजा ने कहा इन दरवेश को दरबार ले आओ आप को लाया गया आपके जख्मो की दवा शुरु हुई जब आंख खोली तो आपने राजा को सारा वाकिया सुनाया तो राजा आपसे बहुत मुतासिर हुआ।

(नोट--) अफसोस तो तब होता है जब यहूदियों की पोशाक जींस शर्ट पहनने वाले, दाढ़ी न रखने वाले,हराम हलाल का फर्क न करने वाले,रात दिन गुनाह करने वाले,जानवरो की तरह बाल रखने वाले,नचनिया स्टाइल में रहने वाले लोग,माँ बाप,उस्ताद की बेअदबी करने वाले,खड़े होकर कुत्तों की तरह पैशाब करने वाले लोग भी जब ये सवाल करते है कि औलिया अल्लाह नमाज़ नही पढ़ते थे हद है उनक़ी नमाज़ की

तमीज़ तुमको हो ही नही सकती।यहाँ 2 दिन एक आदमी पैर के बल पर नही खड़ा नही हो सकता तो औलिया अल्लाह ने 12 से 50 साल तक एक ही जगह पर खड़े होकर मुजाहिदा किया है क्या इस वक़्त वो इस दुनिया मे थे यानी आलमे इस्तेग्राक में थे तो फिर उनपर नमाज़ कैसी उस वक़्त वो जहाँ थे वहां उनकी नमाज़ अदा हुई है लिहाजा हमे अपने गिरेबान में झांकना चाहिए हम उनके नालेन में लगी मिट्टी की बराबरी नही कर सकते तो उनकी तौहीन तो क़तअन हराम है।

माँ से मुलाकात

आपके चचा-जाद भाई मख्दूम शाह शुएब फिरदौसी अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि एक रात शदीद सर्दी थी और बारिश भी बहुत तेज़ हो रही थी आपकी वालिदा एक कमरे में बैठी ये सोचकर ग़मज़दा थी कि आखिर ऐसे वक्त में मेरा लाल कहां किस हाल में होगा उनका सोचना ही था कि उन्होंने देखा कि उनका लाल सामने घर के बाहर खड़ा है आपकी माँ दौड़कर आई और आप **से** लिपट गई।जब आपसे लिपटी तो ये देखकर हैरान हो गई की इतनी तेज बारिश के बावजूद आपके जिस्म में एक भी बून्द पानी नही था।आपकी माँ ने कहा अहमद ये क्या माजरा है--?आपने मुस्कुराते हुए जवाब

दिया कि में आपको यही तो बताने आया हूँ अब आपके बेटे को कुछ नही होगा वो अल्लाह की राह में मक़बूल हो गया जब अल्लाह किसी बन्दे की हिफाजत करता है तो बन्दे को कुछ नही होने देता आप मेरे लिए परेशान न रहा करें मुझे कुछ नही होगा।

राजगीर का जंगल

आपने राजगीर के जंगल में चिल्ला किया और सुन्नते मूसा अलैहिस्सलाम अदा की यहाँ आपने कई दफा चिल्ला किया।यहाँ पर जैनमत और बौद्धमत के जोगी के निशान मिलते हैं।एक दिन एक जोगी आया और बेठ गया उसने हाथ मे एक बुत पकड़ा हुआ था वो बेठा ही था कि वो बुत उसके हाथ से गिर गया अब वो जोगी गुस्सा हो गया उसने कहा मेने इतने साल तेरी पूजा की और तू मुझसे नाराज हो गया ये कहकर उसने अपनी गर्दन काट ली क्योंकि वो बुत गिरने से उसे लगा कि वो बुत उससे नाराज़ हो गया है।तो इस तरह की जगह पर आपने चिल्ला किया ।

मौलाना निजामुद्दीन मदनी

आपने जंगल में कई सालों तक मुजाहिदा और मुशाहिदा किया उसके बाद आपको नफ़्स पर कन्ट्रोल करने और करवाने के सारे तरीके आ गए थे।जब आप जज़्ब से बाहर आये तो आपको सबसे पहले मौलाना निजामुद्दीन मदनी साहब ने तलाशा और आपके पास आने जाने लगे आपके दीवाने बन गए थे आपने उनकी मुश्किलात को देखते हुए ये फैसला किया कि अब में जुमा के दिन जामा मस्जिद आ जाया करूँगा तुम वही मुलाकात कर लिया करो।यहां जगंल आने में आपको दिक्कत होती होगी उसके बाद जुमा-जुमा आप जामा मस्जिद जाते रहते जहाँ दिन बदिन आपके चाहने वाले बढ़ते गए ।मौलाना निजामुद्दीन मदनी साहब ने आपके लिए एक झोपड़ी बना दी फिर आप वहाँ तीन दिन रहने लगे एक दिन आप जंगल में थे तो प्यारे आक़ा अलैहिस्सलम का ख्वाव नसीब हुआ **जिसमें उन्होंने** कहा ए अहमद तुम अब जंगल से निकलकर उसी झोंपड़ी में जाओ और दीन की तब्लीग करो।

सुल्तान के नज़राने वापिस किये

सुल्तान बिन तुगलक के दरबार मे जब आपकी हाज़िरी हुई तो उसने तख़्त से खड़े होकर आपकी ताज़ीम की और आपको

नज़राने देने लगा आपने कहा दरवेशों को इसका क्या क़ाम है--? उसने कहा हुज़ूर आप मना न क़रें आप ले लीजिए फिर जो मन आये वो करिए उसके अलावा उसने कई इलाके आपके सुपुर्द किये लेकिन जैसे ही आप महल से बाहर आये उन सोने के सिक़्क़ो को गरीबो में बांटते चले गए ऊपर छत से देखकर सुल्तान ने कहा देखो दरबारियो ये होता है दरवेश

फिर जब फ़िरोज़ शाह तुगलक दिल्ली का बादशाह हुआ तो आप उसके दरबार गए और तमाम दस्तावेज वापिस कर दिये जो आपको सुल्तान ने बतौर नज़राना दिया था।वाक़ई में इस जमीन पर सिर्फ अम्बिया व औलिया ही की वो जात है वो अपने इस दावे में सच्चे है कि हम किसी से पैसे नही लेते बाकी तो मुझे नही लगता कि कोई भी बगैर पैसे के लिए कुछ करता हो!

किताबें

इरशादुत तालिबीन व इरशादुत सालिकीन

रिसाला मककिया व ज़िक्रे फ़िरदौसिया

क़वाएदुल मुरीदीन

रिसाला ए इरशादात

फवाद रुकनी

मुनाकीबे सूफिया

मुरीद शमसुद्दीन अलैहिर्रहमा को 100 मकतूबात

और मुरीद शहज़ादे बल्ख़ मुरदी शाह मुजफ्फर के नाम 28 मकतूबात

आपकी शान

आपकी शान वो शान जिसे अपने तो अपने है गैर भी बयान करते हैं।

सैयद अबुल हसन अली मियाँ नदवी लखनवी ने अपनी किताब तारीख ए दावत अज़ीमत के तीसरे हिस्से में बकायदा आपका तज़किरा किया है और शान बयान की है।

आप के बारे में सूफिया फरमाते है कि आप के मक़ाम का अंदाज़ा आम इंसान के बस की बात नही है।

आप को मख्दूम उल मुल्क,मख्दूम उल मलिक,मख्दूम ए बिहार भी कहा जाता है।

आपका आस्ताना बिहार के शहर पटना के मनेर में है।

आपने बाजहिर इस दुनिया ए फानी 7 शव्वाल 782 हिजरी में अलविदा कहा।

सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी यौमे विलादत अंगेज़ी कैलेंडर के मुताबिक 10 फरवरी सन 1014 ईस्वी को अजमेर शरीफ में हुई।

आपके वालिद का नाम सैयद साहू सालार गाज़ी आपकी वालिदा का नाम सतरे मुअल्लाह है।वालिद की ज़ानिब से आप अल्वी सादात हैं यानी खानदान ए बनु हाशिम के फ़रज़न्द है।आपका नसब नामा कुछ यूं है-

1-सैयद सालार मसऊद गाज़ी अलैहिर्रहमा

2--सैयद साहू सालार ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा

3--सैयद अताउल्लाह गाज़ी रहमतुल्लाह अलैह

4--सैयद ताहिर गाज़ी रहमतुल्लाह अलैह

5-सैयद तैयब गाज़ी रहमतुल्लाह अलैह

6--सैयद शाह मुहम्मद गाज़ी रहमतुल्लाह अलैह

7--सैयद सैफ मलिक गाज़ी रहमतुल्लाह अलैह

8--सैयद मुहम्मद आसिफ गाज़ी रहमतुल्लाह अलैह

9--सैयद शाह बतल गाज़ी रहमतुल्लाह अलैह

10--सैयद अली अब्दुल मन्नान गाज़ी रहमतुल्लाह अलैह

11--सैयदना इमाम मुहम्मद बिन हनफिया रहमतुल्लाह अलैह

12--सैयदुल औलिया मौलाए आलमीन इमाम अली मुर्तज़ा रजिअल्लाहू तआला अन्हु

तो इस तरह से आप मौलाए क़ायनात शेरे खुदा मुश्किल कुशा ताजदारे हल अता के फ़रज़न्द(पुत्र) हैं।

सालार मसऊद का बचपन

आपकी उम्र जब 04 साल 4 माह के हुए तो रस्मे बिस्मिल्लाह हुई जिसमे तख्ती पर बिस्मिल्लाह लिखने वाले आपके वालिद की सेना में एक फ़ातमी सादात अकसरी कुव्वत के मालिक

हज़रत सैयद इब्राहिम रहमतुल्लाह अलैह थे जिनका ओहदा 12 हज़ारी था।यानी वो 12हज़ार सेना के सेनापति थे।फिर उनको आपका उस्ताद मुक़र्रर किया गया।उनके पास तीनो इल्म थे तलवार बाज़ी,घुड़सवारी और तसव्वुफ़।

फिर जब आपकी उम्र 11 साल की हुई तो उस उम्र में पढ़ाई के साथ-साथ आपका अमल भी चलता था।आप बा वजू रहते थे आपने बचपन से कभी फ़र्ज़ नमाज़ नही छोड़ी,नफिल के आप बहुत पाबन्द थे।दीवान में भी आपने वालिद के साथ बैठते थे।आप बहुत ही उम्दा तलवारबाज़ और घुड़सवार थे।

आपकी आमद बहराइच शरीफ

आप अपने वालिद की तरह एक उम्दा तलवारबाज़ और जांबाज सिपहसालार थे।आपकी सीरत को देखकर हर कोई आप की तारीफ करे बगैर अपने आप को रोक नही पाता था।अल्लाह तबारक व तआला ने आपको हर चीज़(नेमत) से मालामाल किया था आपको लाजवाब हुस्नो जमाल अता किया था।जब आप अपने लश्कर के साथ दीन की तब्लीग के लिए मेरठ पहुंचे जहां का राजा आपके मामू जान का दोस्त था उसने आपके आमद पर खुशी का इज़हार करते हुए आपका शाही अंदाज में इस्तेकबाल करना चाहा लेकिन आपने मना

कर दिया।आपने उससे कहा में यहाँ ऐशो इशरत करने नही बल्कि दीन की तब्लीग के लिए आया हूँ कुछ अरसा रुकूँगा फिर निकल जाऊँगा!उसके बाद आप वहां से मुख़्तलिफ़(अनेको) जगहों से होते हुए मुरादाबाद पहुँचे जहाँ पर आज भी कई इलाके आपके नाम से मंसूब है।फिर आप लखनऊ होते हुए बाराबंकी पहुँचे आप को ये जगह बहुत पसंद आई।लेकिन उस वक़्त ताकत और जुल्म के नशे में चूर यहां के राजा ने आपको पैगाम भेजा कि महमूद गजनवी के भांजे सालार मसऊद ग़ाज़ी तुम यहाँ से चले जाओ वरना हम बहराईच के राजा से मिलकर तुम्हे क़त्ल कर देंगे।आप पर कोई असर नही हुआ उसके बाद राजा देव नारायण और भोजपुत्र ने आपको धोखे से क़त्ल करने की कोशिश भी की लेकिन अल्लाह के फ़ज़लों क़रम से उनकी शाजिशों को बेनकाब होना पड़ा।आप अभी बाराबंकी में ही थे कि आपकी वालिदा माजिदा का इंतेक़ाल(मृत्यु) हो गया।उनको गज़नी में ही सुपुर्द खाक(अंतिम संस्कार) कर दिया गया उनकी दरगाह गज़नी में ही है।इस वाकिये के बाद से आप के वालिद सैयद सालार ग़ाज़ी आपके पास बाराबंकी ही में रहने लगे और उन्होंने भी दीन की तब्लीग में अपना सबकुछ लुटा दिया।बाराबंकी में कुछ अरसा रुकने के बाद आपने अपने

चचा सैयद सैफ़ुद्दीन सालार ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह को बहराईच भेजा।जहाँ पर राजाओ ने आपको क़त्ल के इरादे से घेरे में ले लिया जब ये खबर आप तक पहुंची तो आपने बहराईच की तरफ हिजरत कर ली और आखिरकार आपने 27 रमज़ान 423 हिजरी में अपने मुबारक क़दम बहराईच की सरज़मीं पर रखे!

राजा सुहेलदेव और सालार सैफ़ुद्दीन ग़ाज़ी

आपने सभी से प्रेम मोहब्बत का रवैया अपनाया जिससे लोग आपसे मुतास्सिर हो जाते आप की शोहरत हर तरफ फैलने लगी।उस वक़्त श्रावस्ती,बहराईच, गोंडा और भी सटे जनपदों में राजागढ़ इस बात से भयभीत हो गए।आपने श्रावस्ती के राजा सुहेलदेव को अपने प्यारे चचा सैयद सैफ़ुद्दीन ग़ाज़ी को भेज कर ये पैगाम दिलाया कि में अमन व शांति के साथ अपने मजहब को लोगो तो बताने के लिए आया हूँ में यहाँ चन्द दिन दीन की तब्लीग करूँगा फिर चला जाऊंगा।लिहाजा मुझे मेरा काम क़रने दे और आप अपना काम करे।ये सुनकर अपनी ताक़त के घमण्ड में चूर महाराजा ने सैफ़ुद्दीन सालार ग़ाज़ी को गिरफ्तार कर लिया।जब सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी के पास ये पैगाम आया कि आपके प्यारे चचा को श्रावस्ती के

राजा ने गिरफ्तार कर लिया।तो आपको बहुत गुस्सा आया,मानो आज कहर बरपने वाला हो,आपके मुबारक चेहरे पर ये गुस्सा साफ तौर पर देखा जा सकता था क्योंकि अल्लाह के जो खास बन्दे होते हैं वो जमाली होने के साथ साथ जलाली भी होते हैं आपने कहा क़ोई बात नही अब सालार मसऊद खुद जाएगा और उन्हें जंग की दावत देकर आएगा।आप बखूबी ये जानते थे कि उसके मुकाबले में आपकी सेना बहुत कम है लेकिन आप तो ग़ाज़ी थे आप की रगों में उस हस्ती का खून था जिसने खैबर को उंगलियों पर नचाया हो आप तो उस अब्बास अलम्बरदार के भतीजे है जिन्होंने डेढ़ लाख का लश्कर चन्द घण्टो में अकेले खत्म कर दिया हो आप के रगों में कर्बला की जंग उबाल माल रही थी।आपकी बहादुरी मौलाए क़ायनात की मुबारक निस्बत की गवाही दे रही थी।

जंग तर्जुमान ए कर्बला

तो मेरे प्यारे आप एक और बात पर गौर करें कि जब सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी बहराईच आये थे तो आपका मकसद बिल्कुल भी जंग का नही था,लेकिन क़ुदरते इलाही को जो मंजूर हो वही होता है इस पर किसी शायर ने ठीक ही कहा है

मुद्दई लाख चाहे तो भला क्या होता है
वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है

शायद अल्लाह रब्बुल इज्जत ने आपको इस काम के लिए चुन लिया था।क्योंकि जब इमाम हुसैन रजिअल्लाहू तआला अन्हू को कर्बला बुलाया गया तब वो भी जंग की नीयत से नही गए थे।।और जब मेरे मसऊद ग़ाज़ी बहराईच आये थे तब आपका भी कोई इरादा जंग का न था।

अब आपके मन मे एक सवाल पैदा हो सकता है कि जब सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह जंग के लिए नही आये थे तो उनके साथ लश्कर क्यों था।तो इसकी वजह ये थी कि आप ननिहाल की तरफ से शाही खानदान से ताल्लुक रखते थे।आप सब ने सुना होगा कि सुल्तान महमूद गज़नवी आप के सगे मामू थे आप उनके सबसे चहेते और आप सिपह सालार(सेनापति)थे। इसी की वज़ह से आपके साथ आपके चाहने वाले भी तशरीफ़ लाये।

अली का बच्चा बच्चा शेर है

अज़ीज़ों आखिर वो दिन आ गया जब मेरे सालार ने लाडल ए हैदरे कर्रार ने हक़ और बातिल के बीच जारी हुई जंग में तलवार उठा ली अब हर तरफ हाहाकर मचा था।जब सैयद सालार ने अपने दोनों मुक़द्दस हाथो से तलवार चलानी शुरू की है तो ऐसा लग रहा था कि कर्बला की तस्वीर निगाहों में उमड़ आई है।आपके हाथ से चमकदार तलवार मानो दुश्मनो को ये बता रही थी कि हक़ वालो के हाथ मे जो भी होता है वो कमाल का होता है।आप जिस तरफ घूम पड़ते इलाक़ा साफ हो जाता।आप की तलवार की ये धार देखकर बातिल(काफ़िर) घबरा गए हर तरफ क़यामत बरपा थी।बाज सूफिया फरमाते हैं कि तारीखे इस्लाम मे अगर किसी जंग को कर्बला की जंग की तरह कहा जाए तो वो जंग सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह की यही जंग है अल्लाह अल्लाह।ऐसा लग रहा था जैसे आदम की शफ़क़त सरकारे ग़ाज़ी को दुआ दे रही हो,जैसे हज़रते नूह की शुजाअत सरकार ग़ाज़ी के बाजुओ में समा गई हो,ऐसा लग रहा था जैसे हज़रते इब्राहिम क़ी खुल्लत ग़ाज़ी की बलाएं ले रही हो,ऐसा लग रहा था जैसे हज़रते मूसा का तकल्लुफ ग़ाज़ी के लबो में समा गया हो,ऐसा

लग रहा था जैसे हज़रते ईसा की रूहानिय मेरे ग़ाज़ी के दाएं बाएं दस्तगीरी कर रही हो,ऐसे लग रहा था जैसे प्यारे मुस्तफा ने अपने प्यारे लाडले मसऊद के लिए गुम्बदे खदरा में हाथ उठा दिए। जब आपको हर तरफ से घेर लिया गया उसके बाद एक दरख़्त जिसे आपने पसन्द किया और आपने कहा था कि मुझे यहाँ सुकून मिलता है उसी के साये में खादिम ए खास सिकन्दर दीवाने की गोद मे आये आपका जिस्म मुबारक लहूलुहान हो गया था उस वक़्त आपको हज़रत असगर की याद आ गई आपकी आंखों से आंसू जारी थे उसी वक़्त एक तीर आप के गर्दन मुबारक पर जा लगा।खून का फव्वारा तेज़ी से बहने लगा।आपके लब से अल्लाहु अकबर की सदा आई ऐसा लग रहा था जैसे मौला अली का खून जोश मार रहा हो अल्लाह अल्लाह फिर आप अपने हक़ीक़ी रब से जा मिले।

इन्ना लिल्लाही वइन्ना इलैही राजीऊन

लेकिन आपने 19 साल की उम्र में वो काम कर दिया है मेरे ग़ाज़ी जिसको बयान करने में मेरी क्या तमाम मोअल्लिफ की उम्र कम पड़ जाएगी अल्लामा इक़बाल रहमतुल्लाह अलैह फरमाते है

ये ग़ाज़ी ये तेरे पुर-असरार बन्दे

जिन्हें तूने बख्शा है जौक़-ए-खुदाई

दो-नीम उन की ठोकर से सहरा और दरिया

सिमट कर पहाड़ उन की हैबत से राई

अज़मते सालार ग़ाज़ी

आखिकार मेरे सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी ज़िंदगी अपने रब की राह में क़ुर्बान करके ये बता दिया कि ए ज़माने वालो जो भी अपने आप को अपने रब के हवाले कर देता है,अपने नफ़्स को मार देता है,अपने आप को मिटा देता है वो यक़ीनन अल्लाह का महबूब बन जाता है,और दुनिया व आख़िरत में उसके लिए भलाई रहती है इंसान तो इंसान फरिश्ते भी उसके हक़ में दुआ करते रहते हैं।डॉ0 अल्लामा इक़बाल रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं

शहादत है मतलूब-ओ-मकसूद-ए-मोमिन

न माल-ए-गनीमत न किश्वर कुशाई

सारा ज़माना शाहिद है कि मेरे ग़ाज़ी ने सिर्फ 19 साल की बज़ाहिर उम्र में वो काम कर दिया कि ताक़यामत तक आने वाली नस्ले आप को सलाम पेश करेंगी।हिन्द में इस्लाम फैलाने वालों का जब भी तज़किरा होगा इंसान अगर भूल भी जाये तो जिन व फ़रिश्ते आप का नाम इस फ़ेहरिस्त में बिल यक़ी सबसे ऊपर रखेंगे।आप जिस मक़ाम पर फ़ायज हैं उसका अंदाज़ा औलिया अल्लाह ही समझ सकते हैं।आपकी शहादत पर अल्लामा इक़बाल रहमतुल्लाह अलैह का ये शेर मेरे ज़हन में गर्दिश कर रहा है

तलब जिस की सदियों से थी ज़िंदगी में

वो सोज उस ने पाया उन्ही के जिगर मे

कुशाद-ए-दर-ए-दिल समझते है उसको

हलाकत नही मौत उनकी नज़र में

शान ए सालार ग़ाज़ी

आप की शान जानना है तो मखदूम अशरफ रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में सवाल किया जाए तो उसका जवाब वही से अता होगा।

आपकी शान में औलिया अल्लाह के अक़्वाल

1--हज़रत शेख सुल्तान अहमद रहमतुल्लाह तआला अलैह फरमाते हैं कि मुझे जब कोई मसला पूछना होता तो में ख्वाजा ए हिन्द की बारगाह में जाता तो वो कहते सुल्तान बहराईच चले जाओ वहीं से आपकी मुश्किल दूर होगी।

2--मखदूम अशरफ़ जहांगीर सिमनानी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मैने हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम को जितनी मर्तबा सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह के आस्ताने पर देखा है दुनिया में कही औऱ नही देखा

(लताएफ--ए--अशरफी)

3--मखदूम अशरफ सिमनानी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि अगर क़ोई बहराईच जाए तो वहां कम से कम आधा घण्टे जरूर बैठे क्योंकि वहां हर घण्टे हज़रत खिज्र अलैहिस्सलाम हाजिरी देते हैं।(लताएफ-ए--अशरफी)

4--मखदूम ए बिहार शेख सैयदना सरफ़ुद्दीन यहया मनेरी रहमतुल्लाह अलैह अपने मुरीद से फरमाते हैं कि अल्लाह ने मसऊद ग़ाज़ी को वो तसव्वुफ़ अता किया है कि वो जब चाहे जहाँ चाहे अपने चाहने वालो को अल्लाह की अता से अता कर दे

(सवानेह--सरफ़ुद्दीन मनेरी)

5-पीर सैयद अली रहमतुल्लाह अलैह ने अपने मुरीद व ख़लीफ़ा शाह मूसा रहमतुल्लाह अलैह को वसीयत फ़रमाई की अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करने के लिए सालार मसऊद की तरफ तवज़्ज़ो करो,इन्हें अपना इमाम जानो औलिया क़राम इनकी रूह से फेज़ पाते हैं।

तो अज़ीज़ों आप इन वलियों की जुबान से मेरे सालार शान का अंदाज़ा लगाए कि क्या शान है सुल्तान ए बहराईच की।अल्लाह अल्लाह इसी को अपने शेर में रखते हुए अल्लामा इक़बाल रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि

खुदी को कर बुलन्द इतना की हर तक़दीर से पहले

खुदा खुद बन्दे से पूछे बता तेरी रज़ा क्या है

क़रामते सालार ग़ाज़ी

करामत-जब अल्लाह के महबूब बन्दों के दर से या उनकी जात से कुछ ऐसा चमत्कार हो जाये जो आम इंसान के बस में न हो उसे हम आसान जुबान में करामत कहते हैं।

इस तरह से सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह की बेशुमार क़रामते हैं बस यहाँ चन्द क़रामतो का ज़िक्र आप के सामने किया जा रहा है।

1--फिरोज़ शाह तुगलक की फतेह

हिंदुस्तान में जब तुगलक वंश की हुकूमत आई तो तुग़लक वंश का बहुत ही मशहूर बादशाह फ़िरोज़ शाह तुगलक एक बार जंग के लिए तैयार हो रहा था जहां पर उसकी सेना पे हार **का** खतरा मंडरा रहा था उसे कोई तरतीब नही सूझ रही थीं लेकिन उसकी बीवी ने सैयद सालार ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह की अज़मत के बारे में अपने बड़ो से सुन रखा था। उसने फौरन बहराईच की तरफ रुख करके कहा कि अगर मेरे शोहर जंग फतेह करके सही सलामत वापिस लौटेंगे तो में खुद

और मेरे शोहर फ़क़ीर के लिबास में आपके दर पर हाज़री देंगे लिहाजा जंग शुरू हुई।अल्लाह रब्बुल इज्जत ने अपने ग़ाज़ी के वसीले से मांगी गई दुआ को क़बूल करके फ़िरोज़ शाह तुगलक को जंग में कामयाब कर दिया इसके बाद वो घर आया उसने जंग की केफीयत बयान करते हुए कहा ऐसा मालूम होता था जेसे कोई दिव्य शक्ति मेरे साथ थी।आपकी ये बात सुनकर आपकी बीवी ने कहा हां वो मेने सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में उनका वसीला लेकर आपकी कामयाबी के लिए अल्लाह से दुआ मांगी थी और अल्लाह ने उनके वसीले से मांगी गई हमारी दुआ को क़बूल फ़रमाया।लिहाजा अब हमें अपनी मन्नत को पूरा करना है फ़क़ीर के कपड़ो में बहराईच में हाजिरी देनी है उसके बाद फिरोज़ शाह तुगलक ने आपकी बारगाह में हाज़िरी दी और वहां पर आस्ताने को तामीर कराया,जंजीरी गेट,नाल दरवाज़ा,हज़रत रजब सालार का मज़ार तामीर कराई।इस बादशाह का काफी अरसा आपकी गुलामी में गुजरा है।

हज़्जाम को बुलाना

अज़ीज़ों उत्तर प्रदेश के जनपद बाराबंकी जो कि लखनऊ/बहराईच/अयोध्या जैसे मशहूर स्थानों से सटा होने के की वजह से अपना एक अलग मर्तबा रखता है ।बाराबंकी में एक जगह है बाँसा शरीफ जो कि अपना एक अलग वजूद रखती है।यहां पर हज़रत सैयद शाह अब्दुर्रज्जाक हुसैनी क़ादरी बाँसवी रहमतुल्लाह अलैह आराम फरमा हैं।बात तब की है जब आप बजाहिर बा हयात थे आपके एक मुरीद जो कि हज्जाम थे उन्होंने आपसे अर्ज़ किया कि शेख में कुछ दिनों के लिए बहराईच जाने वाला हूँ सरकार ग़ाज़ी का उर्स पाक आने वाला है आपने फ़रमाया की क्यों हर साल उर्स पर जाते हो यही से रहकर अक़ीदत रखो इसके बाद उन्होंने अपने मुरीद से मना फ़रमाया लेकिन आशिक तो फिर आशिक और वो भी ग़ाज़ी ए हिन्द का आशिक़ उसने ज़िद कर ली सालार ग़ाज़ी बारगाह में पेश होने की तो शाह अब्दुर्रज़ाक़ शाह बाँसवी रहमतुल्लाह अलैह ने कहा ठीक है अगर तुम ज़िद ही कर रहे हो जाने की तो जाओ में एक कागज दे रहा हूँ इसे ले जाकर एक शख्स मिलेंगे आस्ताने के बाहर उनको दे देना।उन्होंने ने कागज़ पर कुछ तहरीर किया फिर अपने मुरीद जो कि

हज्जाम था उसको दे दिया।और कहां की आंख बंद करो उसने आंख बन्द कर दी उसके बाद आपने कहा आंख लो उसने आंख खोली तो खुद को बहराईच में पाया।सामने ग़ाज़ी का आस्ताना देखकर अदब का तक़ाज़ा रखते हुए सर झुकाकर सलाम पेश किया।कुछ देर बाद मुर्शिद ने जो कहा था उस पर अमल करते हुए उनकी बताई हुई जगह पर एक अंजान को वो कागज़ थमा दिया उन अंजान · शख्स ने कागज़ को खोलकर पढा और मुस्कुराने लगें फिर उन अजनबी इंसान ने भी एक दूसरा कागज़ थमा दिया।फिर वो हज़्जाम वो कागज़ लेकर अपने शेख शाह अब्दुर्रज़ाक़ रहमतुल्लाह अलैह के पास पहुँचा और वो कागज़ पेश किया आपने पढ़ा और आप मुस्कुरा दिए।मुरीद ने कहा हज़रत आखिर मामला क्या है क्या लिखा है जो आप भी मुस्कुरा रहे हैं।

तो शाह अब्दुर्रज़ाक़ अल बाँसवी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि तूने जिस शख्स को वो कागज़ दिया है वो कोई और नही बल्कि सालार हिन्दोस्तां है सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह थे और मैने अपने सवाल में लिखा था कि क्या जरूरी है कि हर साल लाखो की तादाद में लोगो को क्यों

अपने दर पर बुलाते हो बेचारो को क्यों परेशान करते हो--?और उसके जवाब में सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया है कि ए शाह जब तुमसे अपना एक मुरीद नही रुका तो ये इतना बड़ा आलम में कैसे रोक लूँ ये सुन्ना था कि मुरीद बेहोश हो गया

बाबा फरीद गंज शकर अलैहिर्रहमा के पौते को मंजिल मिली

बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह का तार्रुफ़ कराने के लिए मुझ जैसे गुनहगार की क्या हिम्मत।आपकी विलायत और तक़वे,परहेज़गारी के नगमे फर्श तो फर्श है अर्श पर भी सुनाए जाते हैं।आप ख्वाज़ा ए हिन्द के ख़लीफ़ा बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा हैं।आपके सगे पौते(पुत्र के बेटे)शेख अलाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के बारे में पीर सैयद सुल्तान रहमतुल्लाह अलैह ने तहरीर किया है कि आपके पौते शेख अलाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह को 12 साल का अरसा क़ुतुबुद्दीन बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह के आस्ताने से थोड़ी दूर पे एक क़ब्र के किनारे रहे लेकिन आपको वो मंजिल नही मिली जो आप चाहते थे।एक दिन आप बैठे थे कि आपने देखा कि एक आदमी आपके सामने से

निकला जो कोढ़(एक खतरनाक बीमारी) थी।इतनी देर में एक घुड़सवार आया उसने उस कोढी आदमी को कोड़े मारने शुर कर दिये।घुड़सवार ने जब कोड़े मार मार कर उस शख्स को नीचे गिरा दिया तो शेख अलाउद्दीन ने देखा उस आदमी की सारी बीमारी गायब हो गई आपने जब ये माजरा देखा तो दौड़कर उस घुड़सवार को पकड़ा और कहां सरकार आप कौन है-?आप अपना तार्रुफ़ कराए ।उस घुड़सवार ने अपना नक़ाब हटाया और कहा ए अलाउद्दीन में सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी हूँ और वलियों की डेग में जो रूहानियत का नमक पड़ता है वो मेरे हाथों से पड़ता है।इसके बाद वो आपके क़दमो में गिर पड़े और आपके हमराह बहराईच चले आये फिर आपने सैयद सालार ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह की तवज़्ज़ो से वो मंजिल(लक्ष्य)पाया जो आपको 12 साल से नही मिल रही थी!

तस्बीह के दानों को बिखरने नही देते

तुम जिसको बनाते हो बिगड़ने नही देते

मर्तबा सालार का

आपके मर्तबे को जानना किसी इंसान के बस में नही है।आपकी शान पीछे जो कुछ भी लिखा गया है अगर सुकुनियत व इश्क़ में डूबकर उसको पढ़ा जाए तो दर दर भटकने की जरूरत ही नही है क्योंकि ये वो दर है जहां से आम इंसान की तो खैर क़ोई बात नही बल्कि वक़्त के वलियों/मलंगों/सूफिया/उलेमाओं/मुहद्दिसो/ ने आपके दर से फेज़ हासिल किया है। आज आप की आमद के करीब 1035 साल से ऊपर हो चुके हैं लेकिन आज भी आपके चाहने वाले आप पर अपनी जान न्यौछावर करने के लिए हर वक़्त हाजिर रहते हैं और अपनी गुलामी का सबूत पेश करते हैं क्योंकि आपकी जात वो जात है जहां पर हज़रत खिज्र अलैहिस्सलाम खुद हाज़री देते हैं।

आप गंगा जमुनी तहजीब के पेशवा थे।आपकी याद में बिहार और उत्तर प्रदेश के अनेक गांवों और कस्बों में लगते हैं।क़स्बा नजीबाबाद में भी एक मेला लगता है जिसे ग़ाज़ी मियाँ का ही मेला कहा जाता है।चौदहवीं सदी में ही ग़ाज़ी मिया की कीर्ति(बोलबाला)बंगाल तक फैल चुकी थी।पंद्रहवी सदी के

अंतिम दशकों में दिल्ली के सुल्तान सिकन्दर लोधी ने नेजो के मेले पर प्रतिबंध(बैन)लगाने की कोशिश की थी।

गाज़ी और शहीद

यूं तो अक्सर इस्लाम धर्म मे ये बात आमतौर पर बच्चा बच्चा जानता है कि अपने मजहब के लिए जब एक मर्दे मुजाहिद अल्लाह की राह पर जंग पर निकलता है तो अगर वो जंग फतेह कर लेता है तो उसे गाज़ी और अगर जंग में लड़ते लड़ते उसका सर अल्लाह की राह में कट जाता है उसे शहीद का मर्तबा हासिल होता है।और अल्लाह की मुक़द्दस(पाक)किताब क़ुरआन में साफ साफ लिखा हुआ है कि

"जो अल्लाह की राह में शहीद हो जाए क़त्ल कर दिए जाएं उन्हें तुम मुर्दा गुमान भी न करो,वो अपनी क़ब्रो में ज़िंदा है और अल्लाह उन्हें रिज़्क़ अता करता है"

तो क़ुरआन क़रीम की इस आयत से हमे ये जानकारी मिल गई कि अल्लाह की रज़ा के लिए लड़ने वाला शख़्स अगर क़त्ल कर दिया जाए तो उसे हम मुर्दा गुमान भी न नही कर सकते।अब मेरा सवाल उन लोगो से भी जो अपने इल्म के घमण्ड में बह कर सरवरे क़ायनात सैयदुल अम्बिया को मरकर मिट्टी में मिलने वाला कहते है बहरहाल ये उनका

अक़ीदह है हम हुसैनियो का तो अक़ीदह है कि हर नबी/हर वली/हर क़ुतुब/हर शहीद अपनी अपनी क़ब्रो में जिंदा है आज भी उनकी वसीलो से मांगी गई दुआओ को रब जरूर क़बूल फरमाता है!

सरकार ग़ाज़ी की शान मुझ जैसे गुनहगार के लिखे हुए टूटे फूटे हुए कलाम

नबी का नूर अली के प्यार हैं गाज़ी

हमारे मुर्शिद,रहबर, सालार हैं ग़ाज़ी

नबी के हुस्नो अमल सुन्नतों के पैकर हैं

शरा के दीन के रोशन मीनार हैं ग़ाज़ी

वही तो रंग है अंदाज़े हैदरी उनमे

खुशा औलादे हैदरे कर्रार हैं ग़ाज़ी

शहीदे राहे वफ़ा पर निसार अहले इश्क़

सना सानीए अब्बास अलमदार हैं ग़ाज़ी

गला कटा दिया है सच्चा हुसैन का वारिस

बला वो रन्ज के खुद पेशकार हैं ग़ाज़ी

शहीद ए आज़म हिंदुस्तान जितने हैं

सभी के सरवरो सरदार हैं ग़ाज़ी

क़दम से जिनके मुनव्वर हुई है बहराईच

खिज़ा के बाद ज़मी के बहार हैं ग़ाज़ी

झुका है फेज़ की ख़ातिर शहाने वक़्त का सर

सख़ी तो बिलयक़ीन तेरे दयार हैं ग़ाज़ी

करें जो शान में तेरी जरा सी गुस्ताख़ी

वो तेरे क़दमो के गरदो गुबार हैं ग़ाज़ी

हमारे अहलो अहबाब का जो रखा ख्याल

बरोज़े हश्र भी हम तेरे ख़्वास्तगार हैं ग़ाज़ी

सबब तो दर्द का कुछ बताओ ए सालिम

तुम्हारे दिल के जो चेन ओ क़रार है ग़ाज़ी

सैयदना सिराजुद्दीन शाह आलम अहमदाबादी अलैहिर्रहमा

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 17 जिलकादह 817 हिजरी अंग्रेज़ी केलेण्डर के मुताबिक 27 जनवरी 1415 ईस्वी दिन सनीचर को हुई।विलादत के क़बल आपके वालिद ख्वाज़ा कुतब ए आलम अलैहिर्रहमा को हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का दीदार हुआ जिसमे आपने फ़रमाया बुरहानुद्दीन तुम्हारे घर मे एक बच्चा पैदा होगा जिसका नाम मुहम्मद रखना और उसकी उम्र मेरी उम्र के ही बराबर यानी 63 साल होगी।आपका नाम सैयद मोहम्मद सिराजुद्दीन शाह ए आलम सोहरवर्दी रहमतुल्लाह अलैह है।आपके वालिद का नाम सैयद शाह बुरहानुद्दीन कुतब ए आलम रहमतुल्लाह अलैह है।

शजरा ए नसब

आप हुसैनी बुखारी सैयद हैं।आपका शजरा ए नसब सैयद जलालुद्दीन बुखारी सुर्ख पोश रहमतुल्लाह अलैह से मिलता

है।आपके खानवादे में सबसे बड़ा नाम सैयद मख्दूम जलालुद्दीन जहानीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह है।

शजरा ए नसब

सैयद शाह सिराजुद्दीन शाह आलम रहमतुल्लाह अलैह

सैयद शाह कुतब ए आलम बुरहानुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह

सैयद शाह नासिरुद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयद मख्दूम जलालुद्दीन जहानीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह

सैयद शाह अहमद कबीर अलैहिर्रहमा

सैयद जलालुद्दीन बुखारी सुर्ख पोश रहमतुअल्लाह अलैह।

सिराजुद्दीन

दरसअल ये नाम के आखिर दीन लफ्ज़ का जुड़ना दमिश्क़ से शुरू हुआ है और उस ज़माने के लगभग सभी औलिया

अल्लाह के नाम के साथ दीन लफ्ज़ जरूर जुड़ा होता है जैसे मोहिउद्दीन, मोइनुद्दीन, बुरहानुद्दीन, नसीरुद्दीन,क़बीरुद्दीन,अलाउद्दीन, सिराजुद्दीन,जलालुद्दीन, अताउद्दीन,इमामुद्दीन,हसीनुद्दीन,वजीहुद्दीन, गयासुद्दीन,मोईजुद्दीन,फरीदुद्दीन, बहाउद्दीन, शमशुद्दीन, वगेरह।वहीँ लफ़्ज़े सिराज क़ुरआन शरीफ में 4 मर्तबा आया है जिसमे से तीन मर्तबा सूरज के लिए और एक मर्तबा नबी क़रीम के लिए।सिराज के बुनियादी मायने जमाल,खूबसूरत,चराग़ भी होता है।इमाम राइब अलैहिर्रहमा लिखते हैं की सिराज उस चराग़ को कहते है जो रोशनी देता है।आप दीन की ज़ीनत है हुस्नो जमाल है और तसव्वुफ़ की रोशनी आप से गुजरात मे फैली है।

शाह ए आलम

ये लक़ब आपको किसी दुनिया दार ने नही बल्कि मदीने के ताजदार ने अता किया है। जब आप 19 साल के थे तो आपक़ो नबी क़रीम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का दीदार हुआ और प्यारे आका सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम ने आपको शाह ए आलम कहकर पुकारा लेकिन आपने किसी से भी नही बताया। उसी के तीसरे दिन मौलाए

क़ायनात रजिअल्लाहू तआला अन्हु ने आपको शाह-ए-आलम कहकर पुकारा और कहा तुम खुद बताओ या न बताओ लेकिन ज़माना तुम्हे इसी से पहचानेगा।अगले दिन आपने अपने वालिद कुतब ए आलम रहमतुल्लाह अलैह से दोनों ख्वाब बताए जिसे सुनकर उन्होंने आपको फूल की एक टोकरी दी और कहा जाओ इसे शेख़ बरकल्लाह चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के पास ले जाकर पेश कर दो।आपने फूलों की टोकरी सर पर रखी और जब मंज़िल पर पहुंचे तो उस वक़्त शेख़ बारकल्लाह चिश्ती अलैहिर्रहमा अपने हाथों से अपने घर की दीवार मरम्मत कर रहे थे आपको देखते ही कहा शाहे अलाम आइये,शाहे आलम आइये, उसके बाद उन्होंने टोकरी ले ली और उसमे खाने से भरी हांडी रख दी और अपने एक गुलाम से कहा सुनो इनके साथ चले जाओ और वहाँ तक जाना जहाँ से हर तरफ शाहे आलम,शाहे आलम का नाम गूंजता हुआ सुनाई दे वहीँ पर टोकरी इन्हें देकर वापिस चले आना।गुलाम आपके साथ चलने लगा तीन दरवाजे(एक मशहूर जगह) के पास पहुंचे तो एक फ़क़ीर ज़मीन पर लेटे हुए थे जो न सुन सकते थे और न बोल सकते थे कमज़ोरी इतनी थी कि वो उठ भी नही सकते थे।लेकिन आप जैसे ही उन फ़क़ीर के करीब से गुजरे वो फौरन खड़े हो गए

और कहने लगे शाहे आलम,शाहे आलम उस वक़्त तीन दरवाज़े से हर तरफ यही आवाज़ आ रही थी शाहे आलम शाहे आलम अब गुलाम ये आवाज़ सुनकर वापिस चला गया ।जब आप वालिद के पास पहुंचे तो वो हांडी पेश की जो आप को शेख़ बारकल्लाह चिश्ती अलैहिर्रहमा ने बतौर तोहफा दिया था।वालिद ने कहा बेटे तुम जानते हो इस हांडी में क्या है--? आपने फ़रमाया वालिदे मोहतरम आप ही वाजेह कर दे तो बहतर रहेगा वालिद ने कहा बेटे ये गुजरात के रूहानियत की सरदारी की सनद है जो तुम्हे अता की गई है जाओ इसे खुद भी आओ और दूसरों को भी खिलाओ।इस वाकिये को अक्सर सूफिया इस मुहावरे के साथ बयान करते रहते हैं

"पकाई चिश्तियो ने खाई बुख़ारियो ने"

बचपन और तालीम

जब आप 4 साल 4 माह 4 दिन के हुए तो रस्मे बिस्मिल्लाह अदा की गई।वालिद ने 7 खजूर चबाकर आपको दिए जो आपने खा लिए। क़ुरआन मजीद आपको बचपन से ही आती थी फिर भी रस्मे तालीम के लिए मदरसा गए आप मोहम्मद अली अलैहिर्रहमा के पास गए।आप अक्सर उस्ताद से ऐसे ऐसे सवाल करते जिसके जवाब उनके पास न होते और

उस्ताद मुस्कुरा कर कहते कि सैयद साहब अब आप खुद इस मसले को हल कर दें।आपने तसव्वुफ़ की तालीम हज़रत शेख अहमद खततु रहमतुल्लाह अलैह,और महबूबे इलाही के ख़लीफ़ा ख्वाज़ा शेख़ बारकल्लाह रहमतुल्लाह अलैह ,सरकार बन्दानवाज़ गेसुदराज़ रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा मौलाना सैयद कमालुद्दीन हनफी रहमतुल्लाह अलैह,बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह के नवासे से सीखी।मशारिकुल अनवार और हिदाया का इल्म हासिल किया।आपकी इल्मी जहनियत का अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि आपने हिदाया 4 दिन के अंदर ही ख़त्म कर दिया।

5 साल की उम्र में मख्दूम का झुब्बा अता हुआ

जब आपकी उम्र 5 साल थी तो एक दिन आपने देखा कि वालिद कुतब ए आलम रहमतुल्लाह अलैह मख्दूम जहानीया जहाँगश्त रहमतुल्लाह अलैह का झुब्बा पहने बेठे हैं।आप वालिद के पास गए उन्होंने आपक़ो बिठाया और कहा शाह आलम लो ये झुब्बा पहन लो ये तुम्हारे दादा का हुक्म है।उसके बाद आप मख्दूम जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह के आस्ताने पर गए और फ़ातिहा पढ़ी दुआएँ मांगी आप अक्सर

सोचते रहते थे कि काश में हुज़ूर के दौर में होता है एक दिन आप मख्दूम जहांनीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में बैठे सोच ही रहे थे कि अचानक से देखा कि सामने से ताजदारे अम्बिया सरवरे क़ायनात आ रहे हैं आप दौड़ कर गए और क़दमो में गिर गए और क़दमबोशी की।

(नोट--) अज़ीज़ों आज हमारे हाथ चूमने पर भी शिर्क का फतवा लगाया जाता है जबकि औलिया अल्लाह क़दम तक चूमते थे यहाँ तक अबू दाऊद,मिश्कात शरीफ की हदीस से हमे पता चलता है कि सहाबा ने रसूल के हाथ और पैर दोनो चूमे हैं तो क्या सहाबा से ज़्यादा कोई तोहीद समझता है--? इसीलिए इन गुस्ताखो के चक्कर मे न आये अहले सुन्नत का तरीका वही है जो सहाबा क़राम का है ये कोई नया तरीका नही है हां वो अलग बात है की हमे उसकी जानकारी न हो)

हम सबीहै मुस्तफ़ा

सबीह का मतलब होता है हु बहु या उसी तरह दिखना।यानी वो चेहरा जो मेरे रसूल के चेहरे से मिलता है।अहले इल्म समझते हैं कि इमामुस सादात हज़रत इमाम हसन रजिअल्लाहू तआला अन्हु,हज़रत इमाम बाकर रजिअल्लाहू

तआला अन्हु, हज़रत अली अकबर रजिअल्लाहू तआला अन्हु और भी दीगर अहले बैत का चेहरा रसूल के चेहरे से मिलता था।आप जबरदस्त आलिम ए दीन थे।आप खुद बच्चो को हदीस का दरस देते थे।बच्चे सामने बैठते और आप तख़्त पर लेकिन वो तख़्त ज्यादा ऊँचा न होता था।एक दिन आप बीमार हुए पूरे 6 दिन बाद जब सातवें दिन फिर से बच्चो को पढ़ाने के लिए आये तो बच्चो से कहा पढ़ो।अब जैसे ही बच्चो ने पढ़ा आपने कहा इसके पीछे का पढ़ो जहां से मैने पढ़ाना बन्द किया था।बच्चे हैरान हो गए और कहा हुज़ूर गुस्ताख़ी माफ लेकिन आपने तो कल ही पढ़ाया है जब सारे बच्चे यही कह रहे थे तो आपको हैरानी हुई और फौरन मुराकबे पर बैठ गए जब मुराकबा पूरा हुआ तो आप को पता चला कि जितने दिन आप नही थे उतने दिन सैयदुल अम्बिया सैयदुश सादात इमामुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम खुद पढ़ाते थे और आपका चेहरा अपने नाना से इतना मिलता था कि तालीम हासिल करने वाले फर्क न कर पाए इसीलिए आपक़ो सबीह ए मुस्तफ़ा भी कहा जाता है।फिर आपने जस तख़्त को ऊंची जगह पर रख दिया आज भी ख़ानक़ाह में वो तख़्त रखा हुआ जिस पर बैठकर मेरे आक़ा अलैहिस्सलाम ने हदीस पढ़ाई थी।

मख्दूम जहानीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह की पेशनगुई

हज़रत ख़्वाज़ा मख्दूम जहानीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह एक बार हिन्द के दौरे पर आए थे उसी सिलसिला में जब वो गुजरात पहुंचे तो कुछ मिट्टी उठाई और कहा इसमें हमारी हड्डियों की महक आती है आपने अपने बेटे हज़रत नसीरुद्दीन अलैहिर्रहमा को अपनी चादर मुबारक दे दी और कहा तुझको एक बेटा होगा जिसका नाम कुतब ए आलम होगा मेरी चादर के टुकड़े को उसका कपड़ा बनाना उससे हमारा गुलशन हर भरा रहेगा।

कुतब ए आलम

आपके वालिद का नाम हज़रत ख्वाजा सैयद बुरहानुद्दीन कुतब ए आलम रहमतुल्लाह अलैह है।उनका तज़किरा करना जरूरी है ताकि आप को शाहे आलम रहमतुल्लाह अलैह का मक़ाम और शान और भी आसानी से समझ मे आये।

दरसअल कुतब ए आलम अलैहिर्रहमा की विलादत उंच शरीफ(पाकिस्तान)में हुई थी।1399 ईस्वी को वो पाक पटन चले गए और बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह के नवासे से तालीम हासिल की।जब कुतब ए आलम की उम्र 14

साल हुई तो आपकी मुलाकात सरकार बन्दानवाज़ गेसुदराज़ रहमतुल्लाह अलैह से हुई उन्होंने आपको देखती है कहा बुरहानुद्दीन तुम्हारे अंदर कुतबियत की झलक मिलती है।आपको रसूल ए अकरम की ज़ियारत ख़्वाब में होती रहती थी हज़रत शाहे आलम राहमतुल्लाह अलैह की विलादत से पहले भी आपको आक़ा अलैहिस्सलाम की जियारत हुई थी।यानी आप खुद एक वली ए क़ामिल थे जिसका असर शाहे आलम रहमतुल्लाह अलैह में मिलता है।

बचपन की करामत

एक बार कुतब ए आलम अलैहिर्रहमा अपने एक दोस्त के साथ बेठे थे।आपके दोस्त को एक बीमारी थी की वो कभी बाप नही बन सकते बड़े बड़े तबीबो से वो नाउम्मीद हो गए थे।इतने में शाहे आलम रहमतुल्लाह अलैह अपने भाइयों के साथ घर की तरफ आ रहे थे आपको देखते ही उन्होंने कहा मेरे मुर्शिद आज लश्कर के साथ आ रहे हैं इतना सुनते ही शाहे आलम रहमतुअल्लाह अलैह ने कहा अल्लाह तुम्हे भी लश्कर देगा उसके बाद उनके 10 बेटे हुए उस वक़्त आपके बचपन का दौर था।

वालिदा की कब्र पर हाजिरी

जब आपकी उम्र 11 साल हुई तो आप वालिदा की क़ब्र पर हाजिरी देते और फ़ातिहा पढ़ते थे ये आपकी ज़िंदगी मे रोज़ का मामूल था।

(नोट--) अक्सर बद अक़ीदह इसाले सवाब पर भी उंगली उठाते रहते हैं जबकि अगर हम आज से 1400 साल पहले की तारीख पलटेंगे तो पाएंगे कि मौलाए क़ायनात कुल्ले ईमान ताजदारे अल हता शेरे खुदा हज़रत अली क़रमलल्लाहु वजहुल क़रीम हर साल दो हज करते थे एक अपने नाम पर और एक रसूल ए खुदा के नाम पर,आपके बाद हसनैन क़रीमैन ने भी हर साल यही दस्तूर जारी रखा और कुर्बानी में एक हिस्सा नाना और बाबा के नाम पर जरूर करवाते थे तो क्या उन्हें इसका इल्म नही था लिहाजा मेरे भोले भाले सुन्नी भाइयो इन बद अक़ीदों के जाल से बचो औलिया अल्लाह का दामन मजबूती से पकड़ लो उनकी बातों पर अमल करते हुए जिंदगी गुजार दो बीलयक़ीन यहां भी क़ामयाब रहोगे और वहाँ भी|

लाजवाब ख़तीब

जब आपकी उम्र 16 साल हुई तो आपने खिताबत शुरू की।जब आप बयान करते तो लगता कि सरकार गौसे आज़म रजिअल्लाहो अन्हू की नज़रे करम आप पर है   तोहीद और रिसालत की झलक आपके इस बयान से मिलती है

"ए लोगो वक़्त आग है और ज़िंदगी लकड़ी नेकी करो जल्दी करो बन्दगी है तो जिंदगी है बन्दगी नही तो शर्मिंदगी है। ज़िंदगी साँसों का खज़ाना हर सांस मोती है अगर कोई सांस अल्लाह की याद में न निकले तो तुमने मोती को कीचड़ में फेंक दिया है।दिल साफ करो दिल तब साफ होता है जब नफ़्स को कुचल दिया जाता है और नफ़्स पर कंट्रोल तौबा करने से होता है और तौबा वो है जो सच्चे दिल से की जाए अगर तुमने अपने एक ऐब को देख लिया तो ये गेबिल ग़ैब को देखने से बहतर है।हर सांस का मुहासवा करो कम खाओ कम बोलो लोगो से कम मिलो तहारत जरूरी है जिसमे पाक होती है वज़ू से कलमा शहादत पढ़ा करो रूह को भी साफ किया करो जब वज़ू कर चुको तो खड़े होकर उसका पानी पियो और दाढ़ी को वरफाना लका ज़िकरक" पढ़ कर झाड़ो

जिससे इज्जत और रिज़्क़ बढ़ जाए।जब कपड़े पहनो तो बिस्मिल्लाह पढ़कर सूरह क़दर पढ़ो और पानी के चन्द क़तरो को कपड़े पर हल्का हल्का लगा लो और अगर ये अमल करके जहाँ भी जाओगे इज्जत होगी और फेज़ जारी होगा।फ़ज़्र की सुन्नत के बाद 41 मर्तबा या अज़ीज़ू पढ़ा करो इस तरह के आपके बयानात होते थे जिसे सुनकर लोगो के दिल पर असर होता था।

तर्ज़ ए ज़िदंगी

आपके ख़लीफ़ा मिया अहमद मख्दूम अलैहिर्रहमा अपनी किताब रिहानतुल अबरार में लिखते हैं कि में 12 साल मुर्शिद के साथ रहा ।आपने कभी बा जमात नमाज़ नही छोड़ा। अल्लामा मोहम्मद जाहिद आपके इमाम थे वो सफर में भी आपके साथ रहते और जैसे ही वक़्त का नमाज़ होता फौरन सफ खड़ी हो जाती है और इमाम नमाज़ पढ़ाते।आप 7 दिन में 2 क़ुरआन खत्म कर देते थे आपने कभी किबले की तरफ कमर नही होने दी।रात को दरिया के किनारे चले जाते और सारी रात इबादत करते थे या लतीफु या लतीफु का विर्द करते रहते थे।

महफिले शमा

महफिले शमा अहले तसव्वुफ़ के नज़दीक बहुत ही मुक़द्दस अमल है।जिनको हराम समझना औलिया अल्लाह की गुस्ताख़ी है और औलिया की गुस्ताख़ी खुदा की गुस्ताखी है कुरआन में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का इरशाद है कि जिसने मेरे वलियों से दुश्मनी की में उसने मुझसे जंग का दावा किया।लिहाज़ा हमे औलिया अल्लाह के ताल्लुक से बे अदबी नही करना चाहिए महिफल ए शमा आप सुनते थे।कभी कभी परिंदों की आवाज़ सुनकर वज़द आ जाता था।जब आप के चर्चे बादशाह अहमद के दरबार तक पहुंचे तो सुल्तान ने ख्वाजा शेख अहमद खततु रहमतुल्लाह अलैह को भेजा कि जाओ शाह-ए-आलम को हमारे दरबार मे लाओ वो आपके वालिद के पास आये और आपको भेजने की ज़िद करने लगे आप ने वालिद के कहने पर दरबार में जाने का फैसला किया उधर सुल्तान को जैसे ही आपकी आमद का ख़बर हुई तो नंगे पैर दौड़ कर गेट तक आया आपका जोरदार इस्तेकबाल किया आपको दरबार में ले गया गुफ्तगू किया वो आप पर फिदा थे क्योंकि आप सबीह-ए-मुस्तफा भी है इतनी प्यारी नूरानी शख्सियत को देखकर दरबार मे हर कोई दंग रहता

और मेरे नबी की हदीस भी ज़हन में गर्दिश कर गयी कि आप ने फ़रमाया वली वो होता है जिसको देखो तो खुदा याद आ जाये आप को देखते ही सब के होश उड़ गए आला हजरत फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमा फ़रमाते है कि

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का

तू है एन के नूर तेरा सब घराना नूर का

आप का फेज़ सब पर जारी है और ये क़यामत तक जारी रहेगा।

आखिरकार वो वक़्त आ ही गया जब आपको इस दुनिया ए फानी को छोड़ने की रस्म अदा करनी थी।20 जमादिस सानी 880 हिजरी यानी 63 साल की उम्र ने आपने दुनिया ए फानी को अलविदा कहा लेकिन आपका नाम ता क़यामत तक जारी व सारी रहेगा।

हज़रत शाह दौला दरियाई गुजराती अलैहिर्रहमा

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 989 हिजरी को हुई थी।आपका पूरा नाम हज़रत शाह दौला दरियाई सोहरवर्दी गुजराती रहमतुल्लाह अलैह है।

नसब

आस्ताने पर तो आपके नाम से पहले सैयद लिखा है लेकिन आप लोधी ख़ानदान से ताल्लुक रखते थे।आपके वालिद का नाम अब्दुर्रहीम लोधी था जो कि लोधी सल्तनत के मशहूर बादशहा सुल्तान इब्राहीम लोधी के पौते थे।और वालिदा सुल्तान सारंग गक्कड़ की पोती थीं यानी आप दोनों तरफ से शाही घराने से ताल्लुक रखते थे।

(खज़ीनतुल अस्फिया)

बचपन और गुरबत

अब आप ये सोच रहे होंगे कि जब ये दोनों तरफ से शाही घराने से ताल्लुक रखते थे तो आखिर इनका बचपन गुरबत(गरीबी)में क्यों गुज़रा।दरसअल उस वक़्त किसी भी बादशाह की हुकूमत परमानेंट(हमेशा) नही थी हर घड़ी दूसरे बादशाह हमला करके राज हड़पने की ताक में लगे रहते थे उसी जुमरे में आपके खानदान का भी यही हश्र हुआ आपक़ी राजशाही गद्दी पर किसी दूसरे बादशाह ने कब्ज़ा कर लिया।मुगल बादशाह हुमायूँ ने आपके वालिद और वालिदा की शादी कराई थी।जब आप पैदा हुए तो कुछ दिनों के बाद आपके वालिद का इंतेक़ाल हो गया।उसके बाद वालिदा ने बड़ी मुश्किलें से गुजारा किया।जब आपकी उम्र 9 साल हुई तो वालिदा का भी इंतेक़ाल हो गया।मानो आप पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा लेकिन हमें याद रखना चाहिए जब अल्लाह किसी को कोई मक़ाम देता है तो उससे सख़्त इम्तिहान भी लेता है।

सियालकोट में आमद

वालिदा के इंतेक़ाल के बाद आप सियालकोट(पाकिस्तान)चले आये यहाँ एक गैर मज़हब के यहां नोकरी कर ली आपकी ईमानदारी और सादगी देखकर वो बहुत मुतासिर हुआ और

उसने कारोबार की सारी जिम्मेदारी आपके सुपुर्द कर दी।आपका लगाव बचपन से ही अल्लाह की तरफ था।आप रोज़ अल्लाह की इबादत भी करते और कारोबार की सारी जिम्मेदारी भी बखूभी सम्भाले हुए थे।

पीरो--मुर्शिद

इधर आप सियालकोट में थे उधर आपके पीरो मुर्शिद हज़रत सैयद सरमस्त सोहरवर्दी रहमतुल्लाह अलैह अपने खेत में खड़े फसल की रखवाली कर रहे थे उनके पास से एक बुजुर्ग गुजरे जिनका नाम हज़रत मूंगा शाह रहमतुल्लाह अलैह था उन्होंने कहा इस फसल की तो रखवाली कर रहे हो जिसकी कटाई तो अगले महीने करोगे और उस फसल की रखवाली क्यों नही करते जिसकी कटाई आखरत में करनी है उन फ़क़ीर का जुमला आपके मुर्शिद के दिल मे जगह कर गया ।वो तुरन्त सब छोड़कर उन्ही के साथ चले गए कुछ दिन उनकी सोहबत में रहै फ़क़ीर ने कहा जाओ हमने तुम्हे सिलसिला ए सोहरवर्दी का फेज़ अता कर दिया।अब तुम घरवालों से इजाजत लेकर सियालकोट चले जाओ हमने तुम्हारी ड्यूटी सियालकोट में लगा दी है वहाँ जाकर दीन की

तबलीग करो और ये फेज़ एक अल्लाह का महबूब बन्दा है उसी को अता कर देना।

पीरो-मुर्शिद की सियालकोट आमद

जब आपके पीरो-मुर्शिद सियालकोट आये तो उन्होंने सबसे पहले ख़ानक़ाह की तामीर की और दीन की तब्लीग शुरू की धीरे धीरे आपकी शोहरत सारे सियालकोट में फैल गई इधर जब शाह दौला दरियाई रहमतुल्लाह अलैह ने आपके बारे में सुना तो उन्होंने भी नोकरी छोड़कर आपकी ख़ानक़ाह में पनाह ले ली।मुरीद बनने के बाद आपने पीरो मुर्शिद की बहुत ख़िदमत की।आपक़ो ख़ानक़ाह के लिए चंदा मांगने भी भेजा गया और ख़ानक़ाह में रुकने वाले मुसाफ़िरो और मुरीदो के लिए खाना जुटाने भी आप ही जाते थे आपने अपनी हर जिम्मेदारी को बखूबी निभाया ।एक बार पीर ने कहा दौला यहाँ आओ ये सुनकर दूसरा मुरीद आया आपने कहा तुम्हे नही अपने दौला को बुला रहा हूँ फिर आपने दुबारा आवाज़ दी इस बार दूसरा मुरीद आया जब तीसरी बार मुर्शिद ने कहा दौला यहां आओ आप बहुत दूर थे लेकिन जैसे ही मुर्शिद की आवाज़ सुनी तो फौरन दौड़ कर आए और फ़रमाया लब्बेक

या मुर्शिदी।उन्होंने फ़रमाया बेटे यहाँ आओ अपना मुंह मेरे क़रीब करो जैसे ही आपने मुंह क़रीब किया मुर्शिद ने तीन मर्तबा अल्लाह अल्लाह अल्लाह कहा और दुआ दी कि जाओ दौला तुम गैबी ख़ज़ाने को दिल खोलकर खर्च करोगे और ये कभी कम नही पड़ेगा।फिर उन्होंने सिलसिला ए सोहरवर्दी की खिलाफत व इजाजत अता कर दी उसके कुछ ही दिन बाद आपके पीरो मुर्शिद का विसाल हो गया।

जज़्ब व केफियत का मंजर

पीरो मुर्शिद के विसाल से आप बहुत ग़मज़दा हुए मुर्शिद के विसाल का ऐसा असर हुआ कि जज़्ब की केफियत तारी हो गई।आप जंगलो में चले गए और चिल्ला काटना शुरु किया।उस दौरान जंगल के सारे जानवर आपके पास आते और बेठे रहते हत्ता एक से बढ़कर एक खूंखार जानवर भी आपके पास आकर बेबस होकर बैठ जाते आप जानवरो से बहुत मोहब्बत करते थे।एक दिन चिल्ले के दोरान ही ग़ैब से आवाज़ आई कि दौला अब तुम क़ामयाब हुए हमने तुम्हारी ड्यूटी गुजरात मे लगाई है वहाँ जाकर दीन की तब्लीग करो तसव्वुफ़ को आम करो आपने हुक्म पाते की वहां से हिजरत

करके गुजरात की और सफर का इरादा कर लिया।और 1612 ईस्वी में आप गुजरात पहुँचे।

ख़ानक़ाह की तामीर

आप ने पहुंचते ही सबसे पहले सोहरवर्दी सिलसिला के मामूल के मुताबिक ख़ानक़ाह की तामीर कराई।जिसमे मुसाफिरो/मुरीदो/माजूर बच्चो को रुकने का बहतरीन बंदोबस्त किया गया था।

माजूर(दुर्लभ) बच्चो से आपको निस्बत

आपने अपनी ख़ानक़ाह में उन बच्चो की परवरिश और तालीम दी है जिन्हें उन्ही के मां बाप माजूर होने पर बाहर फेंक देते थे।आपने लोगो से अपील की कि ऐसे बच्चों को ख़ानक़ाह के सुपुर्द कर दिया जाए।दरसअल माजूर बच्चों को समझना है तो आजकल मुम्बई/दिल्ली की गलियों में उन बच्चो को देखिए जो भीख मांगते है उनका सर का हिस्सा पतला से होता है जिसे दुर्लभ भी कहा जाता है।आप तो तसव्वुफ़ के आला दर्जे पर फ़ायज थे आपके दर पर तो माजूर/मजबूर/बेसहारो को पनाह मिलती है।

(नोट--) अक्सर लोग कहते है कि उन्हें सरकार दौला शाह रहमतुल्लाह अलैह ने बद्दुदा दी थी की वो ऐसे ही पैदा होंगे अज़ीज़ों खुदा के वास्ते अल्लाह के वली की तरफ़ ऐसा इल्ज़ाम मत लगाओ।तुमने तसव्वुफ़ को मजाक समझ रखा है असल वली तो वही होता है जो हसद/बुग्ज़/कीना/लालच /ख़ौफ़ से पाक हो और आपने किसी को बद्दुआ नही दी बल्कि आप तो उनको ठीक करते थे एक बात हमे अपने ध्यान में रखना चाहिए कि अल्लाह के वली किसी को बद्दुआ नही देते और हुक्म इलाही होता है कि जो भी अल्लाह के दोस्तो से दुश्मनी रखता है गोया की उसने अल्लाह से दुश्मनी रखी तो जिसकी दुश्मनी अल्लाह से हो गई वो तो कहीं का नही रहा अब हम ये समझे कि फला बुजुर्ग ने बद्दुआ दी है ये ग़लत है अगर वो बद्दुआ ही देने लगते तो हर तरफ कोहराम मचा होता उनके जलाल की तारीख़ भी गवाही देती है अगर तारीख का हवाला लिया जाए तो सैयदना साबिर ए पाक रहमतुल्लाह अलैह ने जब जलाल की केफियत में कलियर पर नज़र डाली थी तो आलम ये था कि 10 10 मील तक आग के लपटे दिखाई पड़ते थे हर तरफ आग ही आग अल्लाह अल्लाह मानो आज एक क़लन्दर के रूठने का आलम ये है तो मेरे हुसैन पाक अलैहिस्सलाम के जलाल का आलम क्या होगा,सरकार गौसे

आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हू के जलाल आलम क्या होगा,मौलाए क़ायनात शेरे ख़ुदा के जलाल का आलम क्या होगा,हज़रत उमर फारुख आज़म रजिअल्लाहो तआला अन्हू का आलम क्या होगा-?

(नोट--) लफ़ज़ी एतबार से अहले बैत को अलैहिस्सलाम कहा जा सकता है हदीस से लेकर दीगर मोतबर अहले सुन्नत वल जमात की किताबों में अहले बैत के साथ अलैहिस्सलाम लगा मिलता है|

बीबीसी न्यूज़ की वो रिपोर्ट

बीबीसी न्यूज़ की एक रिपोर्ट जो कि 29 जून 1998 में आई थी जिसमे ये दावा किया गया था कि दौला शाह रहमतुल्लाह अलैह के आस्ताने पर माजूर बच्चों को 40-80 हज़ार में माफिया को बेचा जाता है और अल्लाह अल्लाह खानकाहों से जब ऐसे कारनामे अंजाम होंगे वो भी गलत लोगो को क़ब्ज़ा करने की वजह से।दरसअल आप गौर करेंगे तो देखेंगे तो पाएंगे कि ज्यादातर खानकाहों पर ऐसे लोग मिलेंगे जिनका तसव्वुफ़ से दूर दूर तक कोई रिश्ता नही है उन्हें बस अपनी जेब भरना है उन लोगो से में हाथ जोड़कर अपील करता हूँ कि कम से कम जिनके आस्ताने की चौकीदारी कर रहे हो उनके

मर्तबे और रूहानियत की तो लाज रखो वरना तुम्हारी आख़िरत बर्बाद हो जाएगी।जिन औलिया अल्लाह ने अपनी ज़िंदगी मे कभी पेट भर के खाना नही खाया उन्हें आखिर किस चीज़ की कमी है बेवकूफ मत बनाओ ये ख़ानक़ाह तुम्हारे बाप की जागीर नही है हर अहले ईमान का हक़ है इन पर आज 300-400 किलोमीटर दूर चलने के बाद जब बन्दा वलियों की बारगाह में पहुचकर फेज़ हासिल करना चाहता है तो उसे मुश्किल से 5-8 मिनट भी आस्ताने पर खड़े होकर फ़ातिहा पढ़ने का मौका नही दिया जाता है जो कि शर्मनाक है।

दरियाई क्यों-?

आप के नाम मे दरियाई इसलिए भी लगता है क्योंकि कुछ लोगो का मानना है कि आपने गुजरात मे आते ही दरिया के अंदर खड़े होकर चिल्ले किये हैं इसीलिए आपके नाम मे दरियाई लगा रहता है वहीं कुछ लोगो का मानना है कि आपने उस दौर में दरिया के ऊपर बांध बनाने की वजह से दरियाई कहा जाता है खैर कुछ भी हो आपक़ी शान अहले तसव्वुफ़ ही समझते हैं आप का मक़ाम बहुत ही बुलंद व बाला है।

बाबा सरफ़ुद्दीन सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 16 शाबान 586 हिजरी को ईराक में हुई थी।आपके वालिद का नाम सैयद महमूद हुसैन अलैहिर्रहमा था।

आपके आस्ताने पर आपका नाम कुछ इस तरह से लिखा हुआ है कि

कुतबुल अकताब शहनशाहे दकन सुल्तानुल आरफ़ीन सैयदना बाबा शरफुद्दीन सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह।

कुतबुल अकताब

तस्सवुफ में क़ुतुब का मर्तबा बहुत ही बुलन्द व बाला है इमाम जलालुद्दीन स्यूती अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि हर ज़माने में एक क़ुतुब होता है और क़ुतुब की जहाँ ड्यूटी लग जाती है वो क़यामत तक उसी जगह पर रहता है।इमाम रब्बानी मुजद्दीद ए अल्फे सानी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि कुतबुल

अकताब की वजह से ही आलम का निजाम कायम है इसका रिश्ता आलम के वजूद के साथ होता है।

शहंशाहे दकन

दरसअल ये नाम शाहाने शाह था लेकिन इसे शार्ट करके शहंशाह कर दिया गया है जिसके मायने है बादशाहो का भी बादशाह।इस लिहाज से आपको शहंशाह ए दकन भी कहा जाता है क्योंकि दकन(हैदराबाद)की सरमज़ीन पर आने वाले आप पहले शख्स हैं जिन्होंने इस्लाम फैलाया। हैदराबाद में जो भी इस्लाम फेला है उनमें सबसे बड़ी कुर्बानी व कोशिश आपकी ही रही है।

सुल्तानुल आरफ़ीन

आरफ़ीन लफ्ज़ आरिफ का जमा है तसव्वुफ़ में आरिफ को कुछ इस तरह से समझाया गया है।

1--अहमद बिन मोहम्मद जैद लिखते हैं कि मैने हज़रत शिब्ली अलैहिर्रहमा से ये कहते हुए सुना है कि आरिफ वो होता है जो गेरूल्लाह से रिश्ता तोड़ दे।

2--ख्वाज़ा ज़ुन्नुन मिस्री अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि आरिफ वो होता है जो अपने बातिन की हिफाज़त करता है।

3--सैयदुत ताइफ़ा ख्वाजा जुनैद बगदादी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि आरिफ वो है जो आज़िज हो ज़मीन के जैसा और सखी हो बादलों की तरह वो खामोश रहता हो लेकिन उसकी शोहरत अल्लाह खुद कर दे।

4--हजरत अबू तय्यब सामरी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि आरिफ वो होता है जो गुफ्तगू से भी बुलन्द होता हो।

5--हज़रत यहया बिन मुनअम फ़रमाते हैं आरिफ वो होता है जो मख़लूक़ के साथ रहते हुए भी उससे दूर रहता हो।

सैय्यदना

इसके मायने है सरदार के।अक्सर मुरीद अपने मुर्शिद को सैय्यदना कहकर ही पुकारते है या लिखते हैं लेकिन आप रूहानी और खानदानी दोनो एतबार से सैयदना है क्योंकि ख़ानदान के एतबार से सूफी मोहम्मद इस्माईल क़ादरी फिरदौसी हैदराबादी फ़रमाते हैं कि आपका शजरा ए नसब

13 वास्तो से जाकर सैयदुश शोहदा इमाम हुसैन रजिअल्लाहू तआला अन्हु से मिलता है।

(तारीख़े सूफिया क़राम व सलातीने दकन)

बाबा

पहले बाबा वालिद,दादा और क़लन्दरो को कहा जाता था लेकिन बाद में दुनियादारो ने फकीरों को बाबा कहना शुरू किया लेकिन आपके नाम मे जो बाबा लिखा जाता है वो क़लन्दर की वजह से ही लिखा जाता है।

शरफुद्दीन

नाम के आखिर मे लफ़्ज़े दीन का जुड़ना दमिश्क़ से शुरू हुआ जिसके बाद हिन्द में बादशाहो ने अपने नाम में दीन को जोड़ना शुरू किया और जो लोग बाहर से हिजरत करके हिन्द आते थे उनके भी नाम मे दीन जुड़ा रहता था।और शरफ़ के मायने है इज्जत के।आप यकीनन दीन की इज्जत हैं।

सोहरावर्दी

आपके नाम मे सोहरावर्दी इसलिए लगता है क्योंकि आपका शजरा ए तरीक़त सैयदुल आरफ़ीन शेख सहाबुद्दीन उमर

सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह से जाकर मिलता है और आप उनके बिला वास्ता मुरीद व ख़लीफ़ा हैं।

बचपन और तालीम

आपकी विलादत इराक में हुई।आपकी वालिदा और वालिद दोनो वली ए क़ामिल थे जिसका असर आप पर भी पड़ा।आपने इब्तिदाई तालीम अपने वालिद हज़रत सैयद महमूद अलैहिर्रहमा से सीखी।कुरआन हिफ़्ज़ कर लिया जब आपकी उम्र 10 साल हुई तो वालिद को आला तालीम की फिक्र होने लगी क्योंकि वालिद चाहते थे कि आप को तसव्वुफ़ की तालीम मिल जाये और किसी वली ए क़ामिल की सोहबत मिल जाए।

शेख़ सहाबुद्दीन सोहरावर्दी के पास आपकी आमद

जब आप 10 साल के हुए तो वालिद आपको लेकर हज़रत शेख़ सहाबुद्दीन सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह के पास लेकर चले गए उस वक़्त बगदाद में और भी मदरसे थे लेकिन आपका मदरसा दरिया के किनारे था आपके पास जब भी कोई आता आप उससे कहते पहले मदरसे जाओ जब वहाँ से पढ़ लेना तो हमारे पास आना यहां तक कि जब उस्तादुल उलेमा हज़रत अल्लामा शेख़ सादी रहमतुल्लाह अलैह भी

आपके पास आये तो आपने उन्हें भी यही कहकर मदरसा भेज दिया कि जाओ पहले वहां से पढ़कर आना फिर हमारे पास आना लेकिन जैसे ही आप उनके पास पहुंचे आपको देखते **ही** कहा तुम यही रुको उसके बाद आप मुर्शिद के पास 35 साल रहे है।631 हिजरी में उन्होंने आपको ख़िलाफ़त व इजाजत अता किया और उसके एक साल बाद 632 हिजरी में शेख़ सहाबुद्दीन सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

हिन्द आमद

मुर्शिद का हुक्म पाकर आप 70 फरदो के साथ दिल्ली आए जिनमें आपके दोनो भाई सैयद सहाबुद्दीन बिन महमूद और सैयद मूसा बिन महमूद और पीर भाई हज़रत ख्वाज़ा फखरुद्दीन सोहरावर्दी भी साथ मे।जब आप दिल्ली आए तो उस वक़्त दिल्ली के सुल्तान शमसुद्दीन अल्तमश रहमतुल्लाह अलैह थे ये वो दौर था जब दिल्ली में सिलसिला ए चिश्तिया की तूती बोलती थी।आप 9 साल दिल्ली में रहे दीन की तब्लीग की जब रजिया सुल्तान दिल्ली के तख्त पर बैठी उसके बाद आप दिल्ली से 640 हिजरी को हैदराबाद चले आये।

दकन(हैदराबाद) आमद

उस वक़्त हैदराबाद को दकन कहा जाता था क्योंकि हेदराबाद का नाम आपके 350 साल बाद जाकर पड़ा जब नवाब मोहम्मद क़ुतुब शाह ने अपने बेटे हैदर के नाम पर इसका नाम हेदराबाद रखा था।जब आप दकन पहुँचे तो वहां की रानी रुद्रमा थी जो कट्टर हिंदुत्वा की पक्षधर थी आप आपने साथियों के साथ शहर के बाहर पहाड़ी पर डेरा डाला और वही रहने लगे।आपके खेमे में जो लोग जवान थे उन्हें आपने काम पर भेजकर यहां की बोल चाल सीखने की जिम्मेदारी दी वो रोज़ जाते मेहनत मजदूरी करते और यहाँ की जुबान सीखते धीरे धीरे आपके एखलाख को देखकर वहाँ के लोग आपके करीब आने लगे आपके मुरीदो की शादी भी उन्ही की लड़कियों के साथ हो गयी जिससे उनकी जुबान सीखना और उनके बीच में रहकर दीन की तब्लीग करना और भी आसान हो गया।फिर एक दिन आपने मुरीदो को इकट्ठा करके कहा सुनो कल से में 9 साल का चिल्ला करने वाला हूँ उससे पहले बाहर नही आऊंगा।तुम लोग बहतरीन एखलाख पेश करना किसी से बदतमीज़ी नही करना और उनके खुदाओं को गाली मत देना क्योंकि तुम उनके झूठे

खुदाओं को बुरा कहोगे वो तुम्हारे सच्चे खुदा को बुरा कहेंगे।फिर आपने चिल्ला किया।

9 साल तक चिल्ला किया

9 साल तक चिल्ला करने के बाद जब आप बाहर आये तो हर तरफ आपके चर्चे थे आपकी ख़ानक़ाह मदरसा मस्जिद सब बन चुकी थी रोज़ सैकड़ो की तादाद में अक़ीदतमंद आते और आप से फेज़याब होते रहते।

हिन्दू-मुस्लिम दंगा कराने की साजिश

मुल्क हिंदुस्तान में अक्सर कुछ बदमाश किस्म के लोग हिन्दू मुस्लिम दंगा कराने में बहुत माहिर होते है उस ज़माने में भी एक बार ऐसा माहौल बन गया था असल मे एक बार आप रोज़ की तरह तहज्जुद पढ़ने के बाद पहाड़ी पर बैठे हल्का ए ज़िक्र कर रहे थे अचानक से ऐसा वज़द तारी हुआ आपकी जुबान से तेज़ी से निकला लाइलाहा इललल्लाह कि सारा दकन लर्जिश करने लगा।उसी लर्जिश में पहाड़ी के नीचे एक मंदिर थी उसका सबसे बड़ा बुत भी गिरगया।जब सुबह मंदिर का

पुजारी आया उसे बुत पड़ा हुआ दिखाई दिया तो उसने कहा ये इन्ही मुसलमानो का काम है ये कहते हुए वो लोगो को बुलाकर आपकी ख़ानक़ाह में घुस गया और ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया शोर सुनकर आप बाहर आये आपने पूरा माजरा सुना तो कहा नही हमारे मज़हब में किसी दूसरे मज़हब के साथ ऐसा सुलूक करना मना है जब वो पुजारी ज़िद करने लगा तो आपने कहा चलो चलकर उसी बुत से पूछ लेते है इतना कहते ही मुरीदो ने नाराए तकबीर बुलन्द कर दिया।जब आप हज़ारो के मज़मे में मंदिर पहुंचे तो आपने ज़ोर से कलमा ए शहादत पढ़ा और कहा ए बुत तू खुद बता तुझे किसने गिराया है।आपका हुक्म पाते ही वो बुत कहने लगा कि जब आप हल्का ए ज़िक्र कर रहे थे तो जिस लर्जिश से सारा दकन हिल गया था में भी उसी में गिरा था उसके बाद बुत ने पुजारी से कहा मुझे यहाँ से ले चलो अब ये जगह बाबा शरफुद्दीन की है आपकी ये करामत देखकर हज़ारो ने इस्लाम कबूल किया।अब आप लोगो को तब्लीग करते हर तरफ़ आपके चर्चे थे और क्यों न हो आपने हेदराबाद वालो को ईमान जैसी बेशकीमती दौलत जो अता फ़रमाई थी आप बिला वास्ता शेख़ सहाबुद्दीन उमर सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा है।आपको शहंशाहे दकन कहा जाता है।19

शाबान 687 हिजरी को आपने दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया लेकिन अपने पीछे सिलसिला ए सोहरावर्दी की साख छोड़ गए और ऐसी विरासत जिससे आज भी सारा दकन फेज़ लेता है और ताक़यामत तक लेता रहेगा।

बुलबुल शाह कश्मीरी सोहरावर्दी अलैहिर्रहमा

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत लगभग 1250 ईस्वी के आसपास तुर्की के सादात घराने में हुई है।आपका पूरा नाम सैयद शाह सरफुद्दीन अब्दुर्रहमान बुलबुल शाह सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह है।आप मोलाए क़ायनात शेरे खुदा रजिअल्लाहू तआला अन्हु की औलाद में से हैं।आपको कश्मीर का पहला सूफी पहला पीर पहला वली पहला सादात कहा जाता है।

बुलबुल शाह

आप बुलबुल शाह के नाम के जाने जाते हैं आपके नाम मे बुलबुल होने के ताल्लुक से दो रिवायतें हैं।

1--दरसअल अवाम में ये मशहूर है कि आपका एक नाम बिलाल शाह भी था जो बाद में बुलबुल शाह में तब्दील हो गया।

2--दूसरी रिवायत के मुताबिक ये आम है कि आप को बुलबुल परिंदे से बहुत लगाव था।आप जहाँ भी जाते वो आपके कंधे पर बैठा रहता जब आप नमाज़ पढ़ते वो उड़कर आपके ऊपर चला जाता बुलबुल परिंदे से मोहब्बत की वजह से ही आपका नाम भी बुलबुल शाह पड़ गया।

सोहरावर्दी

आप सिलसिला ए सोहरवर्दी से ताल्लुक रखते हैं आपका शजरा ए तरीक़त कुछ इस तरह है-

सैयद सरफ़ुद्दीन बुलबुल शाह सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह

सैयद शाह नियामतुल्लाह वली सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह

ख्वाजा इमाम अबी याफई सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह

ख्वाजा शेख़ रशीदुद्दीन सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह

सुल्तानुल आरफ़ीन हज़रत ख्वाजा शेख़ उमर सहाबुद्दीन सोहरवर्दी रहमतुल्लाह अलैह

पीरो मुर्शिद

आपके पीरो मुर्शिद हज़रत ख्वाजा सैयद शाह नियामतुल्लाह अलैह थे जो बहुत बुलन्द पाए के वली अल्लाह हुए हैं।जब वो

अपनी ख़ानक़ाह से दीन की तब्लीग कर रहे थे तो ख़ानक़ाह में जो भी नज़राना आता उसमे अपना हिस्सा और मुरीदों का भी हिस्सा निकालकर गरीबो में बांट देते थे।एक बार सुल्तान मिर्ज़ा शाह को शक हुआ कि शायद आप वो चीजे भी खा जाते हैं जिनकी शरीयत में मनाही है एक दिन उसने आपसे पूछा कि हुज़ूर गुस्ताखी माफ मुझे आपके खाने में शक है शायद आप खाने की जांच किये बगैर खा लेते हैं आपने कहा नही मिर्ज़ा सूफिया का तबका बगैर जांचे परखे एक लुकमा नही खाता है ये कहकर आप चुप हो गए उसने मन ही मन मे आपका इम्तिहान लेने की सोची।एक दिन उसने सिपाहियों को हुक्म दिया कि जाओ एक बकरी चोरी कर लाओ सिपाही गए बकरी चोरी करके ले आये उसे पकवाया गया आप को दावत दी गई।आप और आपके मुरीद खाना खाने लगें सुल्तान मिर्ज़ा मन ही मन मे सोच रहा था कि देखो कितने झूठे सूफी है हराम की बकरी भी नही पहचान पाए हैं जब आप खाना खा चुके सुल्तान ने कहा वाह सूफी साहब आप तो कहते थे कि सूफी हराम का एक लुकमा तक खाना पसंद नही करता है।आपने फ़रमाया सुल्तान हां में आज भी वही कहता हूँ जाओ पहले अपने सिपाहियों को वहां भेजकर पूरा मामला तो पता कर लो सुल्तान ने सिपाही को हुक्म दिया

जाओ जहाँ से बकरी लाये थे उसके मालिक को भी बुला लाओ तो सिपाही उसी जगह पर गए जहाँ से बकरी लाये थे।मकान के मालिक का दरवाजा खटकटाया अंदर से एक शख्श आया सिपाहियो ने कहा क्या तुम्हारी बकरी चोरी हुई है वो शख्स कहने लगा हाँ मेरी एक बकरी थी और आज मुझे वो बकरी सैयद शाह नियामतुल्लाह अलैहिर्रहमा की बारगाह में ले जाना था लेकिन सुबह उठा तो देखा उसे कोई चुरा ले गया ये सुनते ही सिपाही उल्टे पांव भागकर आये और सुल्तान से कहा ये बाबा सच कह रहे हैं इस बकरी पर इन्ही का हक़ है सारा वाकिया सुनकर सुल्तान मिर्ज़ा बहुत शर्मिंदा हुआ उसने आपके मुर्शिद के क़दमो पर गिरकर माफी माँगी।

पहली बार कश्मीर में

हज़रत बुलबुल शाह रहमतुल्लाह अलैह तुर्की के सादात घराने से ताल्लुक रखते थे।आपने 1286 में पहली बार कश्मीर की सरज़मीं पर अपने मुबारक क़दम रखे लेकिन आप ज्यादा दिन नही रुके और फिर वापिस चले गए उसके 34 साल बाद यानी 1320 ईस्वी में आप एक हज़ार लोगो के साथ कश्मीर में दाख़िल हुए और दीन की तब्लीग शूरु

की।आपक़ो कश्मीर का पहला सूफी पहला मुबल्लिग,पहला आलिम,पहला क़ुतुब पहला सादात होने का शरफ़ हासिल है।

कश्मीर

कश्मीर हिंदुस्तान ही नही बल्कि शायद दुनिया में घूमने लायक सबसे खूबसूरत शहरो में से एक है।इतिहासकार इसे धरती का स्वर्ग कहते हैं।मेरे शायद का मतलब ये भी है कि लोगो की पसन्द पर भी डिपेंड करता है मिसाल के तौर पर तसव्वुफ़ वालो के लिए तो मदीना मुनव्वरा,नजफ़ अशरफ,कर्बला शरीफ,बगदाद शरीफ़, अजमेर शरीफ जैसी मुक़द्दस जगह ही पसन्द आएगी।

कश्मीर का मतलब होता है वो पानी जो क़ाबिले तारीफ है ओर जब हम इसकी राजधानी श्री नगर की झीलों को देखते है तो बगैर उसकी तारीफ किये बगैर रह नही पाते है इसीलिए इसका नाम कश्मीर पड़ा।वैसे इसके कश्मीर नाम के पीछे और भी कई रिवायतें हैं।

कश्मीर -सैयदो का गढ़

सैयद सबसे आला दर्जे की जात होती है जिसे इब्ने मौलाए क़ायनात हज़रत अली करमल्लाहु

वजहुल करीम कहा जाता है।हिन्द में ज्यादातर औलिया अल्लाह इब्ने रसुल या इब्ने बतूल है यानी सैयद ख़ानदान से ताल्लुक रखते हैं ये वो ख़ानदान है जिसके घर से ही शरीयत,तरीक़त,मारफत,हक़ीक़त,शहादत,इमामत,शुजाअत, सखावत,विलायत,मोहब्बत चली आ रही है।इनका मक़ाम अगर समझना है तो नीचे दिए गए चन्द शेरो को ध्यान से पढ़े

1--"हो आबिद ओ जाहिद ओ मुत्तक़ी ज़माने में मगर

कोई कुछ भी हो जआले मोहम्मद के बराबर हो नही सकता"

2--"तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का

तू है एन ए नूर तेरा सब घराना नूर का"

3--"अहले सुन्नत का है बेड़ा पार असहाबे हुज़ूर

नज़्म है और नाव है इतरत रसूलल्लाह की"

तो यहाँ से हम आसानी से इनका मक़ाम समझ सकते हैं।

अब यहाँ कश्मीर से सैयदो का कनेक्शन देखा जाए तो मालूम होता है कि ये तो सैयदो का गढ़ है ।1286 में सैयद शाह सरफ़ुद्दीन बुलबुल शाह रहमतुल्लाह अलैह यहां आए उसके बाद 1313 में सैयद मीर रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ़ लाये, 1373 सैयद हसन सिमनानी रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ़ लाए।सैयद अली हमदानी रहमतुल्लाह अलैह के भाई सैयद शाहे हमदानी रहमतुल्लाह अलैह 700 सैयदो के साथ तशरीफ़ लाए और उनके बेटे क़रीब 300 सैयदो के साथ तशरीफ़ लाए।तारीख गवाह है कि करीब 1500 से ज्यादा आले रसूल कश्मीर की पाक सरजमीं पर तशरीफ़ लाए अब वो जगह भला क्यो न धरती का स्वर्ग हो जहाँ पर 1500 से ज्यादा आले रसूल आराम फरमा हो उसका मक़ाम अल्लाह अल्लाह!

(नोट) --अज़ीज़ों यूनिवर्सिटी से पढ़ने वाले चन्द हज़रात जो थोड़ा बहुत दीन इस्लाम की नॉलेज रखते हैं वो अक्सर सादातो के बुग्ज़ में एक जुमला कहते रहते हैं कि सब बराबर है कोई बड़ा छोटा नही है और क़ुरआन क़रीम की आयत

और 2-4 हदीसे पेश करके ख़ुद को बहुत बड़ा अल्लामा समझते हैं जबकि हक़ीकत में बातनि तो दूर की बात वो जाहिरी तौर पर भी मुसलमान नही दिखते।जिसके चहरे पर दाढ़ी न हो,तन पर लिबास ए मोहम्मदी न हो,दिल मे इश्क़ ए हुसैन न हो,अंदाज़ में ख्वाज़ा ए हिन्द की उल्फत न हो,मिज़ाज़ में गौसे आज़म की तड़प न हो वो शख्स इस तरह के जुमले लिखकर समझता है कि में और सादात बराबर हो गए तो वो शख्स गलत है बल्कि में तो कहता हूँ ज़हनी तौर पर बीमार है या बदअक़ीदह है।अब आओ तारीख की रोशनी में दलाएल पेश करते हैं।बहुत ही मोतबर तारीखी वाकिया है कि जब इमाम हुसैन रजिअल्लाहू तआला अन्हु और माँ सकीना सलामुल्लाह अलैहा की शादी की बात हो रही थी तो उस वक़्त हुकूमत हज़रत उमर फारुके आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हू के पास थी उनके शहज़ादे ने कहा अब्बा जान क्या आप हुसैन की जगह मेरी शादी नही कर सकते हैं जबकि सकीना बादशाह की बेटी है और में बादशाह का बेटा हूँ--?।बेटे के मुंह से ये जुमला सुनते ही फारुके आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हू को जलाल आ गया और कहा एक बात बता क्या तेरा नाना भी नबी है अल्लाहु अकबर एक वो फारुके आज़म हैं जो नबी ए आख़िरुज़्ज़मा

के नायब हैं। वक़्त के अमीरूल मोमिनीन है दुनिया मे जन्नत की सनद लिए बेठे हैं जब उनका अक़ीदह ये है कि नबी के बेटे की बराबरी मेरा बेटा नही कर सकता तो फिर आज का बदकार,गुनहगार, रियाकार,जिनाकार किस मुंह से खुद को और औलादे अली को एक ही जुमरे में तौलता है शर्म आनी चाहिए ऐसी सोच रखने वालों को जाकर सीख मेरे फ़ारूक़ आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हु से अज़ीज़ों अगर यहां तारीख का हवाला देने लगूं तो शायद फेहरिस्त बहुत लंबी मिल जायेगी हमे याद रखना चाहिए की इनकी बेहुरमती करके कोई वली तो दूर की बात है मोमिन नही बन सकता मेरे नबी का फरमान है कि जो भी मेरी आल के बुग्ज़ में मरा वो काफ़िर मरा तो अल्लाह आप सबको जिन्होंने कभी किसी सादात से बदतमीज़ी की हो उन्हें चाहिए कि फौरन तौबा करे वरना अल्लाह के यहां इसकी गिरफ्त होगी और ऐसी गिरफ्त की शायद निकलना भी मुश्किल हो जाए)

राजा रिंचन देव ने इस्लाम कबूल किया

उस वक़्त कश्मीर के राजा रिंचन देव जो कि बुद्धिस्ट थे यानी बौध्द धर्म के अनुयायी थे। वो रोज़ परेशान रहते थे और उसे कोई ऐसा मज़हब नही मिल रहा था जहाँ उसे सुकून मिल

सके।वो अक्सर इसी सोच में मुब्तिला रहते एक दिन उसने अपने दरबार में ये मसला सबके सामने रखा राजा की परेशानी सुनते ही शाह मीर जो कि दरबार मे हाजिर था उसने कहा बादशाह आप ऐसा करे कि आज सुबह सवेरे ही उठे और महल से बाहर निकले जो भी शख्स आपक़ो पहले दिखे उसी का मज़हब(धर्म) अपना लीजिये।राजा को ये तदबीर अच्छी लगीं जब सुबह हुई तो महल से बाहर निकल आया कुछ देर चलने के बाद देखा कि सामने पहाड़ी पे एक नूरानी बुजुर्ग बेठे नमाज़ पढ़ रहे हैं उनके नूरानी रुख(चेहरा) की जियारत होते ही उनके क़दमो में गिर गए और रोने लगे हज़रत बुलबुल शाह रहमतुल्लाह अलैह ने उठाकर सीने से लगाया।उसी वक़्त इस्लाम कबूल किया उसके बाद उसका सारा ख़ानदान समेत करीब दस हज़ार लोगो के साथ इस्लाम का दामन थामा और कश्मीर की वादियों में इस्लाम का झंडा लहरा दिया।उस दौर में दस हज़ार की तादाद बहुत बड़ी तादाद होती थी।उस वक़्त भी कश्मीर की दारूल हुकूमत(राजधानी)श्री नगर थी।जिसका मतलब होता है की वो शहर जिसका एहतराम किया जाए।उसके बाद राजा रिंचन देव का नाम बदलकर सदरुद्दीन रखा गया।

सूरज को बुलाया

एक बार आपके मुरीद वज़ू क़रने झील के पास आये लेकिन जब पास गए तो देखा सारा पानी बर्फ बन गया है बहुत कोशिश की लेकिन क़ामयाब न हुए आखिर में आपकी बारगाह में आये सारा माजरा बताया आप उनके साथ गए आपने भी बर्फ पर हाथ मारा लेकिन उस पर कोई फर्क नही पड़ा और वो वैसी ही जमी रही ये देखकर आपक़ो जलाल आ गया आपने आसमान की तरफ नज़र उठाई और कह ए सूरज कहाँ है इधर आ और इसकी बर्फ को गलाकर मेरे मुरीदो के लिए वज़ू का पानी बना आपका हुक्म सुनते ही सूरज की तजल्ली हुई सारी बर्फ़ देखते ही देखते खत्म हो गई मुरीदो ने वज़ू किया और नमाज़ अदा की।

राजा सदरदुद्दीन

राजा सदरुद्दीन आपसे बहुत अक़ीदत रखता था उसने आपके लिए ख़ानक़ाह तामीर कराई और तीन मंजिला एक मस्जिद की तामीर भी कराई आप ख़ानक़ाह में रहकर दीन की तब्लीग करते रहे।आप फ़रमाते थे कि किसी भी 1 सुन्नत की पैरवी करना हज़ार साल की नवाफिल से अफज़ल है।इसीलिए बुजुर्गों ने दोपहर के केलूला को नफिल से बहतर

बताया है यानी दोपहर जोहर की नमाज़ के बाद आराम करने या सोने को केलूला कहा जाता है।1327 ईस्वी में आपने दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया आपके आस्ताने के करीब ही आपके मुरीद व जानिसार राजा सदरुद्दीन अलैहिर्रहमा की भी क़ब्र है।आप कश्मीर के बादशाह है पहले सूफी है यकीनन आज भी कश्मीर में जो इस्लाम का परचम लहरा रहा है उसकी नींव आपने ही रखी है आप की कुर्बानियों को अहले तसव्वुफ,अहले सादात,अहले कश्मीर,अहले हिन्द ता क़यामत तक याद रखेंगे।

सैयद शाह विलयात हुसैन अमोरहवी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आप सादात खानदान के चश्मो चराग़ हैं आपका पूरा नाम सैयद मोहम्मद सरफ़ुद्दीन दादा शाह विलायत हुसैन नकवी सोहरवर्दी अमरोहवी रहमतुल्लाह अलैह है।आप सैयदुश शोहदा मौला इमाम हुसैन रजिअल्लाहू तआला अन्हु की औलाद में से हैं।आज भी अमरोहा में आपकी औलादे हैं लेकिन उनमें जायदातर अहले तशययों के अक़ीदह पर है।

दादा शाह क्यों

मेने पहले ही बता दिया है कि अमरोहा में जितने भी सादात खानदान हैं आप उनमें सबसे पहले अमरोहा तशरीफ लाए और सब आपकी औलादे हुई इसी रिश्ते से आपक़ो दादा शाह भी कहा जाता है।

विलायत क्यों

आपके नाम मे विलायत भी आता है दरसअल अहले तसव्वुफ़ के नज़दीक जो निस्बत बन्दों को अल्लाह से होती है वो वलायत होती है सिलसिला ए नक्शबंदी में वलायत पर बहुत जोर दिया गया है जबकि विलायत वो कमाल है जिससे लोगो को फेज़ पहुंचता है उसे विलायत कहते हैं।सिलसिला ए चिश्तिया, कादरिया, सत्तारिया, सोहरावर्दी में विलायत और वलायत दोनो का मक़ाम है जबकि सिलसिला ए नक्शबंदी में वलायत पर तवज़्ज़ो रहती है तफसीर को समझने के लिए हज़रत बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी नक्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह की सवानेह और उनकी तालीमात को पढ़ना ही होगा उसके बगैर आप इस कॉनसेप्ट को नही समझ सकते हैं।

अमरोहवी

आपके नाम मे अमरोहवी जो आता है वो न तो कोई सिलसिला है और न ही क़ोई अताई अलक़ाब बल्कि ये तो जगह का नाम है।हिंदुस्तान के सूबा उत्तर प्रदेश में एक जिला है जिसका नाम अमरोहा है इसी जिले में आपका आस्ताना है इसीलिए आपके नाम के आखिर में अमरोहवी भी आता है।

अमरोहा का नाम कैसे पड़ा

जब आप रहमतुल्लाह अलैह यहाँ तशरीफ़ लाये तो देखा कि यहां आम और मछली की पैदावार ज्यादा है हर तरफ आम के बाग और आम ही आम व मछली ही मछली तो आम और मछली के संगम को देखकर आपकी जुबान से निकला अमरोहा-और तभी से इसका नाम अमरोहा पड़ गया।जो आजतक इसी नाम से जाना व पहचाना जाता है।

ख़ानदान

आपका ख़ानदान बहुत ही आला ख़ानदान है आप सादात घराने के चश्मों चराग हैं और आपके मक़ाम को समझना है ये तो आपके ख़ानदान के बारे में जानना जरूरी है।आप के जद्दे अमज़द जब इराक से हिन्द आये तो मुगल सल्तनत के बानी बादशाह बाबर के दरबार मे आला दर्जे पर फ़ायज हुए जिनमे सबसे बड़ा नाम सैयद मीर आदिल हुसैन अलैहिर्रहमा का है आपके अदल ओ इंसाफ को देखकर बाबर ने आपक़ो आदिल का लक़ब दिया बाद में उन्हें सिंध का गवर्नर भी बनाया। आप सैयद जलालुद्दीन सुर्ख पौश सोहरवर्दी रहमतुल्लाह अलैह के रिश्तेदार भी थे।यानी ख़ानदान के एतबार से आप हर सूबे में आला हैं।आपके जद्दे अमज़द इल्म और तसव्वुफ़ के बुलन्द मर्तबे पर फ़ायज थे।आपने तालीम हासिल करने के बाद दीन

की तब्लीग शुरू की और इसी कड़ी में आप यूपी के जिला अमरोहा पहुंचे।

दो दरवेशों की पेशनगुई

हमे और आपको चाहिए तारीख में अगर कोई ऐसा वाकिया मिले जिसमे दो फकीरों के बीच आपस में कोई क़लाम हुआ हो तो हमे खामोश रहना चाहिए क्योंकि वो अरबाबे हाल लोग है और हमसब सर से लेकर पेर तक गुनाहों का मुजस्सिमा लिहाज़ा अल्लाह के वलियों के बारे में अपनी जुबान खोलने और लिखने पर एक हज़ार मर्तबा सोचना चाहिए क्योंकि इनकी गुस्ताख़ी और दुश्मनी करने वाले की दुश्मनी अल्लाह से होगी जिसका अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने क़ुरआन क़रीम में इर्शदा फ़रमा दिया है।

एक बार आप और सैयद ख्वाजा नसीरुद्दीन शाह रहमतुल्लाह अलैह के बीच ये बहस हुई कि ये जगह हमारी है आपने कहा ये जगह मुझे पसन्द है और में यही रहूँगा जब दोनों वलियों में मीठी मीठी प्यारी प्यारी बहस आगे बढ़ गई तो सैयद ख्वाजा नसीरूद्दीन शाह हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह ने कहा ठीक है तुम यहाँ रहो और तुम्हारी क़ब्र पर बिच्छु ही बिच्छु होंगे आपने कहा ठीक है दरवेश लेकिन बिच्छू तो होंगे तो लेकिन किसी

को डंक नही मारेंगे फिर जब वो चलने लगें तो आप ने कहा सुनो नसीरुद्दीन तुम्हारी क़ब्र पर भी गधे ही गधे होंगे उन्होंने कहा ठीक है सरफुद्दीन लेकिन वो शोर और फुजला(गन्दगी)नही करेगें।अल्लाहु अकबर यानी कि बीछी जिसका काम ही डंक मारना है अब वो क़यामत तक आपके हाते में डंक नही मार सकती है वहीं गधा जिसका काम ही शोर मचाना और फुजला करना लेकिन आपके आस्ताने पर क़यामत तक कोई भी गधा शोर नही मचाएगा और फुजला नही करेगा अब तारीख़ के हवाले से एक और वाकिया बहुत ही मशहूर है कि ख्वाजा बिशर हाफी रहमतुल्लाह अलैह जिस रास्ते से निकल जाते थे जानवर उस रास्ते मे फुजला नही करते थे क्योंकि उन्हें पता था कि ख्वाज़ा बिशर हाफी रहमतुल्लाह अलैह नंगे पैर ही सफर करते थे।एक दिन रास्ते मे एक जानवर ने फुजला कर दिया सामने से आ रहे एक बुजुर्ग ने देखा और गाँव जाकर एलान करा दिया की आज ख्वाजा बिशर हाफी राहमतुल्लाह अलैह का इंतेक़ाल हो गया लोगो ने पूछा तुम्हे केसे मालूम तुम तो अजनबी तो उन बुजुर्ग ने कहा हां में अज़नबी हूँ मेने उन्हें देखा भी नही है लेकिन मेने सुना था कि जिस रास्ते से वो निकलते है वहाँ जानवर फुजला नही करते हैं लेकिन आज एक जानवर ने मेरे सामने उसी

रास्ते में फुजला कर दिया है ये दलील सुनकर लोग रोने लगे क्योंकि उन्हें भी पता था कि अल्लाह ने ख्वाजा बिशर हाफी रहमतुल्लाह अलैह को वो मक़ाम और बुजुर्गी अता की थी कि जिस रास्ते से वो निकल जाते थे जानवर वहां फुजला करना बंद कर देते थे।

(नोट--) अब यहाँ ये ध्यान देना है कि इन दोनों दरवेशों ने एक दूसरे को ये बददुआ क्यों दीं दरसअल ये बद्दुआ नही है क्योंकि फ़क़ीर कभी दूसरे फ़क़ीर को बददुआ नही दे सकता और वो भी जब दोनों शेरे ख़ुदा मौलाए क़ायनात रजिअल्लाहू तआला अन्हु के शहज़ादे हों बल्कि उनके इस वाकिये से इन दोनों हस्तियो का मक़ाम ज़माने को समझ मे आया है वो गुस्ताख जिन्हें विलायत और करामत समझ नही आती है अब वो भी अपनी आँखों से मौला अली मुश्किल कुशा के शहज़ादो की ज़िंदा क़रामत देख रहे हैं और विज्ञान भी हैरान पड़ गया है अफ्रीका के जंगलो में सबसे खतरनाक बिच्छू पाई जाती है जिन्हें जब आपके दर पर लाया गया जैसे ही वो हाते के अंदर दाखिल हुईं उन्होंने डंक मारना बन्द कर दिया।

आखिर ऐसा क्यों

आमतौर पर अहले तसव्वुफ़ के लिए तो बस निस्बत ही काफी है बुजुर्गों की क़रामतो में हम शक व तम्बीह नही करते हैं क्योंकि वो ऐसे मक़ाम पर फ़ायज होते है जहाँ तक हमारी सोच भी नही जा सकती है और उनके ज़रिए ऐसी ऐसी क़रामते ज़ाहिर सादिर होती रहती है जिनके बारे में आम आदमी का तसव्वुर भी नही जा सकता है लेकिन अगर कोई अहले इल्म इस क़रामत को लॉजिक और तारीख़ ए इस्लाम के ज़रिए समझने की बात करे तो उसे बहुत ही आसानी से ये समझ आयेगा।

सबसे पहले हमें ये देखना है कि एक हद तक ही किसी चीज़ का असर होता है जैसे बिच्छु अमरोहा में और भी कई जगहों पर हैं और वहाँ पर वो लोगो को नुकसान भी पहुंचाते रहते हैं लेकिन जैसे ही आपके दरबार मे एंट्री होती है उनका असर खत्म हो जाता है यानी अब जैसे ही वो आपके आस्ताने की सरहद में आते है उनका असर ख़त्म हो जाता है।

1--बरमूडा का ट्राई एंगल

शाह विलायत रहमतुल्लाह अलैह की करामत को न मानने वाला आज बरमूडा के ट्राई एंगल को देख सकता है यानी कि

ये एक ऐसी खास जगह(हद) है कि इसके ऊपर और पानी पर जैसे ही कोई चीज इसे क्रॉस करती है उसके बारे में कोई खबर ही नही आती है।मिसाल के तौर पर पानी का जहाज चल रहा है और कंट्रोल रूम से लगातार उसकी सिचुएशन देखी जा रही है लेकिन जैसे ही वो बरमूडा के इस जगह पर पहुंचता है और क्रॉस करता है उसका कनेक्शन टूट जाता है फिर दुनिया की कोई ताकत उसे वापिस नही ला सकती है तो जब बरमूडा के उस जगह का आलम ये है कि यानी कि सिर्फ खास जगह जहाँ पर साइंस फेल हो गई हें जबकी इंसान तो चाँद पर पहुंचने का दावा करता है,मंगल पर जाने का दावा करता है,समुद्र के अंदर रहने की बात करता है और साइंस ने इन सब पे फतेह भी पाई लेकिन आज भी बरमूडा के उस ट्राई एंगल के मसले को समझ नही पाई।

2--तीरों का असर न होना

जब ख्वाजा गरीब नवाज़ रहमतुलल्लाह अलैह अजमेर की पहाड़ी पर थे और अचानक से चारो तरफ से जादूगरों ने तीरों से हमला कर दिया था आपने फौरन एक गोल लकीर खींची और अपने 40 मुरीदो से कहा आओ इस गोले के अंदर आ जाओ इनके तीर इसे पार नही कर पाएंगे हुआ भी वही वो

जादूगर तीर चलाते गए लेकिन उनके तीर गोले को पार नही कर पाये यानी कि ये गोला वही एक खास जगह थी जहां पर तीर का असर खत्म हो गया था ।

3-गर्दन पर छूरी का न चलना

इस्लाम मे एक बच्चा बच्चा भी जानता है कि जब अल्लाह के हुक्म से अबुल अम्बिया हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने लख्ते जिगर हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की गर्दन पर छूरी चलाई तो वो उनकी गर्दन पर नही चल रही थी जैसे ही उसी छुरी को पत्थर पर फेंका उस पत्थर के दो टुकड़े हो गए यानी कि पता चला कि अल्लाह के हुक्म से एक खास हद तक उस छूरी का असर ख़त्म हो गया था।

4--रसूल ए ख़ुदा ने भी लक़ीर खीची

एक बार ताजदारे मदीना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम अपने सहाबा हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रजिअल्लाहू अन्हू के साथ जंगल से गुजर रहे थे।आपने कहा मसऊद यही रुको में आ रहा हूं और जाते वक्त आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने एक लक़ीर खींच दी और कहा जबतक में न आऊँ इस लक़ीर बाहर मत निकलना जब आप वापिस आये लक़ीर मिटाई और कहा चलो तो उन्होंने कहा या

रसूलल्लाह आप के चले जाने के बाद एक से बढ़कर खतरनाक साँप मेरे अगल बगल घूमने लगे लेकिन वो मुझे नुकसान नही पहुंचा सके आपने कहा हां मसऊद इसीलिए मेने लक़ीर खींच दी थी क्योंकि इस लक़ीर के अंदर उनका असर ख़त्म हो जाता और बाहर वो इतने ही ज़हरीले थे.

5-मौलाना रूम की नमाज़

सुल्तानुल उलेमा सुलतानुस सूफिया हज़रत मौलाना जलालुद्दीन रूमी रहमतुलल्लाह अलैह एक बार नमाज़ पढ़ रहे थे तो सामने से चंगेज़ खा की फौज आप पर तीर चला रही थी जैसे ही तीर आप के पास आते रुक जाते जितनी देर आपने नमाज़ पढ़ी एक भी तीर आपके जिस्म को छू भी नही सका।

अज़ीज़ों यहां से अब ये समझना बहुत ही आसान हो गया है कि अल्लाह के हुक्म से एक हद खास जगह खास शख्सियत के सामने वो चीजे भी असर नही करती जो आमतौर पर हर जगह असर करती हैं मिसाल के तौर पर बिच्छु पूरी दुनिया में कहीं भी हो अगर उसपर किसी भी इंसान का पेर गलती से भी पड़ गया तो उसको काटेगा जरूर और क़ब्र के अज़ाब में सांप और बिच्छु ही होंगे जो इंसान को दिन रात काटेंगे।

आपका घोड़ा

आपके आस्ताने पर एक दीवार है जिसे दादा शाह विलायत का घोड़ा कहा जाता है क्योंकि एक बार आप ने इस दीवार को हुक्म दिया था और ये चलने लगी थी इसी क़रामत के बाद से इस दीवार को आपका घोड़ा कहते हैं जो आज भी जिला अमरोहा में है।बिलयक़ीन आप तसव्वुफ के बहुत ही बुलन्द व बाला मुक़ाम पर फ़ायज थे।आपकी ज़िंदा करामत देखकर आपके मकाम का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।आज भी लाखों की भीड़ आपके आस्ताने पर लगती है और दुनिया आपकी विलायत की गवाही दे रही है आप इब्ने रसुल औलादे बतूल है।मौला से दुआ है कि आपके सदके लोगो को क़ब्र के अज़ाब से भी बिच्छुओं से महफूज़ रखे मौला करीम आपके सदके तुफ़ैल हम सब गुनहगारों के गुनाह माफ़ फ़रमाए।

हज़रत मूसा सुहाग सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम

आपकी विलादत 793 हिजरी मे हुई है।आपका असली नाम मूसा है और पूरा नाम शेख़ मूसा सुहाग मज़्जूब सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह है।

आपके नाम मे सुहाग क्यों

लफ्ज़ सुहाग बहुत ही मशहूर है।दरसअल हर लफ्ज़ के कई मायने होते हैं इसलिए उलेमा को असूरे साशी,नूरुल अनवार पढ़ाई जाती है।जिससे वो लफ़्ज़ों के मायने हालत और जरूरत के हिसाब से भी समझ जाएं ।

सुहाग असल मे पहले सौभाग्य था फिर धीरे धीरे ये सुहाग की शक्ल में बदल गया।मोहब्बत आतिश का एक शेर है कि

सारे मोहल्लो में जाग है हमसे

अब तो गहरा सुहाग है हमसे

इंशा का शेर है कि

ए आदमी बाज आ उस परी के सुहाग से
बना है जो खाक से उसे क्या मुनासिबत आग से

तो सुहाग से यहाँ मुराद मोहब्बत की और आपने अपनी जात को हक़ तआला की मोहब्बत में फ़ना कर दिया लिहाज़ा आपके नाम मे सुहाग भी लिखा मिलता है।

मज़्जूब

अहले तसव्वुफ़ के नज़दीक मज्जूब वो है जो अल्लाह की मोहब्बत मे खो गया।और मज्जूब पर जब अल्लाह की मोहब्बत का गलबा हो जाता है तो उस पर शरीयत के हुक्म लागू नही होते।और जबतक वो जज़्ब में होता है लोगो को फायदा नही दे सकता।औलिया की दो किसमे है

1--सालिक

2--मज़्ज़ूब

मज़्ज़ूब औलिया अल्लाह का वो गिरोह है जो हर वक़्त अल्लाह की मोहब्बत मे रहते हुए दुनिया से कट जाते है शेख़ जर्रूख अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि ऐसे हालात में मज़्ज़ूब पर शरीयत के अहकाम लागू नही होते।

शेख़ शिब्ली अलैहिर्रहमा पर एक बार जज़्ब की केफियत हुई तो उनके पास चूना पड़ा हुआ था उन्होंने सारा चुना चेहरे पर लगा लिया जिसके असर से आपके सारे बाल झड़ गए यहॉ तक कि दाढ़ी भी नही बची।अब हम इसे हदीस के जरिये भी समझने की कोशिश करते हैं।

"एक बार एक औरत नबी क़रीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आई और कहने लगीं आक़ा अलैहिस्सलाम कभी कभी में होश खो बैठती हूँ किसी चीज़ की खबर नही रहती यहाँ तक कि मेरे जिस्म के कपड़े तक उतर जाते हैं फिर भी मुझे ख़बर नही होती लिहाजा आप मेरे लिए दुआ कर दे।नबी क़रीम ने कहा अगर तू सब्र कर ले तो अल्लाह तुझे जन्नत अता कर दे या में दुआ करूँ की तेरी बीमारी खत्म हो जाए"

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीका सलामुल्लाह अलैहा रिवायत करती हैं कि रसूल ए ख़ुदा ने फ़रमाया कि तीन बन्दों पर से क़लम उठा लिया गया है।

1--सोने वाला आदमी जबतक वो सोया हो।

2--नाबालिग

3--मजनू या मज़्जूब जिसकी अक्ल पर गलबा हो गया हो उससे जो भी अमल जाहिर होगा उस पर शरीयत का असर नही होगा।

(अबु दाऊद-किताबुल हुदूद)

(इब्ने माज़ा--किताबुत तला)

मज़्जूब को पागल नही कहा जाता है कुरआन क़रीम के हवाले से अगर जानना हो तो बस इतना जान लो कि जब हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम पर औरतो ने नज़र डाली और उनकी तजल्ली पड़ते ही अपनी उंगलियों को काट डाला और खबर तक नही हुई।यानी वो औरते जिनको जरा सी तकलीफ न बर्दाश्त हो आखिर ऐसा क्या हुआ कि उंगली तक कट गई और उन्हें ख़बर तक नही हुई अज़ीज़ों इसे है मज़्जूब क़हा

जाता है।हज़रत मूसा सुहाग रहमतुल्लाह अलैह अल्लाह के मज्जूब व महबूब बन्दे हैं अगर उनपर कोई एतराज़ करता है तो वो या तो गुस्ताख़ है या उसे हदीस की जानकारी नही है वरना जिस शख़्स पर अल्लाह और उसका रसूल एतराज़ न करे उसपर मुल्ला एतराज़ करता है तो ये बात समझ से बाहर हो जाती है।

सोहरवर्दी

आपका शजरा ए तरीक़त सैयद जमाल मुजर्रीद क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह से मिलता है ये अपने वक़्त के बहुत बड़े अल्लामा थे।एक बार ये जज़्ब की हालत में थे कि अचानक से कुछ हरामखोरो ने सीसा पिघलाकर आपके मुंह मे डाल दिया लेकिन आपको कुछ न हुआ।इनका सिलसिला जाकर शाह इब्राहिम अलैहिर्रहमा से मिलता है।

महबूबे इलाही की बारगाह में हाज़िरी

आप क़ुरआन हदीस फ़िक़्ह के जबरदस्त आलिम थे।लोगो को शरीयत पर अमल करवाते रहते थे और दीन की तब्लीग भी करते।एक दिन आपको ख्याल आया कि महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में हाजिरी दे आऊँ।जब आप उनकी बारगाह में पहुंचे तो मज़ार के सामने खड़े होकर

फ़ातिहा पढ़ने लगे इतने में देखा कि औरतो का एक ग्रुप आया और वो अक़ीदत के साथ ढोल बजा रही थी और अपनी जुबान में कुछ गा भी रही थी।जब आपने ये देखा तो मन मे सोचा कि ये तो शरीयत के खिलाफ है और आखिर क्यों महबूबे इलाही इन्हें रोकते नही है मन मे ये बात सोचकर वो वहां से चले आये।

हज का सफर और प्यारे आक़ा की नाराज़गी

आप हज करने गए ।हज अदा करने के बाद मन मे ख्याल आया कि अब मदीना मुनव्वरा की हाजिरी दे आऊँ उसी रात को ख़्वाब देखा कि एक नूरानी चेहरे वाले बुजुर्ग आपको मदीना आने से रोक रहे है सुबह हुई तो आपने अपने खेमे में रहने वाले एक बुजुर्ग से रात का ख्वाब बताया तो उन्होंने कहा तुम्हे हुज़ूर पाक सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम नही आने दे रहे हैं।इतना सुनते ही आप ज़ोर ज़ोर से रोने लगे और सारी रात रोते रहे अचानक से आंख लगी तो रसुल ए खुदा का दीदार हुआ आपने पूछा कि या रहमतुललिल आलमीन मुझसे क्या खता हो गई है कि आप मुझे अपने दर पर नही आने दे रहे है प्यारे आक़ा ने जवाब दिया मूसा सुनो तुमसे मेरी गुस्ताख़ी नही बल्कि मेरे लाडले नवासे महबूबे इलाही की गुस्ताखी हुई है

जाओ पहले उन्हें खुश करो फिर यहां आना इतना सुनते ही आप फौरन वहां से हिन्द के लिए रवाना हुए।

महबूबे इलाही की अता से मज़्जूब

जैसे ही आप दिल्ली आए तो सीधे महबूबे इलाही की बारगाह में हाजिर हुए आस्ताने पर 7 चक्कर लगाए इतने में महबूबे इलाही की बारगाह से एक रोशनी नमूदार हुई जिसकी तजल्ली पड़ते ही आप बेहोश हो गए जब होश आया तो आपने सारे कपड़े फाड़ लिए और लाल रंग का लिबास और चूड़ियां पहन ली और फिर ज़िंदगी भर आप इसी हुलिए में रहे।आपके शागिर्द कहते हुज़ूर ये क्या हो गया है।आपने कहा प्यारे इसी रंग में वो तजल्ली मिली थी इसीलिए अब सारी जिंदगी इसी रूप में रहना है।

शरीयत और सुर्ख रंग

मेने पहले भी बता दिया है कि मज़्जूब पर शरीयत की पाबन्दी नही होती।सुर्ख रंग के ताल्लुक स कुछ बातें जो हमे जानना बहुत ज़रूरी है।

सबसे पहले ये जान लीजिए कि सुर्ख रंग हराम तो बिल्कुल नही है हां मकरूह जरूर है। अक्सर एतराज़ करने वाले

बुखारी शरीफ की हदीस पेश करते हैं कि देखो रसुल ने सुर्ख रंग मना किया है।तो आओ अब हम दूसरी तरफ आते हैं

"हिलाल बिन आमिर रजिअल्लाहू अन्हु अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम को मीना के मक़ाम पर सुर्ख रंग के दो चादर हाथ मे लिए देखे और उस वक़्त आप खुत्बा दे रहे थे।

(सुनन अबू दाऊद)

इमाम बहाकी अलैहिर्रहमा बयान करते हैं कि ईद के दिन आप सुर्ख कपड़ा पहनते थे।

हम सब अक्सर सुनते रहते हैं कि एक बार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम मस्जिद ए नबवी में खुत्बा दे रहे थे और आपके नवासे सैयदना मौला इमाम हसन रजिअल्लाहू तआला अन्हु और सैयदना मौला इमाम हुसैन रजिअल्लाहू तआला अन्हु वहाँ आये तो आपने खुत्बा छोड़कर उन्हें उठाया दरसअल उस मौके पर भी दोनो शहज़ादो ने सुर्ख रंग के कपड़े ही पहने थे।

वही सहाबा फरमाते हैं कि गहरा सुर्ख रंग मकरूह है।हज़रत इब्ने अब्बास रजिअल्लाहू तआला अन्हू फरमाते हैं कि ज़ीनत

के लिए अगर सुर्ख कपड़ा पहना जाए तो नाजायज़ है।हज़रत इमाम जाफ़रानी रहमतुल्लाह अलैह और अल्लामा अलाउद्दीन हनफी रहमतुअल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मर्दो के लिए मकरूह है।मुनतखबुत फतावा में भी इसे हराम नही कहा गया है बल्कि इसे मकरूह कहा गया है।

आपकी ज़िंदगी दरवेशो के मानिंद थी।हर वक़्त यादे इलाही में मशगूल रहते ज़िक्र ए इलाही से आप की सारी जिंदगी गुजर गई आपने 10 रजब 853 हिजरी को इस दुनिया ए फानी को अलविदा कहा।

शेख़ अहमद मग़रबी सरखेजी खतू अलैहिर्रहमा

विलादत,नाम, नसब

आपकी विलादत 738 हिजरी को दिल्ली में हुई थी।आपके वालिद का नाम मोहम्मद इख्तियारुद्दीन था।जो कि तुग़लक़ खानदान से थे यानी आप तुगलकी अफगानी पठान थे।

नाम

आपके दरबार मे आपका जो नाम है वो कुछ यूं है

"सिराजुल औलिया हज़रत नसीरुद्दीन शेख़ अहमद गंजगीर गंजबख्श मगरबी सरखेजी खतू रहमतुल्लाह अलैह"

सिराजुल औलिया

सिराज के मायने दिया और रोशनी के हें।आप वाकई में दीन की रोशनी और दिया है आपसे कई वलियों/सुल्तानों ने फेज़ लिया है इसीलिए आपको सिराजुल औलिया कहा जाता है।

नसीरुद्दीन

नसीर के मायने हैं मददगार इसकी जमा(बहुवचन)अंसार आता है।क़ुरान करीम में नसीर लफ्ज़ 11 मर्तबा और नसीरा लफ्ज़ 13 मर्तबा आया है।आपने दीन की बहुत मदद की और गुजरात के इस्लाम का झंडा बुलंद किया।

अहमद

ये हमारे नबी करीम का आसमानी नाम है।हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जब अपने वक़्त में तबलीग कर रहे थे तो अपनी उम्मत को बताते थे कि मेरे बाद जो नबी आएंगे उनका नाम अहमद होगा और आक़ा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने भी फरमा दिया है की ज़मीन पर मेरा नाम मोहम्मद है और आसमान पर अहमद।बाद में अहले ईमान ने बरक़त के लिए अपने नाम के शुरू और आखिर में मुहम्मद और अहमद लगाना शुरु कर दिया जो आजतक चल रहा है।वैसे आपका नाम अहमद आपके पीरो मुर्शिद ने रखा था।

गंजगीर

गंज के मायने है खज़ाना और गीर कहते हैं किसी चीज़ को पकड़ने वाला।तो गंजगीर का मायना हुआ ख़ज़ाने को पकड़ने

वाला।आपके पास मुर्शिद व बुजुर्गों की दुआ से बेशुमार अताई खज़ाना था।

गंजबख्श

असल मे आपकी खानकाह में बहुत सारा लंगर लुटाया जाता था जहां गरीब मजदूर हर वक़्त पेट भरके खाना खाते।तारीख में यहाँ तक मौजूद है कि गरीब तो गरीब सुल्तान और उसका लश्कर भी कई कई मर्तबा आपकी खानकाह में ही खाना खाता था जिसके बाद से लोगो ने आपको गंजबख्श कहना शुरू कर दिया।पूरे साल में एक लाख पच्चीस हजार चांदी के सिकके खानकाह के लंगर के पीछे खर्चा होता था जो कि उस दौर में बहुत बड़ी रकम होती थी।

सरखेजी

सरखेज अहमदाबाद में एक जगह का नाम है जहां पर आपका आस्ताना है इसीलिए आपको सरखेजी भी कहा जाता है

जैसे ख्वाजा गरीब नवाज अजमेरी,सैयदना साबिर कलियरी,सैयद शमशुद्दीन पानीपती, क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती,शैखुल आलम रूदौलवी,आला हजरत फ़ाज़िले

बरेलवी,शाह मुहद्दिस अब्दुल हक़ देहलवी, ख्वाज़ा गौस मोहम्मद ग्वालियरी,बाबा मखदूम महायमी, रहमतुल्लाह अलैह ठीक उसी तरह आपके आस्ताने की वजह से आपका नाम भी सरखेजी पड़ा।

मगरबी

ये आपका सिलसिला है यानी जिस सिलसिला में आप बैत थे ये वो सिलसिला है जिसके बानी हज़रत अल गौस अबू मदयन मगरबी रहमतुल्लाह अलैह हैं।उस दौर में अरब के लोग स्पेन,मोरक्को,लीबिया,अल्जीरिया और इनके इर्द गिर्द इलाको को मगरबी कहते थे और अल गौस हज़रत अबू मदयन रहमतुल्लाह अलैह की विलादत स्पेन में हुई थी इसीलिए ये सिलसिला मगरबी कहलाता है ये नया सिलसिला नही है बल्कि उत्तरी अफ्रीका में 80%लोग इसी सिलसिले से मुरीद हें।

आपके मुर्शिद

अगर आपके मक़ाम और मर्तबे को समझना है तो आपके मुर्शिद की हालाते ज़िंदगी पर रोशनी डालनी जरूरी हो जाती है।आपके मुर्शिद का नाम बाबा इस्हाक मगरबी रहमतुल्लाह अलैह था जो तसव्वुफ़ के आला दर्जे पर फ़ायज़ थे।उनके मुर्शिद का नाम ख्वाज़ा बुजुर्ग मगरबी रहमतुल्लाह अलैह था

वो अपने मुर्शिद से बे पनाह मोहब्बत करते थे।मुर्शिद के इंतेक़ाल के बाद आप बहुत रोये तीन दिन उनकी क़ब्र के पास बैठे रहे बस हर वक़्त रोते रहते फिर तीसरे दिन उन्होंने ख्वाब में आकर आपको बशारत दी और कहा सुनो इस्हाक तुम अब हिन्द चले जाओ और वहां जाकर दीन की तबलीग करो और अपने फेज़ को एक अल्लाह का महबूब बन्दा है उसके सुपुर्द कर दो।मुर्शिद का इशारा पाकर आप हिन्द की और रवाना हुए।

आपके मुर्शिद की हिन्द आमद

आप सबसे पहले अजमेर शरीफ गए जहां अताए रसूल हिन्दल वली ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन संजरी चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में हाजिर हुए और चिल्ला कशी की।जब आपका चिल्ला क़ामयब हुआ तो आपको आलम के सारे औलिया ने मुबारकबाद दी जहां आपके मुर्शिद भी थे उन्होंने कहा इस्हाक अब तुम सरखेज की तरफ़ जाओ वही तुम्हारी मन्ज़िल है आपका मुर्शिद का हुक्म पाकर सरखेजी के लिए निकल पड़े।

आपके मुर्शिद की सरखेज आमद

आप सरखेज के लिए निकले रास्ते मे नागौर से होते हुए सरखेज पहुँच गये।एक दरख्त के किनारे बैठ गए वहीं पर बैठकर इबादत व रियाजत किया करते थे।एक दिन आप उसी दरख्त के साये में बैठे हुए थे तभी महेश नाम का एक शख्स आया उसने कहा बाबा मुझे दुआ दे कि में औलाद वाला हो जाऊं।आपने कहा जा अल्लाह तुझे बेटा अता करेगा लेकिन एक शर्त है तुझे अगर मंजूर हो तो में दुआ करूं वरना रहने दो।महेश ने कहा बाबा आप शर्त बताये मुझे मंजूर है।आपने कहा अल्लाह तुम्हे 5 बेटे देगा और तुम सबसे बड़ा बेटा मेरे हवाले कर देना और चार अपने पास रख लेना उसने हामी भर ली और घर चला गया फिर आप खुरासान चले गए।उधर अल्लाह ने महेश को 5 बेटे अता कर दिए।जब आप 5 साल बाद फिर उसी दरख्त के पास आए तो वो दरख्त जो सूख गया था फिर से हरा भरा हो गया आपकी ये करामत देखकर हर तरफ आपका चर्चा हो गया था।आपकी आमद की खबर सुनकर महेश भी आपके पास आया और उसने बताया कि उसके यहां 5 बेटे अल्लाह ने दिये हैं आपने कहा तो अब मेरा वायदा पूरा कर दे इतना सुनते ही वो आपको अपने घर ले गया

4 बेटो को आपके सामने लिटा दिया और नोकर के बेटे को लाकर आपको दिया की ये लीजिये अपना बेटा।आपने जैसे ही उसे देखा फौरन कहा नही ये मेरा बेटा नही वो कहने लगा नही यही आपका बेटा है जब बहुत देर तक फैसला न हो सका तो उसने कहा बाबा आप खुद अपने बेटे को बुला लो।आपने जैसे ही कहा बेटे कहाँ छिपे हो वो लड़का अंदर से निकलकर आया और क़दमो में गिर गया आपने इसे कलमा पढ़ाया।और अपने साथ लेकर सरखेज चले गए।सरखेज में उसकी तालीम और तरबियत खुद करने लगे उसे अरबी फारसी फ़िक़्ह की तालीम दी क़ुरआन करीम हिफ़्ज़ कराया।उसके बाद जब उस लड़के की उम्र 25 साल हुई तो उसका इंतेक़ाल हो गया जिसका आप को बहुत जबरदस्त सदमा लगा।आप बहुत रोये दिन रात रोते ही रहते अल्लाह को आपके हाल पर रहम आया और अगले दिन आपको ख्वाब में बशारत मिली कि इस्हाक तुम रोते क्यों हो अल्लाह ने तुम्हारी किस्मत में इससे भी अफ़ज़ल बेटा लिखा है जो आगे चलकर तुम्हारे सिलसिला को चलाएगा।और तुमहारी विरासत का वारिस होगा ख्वाब में आपको उस नोजवान का चेहरा और हुलिया सब बता दिया गया था।सुबह हुई तो आपने अपने मुरीद मौलाना सदरुद्दीन से

कहा सुनो ऐसे ऐसे शक्ल और हुलिया का अगर कोई लड़का तुम्हे दिखे तो फौरन यहाँ ले आना वो हमारा बेटा है।

तुगलक खानदान में आपकी विलादत

उधर तुगलक खानदान के अज़ीम फर्द अख्तियारुद्दीन के घर आपकी विलादत हुई आपका नाम नसीरुद्दीन रखा गया।जब आप 4 साल के थे तो एक दिन आपकी दाया आपको घुमाने के लिए बाहर ले गयी।जब आप उसके साथ बाहर खेल रहे थे तभी अचानक से इतनी तेज से काली आंधी आई कि वो उड़ कर अलग जगह चली गई।हर तरफ अंधेरा ही अंधेरा था।जब वो उठी तो खुद को अलग पाया अब लौटकर दरबार जाने की हिम्मत नही हो रही थी वो एक बस्ती में थी जहाँ कुछ खेमें नज़र आये तो मालूम हुआ कि ये खेमे कल डिडवाना के लिए रवाना होंगे।

डिडवाना

दरसल इस क़बीले के सदर का नाम दीन दीवाना था जिसके नाम पर इसका नाम दीन दीवाना पड़ा था।उसके बाद बदलते हुए दीदवाना हुआ और फिर बाद में डिडवाना हो गया ये राजस्थान के क़स्बा नागौर का एक सूबा है।फिर आप उसी काफिले के साथ चले आये।

नज़ीब नसास और मौलाना सदरुद्दीन

नज़ीब नसास डिडवाना के बहुत ही शरीफ और दौलतमंद शख्श थे अल्लाह ने इन्हें औलाद नही दी थीं। जब आपको क़ाफ़िला वालो के साथ देखा तो खरीद लिया ओर बहुत खुश हुए और उसी खुशी के मौके पर सरखेजी के बहुत बड़े आलिम और बाबा इस्हाक मगरबी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद मौलाना सदरुद्दीन को तक़रीर करने के लिए बुलाया।जब वो आये उन्होंने बयान किया प्रोग्राम खत्म हुआ तो नज़ीब नसास ने उस लड़के को आपके सामने लाकर रख दिया और कहा मौलाना साहब यही वो जिगर का टुकड़ा है जिसकी बदौलत आज जश्न का माहौल मनाया गया।उन्होंने जैसे ही उस बच्चे को देखा फौरन कहा नज़ीब ये तेरा बच्चा नही है ये तो बाबा इस्हाक का बेटा है इसके बाद उन्होंने पूरा वाकिया बयान किया जिस पर नजीब नसास ने कहा ठीक है आप इसे ले जाइए इसके बाद मौलाना सदरदुद्दीन आपको लेकर सरखेज आ गए।

सरखेज में आपकी आमद

आप 4 साल के थे तो सरखेज पहुंचे आपको देखते ही मुर्शिद ने कहा आओ अहमद में कबसे तुम्हारे इंतज़ार में हूँ तभी से

आपका नाम नसीरुद्दीन के साथ अहमद हो गया और इसी नाम से मशहूर हुए।1342 हिजरी में जब आप 5 साल के थे आपकी तालीम और तरबियत शुरु हुईं।आपने अरबी/फारसी/हिदाया/हदीस/फ़िक़्ह की तालीम उन्ही से सीखी।

12 साल की उम्र में दिल्ली आमद

जब आपकी उम्र 12 साल थी तो मुर्शिद के साथ दिल्ली की खान जहान मस्जिद आये दरसल इस मस्जिद के लंगर की जिम्मेदारी आपके पीरो मुर्शिद बाबा इस्हाक मगरबी रहमतुल्लाह अलैह पर थी। इसीलिए आपका इस मस्जिद से वास्ता रहा है।जब आप दिल्ली में तशरीफ़ लाये तो देखा कि मस्जिद के सामने बहुत शोर शराबा है लोग इधर उधर भाग रहे हैं आपने मुर्शिद से पूछा कि आखिर ये क्या माज़रा है-?मुर्शिद ने जवाब दिया कि आज यहाँ मखदूम जलालउद्दीन जहांनीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह आये हुए हैं लोग उन्ही की ज़ियारत के लिए जा रहे हैं मुर्शिद ने कहा अहमद क्या तुम भी उनसे मिलना चाहते हो आपने फ़रमाया की नही हुज़ूर मेरे लिए तो आप ही सबकुछ है ये जवाब सुनकर वो बहुत खुश हुए

और उन्होंने दुआ देते हुए कहा अहमद एक दिन तुम्हारे पास सुल्तान,उमरा,क़ुतुब फेज़ लेने के लिए आएंगे।

मुर्शिद का इंतेक़ाल

शाबान के महीने में 661 हिजरी में आपके मुर्शिद का विसाल हो गया।उस वक़्त आपकी उम्र 43 साल थी आपको बहुत रन्ज हुआ आपने खुद को एक कमरे में बंद कर लिया शाबान और रमज़ान दो महीने आप उसी क़मरे में रहे ईद के दिन एक पीर भाई ने दरवाजा तोड़कर आपको बाहर निकाला आप बहुत दुबले पतले हो गए थे दो लोगो के टेक लगाने के बाद चलते थे क्योंकि आपने 2 महीने में एक बूंद पानी तक नही पिया था।उसके बाद से आपकी हालत मज़्ज़ूबो वाली हो गई हर वक़्त आलमे इस्तेग्राक में रहते वज़्द का आलम रहता।आपने कई चिल्ले और मुराकबे किये हैं।

हज का इरादा और समन्दर में करामत

1390 में आपने हज का इरादा किया।आप नागौर से खतू पहुंचे वहां के हाकिम को पता चला तो वो आपको रोकना चाहता था ये जानकर आप फौरन वहां से पाक पटन चले गए जहां के राजा ने आपकी बहुत खिदमत की उसके बाद वहां का जहाज जा चुका था फिर उसने आपको फौरन माहिम

भिजवाया।जहां आपको एक आखिरी जहाज में सीट मिली।जहाज़ में आप बैठ गए जहाज बीच समंदर में पहुचां।जोहर की नमाज़ का वक़्त हुआ आप सबसे ऊपर चले गए और वजू करने लगे अचानक पैर धोते वक़्त आपका पैर फिसल गया और आप जाकर समंदर में गिर गए लेकिन हैरत की बात ये थी समंदर का पानी आपके कन्धे तक था।जहाज के सैनिक ने आपको रस्सा के सहारे ऊपर जहाज पर खींचा हर कोई हैरान था की आखिर ये क्या है।आपने जहाज़ में अपने साथियों से कहा जैसे ही में गिरा मेने फौरन या हफीजु,या हाफ़िज़ू, या वक़ीलु,या रकीबू का विरद किया एक पत्थर आकर मेरे नीचे आ गया और में उसी पे पैर रखकर खड़ा हो गया।

मक्का आमद

आप मक्का मुअज्जमा पहुँचे हज अदा किया और आपने वहां बयान भी किया आपकी फारसी और अरबी सुनकर लोग आपके दीवाने हो गए।उसके बाद आप मदीना की जानिब रवाना हुए।

मदीना आमद और रसूल के महमान बने

हज अदा करने के बाद आप मदीना मुन्वरा की तरफ निकल पड़े आप उस वक़्त बुढ़ापे के जुमरे ने दाख़िल हो चुके थे इसीलिए आप ऊंठ पर बैठकर मदीना जा रहे थे जैसे ही आप मदीना की हद में पहुँचे फ़ौरन ऊँटनी के ऊपर से छलांग लगा दी।और या रसूलल्लाह या रसूलल्लाह कहते हुए रोज़े की तरफ आशिको वी तरह दौड़ पड़े आपने हाज़िरी दी और मस्जिद ए नबवी में क़याम किया जैसे ही मस्जिद ए नबवी में दाखिल हुए आपने कहा "या रसूलल्लाह हम आपके महमान हैं" यर कहकर आप अंदर गए और फिर आपने इबादत शुरू कर दी।जब आपके हमराहियों में शेख़ ताजुद्दीन और दिल्ली मस्जिद के इमाम को भूख लगी तो उन्होंने आपसे दरयाफ्त किया आपने फ़रमाया नही हम रसूल के महमान है इसके बाद आप फिर इबादत में जुट गए और वो दोनों शख्स बाहर खाना खाने की गरज से चले गए।जब रात हई तो दरवाज़े पर एक बुजुर्ग आये उन्होंने कहा रसूल का महमान कौन है-?आप चुप रहे आपने सोचा किसी दूसरे को बुला रहै हैं फिर जब तीसरी बार उन बुजुर्ग ने वही जुमला दोहराया अब आपको यकीन हो गया था कि वो आपको ही कह रहे हैं आप उनके

पास गए और पूछा तो उन्होंने कहा ये लो खजूरे इसे रसूल ने आपके लिये भेजी है आपने उन खजूरों को खाया और फरमाते हैं कि ऐसा ज़ायक़ा मेने अपनी ज़िंदगी मे नही देखा था फिर अगले दिन जब आप हिन्द के लिये आने लगे तो उन्ही बुजुर्ग ने एक अमामा पेश करते हुए कहा ये रसूल ए खुदा की तरफ से तुम्हे अता हुआ है आप उस मुबारक अमामे को लेकर मदीना मुनव्वरा से भीगी आंखों के साथ रुखसत हुए।

मखदूम जहाँनीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह से मुलाकात

जब आपकी उम्र 22 साल थी तो आपके चर्चे सुनकर मखदूम जलालुद्दीन जहाँनीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलेह आपसे मिलने आये।आपको देखते ही गले लगा लिया और कान में जाकर तीन मर्तबा कहा अहमद तुमसे दौलत की खुशबू आती है और अल्लाह तुम्हे बहुत बड़ा मर्तबा अता करने वाला है और मर्तबा पाकर हमको भूल मत जाना आप उनके क़दमो में गिर गए और रोने लगे उन्होंने फिर आपको उठाकर गले लगाया और कहा तुम्हारा खज़ाना कभी खाली नही होगा।

बाजारों में नंगे पैर

आप अक्सर बाजारो में नंगे पैर ही चलते थे।एक बार एक मुरीद ने आपसे इसका राज पूछा तो आपने फ़रमाया की जो आदमी नंगे पैर और नंगे सर रहता है वो अल्लाह के बहुत ही क़रीब होता है।

(नोट--) नंगे सर रहना सिर्फ उनके लिए जायज और दुरुस्त है जो अरबाबे हाल होते हैं वज्द की केफीयत में रहते है जिनपर शरीयत के अहकाम लागू नही होते जबकि आम इंसान अगर जानबूझकर ऐसा करता है तो गुनहगार होगा)

तैमूर का हमला और आपकी करामत

जब आप दिल्ली में ही थे तभी 801 हिजरी में दिल्ली पर तैमूर ने हमला कर दिया।तुगलक वंश के सारे लोगो को गिरफ्तार किया गया उनमे आप भी थे।उसी ज़माने में सूखा भी बहुत जबरदस्त पड़ा था क़ैद में क़ैदी भूख और प्यास के मारे मर रहे थे लेकिन आपके कमरे में आप आपके 40 साथी आराम से रह रहे थे तो एक दिन सिपाही ने देखा कि आपको रोज़ ग़ैब से 40 रोटी आती है और सबमे एक एक बांट देते हैं और वो रोटी खाने के बाद किसी को 24 घण्टे भूख भी नही लगती थी जब ये बात तैमूर तक पहुंची तो उसने फोरन आपको आजाद करने की बात कही दरसअल उस ज़माने में तैमूर और मुगल

बादशाह औलिया अल्लाह की ताज़ीम करते थे सिवाय जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर के हर बादशाह ने औलिया की ताज़ीम की है।

तैमूर ने आपको बुलवाया और माफी मांगने लगा आपने कहा ये सब तो हमारी किस्मत में लिखा था उसने कहा इन्हें आजाद करो आपने कहा मेरे साथ मेरे साथियों को भी आजाद करो तैमूर ने कहा जो ये कहते है वो किया जाए इसके बाद से वो आपका दीवाना हो गया उसने कहा हुज़ूर आप हमारे साथ समरकन्द चले आप समरकन्द गए और वहां जाकर अरबी और फारसी जुबान में लोगो से ऐसे अंदाज़ में गुफ्तगू की कि वो हैरान हो गए आपके इल्म की दाद देने पर मजबूर हुए।

समरकन्द से सरखेज आमद

तैमूर के साथ कुछ अरसा रहने के बाद आप सरखेज आ गए यही रहकर खानकाह/मस्जिद बनाई और दीन की तबलीग शुरू की।उस वक़्त अहमदाबाद का सुल्तान अहमद था जो मुजफ्फर शाह का पौता था मुजफ्फर शाह भी आपसे बहुत अक़ीदत रखते थे।

हज़रत खिज्र अलैहिस्सलाम और सुल्तान अहमद

एक दिन सुल्तान अहमद आपके हुजरे में आया और कहने लगा मुझे हज़रत खिज्र अलैहिस्सलाम को देखना है आपने फ़रमाया जाओ पहले चिल्लो काटो उसने 120 दिन का चिल्ला काटा तो आपके पास आया और कहने लगा मुझे हज़रत खिज्र अलैहिस्सलाम से मिलना है आपने कहा रुको वो आ रहे है कुछ देर में एक नूरानी चेहरे वाले शख्स अंदर दाखिल हुए जो हज़रत खिज्र अलैहिस्सलाम थे आपने उनसे बातचीत की।

अहमदाबाद

हज़रत खिज्र अलैहिस्सलाम ने कहा तुम साबरमती के पास एक शहर बसाओ उसका नाम अहमदाबाद रखना लेकिन उसके लिए शर्त है कि 4 अहमद वहां रहने चाहिए फिर जब 4 अहमद इकट्ठा हुए तो सुल्तान अहमद ने 26 फरवरी 1411 को **एक शहर**

बसाया जिसका नाम अहमदाबाद रखा गया जो आज गुजरात की राजधानी भी है।

4 अहमद जिनके नाम पर अहमदाबाद पड़ा

1--शेख़ अहमर सरखजी खतू राहमतुलल्लाह अलैह

2--सैयदुस सूफिया क़ाज़ी अहमद अलैहिर्रहमा

3--ताजुल औलिया मोहम्मद अहमद अलैहिर्रहमा

4--सुल्तान अहमद हुसैन अलैहिरहमा

हिदाया शरीफ आपको जुबानी आती थी।आपका मर्तबा और शान निराली है।हज़रत सैयद शाह बुरहानुद्दीन कुतब ए आलम और सैयद शाह सिराजुद्दीन शाहे आलम ने भी आपसे फेज़ लिया है।आपकी खानकाह से कभी क़ोई भूखा नही आया न कोई सवाली खाली हाथ आया आप अक्सर कहा करते थे माँगने वाले का किरदार मत देखा करो बल्कि ये देखा करो कि वो तुम्हारे दर पर आया है और यहां से खाली हाथ न जाने पाए।आपने 14 शव्वाल 849 हिजरी को इस दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया।

सैयद मीराँ अली दातार हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह

"जो अल्लाह की राह में क़त्ल(शहीद) कर दिए जाएं तुम उन्हें मुर्दा सोचो भी न वो अपनी क़ब्रो में जिंदा है और अल्लाह से उन्हें रिज़्क़ मिलता है तुम्हे उनकी जिंदगी का शऊर नही है"

(अल-क़ुरआन)

आपकी विलादत

28 रमज़ान 879 हिजरी को आपकी विलादत उन्नावा शहर में हुई।आपके वालिद का नाम सैयद दोस्त मोहम्मद था।

नसब

यूं तो आपके नाम से पहले सैयद लिखा होने की वजह से अहले इल्म इस बात को समझ जाते हैं कि आप सादात घराने से हैं आप हज़रत इमाम हसन रजिअल्लाहू अन्हू की औलाद में से हैं।इस तरह से आपके नसब की निस्बत मौलाए क़ायनात

और सैयदा ए क़ायनात व सरवरे क़ायनात से है जिसकी मिसाल इस ज़माने में नही मिलेगी।

सैयद क्या है--?

आमतौर पर इसमें उलेमा का इख़्तिलाफ़ रहा है कुछ उलेमा सिर्फ फ़ातमी शहज़ादों को ही सैयद कहते हैं और तस्लीम करते हैं लेकिन बड़े बड़े फुकहा व सूफिया ने ये वाजेह कर दिया है कि बनू हाशिम का हर फर्द सैयद के ज़ुमरे मे आता है मिसाल के तौर पर कुछ मशहूर हस्तियों के नाम दे रहा हूँ जो फ़ातमी सादात नही है लेकिन उन्हें औलिया अल्लाह ने सादात कहा है

1--सैयदुश शोहदा फिल हिन्द सैयद सालार मसऊद अल्वी ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा

2--मख्दूम उल मलिक सैयद शेख़ सरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी हाश्मी बिहारी रहमतुल्लाह अलैह

3--सैयद साहू सालार अल्वी ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा

4--सैयद शमसुद्दीन तुर्क अल्वी पानीपती रहमतुल्लाह अलैह

5--सैयद शाह वजीहुद्दीन अल्वी सत्तारी गुजराती रहमतुल्लाह अलैह

6--सैयद शाह शुएबुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह बरावां शरीफ़

ये मेने चन्द उन हस्तियो का ज़िक्र किया है जिन्हें शायद ही कोई न जानता हो ये इमाम मुहम्मद बिन हनफिया की औलाद में से हैं यानी मौलाए क़ायनात की औलाद है।

इसी तरह से सैयद अब्बास अलमबरदार हाशमी रजिअल्लाहो अन्हू जो यकीनन गैर फ़ातमी सादातो में सबसे बड़ा मक़ाम रखते हैं इसलिए यहाँ से ये तो पता चल गया कि बनू हाशिम का हर फर्द सैयद है अब फिर भी कोई अगर बहस करता है तो ये उसका ईमान व अक़ीदह है हमारा नही।

वही अब दूसरी तरफ देखते हैं तो पता चलता है कि क़ुरआन क़रीम में सैयद खाविंद को भी कहा गया है और रसूल ए आज़म ने साद इब्ने मआस को अंसार का सैयद कहा और उमर इब्ने जमूह को बनु सलेम का सैयद कहा है आपने फ़रमाया की मुनाफिक कभी सैयद नही होता क़ुरआन क़रीम

के अंदर हज़रत यहया अलैहिस्सलाम को सैयद कहा गया है तो इस तरह से ये जानना बहुत जरुरी था की सैयद क्या है।

मीराँ

ये दरसअल फारसी जुबान का लफ्ज़ है जो मीर से बना है यानी अमीर का अ नही पढ़ा जाता है लेकिन इसके मायने वही हैं अब मीर के मायने है सरदार और मीराँ यानी सरदारों का सरदार है और आप के कारनामें को देखकर ही दुनिया आप को मीराँ कहती है।

दातार

दाता और दातार दोनो लफ़्ज़ों का मायना एक ही है अब लोगो का एतराज़ इस पर होता है कि दाता तो सिर्फ अल्लाह को कहा जाता है तो उन एतराज़ करने वाले को ये जानना जरूरी है क़ुरआन क़रीम में और भी बहुत से नाम ऐसे हैं जो अल्लाह के लिए भी है और बन्दे के लिए यानी की एक ही नाम क़ुरआन में अल्लाह के लिए भी और बन्दे के लिए इस्तेमाल हुए हैं।

मिसाल के तौर पर क़ुरआन मजीद में लफ्ज़ अली का इस्तेमाल रब के लिए हुआ है और ये लफ़्ज़ 8 मर्तबा आया है।जबकि अली नाम आम इंसानो का भी है लिहाज़ा हम किसी

को अगर उसके लफ्ज़ या ख़िताब के साथ पुकारते है या याद करते है तो इसका ये मतलब हरग़िज़ न लिया जाए कि हम उस जात को खुदा समझते हैं।

शहीद

ये लफ्ज़ क़ुरआन क़रीम में 35 मर्तबा आया है लेकिन पहले ये बात वाजेह नही थी कि जो अल्लाह की राह में क़त्ल कर दिए जाते हैं उन्हें आखिर क्या कहा जाए लेकिन मदीने के ताजदार दोनो आलम के मुख्तार हम गरीबो के सरकार बेसहारों के गमखार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इब्ने माज़ा सफा 206 लाइन 30 लफ्ज़ 16 में ये बता दिया कि जो अल्लाह की राह में क़त्ल कर दिये जाते हैं उन्हें शहीद कहा जाता है ये नाम इतना मशहूर और मर्तबे वाला हुआ कि आज भी अगर मुल्क की हिफाज़त के लिए मुल्क का सिपाही क़त्ल कर दिया जाता है तो उसे भी शहीद कहा जाता है हालांकि वो शहीद इस शहीद के मर्तबे को नही पा सकता है लेकिन यहाँ शहीद के मायने और मर्तबे की बात हो रही है बेशक सैयद मीराँ दातार हुसैन शहीद रहमतुल्लाह अलैह आज भी जिंदा है और उनकी ज़िंदगी की गवाही खुद क़ुरआन क़रीम दे रहा है।

आपका खानदान

मेने पहले ही ये वाजेह कर दिया है कि आप मौलाए क़ायनात शेरे खुदा मौला अली क़रमल्लाहु वजहुल करीम की औलाद में से हैं।आपके दादा सैयद इलमुद्दीन बुखारी अलैहिर्रहमा बुख़ारा से आकर लखनऊ में रुके।उस वक़्त शाह आलम अलैहिर्रहमा का तसव्वुफ़ में एक मक़ाम था।आपने उन्हें अपना शजरा ए नसब बताया तो उन्होंने आपको अपने पास रख लिया।फिर उन्होंने आपको सुल्तान महमूद बेगरा से कहकर सेना में नोकरी लगवा दी क्योंकि बादशाह एक तो शाह आलम अलैहिर्रहमा का आशिक था और दूसरा वो खुद चाहता था कि उसके फ़ौज में सादात,उलेमा,सूफी,फुकहा जैसी शख्सियत मौजूद रहे क्योंकि वो इन हस्तियों का मर्तबा जानता था।जब आपको फ़ौज में जगह मिली तो आप तलवार बहुत अच्छी चलाते थे जो भी आपको देखता फिदा हो जाता था।बादशाह ने आपकी बहादुरी अक्लमंदी और आला निस्बत की वजह से फ़ौज का सबसे बड़ा ओहदा देकर आपको सेनापति बना दिया।उसके बाद आपकी शादी हुई कुछ दिनों बाद एक औलाद हुई जिनका नाम सैयद दोस्त मोहम्मद रखा।आपकी शुजाअत आपके बेटे में भी थी।जब सैयद दोस्त मोहम्मद बड़े हुए तो वो भी फ़ौज के सेनापति हुए और जब उनकी शादी हुई तो उनको भी एक औलाद हुई जिनका नाम

अबु मुहम्मद था जो कि खानपुर अहमदाबाद में पैदा हुए थे।आपकी विलादत के 10 महीने बाद आपकी वालिदा आयशा बीबी का इंतेक़ाल हो गया।

बचपन की करामत

जब आप 1 साल के ही थे तो आपकी मां का इंतेक़ाल हो गया उस वक़्त आपके घर मे एक औरत रहती थी जो आपकी रखवाली करती और ख्याल रखती थी क्योंकि आप सिपहसालार के शहज़ादे थे जब आपको भूख की सिद्दत महसूस हुई तो उस औरत ने अल्लाह से कहा या अल्लाह मेरे सीने में दूध जारी कर दे ताकि में इस नूरानी शहज़ादे को दूध पिला सकूँ जैसे ही आपने उनकी सीने में मुंह लगाया तारीख़ शाहिद है कि उनके सीने से दूध जारी हो गया उसके बाद आपके वालिद साहब ने उस औरत से निकाह किया जिनका नाम दौलत बीबी था।ये आपके बचपन की ये करामत थी आप की जुबान से जो निकलता वो पूरा हो जाता।

मांडवगढ़ के राजा का जुल्म

एक दिन दरबार में सुल्तान महमूद बेगरा की हुकूमत लगी थी इतने में एक सनातन धर्म(गैर मजहब)एक शख़्स आया जब बादशाह ने उससे आने का सबब पूछा तो उसने बताया कि में

मध्यप्रदेश के किला मांडवगढ़ से आया हूँ वहां का राजा जो कि सनातन धर्म का ही मानने वाला है वो हमारे ऊपर बहुत जुल्म करता है और रोज़ अपने भगवान को बलि चढ़ाकर खुश करने के लिए रोज़ किसी न किसी को क़त्ल करवा देता है और उनके खून से भगवान को तिलक लगाकर कहता है कि हमने भगावन को खुश कर दिया है।सुल्तान ने अपने मुशीर(मशवरा देने वाला) यानी कि सैयद इलमुद्दीन साहब से इस मसले पर सलाह मांगी उन्होंने उस वक़्त अपने बेटे और सेनापति सैयद दोस्त मोहम्मद को बुलाया जो कि उस वक़्त छुट्टी पर थे।उस वक़्त वो उन्नाव के रास्ते से पहुँचे तो ये जगह उनको बहुत पसन्द आ गई।वहीँ पर उनका क़याम था जब आपको सुल्तान महमूद बेगरा का खत मिला तो आप फौरन वहाँ से रवाना हुए और 250 फौजी लेकर मांडवगढ़ के किले पर चढ़ाई कर दी लेकिन किले की मजबूती और जल्दबाज़ी से बात नही बनी।दरसअल उस वक़्त वहां के राजा के पास जादूगरों,नजूमियों, तांत्रिकों की एक फ़ौज रहती थी जिसमे एक से बढ़कर एक जादूगर थे जिससे राजा को बहुत घमण्ड था और वो ये सोचता था कि उसे कोई मार ही नही सकता है।जब सुल्तान महमूद बेगरा की फौज बार बार सिकश्त खा रही थी हर तदबीर नाकामयाब होती देखकर सब परेशान थे।

सुल्तान का ख़्वाब और मीराँ दाता का इंतिख़ाब

जब हर तरफ से वो नाउम्मीद हो गया तो एक रात सजदे में सर रखकर जोर जोर से रोने लगा रोते रोते उसकी आँख लग गई और उसे ख्वाब में किसी दरवेश का दीदार हुआ जिन्होंने उसे हुक्म दिया था कि सुनो तुम इलमुद्दीन के पौते को लेकर जाओ उन्ही के हाथ मे तुम्हारी फतह हैं जब सुबह हुई तो सुल्तान ने अपना ख्वाब सैयद इलमुद्दीन से बताया तो उन्होंने आपको बुलाने के लिए खत लिखा!

(अज़ीज़ों यहां ये ध्यान रखना जरूरी है कि सुल्तान महमूद बेगरा ने दुआ अल्लाह से माँगी थी लेकिन अल्लाह ने ख़ुद की बजाय सैयद मीराँ अली दातार शहीद रहमतुल्लाह अलैह को ही जरिया बनाया है।अब यहाँ ध्यान देना जरूरी है बेशक मेरा रब हर चीज पर क़ादिर है वो अगर चाह ले तो बिन बाप के औलाद अता कर दे बिन शादी के सीने में दूध अता कर दे लेकिन ये आलम का निज़ाम है कि अल्लाह महबूब बन्दों के ज़रिए उनके वसीले से ही अता करता है)

सैयद मीराँ अली की आमद

जब आपने सुल्तान का खत पढ़ा तो उस वक़्त आपकी शादी की बात चल रही थी माँ के पास गए ख़त पढ़कर सुनाया मां ने कहा बेटे निकाह कर लो फिर चले जाना लेकिन आपने कहा नही माँ मुझे चलना है दादा का बुलाया आया है ये कहकर आप घर से निकल गए आसमान के फ़रिश्ते वही मंज़र देख रहे थे जो कई सौ साल पहले आपके नाना के सहाबी ने अंजाम दिया था ये तसव्वुफ़ रास्ता ही कुछ ऐसा है अज़ीज़ों जहाँ इंसान सबकुछ फना करके बक़ा पा जाता है और ताक़यामत तक जिंदा रहता है।

सुल्तान के सामने हाजिरी

जब आप बादशाह के दरबार मे पहुंचे तो सुल्तान तख्त से नीचे उतर गए आपको सीने से लगाया दादा के पास गए रात भर रुके उसी रात को बहुत ही जोर का तूफान आया सबके खेमे उजड़ गए सिर्फ जिस खेमे में आप दादा पौते थे वो खेमा सलामत बचा।

सुबह हुई तो आप 125 सिपाही लेकर जिहाद के लिए निकल पड़े रास्ते मे आपने सिपाहियों को हिदायत दी कि सुनो जब नमाज़ का वक़्त आ जाए तो नमाज़ नही छोड़ना और दूसरा अल्लाह का ज़िक्र नही छोड़ना।

आपकी मांडवगढ़ में आमद

आप जब सेना समेत मांडवगढ़ पहुँचे आपने किलह का मुआयना किया जब उसके किनारे पर गए तो देखा कि नीचे पानी है लेकिन उसकी गहराई बहुत ज्यादा थी यही वजह थी कि राजा हमेशा बेख़ौफ़ रहता था लेकिन इस बार शायद वो राजा ये भूल गया था कि इस बार उसके किलह को फतह करने कोई और नही बल्कि हैदर ए कर्रार का पौता आया है सैयदुश शोहदा हज़रत इमाम हुसैन रजिअल्लाहू अन्हु का शहज़ादा आया है हज़रत अब्बास अलंबरदार का भतीजा आया है।आप जब उस पानी के पास गए तो आपने कहा ए पानी जब तूने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को रास्ता दिया तो आज मुझे भी रास्ता दे में भी इस्लाम फैलाने के लिए और जुल्म ज़ियादती को मिटाने के लिए ही जा रहा हूँ आपका ये कहना था कि पानी मे रास्ता बन गया आपने घोड़े को हुक्म दिया और 18 फिट ऊपर छलांग लगाकर अंदर दाख़िल हो गए आप के साथ सारे सिपाही भी अंदर दाखिल हुए उस वक़्त फ़ज़र का वक़्त था आपने नमाज़ ए फ़ज़र अदा की।जब आपके घोड़ो की आवाज़ सुनाई दी तो महल में भगदड़ मच गई हर तरफ अफरा तफरी मच गई।जब आप बादशाह की तरफ़ बढ़े तो

उसके बगल में एक नजूमी खड़ा था उसने कहा यही वो लड़का है जिसके हाथो से तुम्हारा खातमा होगा।जब आपने हर तरफ जालिमो को मूली गाजर की तरह काट दिया तो बादशाह ने डरकर होशियारी दिखात हुए आपके क़दमो में गिरकर माफी मांगी क़दमो में झुके झुके उसने तलवार निकाली और आपके सर पर वार कर दिया।जिससे आपके बदन से सर जाकर दूर गिरा लेकिन आपने बगैर सर के अपने मयान से तलवार निकाली और उस ज़ालिम राजा के धड़ को बीच से दो कर दिया।ये कारनामा देखकर सबके होंश उड़ गए बगैर सर के आपने जिस तरह से ये कारनामा अंजाम दिया वो तारीख़ को दोहरा रहा था।ऐसा लग रहा था कि जैसे तारीख़ आज बहराईच चली आई हो और सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह की रूहे अक़दस आपमे समा गई हो।हाज़रीन बताते हैं कि आज उस जगह पर झरना है जिसका पानी बहुत ही मीठा है और वो पानी क्यो न मीठा हो अज़ीज़ों जहाँ फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा के बेटे का खून गिरा हो वहाँ का पानी क्यों न मीठा रहे।29 मोहर्रम 898 हिजरी को आपने शहादत का जाम पिया और हमेशा के लिए जिंदा हो गए। क्योंकि क़ुरआन ख़ुद गवाही दे रहा है कि जो अल्लाह की राह में क़त्ल कर दिए जाएं उन्हें तुम मुर्दा गुमान भी न करो

बल्कि वो अपनी क़ब्रो में जिंदा है और अल्लाह से उन्हें रिज़्क़ मिलता है।इसी को ध्यान में रखते हुए दरवेश लाहौरी अल्लामा डॉक्टर इक़बाल रहमतुल्लाह अलैह फरमाते है कि

शहादत है मतलूब-मकसूद-ओ-मोमिन

ना माले ग़नीमत न किसवर कुशाई

और एक शायर ने ठीक ही कहा है कि

सर कटायें घर लुटाए अहले बैत ए मुस्तफ़ा

मियाँ हश्र तक ऐसा घराना ढूंढते रह जाओगे

वही दूसरे शायर ने कुछ यूं बयान किया है कि

तारीफ़ के मोहताज़ नहीं है आले मोहम्मद

फूलों को कभी इतर लगाया नही जाता।

बाबा मख्दूम अली माहमी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आप की विलादत 10 मुहर्रम 1372 ईस्वी को हुई।आपका पूरा नाम क़ुतुब ए कोकन ख्वाज़ा मख्दूम अली माहमी रहमतुल्लाह अलैह है।आपके वालिद का नाम शेख अहमद बिन इब्राहिम है।आपका शजरा ए नसब सहाबीए रसूल हज़रत जाफर तैयार रजिअल्लाहू अन्हू से मिलता है।

मख्दूम

मख्दूम के मायने हैं आक़ा,मौला यानी जिसकी ख़िदमत की जाए।एक दिन आपकी माँ को प्यास महसूस हुई उन्होंने पानी मांगा आप जबतक आप पानी लाते वो सो चुकी थी आप उनके सिधाने पर ही पानी का गिलास लेकर खड़े रहे।तहज्जुद के वक़्त जब मां ने आँखे खोली तो आपको सिधाने पाकर हैरान हुई कहा बेटे तुम पानी रखकर सो क्यों नही गए--?

आपने फ़रमाया माँ अगर बीच रात में आपकी आंख खुलती और पानी मांगती तो में कैसे देता में तो आपका खादिम हूँ माँ।आपकी माँ जो कि खुद वलीया थीं उन्होंने कहा नही अली तुम खादिम नही बल्कि मख्दूम हो।तहज्जुद गुजार वलीया माँ की ज़ुबान से मख्दूम का निकलना अल्लाह की बारगाह में मक़बूल हो गया उसके बाद से आपको मख्दूम कहा जाने लगा।

ख़ानदान

आपके ख़ानदान का असल पेशा तिजारत था।आप के जद्दे अमज़द कपड़े और जैतून का कारोबार करते थे।पानी के जहाज के ज़रिए तिजारत की गरज से आपके जद्दे अमज़द 699 ईस्वी में हिन्द आए।हमे ये बात नही भूलना चाहिए कि पहले के ज़माने में कारोबार के ज़रिए ही इस्लाम फैलाने के लिए बड़े बड़े मुबल्लिग आये हैं और उन्होंने हिन्द में तिजारत के साथ साथ दीन की तब्लीग भी की।आपके जद्दे अमज़द जब हिन्द आये तो यही रहने लगे और धीरे धीरे मशहूर ताजिर बन गए फिर आपके वालिद ने ख़ुदा हुसैन की बेटी से निकाह किया।खुदा हुसैन कल्याण के सुल्तान थे।आपके वालिद भी

आलिम थे।और आपके नाना खुदा हुसैन ताजिरो के बादशाह थे।

बचपन और तालीम

आपके बचपन में वालिद ने अरबी पढ़ाई कुछ दिन पढ़ने के बाद आपने क़ुरआन हिफ़्ज़ किया और भी इल्म हासिल किए आपके इल्म की शिनाख़्त यही से मिलती है कि आपने 107 से ज़्यादा किताबे लिखी हैं पर आज 19 किताबे ही लाइब्रेरी में मिलती है।

फ़क़ीह

आपक़ो फ़क़ीह का भी लक़ब दिया गया है।अज़ीज़ों यहां हमे ये समझना है कि फ़क़ीह का लक़ब क्या है।दरसअल जब इंसान क़ुरआन,हदीस,इज़मा,कयास इन चारों में क़ब्ज़ा हासिल कर लेता है यानी क़ुरआन,इज़मा,हदीस,और कयास में माहिर होता है तो उसे फ़क़ीह कहा जाता है।जो फ़क़ीह होगा वो मुफ़स्सिर भी होगा,मुहद्दिस भी होगा और एक ज़रूरी बात ये है कि फ़क़ीह होने के लिए इन चारों में महारत लाज़िम है अगर मान लो किसी बन्दे को 5000 हदीसे याद हैं तो वो

मुहद्दिस तो हो सकता है लेकिन फ़क़ीह नही।यानी आप जबरदस्त इल्म के मालिक थे।

तफ़्सीर ए क़ुरआन

आपने क़ुरआन की तफ़्सीर अरबी में लिखी है।जो आपके इल्म और रूहानियत को दिखाता है।उलेमा फ़रमाते हैं कि क़ुरआन की तफ़्सीर लिखने के लिए कम से कम 15 उलूम में महारत होना बहुत जरूरी है।

उस्ताद शेख़ इबनुल अरबी या हज़रत खिज्र अलैहिस्सलाम

आपके उस्तादो में कोई आम उस्ताद का तज़किरा नही मिलता लेकिन कुछ रिवायातो में आपके उस्तादो में जो सबसे बड़ा नाम आता है वो उस्तादुस सूफिया ताजुस सूफिया शेख़ ए अकबर हज़रत शेख़ मुहीउद्दीन इबनुल अरबी रहमतुल्लाह अलैह है।

(ज़बीरुल इंसान--मौलाना सैयद इब्राहिम मदनी, नुहजतुल अम्बिरया-- मौलाना मोहम्मद बकरा आगा,,महसिरुल किराम--हज़रत गुलाम अली आजाद की किताबों में आपका तज़किरा मिलता है।

(नोट--) हज़रत शेख़ इबनुल अरबी बहुत ही आला दर्जे पर फ़ायज वली अल्लाह थे।जो मशहूर सल्तनत ए उस्मानिया के अलम्बरदार हज़रत अरतगुल ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह के पीरो मुर्शिद हैं ये इसी सीरीज पर मिस्र की हुकूमत ने एक ड्रामा तैयार किया है जो पूरी दुनिया में पसन्द किया गया उस ड्रामे में शेख़ इबनुल अरबी के किरदार को दिखाया गया है लेकिन यहां पर हम उनके किरदार को एक ड्रामे से नही जज कर सकते है वो अल्लाह के बहुत ही महबूब वली हैं इसीलिये उन्हें शेख़ ए अकबर कहा जाता है)

उसताद हज़रत खिज्र अलैहिस्सलाम

जब आपकी उम्र 12 साल हुई तो आपने माँ से कहा में अब मुझे अरब जाने की इजाजत दे दो मुझे आला तालीम हासिल करने के लिए अरब जाना है माँ ये सुनकर गमगीन हो गई और कहने लगी बेटे तू मुझे छोड़कर कहीं मत जा अल्लाह कोई न कोई असबाब यही पैदा कर देगा।उसके बाद रात हुई तहज्जुद के वक़्त आपकी माँ उठी नमाज़ अदा की और अल्लाह की बारगाह में उठकर दुआ मांगने लगी कि या अल्लाह मेरे बेटे की तालीम के लिये कोई बंदोबस्त कर दे।फ़ज़र की नमाज़ के बाद आप समंदर के किनारे टहल रहे थे तो एक बुजुर्ग दिखे

जो सफेद रंग के कपड़े पहने हुए थे आपने उनको देखा मन उनकी तरफ खिंचा चला गया सोचा लाओ पास जाकर देखता हूँ ये कौन है-?-आप जब उन बुजुर्ग के पास गए तो फौरन उसूल ए दीन के मुताबिक सलाम किया उन्होंने जवाब दिया और कहा अली अरब जाना चाहते हो अपना नाम उनकी जुबान से सुनकर आप चोंक गए।आप ने कहा हां बाबा लेकिन आपको कैसे पता कि मेरा नाम अली है उन्होंने ने कहा सुनो बेटा तुम्हारी मन की दुआ क़बूल हुई मेरा नाम खिज़्र अलैहिस्सलाम है और आज से हम तुम्हे रोज़ पढ़ाएंगे तुम रोज़ इसी वक्त यही आ जाना।उसके बाद से आप रोज उन्ही की पास जाने लगे और पढ़ने लगे उन्ही से आपने आला तालीम हासिल की।

अज़ीजो अब यहां गौर करना है कि जिनके उस्ताद हज़रत खिज़्र अलैहिस्सलाम हो इस तालिब इल्म की बात और मक़ाम का अंदाज़ा कोई क्या लगाएगा।सूफिया फरमाते हैं कि आप पैदाइशी वली है।हज़रत खिज़्र अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने वो मर्तबा बख्शा है कि एक ही वक़्त में तमाम दरगाहो पर हाज़िर होते है ये वहीँ खिज़्र अलैहिस्सलाम हैं जिनके बारे में

सैयद मख्दूम अशरफ जहाँगीर सिमनानी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है कि मैने जितनी मर्तबा हज़रत खिज्र अलैहिस्सलाम को सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रजिअल्लाहू अन्हू के आस्ताने पर हाजिरी देते हुए देखा है किसी और वली की दरगाह पर नही।

बचपन मे बकरी का बच्चा ज़िंदा किया

आप बचपन मे बकरी के बच्चे (मेमना) के बहुत शौकीन थे।एक दिन आप घर से कहीं बाहर गए हुए थेआपके घर मे पल रहे मेमना की अचानक से मौत हो गई माँ ने नोकरानी से कहा जाओ इसे समंदर के किनारे फेंक आओ वो उसे ले जाकर फेंक आई कुछ देर बाद आप घर आये मेमना नही दिखा तो आपने पूछा नोकरानी ने बताया कि हमने उसे फेंक दिया है वो मर चुका है इतना सुनते ही आप रोने लगे और उससे कहा मुझे मेमना के पास ले चलो आपकी ज़िद के आगे उसे झुकना ही पड़ा वो आपको साथ ले गई और कहा ये देखो वो मेमना है आपने उसे देखा और उसके ऊपर हाथ फेरा और फिर कहा चलो उठो घर चलते हैं इतना कहते ही वो मरा हुआ मेमना उठ खड़ा हुआ। आपकी करामत देखकर वो नोकरानी बेहोश होकर गिर गई पूरे माहिम में आपकी विलायत की

शोहरत बचपन ही से थी लोग आपक़ो बचपन से ही बहुत इज्जत देते और मोहब्बत करते थे।

माहिम पुलिस की अक़ीदत

माहिम की पुलिस की आपसे बहुत अक़ीदत है आज भी आप के उर्स में सबसे पहली चादर और सन्दल माहिम पुलिस ही पेश करती है और जुलूस की अगुवाई माहिम पुलिस के आला अधिक़ारी करते हैं।पुलिस की इस अक़ीदत के पीछे बहुत सी रिवायतें है।

1--पहली रिवायात ये है कि कुछ लोगो का मानना है कि जिस जगह पे आज माहिम स्टेशन बना हुआ ये जगह कभी बाबा मख्दूम अली माहमी रहमतुल्लाह अलैह का घर हुआ करती थी इसीलिए आज भी माहिम पुलिस आप से इतनी अक़ीदत रखती है।

2--दूसरी रिवायत के मुताबिक जब बाबा मख्दूम अली महायमी रहमतुल्लाह अलैह का आखिरी वक्त था आपक़ो प्यास की सिद्दत हुई तो एक पुलिस वाले ने आपक़ो पानी पिलाया था जिसके बाद आपने उसे दुआ दी थी इसलिए आज

भी पुलिस आपको मोहब्बत और अक़ीदत के नज़र से देखती है।

3--तीसरी और सबसे मोतबर रिवायत जो है वो यूं है कि एक बार एक अफसर से एक कोई केस नही हल हो रहा था उसकी नोकरी जाने का खतरा मंडराने लगा तो हर तरफ थक हारकर वो आपकी बारगाह में हाजिर हुआ और दुआ माँगी चन्द दिनों में उसके सारे केस हल हो गए और वो आला ओहदे पर फ़ायज हो गया।

कहते है कि आज भी जब कोई अफसर ड्यूटी जॉइन करता है तो सबसे पहले आपके आस्ताने पर हाजिरी देता है और जहां भी पुलिस को किसी मामले में कोई परशानी होती है वो आपकी बारगाह में आती है उसके मसले

हल हो जाते है तो ये वजह है माहिम पुलिस की अक़ीदत है वैसे भी जो खुदा का हो जाता है सारी खुदाई उसकी हो जाती हैं!

बादशाहो की अक़ीदत

बादशाहों को भी आपसे बहुत अक़ीदत थी।आपके इंतेक़ाल के 250 साल बाद मुगल बादशाह औरंगजेब आलमगीर अलैहिर्रहमा के ज़रिए गुम्बद और मस्जिद बनाई गईं।आपकी बारगाह में दारा शिकोह भी हाजिरी देता था।8 जमादिस सानी 1431 ईस्वी को आपने इस दुनिया ए फानी को अलविदा कहा।आपका आस्ताना हिन्द के महाराष्ट्र के शहर माहिम में है आपके आस्ताने में उसी मेमना और नोकरानी की भी दरगाह हैं।

सैयद अमीरमाह बहराईची रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 730 हिजरी में हुई थी।आपका पूरा नाम सैयद अफ़ज़ल दीन अबु जफर अमीरमाह बहराईची है।

नसब

आपका शजरा ए नसब इमाम हुसैन रजिअल्लाहू अन्हू से होता हुआ मौलाए क़ायनात हज़रत अली करमल्लाहु वजहुल करीम से मिलता है।जिसका ज़िक्र उस दौर के नामवर औलिया अल्लाह ने अपनी किताबो में किया है।मीर सैयद मख्दूम अशरफ़ जहाँगीर सिम्नानी रहमतुल्लाह अलैह,बादशाह फ़िरोज़ शाह तुग़लक़,और शेख सरफुद्दीन यहया मनेरी अलैहिर्रहमा,सैयद अली हमदानी अलैहिर्रहमा ,गरीब यमनी अलैहिर्रहमा और भी कई नामवर शख्सियतो ने आपका ज़िक्र किया है।

बादशाह फ़िरोज़ शाह तुगलक और आपकी मुलाकात

आपका तज़किरा कुछ इसी वाकिये से भी मशहूर है क्योंकि जब बादशाह फ़िरोज़ शाह तुगलक जंग फतेह करने के बाद सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह के दर पर हाज़री देने आया तो सबसे पहले आप रहमतुल्लाह अलैह के पास आया। आप उसके साथ साथ दरगाह सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह की हाज़री के लिए जा रहे थे रास्ते मे चलते चलते बादशाह ने आप से पूछा कि सरकार ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह की कुछ क़रामते बताइए आप ने बादशाह से जवाब दिया कि एक बादशाह और एक फ़क़ीर दोनों एक साथ चल रहे हैं इससे बड़ी करामत और क्या होगी आपके जवाब से बादशाह बहुत खुश हुआ और उसने अपनी किताब तारीख़ ए फ़िरोज़ शाही में लिखा है कि "अच्छी सोहबत का अच्छा नतीज़ा निकलता है" उसके बाद आप के साथ बादशाह ने काफी वक्त गुजारा है और आपका फेज़ लिया है।

शजरा ए तरीक़त

आप के पीरो-मुर्शिद का नाम सैयद अलाउद्दीन जयपुरी रहमतुल्लाह अलैह है आपका शजरा ए तरीक़त कुछ यूं है—

सैयद अमीरमाह बहराईची अलैहिर्रहमा

सैयद अलाउद्दीन जयपुरी अलैहिर्रहमा

हज़रत सैयद कयामुद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयद अमीर कबीर कुतबुद्दीन मोहम्मद मदनी अलैहिर्रहमा

सैयदना नज़्मुद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह

सैय्यदना अम्मार यासिर अलैहिर्रहमा

सैय्यदना ख्वाजा अबू नज़ीब सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना शेख अहमद ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना अबू बकर नसाजी अलैहिर्रहमा

सैयदना अबू कासिम गुरगरनी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना अबु उस्मान मगरबी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना अबू अली कातिब अलैहिर्रहमा

सैयदना मोहम्मद अली रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना अबुल क़ासिम क़ाशीरी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना अबु अली दकाक रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना अबुल क़ासिम नसीराबादी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना हज़रत अबू बकर शिबली रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना हज़रत जुनैद बगदादी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना हज़रत सिर्री सक्ति रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मारूफ करखी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना इमाम अली मूसा रज़ा रजिअल्लाहू अन्हु

सैयदना हज़रत इमाम मूसा काज़िम रजिअल्लाहू अन्हु

सैयदना इमाम जाफ़र सादिक़ रजिअल्लाहू अन्हु

सैयदना इमाम बाकर रजिअल्लाहू अन्हु

सैयदना इमाम जैनुल आब्दीन रजिअल्लाहू अन्हु

सैयदना मौला इमाम हुसैन रजिअल्लाहू अन्हु

सैयदना मौलाए क़ायनात हज़रत अली करमल्लाहु वजहुल करीम।

मिरातुल असरार के मोअल्लिफ ने लिखा है कि आप के विसाल की तारीख़ वाजेह नही हो पाई है वही खजीनतुल अस्फिया जैसी मोतबर किताब में आपकी विसाल की तारीख 772 हिजरी बताई गई है। हाँ ये अंदाज़ा लगाया जाता है कि आप रहमतुल्लाह अलैह ने लंबी उम्र पाई आपने सुल्तान फ़िरोज़ शाह तुगलक को भी फेज़ दिया है जिसका जिक्र उन्होंने अपनी किताब में किया है।आपकी लंबी उम्र का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आपने सैयद नसीरुद्दीन महमूद रोशन चराग़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के वक़्त से लेकर सैयद मीर मख्दूम जहाँगीर अशरफ़ सिम्नानी रहमतुल्लाह अलैह के ज़माने तक आप बज़ाहिर ज़िन्दा रहे।इसका तज़किरा खुद सैयद मख्दूम अशरफ़ जहाँगीर सिम्नानी रहमतुल्लाह अलैह ने किया है जिसमे उन्होंने लिखा कि बहराईच के जो सहिउन नसब सादात खानदान थे उनमें आपका खानदान मुबारक भी है।मख्दूम अशरफ जहाँगीर सिम्नानी रहमतुल्लाह अलैह इरशाद फ़रमाते हैं कि जब में बहराईच शरीफ हाजिर हुआ तो मैने देखा कि सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह के दरबार मे हज़रत खिज्र अलैहिस्सलाम के साथ एक शख्श और थे जब मैने उन शख़्स से उनका नाम पूछा तो उन्होंने बताया कि मेरा नाम सैयद अबू

जाफ़र अमीरमाह है।वही जब बादशाह फिरोज़ शाह तुगलक के मन मे सरकार ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह की शान व अज़मत में शक था तो उसने आपसे इस मसले पर बात की आपने उस पर ऐसी नज़र डाली की वो पल भर में बेहोश हो गया और सरकार सैयद सालार ग़ाज़ी का दीवाना हो गया उसके बाद से उसने दुनिया से ताल्लुक तोड़ दिया और अपने आप को उनके सुपुर्द कर दिया।

आपका आस्ताना

"आपका मज़ार शरीफ़ बहराईच के उत्तर किनारे पर है।इसकी चारदीवारी पक्की है और चारदीवारी के द्वार पर एक छोटी से मस्जिद है आज भी आपके आस्ताने से फ्यूज़ व बरकात का सिलसिला जारी है"

(तारीख़-आईना-ए-अवध)

जिस मोहल्ले में आपका मज़ार शरीफ़ है आज उस मोहल्ले को अमीरमाह मोहल्ले के नाम से जाना जाता है आजकल अक़ीदतमन्दो की भीड़ लगी रहती है आपका उर्स मुबारक इस्लामी केलेण्डर के मुताबिक 29 ज़ीकादह को होता है सुबह

क़ुरआन ख़्वानी के बाद कुल होता है शाम को महफिले शमा होती है और अगले दिन ईद मीलादुन्नबी भी मुनक़्क़िद होती है आपका फैज़ान आज भी बरसता है जिसमे अकीदतमन्द हाजिर होते है आपकी शान बहुत ही अज़मत व आला है आपका मक़ाम समझना है तो यही समझा जाये कि आप सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह के बहुत ही करीबी थे अक्सर आप उन्हें अपनी आंखों के सामने देखते हज़रत खिज़्र अलैहिस्सलाम के साथ भी आप रहते थे आप की शान अहले तसव्वुफ़ बखूबी जानते हैं।

ख्वाजा बाकी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह

विलादत

आपकी विलादत 971 हिजरी में अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में हुई।आपकी वालिदा सादात खानदान से ताल्लुक रखती हैं यानी वो सैयदा हैं और वालिदा शेख़ हैं।दादा शेख़ सहाबुद्दीन अलैहिर्रहमा उस वक़्त के क़ुतुब थे।आपकी विलादत से पहले ही आपके दादा को बशारत मिल चुकी थी।दादा फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने मुझे ख़्वाब में बशारत दी और कहा ए सहाबुद्दीन तुम्हारे घर मे एक बच्चा होगा जो पीरे-आलम होगा।

बचपन और तालीम

5 साल की उम्र में आपने ख्वाजा साद अलैहिर्रहमा से क़ुरआन मजीद सीखना शुरू किया और 8 साल की उम्र में आप क़ुरआन पढ़ना सीख गए।उसके बाद मुल्ला सादिक़ हलवाई

अलैहिर्रहमा से आपने इल्मे दीन सीखा इल्म पढ़ने के बाद आप तसव्वुफ़ की तरफ़ बढ़ गए।आप का मन बचपन ही से तसव्वुफ़ की तरफ़ लगता था।आप उस्ताद सादिक़ अलैहिर्रहमा के साथ सेंट्रल एशिया के दौरे पर निकल पड़े।आपका बचपन ही से काल से ज्यादा हाल की तरफ़ झुकाव ज्यादा था।जब आप सेंट्रल एशिया आये तो सैकड़ो सूफिया से मिले जिससे आपके अंदर की प्यास और बढ़ गई।अब आप बेचैन रहने लगे।एक दिन आप कमरे में बैठे इबादत कर रहे थे कि अचानक से कमरा रोशन हो गया जिसकी केफियत आप पर तारी हुई आपने फिर उसके बाद से सबकुछ छोड़ दिया और मुर्शिद ए क़ामिल की तलाश में घर से निकल पड़े।

मुर्शिद की तलाश में जंगलो में सफर

अज़ीज़ों आजकल मुरीद बनना और बनाना कितना आसान हो गया पहले के ज़माने में ये बहुत मुश्किल था।जब आप मुर्शिद की तलाश में जंगलो में निकले तो आपक़ो कोई भी मज़्ज़ूब मिलते आप उनके पीछे हो जाते लेकिन कुछ दिन बाद फिर दूसरे मज़्जूब के पास चले जाते ।एक मज़्जूब के पीछे चलते-चलते आप लाहौर तक चले आये जब एक साल का अरसा

गुजर गया और उधर जब मज़्ज़ूब को ध्यान आया तो कहा जाओ यहाँ से भाग जाओ लेकिन आपने उनकी बात न मानी और फिर उनके पीछे जाने लगे तो मज़्ज़ूब ने जब आपकी मोहब्बत और इन्किसारी देखी तो शफ़क़त से समझाया और कहा बेटे तुम्हारा फेज़ हमारे पास नही है जाओ किसी दूसरे के पास चले जाओ।

कश्मीर में आमद

जब मज़्ज़ूब ने कहा तुम्हारा फेज़ यहाँ नही है फिर उसके बाद आप कश्मीर मे बाबा वली नक्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह के पास चले गए।उन्होंने आपको सिलसिला ए नक्शबंदी के उसूल से ज़िक्र क़रने का तरीका सिखाया।फिर उनका विसाल हो गया जिससे आप कश्मीर से दिल्ली आ गए जहां आपकी मुलाकात क़ुतुब ए आलम शेख़ अब्दुल अज़ीज़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह से हुई उन्होंने कहा तुम बुखारा जाओ तुम्हारा फेज़ वहीं है इसके बाद आप बुखारा की और चल पड़े।

पीरो मुर्शिद

जब आप दिल्ली से बुख़ारा जा रहे थे तो ख़्वाब मे आपको अपने पीरो मुर्शिद का दीदार हुआ और वो कह रहे थे कि

जल्दी आओ बेटे में कबसे तुम्हारे इंतज़ार में हूँ।तुम्हारा फेज़ मेरे पास है।जब आप अपने पीरो मुर्शिद ख्वाज़ा अमगंगी रहमतुल्लाह अलैह के पास आये तो उन्होंने आपको बैत किया और तीन दिन अपने पास रखकर इजाजत व ख़िलाफ़त से नवाजा और फ़रमाया कि तुम हिंदुस्तान जाओ सिलसिला ए नक्शबंदिया को फैलाओ और एक शहबाज़ तुमको ऐसा मिलेगा जिसको सारा फेज़ देकर चले आना उस शहबाज से अल्लाह बहुत बड़ा काम लेने वाला है।

हिन्द में फिर से आमद

पहले तो आप मुर्शिद की तलाश में हिन्द से बुख़ारा गए थे अब मुर्शिद के हुक्म से फिर से आप हिन्द आये और उन्ही **के** फ़रमान के मुताबिक उस शख्स की तलाश में लग गए जिसके बारे में मुर्शिद ने वसीयत की थी।एक साल **बाद** आप लाहौर आये हर तरफ आपने उस शहबाज़ को तलाशा लेकिन आपको कोई भी ऐसा शख्स दिखा नही।एक साल बाद आप लाहौर छोड़कर दिल्ली आ गए।यहाँ आपकी शोहरत फैलने लगी लेकिन आप इस चीज़ से दूर भागते थे।आपकी शान में उस्तादुल मुहद्दिसीन शाह अब्दुल हक़ देहलवी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि आप अल्लाह का भेद हैं और उसका नूर

हैं।दिल्ली में आप रुके यही 2 शादी की जिनसे 2 बेटे भी हुए।दरसअल आप को तलाश थी अपने नायब की जिसके लिए आप फिक्रमन्द रहते और लोगो से बहुत कम मिलते,नमाज़े मस्जिद में ही पढ़ते। एक दिन आप अपने मुरीदों से फरमाने लगे कि सुनो हमने तीन साल तक पीरी मुरीदी नही की बल्कि हम तो खेल करते हैं बस अल्लाह का क़रम है कि इस खेल में कभी घाटा नही हुआ।

रोजमर्रा की इबादत और वक़्त

आप की रोज़मर्रा की आदत थी कि आप इशा की नमाज़ के बाद क़ुरआन पढ़ना शुरू करते थे और तहज्जुद तक एक क़ुरआन क़रीम मुक़म्मल कर लेते उसके बाद तहज्जुद की नमाज़ अदा करते फिर 120 मर्तबा सूरह यासीन की तिलावत करते।फ़ज़्र की नमाज़ अदा करने के बाद 41 मर्तबा सूरह मुजम्मिल पढ़ते और फिर इशराक और चाशत की नमाज़ के बाद आराम करते।फिर जोहर की नमाज़ से पहले उठते और जोहर से असर तक नवाफिल पढ़ते।असर से मगरिब तक दुरूद शरीफ़ का विर्द करते।मगरिब से इशा तक मुरीदों को पढ़ाते और सबक देते।कभी कभी बाहर निकलते भी तो सिर्फ

ख्वाज़ा कुतबुद्दीन बाख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह के आस्ताने पर जाकर बेठ जाते ये आपका रोज़ का मामूल था।

(नोट--) अज़ीज़ों यहां ये ध्यान देना जरूरी है कि ख्वाज़ा कुतबुद्दीन बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह सिलसिला ए चिश्त के अज़ीम पेशवा बुजुर्ग हैं और ख्वाजा बाकी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह सिलसिला ए नक्शबंदिया के अज़ीम पेशवा और दोनों सिलसिला एक दूसरे के उसूल में उल्टे(अपोज़िट) है हां मंज़िल हर सिलसिला की एक ही है।अब जब दो अज़ीम सिलसिला के अज़ीम बुजुर्ग एक दूसरे से इतनी मोहब्बत और अदब करते हैं तो फिर आज के मुरीदों को न जाने कौन सी मारफत हासिल है कि अपने पीर के आगे दूसरे पीर को और अपने सिलसिला के आगे दूसरे सिलसिला को कुछ समझते ही नही है और न जाने कितनी बेअदबी करते रहते हैं लिहाज़ा हमे ये ज़रूर जानना चाहिए कि हर सिलसिला मौलाए क़ायनात की अता से और निस्बत से अज़ीम है और हक़ पर है हां उनके कुछ नियम एक दूसरे के उलट है लेकिन सबकी जड़ एक ही है हमे यह बात याद रखनी चाहिए

रहमदिली

एक दफा सख्त सर्दी हो रही थी आप बिस्तर पर लेटे थे तो आपने कहा लाओ नफिल पढ़ लूँ फिर आपने नफिल अदा की सर्दी बहुत तेज़ थी तो आपने सोचा कि लाओ बिस्तर पर ही बेठकर वजायफ़ पढ़ लूंगा जैसे ही आप बिस्तर पर गए कम्बल उठाया तो देखा कि एक बिल्ली सो रही है आपने खड़े होकर सारे वजायफ़ पढ़ डाले लेकिन बिल्ली को नही जगाया।ये होता है तस्सवुफ क्या आज का इंसान भी ये कर सकता है बल्कि गुस्से से अगर उसके बस में हो तो फौरन बिल्ली को क़त्ल कर डाले तो इसका मकसद ये है कि जो लोग औलिया अल्लाह की बराबरी करना चाहते हैं वो उनके क़दमो की धूल तक नही बन पाएंगे उन जैसा बनने का तो सवाल ही नही पैदा होता।

जानवरो का हिस्सा न खाना

एक बार एक लड़का आया और कहा हुज़ूर मेंरे अब्बा के पेट मे दर्द है दुआ कर दीजिए की ठीक हो जाए तकलीफ बहुत है आपने कहा बेटे तेरे अब्बा ने घोड़े का हिस्सा खा लिया है इसीलिए उन्हें दर्द हो रहा है जब वो लड़का घर आया उसने सारी बात बताई तो उसके अब्बा ने कहा हां बेटे वो सच कहते हैं कल मेने घोड़े के हिस्से के गुड़ से आधा गुड़ और थोड़ा चना

अपने लिए निकाल कर रख लिया और शाम को खा लिया था।दुबारा उन्होंने घोड़े को गुड़ और चना खिलाया जिसके बाद से उनका दर्द कम हुआ।

आजिजी-इन्किसारी

ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि जिस सूफ़ी में आजिज़ी और इन्किसारी न हो वो सूफी नही बल्कि ढोंगी है बल्कि बगैर इसके बन्दा तसव्वुफ का मज़ा पा ही नही सकता।जब आप लाहौर में थे तो उस वक़्त सूखा पड़ गया।आप एक दिन खाना खाते एक दिन रोज़ा रखते।आप घोड़े पर बैठकर सफर करते रास्ते मे कोई बूढ़ा मिलता उसे घोड़े पर बिठा देते और खुद पैदल चलने लगते।एक बार एक बुजुर्ग शख़्स पैदल चल रहे थे आपने उन्हें घोड़े पर बिठाया और खुद लगाम पकड़कर पैदल चल रहै थे कई मील जब पैदल चलने के बाद शहर आया तो उनको उतार दिया और खुद घोड़े पर बैठ गया।बुजुर्ग शख़्स पूछा ने क्या हुआ जवान थक गए क्या--?आपने फ़रमाया नही बाबा जान दरसअल इस शहर के लोग मुझे जानते हैं और अगर वो ये देखेंगे कि में पैदल हूँ और आप घोड़े पर तो मेरी इन्किसारी

के चर्च हर तरफ हो जाएंगे और में शोहरत को बिल्कुल पसंद नही करता हूँ।

वली ए क़ामिल

जब आप नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े होते तो आपके अगल बगल आपके मुरीद रहते क्योंकि आम इंसान नमाज़ के दौरान जो भी चीज़ सोचता वो आपक़ो पता चल जाती और इससे आपकी भी नमाज़ में खलल पड़ता।एक दफा एक साहब बड़ी दूर से आये उनको बहुत तेज़ सर्दी लग रही थी उन्होंने नमाज़ के दोरान सज्दे की हालत में सोचा कि काश ख्वाजा बाकी बिल्लाह अलैहिर्रहमा मुझे ओढ़ने के लिए कम्बल दे दे।इधर जैसे ही उसने सलाम फेर आपने मुरीदों से कहा इनको कम्बल दे दो।इतना सुनते ही वो हैरत में पड़ गया उसके बाद से उसने आपके बगल नमाज़ नही पढ़ी क्योंकि आप तो उन बातों/केफियतो को भी जान लेते जो इंसान मन ही में सोचता है।

आप फरमाते थे कि हमारे ज़िक्र से जज़्ब पैदा होता है जज़्ब की मदद से तमाम मक़ामात आराम से तय हो जाते हैं।जिसकी तरफ आप देखते बन्दा तड़पने लगता।ख्वाज़ा बुरहानुद्दीन पर आपने नज़र डाली वो 2 2 गज़ उछल जाते।

फ़ना और बक़ा

मौलाना अब्दुर्रहमान जामी रहमतुल्लाह अलैह की किताब रिसाला कुरैशिया में फ़ना और बक़ा के ताल्लुक से बताया गया है।फ़ना को आसान जुबान में अगर समझा जाये तो इसका मतलब निकलता है खत्म हो जाना और बक़ा का मतलब बाकी रहना।

तसव्वुफ़ में फ़ना का मतलब है कि किसी चीज का वजूद तो रहता है लेकिन एहसास नही।जब सूफ़ी फ़ना की पहली मंज़िल तय करता है तो उसको नबदात,जमदात, हैवानात और दूसरी मंजिल में अनासिर का एहसास खत्म हो जाता है फिर तीसरी मंजिल पर ये हाल हो जाता है कि सारा आलम ही गायब हो जाता है यानी उसे आलम का एहसास नही होता है और उसे सिर्फ हक़ की जात दिखाई पड़ती है बाकी कुछ भी नही दिखाई पड़ता।फ़ना की मंज़िल को तय करने में सूफी सारी बुराइयों को खत्म कर देता है उसके बाद जब सारी बुराई ख़त्म हो जाती है तो वो बक़ा के मक़ाम पर पहुंच जाता है।बक़ा फ़ना से अफ़ज़ल है फ़ना को छोड़कर ही बक़ा हासिल होती है।जब सूफी ने जहालत फ़ना कर दी तो वो इल्म के साथ बाकी रहा जब सूफी सब कुछ फ़ना कर देता है तो बाकि बिल्लाह हो जाता है।

वलायत, विलायत

आप फरमाते थे कि सिलसिला ए नक्शबंदी में विलायत के बजाय वलायत पर ध्यान दिया जाता है क्योंकि वलायत ही असल तसव्वुफ़ है और विलायत तो शोहरत है।आपने फरमाया की तौहीद तो सूफियों के पास होती है और तोहिद के ताल्लुक से आपने फ़रमाया कि हर चीज़ में खुद को अल्लाह रब्बुल इज्जत के आगे बेबस समझना ही तौहीद है।आपके मुरीद व ख़लीफ़ा इमाम रब्बानी मुजद्दीद अल्फे सानी रहमतुल्लाह अलैह हैं।आपने इनको भी अपने पास सिर्फ तीन दिन रखा और सारा फेज़ अता कर दिया।जब भी महफ़िल में मुजद्दीद अल्फे सानी रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ़ लाते आप खड़े होकर उनका इस्तेकबाल करते और कहते जब अल्लाह ने उनका मक़ाम बढ़ा दिया है तो में क्यों न खड़ा होऊं अपने मुजद्दीद को देखकर।25 जमादिस सानी 1012 हिजरी को आपने दुनिया ए फानी को बाजहिर अलविदा कह दिया लेकिन आपके जरिये किये गए काम ता क़यामत तक आपके नाम को ज़िंदा रखेंगे आप तसव्वुफ़ की वो अज़ीम हस्ती हैं जिनकी जात से सिलसिला ए नक्शबंदिया हिंदुस्तान में आज भी फल फूल रहा है।

मुजद्दीद ए अल्फे सानी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 14 शव्वाल 971 हिजरी अंग्रेज़ी केलेण्डर के मुताबिक 25 मई 1564 ईस्वी को हुई थी।

आपका असल नाम शेख अहमद फारूक सरहिंदी था।

नसब

आपका शजरा ए नसब 28 वास्तो से ख़लीफ़ा ए दोम हज़रत उमर फारूक ए आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हु से मिलता है यानी आप के जिस्म ए अक़दस में सहाबीए रसूल का खून दौड़ रहा है अल्लाहु अकबर।

विलादत से पहले की पेशनगुई

आपके वालिद शेख अब्दुल अहद चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह जो खुद वली ए क़ामिल हैं और शाह अब्दुल कुद्दूस रूदौलवी गंगोही रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा भी हैं वो फ़रमाते हैं कि आपकी विलादत से पहले एक रात उन्होंने ख्वाब देखा कि हर तरफ अंधेरा फैल गया है और मेरे सीने से एक नूर निकला जिससे एक तख्त जाहिर हुआ और उस पर शख्श बैठा है उसके सामने तमाम ज़ालिमो को क़त्ल किया जा रहा है सुबह जब आंख खुली तो उन्होंने इस ख्वाब की ताबीर जानने के लिए अपने वक़्त के वली ए क़ामिल हज़रत शाह कमाल केतली अलैहिर्रहमा के घर तशरीफ़ ले गए तो उन्होंने फ़रमाया कि आपके घर एक बेटा पैदा होगा जो दुनिया से गुमराही/बिदअत को दूर करेगा।

बचपन और तालीम

बचपन मे आपने तालीम अपने वालिद साहब से ही हासिल की उसके बाद आला तालीम के लिए आप सियालकोट तशरीफ़ ले गए जहाँ पर मौलाना कमाल कश्मीरी अलैहिर्रहमा और मोहम्मद याक़ूब कश्मीरी अलैहिर्रहमा से आपने आला तालीम

हासिल की और 21 साल की उम्र में तालीम मुकम्मल करके घर लौट आये और तदरीस में जुट गए आप का ज्यादातर वक़्त तदरीस में गुजरता और आप अपने वालिद की खिदमत में रहते आप का मन हज करने का भी करता था लेकिन वालिद की ख़िदमत में मशरूफ होने की वजह से आप हज न कर पाते कुछ अरसे बाद आपके वालिद साहब का इंतेक़ाल हो गया उसके बाद आप ने हज़ करने का इरादा किया।

हज का इरादा और मुर्शिद से मुलाकात

आप रहमतुल्लाह अलैह ने हज का इरादा किया और दिल्ली पहुंचे जहां आपकी मुलाकात आपके दोस्त मौलाना मोहम्मद हसन कश्मीरी से हुई आपस मे बातें हुईं एक दूसरे की खैरियत पूछी गई फिर उन्होंने आपसे ख्वाजा बाकी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह की क़रामते और उनके चर्चे सुनाए जिसे सुनकर आप मुतासिर हुए और कहा चलो हम भी ऐसे दरवेश की बारगाह में हाज़िरी देते हैं जैसे ही आप उनकी खानकाह के अंदर दाखिल हुए आपको देखते है ख्वाजा बाकी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया आओ अहमद में तुम्हारे लिए

ही काबुल से दिल्ली आया हूँ और तुम ही मेरे फेज़ के हकदार हो और ये तुम्हारी विरासत है।

इसके बाद उन्होंने आपको मुरीद किया और आप 7 दिन पीर की सोहबत में रहकर फैज़ान से मुस्तफीज़ हुए आपको सिलसिला ए आलिया नक्शबन्दिया की ख़िलाफ़त व इजाजत अता होने के बाद आप सर हिन्द चले आये और दीन की तब्लीग शुरू कर दी जहाँ आपके इल्म व रूहानियत से मुतासिर होकर सैकड़ो ने आपसे मुरीद होकर फैज़ान हासिल किया।इधर आप दीन की तब्लीग कर रहे थे उधर आप जिस मकसद के लिए आये थे उसकी इब्तिदा हो चुकी थी।

बादशाह अकबर और उसकी गुमराही की वजह

दरसअल बादशाह अकबर की शुरुआती जिंदगी खुद एक दरवेश ख्वाजा सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह की सोहबत में गुजरी है वो उनसे बहुत अक़ीदत रखता था लेकिन एक वक्त ऐसा आया जब अकबर के क़ब्ज़े में सारा हिन्द आ चुका था उधर ख्वाजा शेख सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह भी विसाल कर गए थे उसके बाद अकबर को जाहिल मुल्लाओ और गुमराह मुशीरो ने एक मशवरा दिया कि जहाँपनाह अब

इस दीन को आये हुए 1000 साल हो चुके हैं और ये दीन पुराना हो चुका है लिहाजा अब वक्त है कि आप एक नया दीन बनाकर दे जिसके क़ानून आप तय करें जिसमें सारे मजहब को एक कर दिया जाए जिससे कि आप के राज्य में किसी तरह का खलल न पड़े ये बात अकबर को समझ मे आ गई।

(नोट--) अमूमन हम इस मसले में बादशाह अकबर को अकेले ही गलत समझते हैं लेकिन उससे भी ज़्यादा गलत तो वो उलेमा हैं जो अकबर के साथ रहते थे और जिन्होंने ही अकबर को ऐसा करने की सलाह दी थी अल्लाह ऐसे मुल्लाओ से हमारे दीन को बचाए)

अक़बर का एलान

उधर जब अकबर ने नया दीन बनाने के फायदे सुने तो दौलत और तख्त के लालच के जाल में फंसकर अक़बर ऐसा फंसा की उसने नया दीन बनाने का एलान कर दिया।

दीन ए इलाही क्या है--?

आइए समझते है कि आखिर अकबर ने जो नया दीन बनाया है आखिर वो क्या है और क्यों उसकी मुखालिफत अल्लाह वालो ने की है तो ये हैं वो नियम जो उस वक़्त अकबर के नए दीन के लिए थे---

1--सारे मज़हब के लोग एक साथ मिलकर अपनी इबादत करें।

2--शराब/सूद/हलाल था और हर मज़हब के लोग आपस मे शादी कर सकते थे।

3--एक दूसरे को सलाम करना बन्द करवा दिया था बल्कि उसकी जगह पर अल्लाहु अकबर कहा जाता था।

4--गाय पर पाबंदी लगा दी गई थी।

5--सज़दा ए ताज़ीमी खुद के लिए जायज़ करार दिया था।

6--दीने इलाही को ही दीने अक़बर कहा जाता था।

मुजद्दीद अल्फे सानी और अकबर की जंग

बादशाह अकबर के इस तानाशाह फैसले पर जो भी गय्यूर मुसलमान आवाज़ उठाते उनको तुरन्त सज़ा दी जाती जिससे सब डरने लगे थे एक दिन आप रहमतुल्लाह अलैह ने दरबार

मे एलानिया तौर पर अकबर को ललकारते हुए कहा सुनो जलाल जन्नती/जहन्नमी कभी बराबर नही हो सकते पाक और नापाक कभी एक दूसरे के बराबर नही वैसे ही मोमिन और काफ़िर भी एक दूसरे के बराबर नही हैं ये तूने जो दीन निकाला है ये गलत है बल्कि असल दीन मेरे रसूल का है ये सुनकर बादशाह के होश उड़ गए वहाँ बैठे सभी के चेहरे पर बल आ गया लेकिन आप रहमतुल्लाह अलैह ने बगैर डरे हुए अपनी बात कही जिसके लिए तारीख़ भी आपकी इस बेबाकी को झुककर आज भी सलाम करती है और ता क़यामत तक करती रहेगी।

जहाँगीर का तख्त नशी होना

अकबर के इंतेक़ाल के बाद उसका बेटा जहाँगीर तख्त पर बैठा जिसने भी वही तरीक़ा अपनाया जो उसे उसके वालिद बादशाह अकबर से मिला था एक दिन जहाँगीर ने अपने दरबार में बैठे लोगों से पूछा कि मुझे कोई ऐसी तरकीब बताई जाए जिससे शेख अहमद फारूकी मेरी सज़दा ए ताज़ीमी करे ये सुनकर सब के पैर पीछे हो गए क्योंकि सब जानते थे कि सूरज अपनी दिशा बदल सकता है लेकिन शेख अहमद फारूकी सरहिंदी रहमतुल्लाह अलैह किसी ग़ैरुल्लाह को

सज़दा ए ताज़ीमी नही करेंगे इतने में एक खादिम उठा उसने कहा जहाँपनाह गुस्ताख़ी माफ आप दरबार के बाहर एक खिड़की लगवाइए जिसकी ऊंचाई कम कर दीजिए जिससे वो जब भी इसके अंदर से दाखिल होंगे तो उन्हें मजबूरन अपना सर झुकाना पड़ेगा ये सुनकर वो खुश हुए अगले दिन दरबार में खिड़की लगाई गई इधर आपके सर झुकाकर अंदर जाने की बात हो रही थी उधर आप रहमतुल्लाह अलैह पहले से ही जान गए थे कि उसके बाद जब वो दरबार गए तो सब की नज़रे आप पर थी आपने सबसे पहले खिड़की में पैर दाखिल किए उसके बाद सर यानी बादशाह को आपके झुके हुए सर का इंतज़ार था लेकिन उसे सबसे पहले आपके क़दम दिखाई पड़े जिससे बादशाह नाराज़ हो गया और उसने आपको गिरफ्तार करवाकर जेल में डलवा दिया।

जेल में तब्लीग और रसूल ए खुदा का ख्वाब

आप जेल गए और वहां भी दीन की तब्लीग शुरू कर दी लोगो को तसव्वुफ़ सिखाने लगे आप की जात से जेल में कई लोग आपके मुरीद हुए यानी आप जेल में भी अल्लाह के दीन को ही फैलाने में लगे रहे।एक दिन जहाँगीर की बेटी को ख्वाब में रसूल ए करीम की ज़ियारत नसीब हुई आप सल्लल्लाहू

अलैहि वसल्लम ने मुंह फेर लिया उसकी बेटी ने कहा या आक़ा अलैहिस्सलाम आखिर इस कनीज़ से क्या खता हो गई है जो आपने अपना चेहरा ए मुबारक फेर लिया है आक़ा अलैहिस्सलाम ने कहा तेरी जेल में मेरा बेटा बन्द है और पूछ रही हो कि क्या खता हो गई है इसके बाद उसकी आँख खुल गई सुबह हुई तो वह भागते हुए जहाँगीर के पास गई और रात का ख्वाब बयान किया जहाँगीर ने तुरंत आपकी रिहाई के हुक्म जारी किए लेकिन आपने मना फ़रमा दिया और कहा कि मेरे साथ जितने भी बेकसूर कैदी अंदर हैं उन्हें भी रिहा किया जाए और इस नई दीन को फौरन बर्खास्त करके आक़ा अलैहिस्सलाम का दिन नाफ़िज़ किया जाए लिहाजा आपकी शर्त के मुताबिक वैसे ही किया गया और आखिरकार आप रहमतुल्लाह अलैह बाहर आये और फिर से दीन ए मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नाफ़िज़ हुआ।

मुजद्दीद

दरसअल मुजद्दीद उसे कहते है कि जब अल्लाह के दीन को बदलने की कोशिश की जाती है या फिर नकली दीन बताकर उसे इस्लाम का हिस्सा साबित किया जाता है या इस्लाम के ऊपर इस तरह का जो भी गर्दा गुबार लग जाता है उसे साफ

करने के लिए एक मर्द ए मुजाहिद को अल्लाह भेजता है जो आकर उसे साफ करता है और फिर से दीन को वैसा करता है जैसे इसकी असल हो उसे मुजद्दीद कहा जाता है हदीस शरीफ में भी है कि अल्लाह हर 100 साल में एक मुजद्दीद भेजाता है चूंकि आप प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के 1000 साल बाद आये तो इसीलिए आपको मुजद्दीद ए अल्फे सानी कहा जाता है और आपके नाम से पहले इमाम ए रब्बानी भी लिखा जाता है।

फातिहा और रसूल की नाराजगी

आप मकतुबात शरीफ़ में लिखते हैं कि आप का तरीका ये था कि में खाने पर फातिहा पढ़ता और पंजतने करीम का नाम लेकर इसाले सवाब कर देता था एक बार ख्वाब में मेरी हाज़िरी मदीने में हुई तो आक़ा अलैहिस्सलाम ने आपकी तरफ से नज़र फेर ली अब आप परेशान हो गए कि आखिर आज क्या खता हो गई जो नबी करीम हमसे नाराज़ हो गए तो नबी करीम ने फरमाया ए अहमद क्या तुम नही जानते में खाना अपनी आयशा(सिद्दीका सलामुल्लाह अलैहा) के घर खाता हूं और तुम अपनी फातिहा में उनका नाम लेते ही नही हो ये सुनकर में बड़ा शर्मिन्दा हुआ और फिर मेने आइंदा से

कभी भी फातिहा किया तो हज़रत आयशा सिद्दीका सलामुल्लाह अलैहा का नाम लेना नही भूला हूँ ये वाकिया आपने खुद ज़िक्र किया है।

28 सफर 1034 हिजरी अंग्रेज़ी केलेंडर के मुताबिक 9 दिसम्बर 1624 ईस्वी को आप विसाल फ़रमा गए आपका आस्ताना शरीफ सरहिन्द पंजाब में है जहां आज भी बहुत श्यान ए शान से आपका उर्स पाक मनाया जाता हे।

अल्लामा डॉक्टर इक़बाल रहमतुल्लाह अलैह इरशाद फ़रमाते है कि

हाज़िर हुआ में शेख मुजद्दीद के लहद पर

वो खाक के है जेरे फलक मतल ए अनफ़ार

ख्वाजा शेख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 897 हिजरी को हुई थी।आपके वालिद का नाम शेख़ बहाउद्दीन फारूखी अलैहिर्रहमा है।आपका असल नाम शेख़ सलीमुद्दीन फारूकी था आपका लक़ब शैखुल हिन्द है।

शजरा ए नसब

नसब के एतबार से आपकी शान यहीं से वाजेह हो जाती है कि आप हज़रत ख्वाजा फरीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह की औलाद में से हैं और आपका शजरा ए नसब ख़लीफ़ा ए दोम हज़रत उमर फारुके आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हु से मिलता है।

शजरा ए तरीक़त

आप सिलसिला ए चिश्तिया के अज़ीम पेशवा और बुजुर्ग थे जिनकी जात से सिलसिला चिश्तिया बहुत परवान चढ़ा।

हिन्द में आमद

आपके परदादा शेख़ सुलेमान फारूखी अलैहिर्रहमा पाक पटन से बाबा फरीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह से हिजरत करके हिन्द के शहर लुधियाना आये।जहाँ उनका विसाल हो गया उसके बाद शेख़ बहाउद्दीन फारुखी अलैहिर्रहमा लुधियाना छोड़कर देहली आ गए उस वक्त देहली पर सिकन्दर लोधी की हुकूमत थी। तभी दिल्ली में आपकी विलादत हुई।

पैदाइशी वली

औलिया अल्लाह की जमात में ज्यादातर औलिया अल्लाह पैदाईशी वली ही गुजरे हैं।जिनमे आप भी अपना मकाम रखते हैं।जब आप पैदा हुए तो आप ज़मीन पर गिर गए नीचे ज़मीन पर चने का दाना पड़ा हुआ था जो आपकी पेशानी मे चुभ गया।जिसक निशान आपकी पेशानी पर आखिरी दम तक रहा।एक दिन ख़ानक़ाह में आप बड़े खुश दिख रहे थे मुरीदों ने सोचा आज मौका है हज़रत से इस निशान के बारे में पूछने का ये सोचकर उन्होंने पूछा कि हज़रत ये पेशानी में निशान

किस चीज़ का।आपने फ़रमाया सुनो मेरे जांनिसारों जब वो दाना मेरी पेशानी में चुभा था तो मैने सोचा था कि लाओ इसे अभी निकाल दूँ लेकिन अगर में उस दाने को निकाल देता तो शोर बरपा हो जाता लिहाजा आप ऐसे ही चुपचाप लेटे रहे।

अज़ीज़ों यहां से ये मालूम होता है कि आप पैदाइशी वली अल्लाह हैं और क्यों न हो आप तो औलाद उनकी है जिनके बारे में सैयदुल अम्बिया सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम ने फ़रमाया है कि ए उमर अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो वो तुम होते।अल्लाह अल्लाह यानी आप के खानदान से आपकी शान व मर्तबे का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। बाबा फ़रीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह आपके दादा है हज़रत सैयद अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कलियरी रहमतुल्लाह अलैह आपके फूफी ज़ाद भाई हैं।

बचपन और तालीम

जब आपकी उम्र 9 साल की हुई तो आपके वालिदैन का इंतेक़ाल हो गया था।बड़े भाई शेख़ मूसा फारुखी अलैहिर्रहमा ने आपको अपने पास रख लिया और तालीम और तरबीयत की ज़िम्मेदारी ली।एक दिन आपने बड़े भाई से कहा कि मेरा

मन करता है कि में आला तालीम हासिल करने के लिए बाहर जाकर पढ़ू लेकिन मूसा फारुखी अलैहिर्रहमा आपको नही जाने देते क्योंकि आप के सिवा उनके पास भी कोई न था और वो आपसे बहुत मोहब्बत करते थे।फिर जब आप जाने लगे तो आपने दुआ की अल्लाह तुम्हे भी एक बेटा अता कर देगा मेरी फिक्र मत करना।

सरहिन्द में आमद

दरसअल कुछ जगहों पर लोग इसे सरहिन्द कहते हैं और कुछ सिहरहिन्द कहते है बहरहाल यहाँ मामला लफ़्ज़ों का नही।सरहिन्द का नाम आते ही जो भी शख़्स सूफ़िया की महफ़िल में बैठा है या औलिया ए हिन्द के बारे में जानकारी रखता है वो ये जरूर जानता है कि सरहिन्द शरीफ़ में ही इमाम ए रब्बानी शेख मुजद्दीद अल्फे सानी रहमतुल्लाह अलैह का आस्ताना है।आप सरहिन्द शरीफ़ गए उसके बाद पंजाब के शहर फतहगढ़ गए जहां पर मलिकुल उलेमा हज़रत अल्लामा मौलाना शेख़ मजदुद्दीन अलैहिर्रहमा के हल्के में शामिल हो गए।अब जब आप वहाँ मदरसे में थे लोग आपको देखने के लिए आते आपकी पोशाक के ताल्लुक से अल्लामा सैयद मुख्तार शाह नईमी दामत बरकातहु बयान करते हैं कि

आप मुजाहिदो वाला कपड़ा पहनते थे।जब से आप जवान हुए आपने वही कपड़ा पहना है।सरहिन्द में रहकर आपने सारे उलूम हासिल किए और पास में एक मज़ार थी जहां पर आप जाते और मुराकबे किये करते थे।

हज का इरादा और पीरो मुर्शिद

जब आपने तालीम मुकम्मल कर ली तो आपने हज का इरादा किया आपने मक्का की हिजरत की आप की जिंदगी का एक अनूठा दस्तूर ये था कि आपने 24 हज किये हैं जिनमे हज के वक़्त मक्का में और 12 रबीउल अव्वल को मदीने में रहते।

इसी दौरान आपकी मुलाकात आपके पीरो मुर्शिद क़ुत्बुल आरफ़ीन शेख़ इब्राहिम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह से हुई उन्होंने आपको मुरीद किया और इजाजत व ख़िलाफ़त देकर कहा जाओ तुम हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर हो यानी उनके ताबे हो जिसका मतलब था कि आपके ताबे में अब जिन्नात/परी/ख़ज़ानो के ख़ज़ाने थे लेकिन आपने कभी इन सब का गलत इस्तेमाल नही किया।

(नोट--) अज़ीज़ों आपने पढ़ा कि ख्वाज़ा शेख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह को उनके मुर्शिद ने कहा तुम सुलेमान अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर हो दरसअल इसको आसान जुबान में यूँ समझो की हर वली किसी न किसी नबी के क़ल्ब पर होता है ये तसव्वुफ़ का अहम दस्तूर है इसका सीधा सीधा मतलब होता है की जो पॉवर और कमालात उन नबियो में थे अल्लाह की अता और नबी की नज़रे करम से वही क़रामते वलियों के अख्तियार में आ जाती है मेरे नबी की हदीस भी है कि मेरी उम्मत के औलिया ऐसे होंगे जैसे बनी इस्राइल के नबी तो इसे समझने के लिए दो मिसाल है कि हजरत सैयद मख्दूम अशरफ जहाँगीर सिमनानी रहमतुल्लाह अलैह कोढ़ी के कोढ़ को दूर कर दिया करते थे,मुर्दो को ज़िंदा कर दिया करतें थे अब अगर और पहले की तारीख पढ़ो तो आपको मिलेगा की यही सब मोअज्जिजात हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के अंदर भी पाई जाती है यानी आप मख्दूम अशरफ़ रहमतुल्लाह अलैह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर है दूसरी मिसाल सरकार गौसे आज़म रजिअल्लाहो तआलाअन्हू फरमाते हैं कि में अपने नाना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम के क़ल्ब में हूँ इसीलिए तो वो नबियो के सरदार आप वलियों के सरदार न कोई नबी उन के जैसा,न क़ोई वली

आपके जैसा तो अज़ीज़ों ये होता है किसी नबी के क़ल्ब पर रहना उम्मीद है आप समझ गए होंगे)

इबादत,रियाजत

मुर्शिद से इजाजत व खिलाफ़त लेकर जब आप हिन्द वापस आये तो आपने फ़तेहपुर सीकरी में चिल्ला शुरू किया। आप रोज़ा रखते और 7 वें दिन हल्की सी अफ्तारी करते जिसमे ठंडा पानी इस्तेमाल करते।रोज़ाना सुबह ग़ुस्ल करते वो भी ठंडे पानी से आप को हरी सब्जी पसन्द थी लेकिन हल्की सी खाते जितनी तसव्वुफ़ और शरीयत में बताई गई है।फिर आपने ख़ानक़ाह की तामीर शुरु की और दीन की तब्लीग शुरू की।उस वक़्त दिल्ली में आपके इल्म/तसव्वुफ़ की तूती बोलती थी तलबा आपसे तालीम हासिल करते और सूफिया आपकी सोहबत से मंज़िल पाते थे।

आपके चर्चे दिल्ली में

जब आपकी बुजुर्गी के चर्चे शेर शाह सूरी के बेटे इस्लाम शाह के पास तक पहुंच गए तो वो आपसे खुद मिलने आया।इस्लाम शाह आपसे बहुत मुतासिर हुआ वो आपसे बहुत मोहब्बत व अक़ीदत रखता था।वहीं उसके चचा का लड़का आदिल शाह इस्लाम शाह से जलता था मौका देखते

ही उसने बगावत शूरू कर दी।और जंग का एलान कर दिया ।अब इस्लाम शाह आपके पास आये और कहा हुज़ूर वो आदिल शाह मुनाफिक इंसान है अगर उसने फतह पाई तो सूफिया/उलेमाओ/यतीमो का बहुत नुकसान हो जाएगा।आपने कहा सुनो जब जंग शुरू होगी तो तुम घोड़े पर बैठकर गश्त लगा देना तुमको देखकर उसकी फ़ौज के लोग आपके साथ हो जायेगें जब जंग हुई तो इस्लाम शाह ने वैसे ही किया देखते ही देखते सारी फ़ौज आपके पास आ गई और उनकी फतेह हुई।

इस करामत के बाद से खानकाह बहुत उरूज़ पर पहुंच गई अक़ीदतमन्दो की तादाद बढ़ गई।

हेमू का वक़्त और मुसीबत

इस्लाम शाह के इंतेक़ाल के बाद आदिल शाह का वजीर हेमू तख़्त पर बैठा एक तो ये काफ़िर था दूसरा ये उलेमा और सूफिया से बहुत जलता था।इसने अपने दौर मे हर तरफ तबाही मचा दी थी।उसने लूट पाट इतनी बर्बरता से की थी कि मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूंनी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब मुनतख़बुत तवारीख में लिखा है कि इसने सब कुछ लूट लिया अवाम चमड़ा भिगो भिगो कर खाने पर मजबूर थी

जिसकी वजह से कई हज़ारो जाने सिर्फ चमड़ा खाने और भूख की वजह से चली गयी।जबकि उसके उलट हेमू के दरबार मे 500 हाथी थे हर हाथी को आधा किलो घी खिलाता।जबकि अपने दरबारियों के सामने दस्तर ख्वां बिछा देता और सिपाहियों से कहता एक सिपाही एक बकडा जरूर खाये और अगर कोई कम खाता तो उसे बहुत डाँटता और कहता रहता खाने में कसर न रखो तुम लोगो को मुगलों स जंग करनी है।इसके ज़ुल्म से तंग आकर लोग जान देते थे।आपने हज पर जाने का इरादा कर लिया और हिजरत शूरू की।फिर आप 10 साल वही रहे।लेकिन आपके घर पर कभी फाका नही हुआ रोज़ शाम को एक अजनबी शख्श आपके घर के सामने सब्ज़ियों का जखीरा रख देता अब अज़नबी शख़्स से मुरीद है कि वो जरूर अल्लाह रब्बूल इज्जत की अता से भेजे गए कोई शख्श थे जब 10 साल गुजर गए तो आप वापिस आये दुबारा खानकाह की ज़ीनत बढ़ी।

फिर तालीम और तनक़ीद जारी कर दी।फिर अपने मुरीदों से कहा सुनो सीकरी की ज़मीन खरीद लो बहुत जल्द वो वक़्त आने वाला है जब यहां पेर रखने की भी जगह नही बचेगी।मुरीदों ने कहा हज़रत यहां तो जर तरफ जंगल ही

जंगल आखिर यहाँ कौन आएगा और क्यों इस जंगल मे आएगा आपने कहा देखते जाओ बेटो की कौन-कौन यहाँ आता है--?

बादशाह अकबर की अक़ीदत

अज़ीज़ों ये वो नाम है जिसने दुनियावी तौर पर पूरी दुनिया मे अपनी पहचान बनाई है।हिन्द के इतिहासकार इसे महान कहते हैं और अगर दीन से हटकर दुनिया के निजाम से देखा जाए तो मुगल सल्तनत के सबसे दमदार शख्सियत अकबर बादशाह ही था।जिसका पूरा नाम जलालुद्दीन मोहम्मद था और ख्वाज़ा शेख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह का तार्रुफ़ भी ज्यादातर नोजवान बादशाह अकबर के ज़रिए से ही जानते हैं।

एक बार बादशाह अकबर अजमेर शरीफ ख्वाज़ा गरीब नवाज रहमतुअल्लाह अलैह की बारगाह में बेटे की मुराद के लिए गया हुआ था वहीं से हुक्म हुआ कि जाओ सलीम चिश्ती की बारगाह में वहीँ से तुम्हे फेज़ मिलेगा।

(नोट--) यहां पर ये हरगिज़ न समझा जाये कि जो काम ख्वाजा गरीब नवाज रहमतुल्लाह अलैह न कर पाए वो काम इन्होंने कर दिया ऐसा हरगिज़ ने सोचे वो तो गरीब नवाज की हिकमत अमली और रब की रजामंदी थी क्योंकि इसी वाकिये से ख्वाज़ा शेख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह को तारीख़ में हमेशा के लिए याद रखना था)

उसके बाद बादशाह अकबर वापिस आया और अपने मंत्रियों से पूरा वाकिया बताया तो मंत्रियो ने कहा हुज़ूर ये सच है वो बहुत बड़े दरवेश है उनके यहाँ से कोई खाली नही जाता है ये सुनकर बादशाह अकबर उठ खड़ा हुआ और नंगे पैर ही आपसे मिलने के लिए निकल पड़ा।

अकबर की आमद

जब बादशाह अकबर के आने की खबर आप को हुई तो आप हुजरे से बाहर आये और कहा क्या हुआ सुल्तान आज इस फ़क़ीर के दर पर क्यों आये हो--?बादशाह ने कहा बाबा यहाँ तो में फ़क़ीर हूँ और आप सुल्तान और में औलाद के लिए आया हूँ।आपने कहा लेकिन तुम्हारी किस्मत में औलाद नही है अकबर ने जवाब दिया हुज़ूर इसीलिए तो आया हूँ क्योंकि

औलिया अल्लाह अपनी दुआओं से तकदीर का लिखा टाल सकते हैं।

(नोट--) अक्सर बद मज़हब कहते हैं कि ये देखो जो काम तकदीर में नही है वो कैसे वली कर सकते हैं तो ऐसे एतराज़ करने वालो के लिए हजारो जवाब हदीस शरीफ में मौजूद हैं-- जो अल्लाह का महबूब बन्दा है और वो अगर दुआ करता है तो उसकी दुआ जरूर सुनी जाती है ये तो ख्वाजा शेख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह हैं जब यतीमो/माँओ/की दुआओ से और सदक़ा क़रने से तक़दीर का लिखा अल्लाह बदल देता है तो फिर अपने दोस्तों(वलियों)की बात पर क्यों नही--?और वैसे भी मेरा रब हर चीज़ पर क़ादिर है।

आपने फ़रमाया ठीक है तुम अपनी बीवी के साथ यहीं रहो।

आखिरकार आपकी दुआओ से सफर के महीने में अकबर के यहां एक बेटा पैदा हुआ जिसकी खुशी में 7 दिन तक फतेहपुर सीकरी में सोना चांदी बंटवाया गया।दावते दी गई

लेकिन आप एक कमरे में बैठकर अल्लाह की इबादत करने में ही मस्त थे दुनियापरस्ती से हक़ वालो का दूर दूर तक कोई रिश्ता नही होता था।

बादशाह सलीम

आपसे अक़ीदत और मोहब्बत की बुनियाद पर उसने अपने बेटे का नाम भी सलीम रखा लेकिन अदब को देखते हुए उसने कभी सलीम नही कहा बल्कि शेखू हमेशा कहता रहा।उसने खानकाह की तामीर करवाई और मस्जिद बनवाई और उसके बाद फतेहपुर सीकरी को अपनी राजधानी बनाया।अब वो जंगलो वाला इलाका बाजारों में बदल गया था जिसकी पेशनगुई आपने कई साल पहले अपने मुरीदों से कर दी थी।लेकिन इससे आपकी इन्किसारी और सादगी में कोई फ़र्क़ न आया वही मलमल का कपड़ा वही ठंडे पानी का इस्तेमाल वही इबादत वही रियाजत हर तरफ आपकी विलायत/सादगी बोलबाला था।लोग जो ख्वाब देखते थे उसके बारे में भी आप जान जाते थे।एक बार आप अपनी ख़ानक़ाह से बाहर टहल रहे थे कि देखा एक फ़क़ीर सो रहै हे तो आपने जगाकर कहा उठो सूफिया को लड़ाई जेब नही देती।

रमज़ान क़रीम के मुक़द्दस महीने में 29 रमजान को 980 हिजरी को आपने दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया लेकिन अहले तसव्वुफ़ और अहले ईमान आपका तज़किरा ता क़यामत तक करते रहेंगे।

मख्दूम शेख़ सारंग चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत मालवा में हुई थी आपका नाम सैयद अब्दुल खामिस बुखारी उर्फ़ अब्दुल्लाह रूमी था जबकि आप मख्दूम शेख़ सारँग चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के नाम से मशहूर हुए हैं।

नसब

नसब के एतबार से आप का कोई सानी नही है यानी आप बुखारी,हुसैनी सादात हैं आपके दादा सैयद जलालुद्दीन सुर्ख पोश बुखारी रहमतुल्लाह अलैह हैं और आपके चचा ज़ाद भाई में हज़रत सैयद जलालुद्दीन मख्दूम जहानीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह और दूसरे चचा ज़ाद भाई सैयद अबुल फजल उर्फ राजू कत्ताल अलैहिर्रहमा हैं।

खानदान की पशमंज़र और हिन्द आमद

आपके वालिद का नाम सैयद सफ़दर अली अहमद बुखारी अलैहिर्रहमा था जो हिन्द इस्लाम फैलाने की गरज़ से आये थे जहां उनका क़याम मालवा में हुआ।जब मालवा के राजा को उनके बारे में मालूम हुआ तो उनसे मिलने आया फिर धीरे धीरे उनकी रूहानियत से मुतासिर होता चला गया जब उन्होंने मालवा छोड़ने की बात कही तो राजा बहुत उदास हो गया और उसने कहा हुज़ूर आप मालवा छोड़कर न जाएं वरना आपके जाने के बाद हमारा क्या होगा-?राजा की बातें सुनकर हज़रत सैयद सफदर अली बुखारी अलैहिर्रहमा ने फरमाया कि जिस तरह से आप लोग चाहते हैं मुझे बता दे ताकि में कोई हल निकाल सकूं।अगले दिन लोगो ने कहा हुज़ूर अगर आपका जाना जरूरी है तो अपनी प्यारी निशानी यानी अपने शहज़ादे को मालवा छोड़कर जाए इसी में हमारी भलाई है और इससे हमारा सागर साराँग हो जाएगा ये सुनकर उन्होंने आपको वहां छोड़ दिया और खुद वहां से रुख्सत हो गए।

राजा की आपसे अक़ीदत

आपके वालिद की तरह राजा आपसे भी बहुत अक़ीदत रखता था आपको अपने बेटे की तरह पाला पोशा और ये एलान करा दिया कि आज से यहां के राजा आप हैं एलान करते ही उसकी

चारो रानियां जो कभी माँ नही बस सकती थी सब हमल से हो गई(गर्भवती) और कुछ दिन बाद तीनो रानियों को बेटे और एक को बेटी हुई राजा बहुत खुश हुआ और उसने ख़ुदा का शुक्र अदा किया खुद वहां मंत्री बन गया आपको मालवा की विरासत सौंप दी।आपने राजा की बेटी की शादी सुल्तान फ़िरोज़ शाह तुगलक के बेटे से कर दी और ख़ुद अपनी शादी शाही घराने से की।आपने मालवा में एक जगह अपने नाम से बसाई जिसका नाम मलिक सारँग रखा गया।राजा बनने से पहले आप सुल्तान फ़िरोज़ शाह तुगलक के दरबार मे आला दर्जे पर फ़ायज़ थे आपके सुपुर्द में 12000 घुड़सवार थे सुल्तान आपकी बहुत ताज़ीम करता था हर फैसले में आप की राय शामिल रहती थी।

(अखबारुल अख़्यार)

मख्दूम जहांगश्त का झूठा खाया

उस वक़्त में आपके चचाज़ाद भाई हज़रत मख्दूम जलालुद्दीन जहानीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह की बुजुर्गी और विलायत का डंका पूरी दुनिया मे बज रहा था।एक बार वो अपने भाई हजरत मख्दूम राजू कत्ताल अलैहिर्रहमा के साथ सुल्तान फ़िरोज़ शाह तुगलक के दरबार मे हाजिर हुए उस

वक़्त आप भी सुल्तान के दरबार मे आला दर्जे पर फ़ायज़ थे।आपने दोनों बुजुर्गो(मख्दूम जहानीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह और उनके भाई मख्दूम राजू कत्ताल रहमतुल्लाह अलैह)की खिदमत की ड्यूटी खुद अपने सुपुर्द कर ली।एक दिन हज़रत मख्दूम राजू कत्ताल अलैहिर्रहमा ने आपसे कहा अगर तुम चाहते हो कि मख्दूम जहानीया जहांगश्त रहमतुल्लह अलैह का झूठा खाने का मौका मिल जाए तो तुम कसरत ने पांच वक़्त की नमाज़े अदा किया करो आपने पंजगाना नमाज़ों के अलावा तहज्जुद,इसराक,चाशत,की नमाज़े भी अदा करनी शुरू कर दी।

आपकी इबादत और अक़ीदत देखकर मख्दूम राजू कत्ताल अलैहिर्रहमा ने आपके साथ एक ही बर्तन में खाना खाया उसके बाद एक दिन मख्दूम जहानीया जहांगश्त राहमतुल्लह अलैह ने आपको अपने पास बिठाकर अपना झूठा खाना खिलाया जिसके खाते ही आपके ऊपर अजीब असर हुआ आप के दिल मे मोहब्बत ए इलाही का शोला भड़क उठा आप इस शोले को बुझाने के लिए मुर्शिद की तलाश में निकल पड़े।

(खज़ीनतुल अस्फिया)

पीरो मुर्शिद

आप अपना सबकुछ ग़रीबो में बांटकर आराम की जिंदगी छोड़कर फ़क़ीरी के कांटो भरे रास्ते मे निकल पड़े।आपने लखनऊ पहुँचकर वक़्त के वली ए क़ामिल हाज़ी शेख़ हरमैन चिश्ती लखनवी अलैहिर्रहमा से बैत की और उन्ही से खिलाफत व इजाजत भी हासिल की उसके बाद आपको मख्दूम जहानीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह और मख्दूम राजू कत्ताल रहमतुल्लाह अलैह से भी खिलाफत हासिल हुई है इसीलिए आपके नाम मे चिश्ती के साथ साथ सोहरावर्दी भी लगा रहता है।

(खज़ीनतुल अस्फिया)

हज का सफर और करामत

एक बार हज के लिए क़ाफ़िला रवाना हुआ आप भी अपने बीवी बच्चों के साथ चल पड़े सारी ज़िदंगी ऐशो इशरत से गुज़ारने की वजह से आप पैदल चलने के आदी नही थे जब कुछ देर पैदल चले तो आपके और बीवी बच्चो के पैर में छाले पड़ गए जिसे देखकर आप एक सुनसान जगह पर रुक गए और तीन दिन वही आराम करने के बाद बीवी से कहा कि आंखे बंद कर लो उन्होंने आँखे बन्द कर ली फिर जब आँख

खोली तो खुद को काफिले वालो के साथ पाया आपकी ये करामत देखकर सब दंग रह गए उसके बाद आपने हज किया।

हज़रत यूसुफ अरेज़ी अलैहिर्रहमा से खिलाफत

हज अदा करने के बाद वापस आने पर वो हज़रत यूसफ़ अरेज़ी अलैहिर्रहमा से मुलाकात क़रने के लिए उनके पास गए और कुछ अरसा उनकी खिदमात में गुजारे जहां से फेज़ हासिल करके लौट आये।

(नोट--) अहले तसव्वुफ़ में मुरीद एक ही पीर का बनता है लेकिन खिलाफत कई सिलसिला से हासिल की जा सकती है इसकी इजाजत है)

मख्दूम राजू कत्ताल अलैहिर्रहमा का तोहफ़ा

एक बार मख्दूम राजू कत्ताल अलैहिर्रहमा ने पंजाब से अपना ख़िरका और बहुत से नायाब तोहफे आपकी बारगाह में भेजे।आपने बहुत ही अदब से सारा सामान ये कहकर रखवा दिया कि में तरीक़त में नया नया मुस्लिम हूँ और ये लिबास तो औलिया अल्लाह का भेजा हुआ है और में इस काबिल नही की इसे पहन लूँ दूसरी बार फिर उन्होंने आपकी बारगाह में

अपने पीर की तरफ से अता की गई सारे तबर्रुकात आपके पास भिजवायें और इस बार ये भी कहलवा दिया है कि ये सारी चीजें अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के हुक्म से तुम्हारे पास भेजा रहा हूँ ये सुनकर आपने सारी चीज़ें अपने पास बहुत ही हिफाज़त के साथ सम्भाल कर अदब से रख ली।ख़िरका और दूसरी नेमते मिलने के बाद आप इल्म और रूहानियत से लबरेज़ हो गए।

मजगांवा आमद की दिलचस्प

एक बार आपको रसूल ए खुदा का ख्वाब में दीदार हुआ उन्होंने कहा बेटे यहां से हिजरत करो और ऐसी जगह को अपना क़याम गाह बनाना जहां पर कुछ अलग देखना अब आप उस जगह की तलाश में निकल पड़े उस के बाद आप लखनऊ आये और यहां की भीड़भाड़ देखकर वापिस चले गए कुछ वक्त गुजारने के बाद आप अजमेर शरीफ़ पहुंचे और वहां से भी यही हुक्म हुआ कि अवध चले जाओ और जहाँ भी कोई नई चीज देखना वही क़याम कर लेना।आप अजमेर से वापिस अवध आ गए और उस जगह की तलाश में लग गए एक दिन आप एक जंगल मे पहुंचे मगरिब का वक़्त था आपने वहीँ अज़ान दी और नमाज़ के लिए खड़े हो गए।उस वक़्त

अवध के चारो तरफ राजभर जाति के लोग रहते थे बादशाह भी उन्हीं की जाति का था वो इस्लाम का दुश्मन था जैसे ही उसने अज़ान की आवाज़ सुनी तो उसने अपने सिपाहियों से कहा जाओ और इस का सर लाकर मुझे दो सिपाही अपने राजा का हुक्म सुनते ही सर लाने चले गए उस वक़्त आप नमाज़ में मशगूल थे जैसे ही वो आपके पास पहुंचे अल्लाह के हुक्म से उनके पैर चिपक गए उनकी जुबाने बन्द हो गई आपने जैसे ही सलाम फेरा तो देखा कि आपके आसपास भीड़ जमी हुई है लेकिन न वो चल सकती है और न ही बोल सकती है आप फौरन समझ गए कि यही वो जगह है जहां पर मेरा ठिकाना होगा।आपने जैसे ही लोगो से पूछा कि यहां क्यों आये हो उनके बोलने की ताकत वापिस आ गई उनमे से एक सिपाही ने कहा हमारे राजा ने आपका सर काटकर लाने का हुक्म दिया है और अगर हमारे पैर न जकड़े गए होते हाथ न बांधे गए होते तो हम आपका सर काटकर धड़ से अलग कर देते ये सुनकर आपने मुस्कुराते हुए कहा जाओ और आपस मे समझ लो ये सुनते ही भीड़ के हाथ पैर आजाद हो गए और वो आपस में ही लड़ने लगे कुछ देर बाद इतनी भयंकर लड़ाई हुई कि सारा राजभर घराना ही खत्म हो गया बस एक औरत जो हमल से थी यानी उसके पेट मे एक बच्चा था वही बची थी

जिसकी औलादे आज भी बाराबंकी के बशर नाम के गांव में रहती हैं।इस हादसे के बाद आपने अल्लाह का शुक्र अदा किया और मजगांवा शरीफ में ही रहने लगे और दीन की खिदमत में मशगूल हो गए लोगो को हक़ के रास्ते पर चलने का तरीका बताते रहे।

दिल्ली के सुल्तान की ख्वाहिश

इस करामत के बाद आपका चर्चा हर तरफ़ फैल गया धीरे धीरे ये खबर दिल्ली के सुल्तान तक पहुंची जो आपका भांजा लगता था उसने आपसे मिलने की खाव्हिश की और आखिर वो दिन आया जब वो आपकी क़दमबोशी का शरफ़ हासिल कर पाया।

वफात का वक़्त और आपकी नसीहते

आप के शहज़ादे सैयद शाह मलिक मीना अलैहिर्रहमा आपके ही साथ रहने लगे थे एक दिन मलिक मीना अलैहिर्रहमा शिकार पे गए हुए थे ईद की 17 तारीख़ थी दिन जुमेरात और रात के 9 बजे थे अचानक से आपने शहज़ादे मलिक मीना को आवाज़ दी लेकिन आपकी सुनकर आपके शहज़ादे की बजाय लखनऊ से 55 किलोमीटर की दूरी पर बैठे आपके ख़लीफ़ा हज़रत शाह मीना रहमतुल्लाह अलैह हाजिर हुए ऐसा तीन

मर्तबा हुआ चौथी बार में आपने शाह मीना शाह अलैहिर्रहमा से कहा कि आज से हम लखनऊ की विलायत तुम्हे देते हैं और नसीहत फ़रमाई की सुनो हर हाल में अल्लाह की रज़ा में राज़ी रहना और मेरे बेटे मलिक मीना से कह देना ।

सगवा पटवा कहियो बीन

रहियो घर दो तीन

उसके बाद आपने हर वो तोहफ़ा जो आपको बुजुर्गो से अता हुआ था सब शाहमीना लखनवी अलैहिर्रहमा को दे दिया ।जुमेरात की रात 855 हिजरी में दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया।

(नोट-) -अगर कोई इस बात से इनकार करे की मजगांवा से आवाज़ देने पर लखनऊ में कैसे पहुंच जाती है तो तारीख उठाकर देखने पर हमें मालूम होता है कि जब अबुल अम्बिया हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने अज़ान दी तो सारे आलम में वो आवाज़ पहुंची,जब सुलतानुल औलिया शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी सरकार गौसे आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हु मजलिस में खिताब करते तो उस वक़्त 70 हज़ार से ज्यादा लोग आपके खिताब को सुनते थे जबकि उस वक़्त तो न माइक था और न आज की तरह साउंड तो जो अल्लाह वाले

होते हैं उन्हें किसी चीज की जरुरत नही वो अल्लाह के इतने करीब हो जाते है कि अल्लाह की अता से हर चीज पर वो अपना क़ब्ज़ा रखते है)

वफात के बाद आपकी करामत

अहले तसव्वुफ़ में औलिया अल्लाह वफात के बाद भी मरते नही हैं और ताक़यामत तक उनके आस्ताने से वही फेज़ और करामत सादिर होती रहती हैं जो उनकी ज़ाहिरी ज़िन्दगी में भी लोगो को मिलती रहती थी।जब आपका बज़ाहिर इंतेक़ाल हो गया तो शाह मीनाशाह अलैहिर्रहमा उस वक़्त अकेले थे उनके मन मे आया कि अब में कफ़न दफन का इंतज़ाम केसे करूँगा इतने में आपने सर से चादर हटाकर कहा ए शाहमीना फिक्र न कर खुदा खुद इंतज़ाम कर देगा ये क़रामत देखकर वो बेहोश हो गए आपके बेहोश होने के थोड़ी देर बाद कुछ नक़ाबबन्द लोग वहां हाजिर हुए उन लोगो ने आपको सुपुर्द ख़ाक किया जब शाह मीना शाह अलैहिरहमा की आंख खुली तो उन्होंने नकाबपोश लोगो को देखा और उनसे पूछा कि आप लोग कौन है तो उन्होंने जवाब दिया की हमे शहीदे कर्बला हुसैन इब्ने रसुल्ल्लाह ने हुकम दिया है कि जाओ मेरे बेटे की नमाज़ पढ़ाकर आओ इतना कहकर वो नकाबपोश

भी फौरन गायब हो गए उसके बाद आपके बेटे मलिक मीना अलैहिर्रहमा भी वापिस आ गये उनको सारा माजरा मालूम हुआ तो शाह मीना शाह अलैहिर्रहमा ने जो तोहफा मुर्शिद से मिला था उनके सामने रख दिया लेकिन उन्होंने कहा नही शाह साहब अब ये आपका हक है इतना कहकर उन्होंने आपको वो सारे तोहफे दे दिया जिसे लेकर आप वापिस लखनऊ चले आए।

एक नज़र

आप हुसैनी सैयद हैं।

आप सिलसिला ए चिश्तिया और सोहरावर्दिया से ताल्लुक रखते हैं।

आपके दो ख़लीफ़ा हुए हैं

1--मख्दूम शाह मीना शाह अलैहिर्रहमा

2--मख्दूम सैयद हिसामुद्दीन फतेहपुरी अलैहिर्रहमा

आपके मुर्शिद शेख़ हाजी हरमैन लखनवी अलैहिर्रहमा हैं।

आपका आस्ताना यूपी के जिला बाराबंकी के मजगांवा शरीफ में है।

आप को सुल्तानुल अवध,मख्दूम उल मुल्क का लक़ब अता हुआ है।

मख्दूम शाहमीना शाह लखनवी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 800 हिजरी और अंग्रेजी कैलेंडर के मुताबिक 1397 ईस्वी में हुई थी।आपके वालिद का नाम ख्वाजा शेख़ क़ुतुब अलैहिर्रहमा था।

नसब

आपका शजरा ए नसब खलीफा ए अव्वल अफज़लुल बशर हज़रत अबू बकर सिद्दीक रजिअल्लाहू अन्हु से जाकर मिलता है यानी आप सिद्दीकी खानदान के चश्मो चराग़ थे।

हाजी हरमैन साहब की दुआ

आपके वालिद हज़रत मख्दूम शेख़ क़ुतुब अलैहिर्रहमा थे। जो दिल्ली से जौनपुर आये और फिर वो जौनपुर से लखनऊ आ गए जहाँ पर उनकी मुलाकात बुजुर्ग ख्वाजा हाज़ी हरमैन साहब अलैहिर्रहमा से हुई और रोज़ मुलाकात के बाद एक

दूसरे से अच्छी दोस्ती बन गई एक दिन उन्होंने आपसे कहा कि शादी कर लो आपसे जो औलाद पैदा होगी वो हमारे सिलसिला और नाम को बहुत ऊँचा करेगी।उसके बाद उन्होंने शादी की जिसके कुछ अरसे बाद 800 हिजरी में आपकी विलादत हुई।

बचपन

आपका बचपन बहुत ही सादगी से गुज़रा है आपकी विलायत बचपन ही से साबित है हाजी हरमैन साहब अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि आपके वालिद अक्सर उनसे कहा करते थे कि जबतक आपकी माँ बगैर वजू के रहती आप कभी दूध नही पीते।

तालीम

इब्तिदाई तालीम क़ाज़ी फरीदुद्दीन से हासिल की है जब आपकी उम्र 10 साल की थी तो आप हज़रत मख्दूम राजू कत्ताल रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा हज़रत ख्वाजा बन्दगी मियाँ रहमतुल्लाह अलैह के पास रूहानी तालीम के लिए गए जिनसे आपको बेपनाह फेज़ मिला आप 12 साल की उम्र में ही कुतब ए वक़्त बन चुके थे।

कुतब ए वक़्त

आपकी कुतबियत के बारे में ये कहा जाता है कि लखनऊ का एक शख्श जो क़ुत्बुल मदार हज़रत सैयद बदिउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह का मुरीद था वो अक्सर लखनऊ की परेशानियों को लेकर उनकी बारगाह में जाता था एक दिन वो मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह के पास आया तो आपने कहा सुनो अब लखनऊ की कोई शिकायत रहा करे शाहमीना शाह रहमतुल्लाह अलैह के पास ले जाया करो वो लखनऊ के मख्दूम हैं वक़्त के क़ुतुब हैं।मुरीद ने पूछा में उसे पहचानुंगा कैसे आपने फ़रमाया की वो 12 साल की उम्र के हैं और आपका हुलिया उन मुरीद को बताया जिसके बाद से आपको क़ुतुब कहा जाने लगा।

पीरो-मुर्शिद

अब इल्मे ज़ाहिरी हासिल करने के बाद आपको मुर्शिद की तलाश हुई।उस वक़्त जिला बाराबंकी के मजगाँवा शरीफ़ में आराम फरमा बुजुर्ग औलादे रसूल आले अली बरादरे असगर मख्दूम जहानियाँया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह हज़रत ख्वाज़ा हज़रत सैयद मख्दूम खामिस उर्फ शैख़ सारँग चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह की विलायत का डंका बज रहा था।

दरसअल वो हाजी हरमैन साहब रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद थे तो जब हाजी हरमैन साहब रहमतुल्लाह अलैह मजगांवा तशरीफ़ ले जाते तो उनके साथ आप भी जाते थे आपकी परहेज़गारी और बुजुर्गी को देखकर उन्होंने आपको अपना मुरीद कर लिया आप सिलसिला ए चिश्तिया सोहरावर्दिया में बैत हुए।

करामत

शम्स खान का बड़ा लड़का आपको बहुत चाहता था लेकिन उसको सफेद दाग की बीमारी(कुष्ट रोग)था।उसका दूसरा भाई अक्सर उसे ताना दिया करता था कि तुम शाह मीना साहब को बहुत मानते हो इसीलिए ये हुआ है वो ये सुनकर बहुत परेशान हो गया एक दिन जब बर्दाश्त की इंतिहा नही रही तो वो आपकी बारगाह में हाज़िर हुआ और रो रो कर सारा माजरा सुनाया आपने अपनी जुबान से लार निकाली और उसे लगाया जिसके बाद से उसका सारा रोग खत्म हो गया और जिस भाई ने उसे ताना दिया था कुछ ही दिनों में उसकी मौत हो गई।

भांजे को शेर से बचाया

आपके भांजे शेख़ राजू एक दिन बहराइच शरीफ़ जा रहे थे रास्ते मे उनके ऊपर शेर ने हमला कर दिया उनको जब बचने की कोई सूरत न नज़र आई तो उन्होंने कहा कि मामू जान बचाइए उस वक्त आप बज़ाहिर तो लखनऊ में थे लेकिन पलक झपकते ही आप वहां पहुंचे और शेर को भगा दिया जिसके बाद फिर वापिस चले गए।औलिया अल्लाह के लिए एक वक्त में सेकड़ो जगह पर हाज़िर होना क़ोई बड़ी बात नही है अहले तसव्वुफ़ इस हाल से आगाह रहते हैं और अहले इल्म इसे क़रामत समझते हैं।

फटा अनार का देना

एक बार शम्स खान घर से ये सोचकर निकले की काश मुझे कोई फटा अनार खिला दे लेकिन कोई ऐसा न मिला फिर वो आखिर में आपकी बारगाह में पहुंचे आपने उन्हें देखते ही मुरीदों से कहा सुनो वो ताख पर जो फटा अनार रखा हुआ है इन्हें लाकर दे दो ये सुनते ही वो आपके क़दमो में गिर गए और आपके फैज़ान से सरफ़राज़ हुए।

आग लग गयी आपको कुछ न हुआ

उन दिनों आपकी खानकाह लकड़ी और घास फूस की बनी थी एक दिन उसमे आग लग गयी सबकुछ जल गया लेकिन जब सुबह आंख खुली तो आप और आपके मुरीद हज़रत शेख़ सादुद्दीन चिश्ती खैराबादी अलैहिर्रहमा सही सलामत थे।इस तरह आपकी बेशुमार क़रामते हैं जिनको बयान करने ही में ये किताब खत्म हो जायेगी।

अलविदा ए लखनऊ

आप अपने बज़ाहिर इंतेक़ाल से 6 महीने से ही हुजरे में चले गए न किसी से कोई कलाम किया और न ही कोई राब्ता रहा आपकी तबियत भी दिन बदिन बिगड़ती जा रही थी आखिरकार 23 सफर 884 हिजरी 1479 को 84 साल की उम्र में आपका विसाल हुआ 22,23 सफर को आपका उर्स मनाया जाता है आपका आस्ताना उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज के बगल में है जहां आज भी हज़ारो की तादाद में अकीदतमन्द हाजिरी देते हैं आप तसव्वुफ़ के आला दर्जे पर फ़ायज़ मख्दूम थे।आपकी बारगाह से कई मशायखो ने मन्ज़िले तय की हैं और फेज़ लिया है और ता क़यामत तक आपका फेज़ यूँ ही बंटता रहेगा।

ख्वाजा गौस मोहम्मद ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत

आपकी विलादत 7 रजब 907 हिजरी को गाज़ीपुर में हुई थी।

शजरा ए नसब

आपके ताल्लुक से मुअर्रेखीनो को तसामो हुआ है क्योंकि उन्होंने आपको सैयद कहा है यानी सादात घराने का चश्मो चराग़ बताया है जबकि आपने खुद अपनी किताब जवाहिर ए खमसिया में लिखा है कि मेरा खानदानी तालुल्क जाकर हज़रत ख्वाजा फरीदुद्दीन अत्तारी रहमतुल्लाह अलैह से मिलता है।

(नोट--) तसामो से मुराद ये है कि औलिया अल्लाह की सवानेह पर जिन मुअर्रेखीन ने क़लम चलाई है उनको जो भी

जानकारी मिली है वो दुरुस्त नही लेकिन इसके लिए हम ये नही कह सकते कि फला मोअल्लिफ(लेखक)ने गलती की है बल्कि अदबन हम कहेंगे कि उन्हें तसामो हुआ है।मिसाल के तौर पर शाह मुहद्दिस अब्दुल हक़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह की मोतबर किताब अखबारुल अख़्यार जिसमे पर लगभग तमाम औलिया अल्लाह का ज़िक्र है उसमें उनसे भी कई जगह तसामो हुआ है मिसाल के तौर पर महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह और शेख़ सरफुद्दीन यहया मनेरी रहमतुल्लाह अलैह के ताल्लुक से उन्होंने लिखा है कि जब मख्दूम ए बिहार दिल्ली आए थे तो उस वक़्त महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह दुनिया ए फानी को अलविदा कह चुके थे जबकि तारीख शाहिद है कि दोनों वलियों ने एक दूसरे से मुलाकात की है और महबूबे इलाही ने तोहफे के तौर पर मख्दूम ए बिहार को 3 पान भी दिए थे तो ये होता है तसामो और औलिया अल्लाह के ताल्लुक से इसकी गुंजाइश रहती है क्योंकि रिवायातो के हिसाब से मोअल्लिफ(लेखक)अपनी कलम चलाता है और अमूमन एक ही मसले पर तीन-चार रिवायात हर वली अल्लाह के ताल्लुक से मिलती रहती हैं लिहाज़ा हम ये नही कह सकते कि फला मुअररिख या मोअल्लिफ़ ने गलत लिखा है ये बेअदबी है और बेअदब की

इस्लाम में कोई जगह नही है जो भी मिलता है अदब से मिलता है अक्सर सूफिया फ़रमाते रहते हैं.... **बा अदब--बा नसीब बे अदब--बद नसीब**

शजरा ए नसब

ख्वाजा शाह गौस मोहम्मद ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत शेख़ खतीरुद्दीन ग्वालियरी अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख़ लतीफ अहमद अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख मोईनुद्दीन अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख़ खतीर अलैहिर्रहमा

हज़रत शेख़ बायजीद अलैहिर्रहमा

हज़रत ख्वाज़ा शेख़ फरीदुद्दीन अत्तारी अलैहिर्रहमा

तो इस तरह से आप का शजरा ए नसब जाकर ताजुल आरफ़ीन सैयदुश साकिलीन हज़रत ख्वाज़ा शेख़ फरीदुद्दीन अत्तारी रहमतुल्लाह अलैह से मिलता है।ख्वाज़ा फरीदुद्दीन अत्तारी रहमतुलल्लाह अलैह की सबसे बड़ी करामत उनकी किताब "तज़किरतुल औलिया" जो आज भी अहले तसव्वुफ़ के बहुत ही लिए मुफीद और आला किताब है।हज़रत ख्वाजा फरीदुद्दीन अत्तारी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि औलिया अल्लाह का ज़िक्र करना गुनाहों का कफ़्फ़ारा है!

शाह

आपके नाम से पहले शाह भी लगा है।आमतौर पर अब ये लफ्ज़ हिंद में फ़क़ीर जाति के साथ लगता है और उनका मत है कि इसकी नीव हिंदुस्तान में कुतबुल मदार सैयद बदीउद्दीन ज़िंदा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह ने रखी।ये एक आम लफ्ज़ है जिसके मायने हैं बादशाह या सरदार।पहले ये सादात घराने के लोग अपने नाम से आगे लगाते थे और ये नाम उनके ऊपर जँचता भी था क्योंकि इसके मायने भी सरदार और बादशाह के हैं और सैयद के मायने भी बादशाह और सरदार के लेकिन जब सादातो ने देखा कि अब ये लफ्ज़ हर कोई

अपने नाम के आगे लिख रहा है फिर उन्होंने शाह लिखना बन्द कर दिया।आपके नाम मे जो शाह है वो न तो सैयद होने की वजह है और न ही मदारुल आलमीन की निस्बत की वजह से नहीं बल्कि तसव्वुफ़ में आपका मक़ाम आपको शाह सरदार बनाता है।

गौस

आप इसी नाम से जाने जाते हैं।गौस एक नाम भी है और तसव्वुफ़ में मर्तबा भी।अहले तसव्वुफ़ में गौस का मर्तबा बहुत बुलन्द व बाला है।अमूमन जब हम गौस कहते हैं तो हमारे ज़हन में सरकार पीरे पीरां शाहे जीलां शेख़ अब्दुल कादिर जीलानी हुज़ूर गौसे आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हु का नाम आता है।वो तो गौसो के भी गोस हैं।लेकिन तसव्वुफ़ में कई और औलिया अल्लाह को भी गौस का मर्तबा हासिल है।जिसकें मायने हैं मदद करने वाला और एक बात ध्यान में रखना बहुत जरुरी है कि औलिया अल्लाह ने अपनी ज़िंदगी दूसरों की मदद में ही गुज़र की है क्योंकि तसव्वुफ़ का मज़ा बन्द तभी पा सकता है जब अपने अंदर से में को निकालकर दूसरो के लिए अच्छा सोचने लग जाए।अब बात करते है कि आप का गौस से क्या कनेक्शन है।दरसअल शाह अब्दुल हक़

मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि एक बार आपने 7 भाइयो के साथ पीरो-मुर्शिद क़ाज़ी हमीदुद्दीन सत्तारी रहमतुल्लाह अलैह के पास पहुंचे तो उन्होंने कहा आओ गौस आपका खैरमक़दम है ये जुमला सुनने के बाद उनके मुरीद हैरत में पड़ गए कहा हुज़ूर 7 साल के बच्चे को आपने गौस कह दिया।पीरो मुर्शिद ने जवाब दिया कि सुनो बादशाह अपने बेटे को बचपन ही से शाह आलम कहकर पुकारता है क्योंकि वो जानता है कि उसके बाद बादशाह उसी का बेटा बनेगा।तो जब एक दुनियादार ये फैसला बचपन मे ही कर लेता है तो हम तो हक़ वाले है और ये बच्चा तो गोसुल अग्यास होगा।

(हक़ीक़तुल असरार)

बादशाह हुमायू और उनके बेटे जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर जब भी आपको ख़त लिखते तो उसमें अदब से "पीरे पीरां गौस सकलैन" लिखते।

सत्तारी

सिलसिला सत्तारिया कोई नया सिलसिला नही है बल्कि इसे अलग अलग मुल्कों में अलग अलग नामो से जाना जाता है।ईरान में इश्कियां, रूम में बिस्तामिया,इंडिया में सत्तारिया

के नाम से जाना जाता है और हिंदुस्तान में इस सिलसिला के बानी शेख़ सिराजुद्दीन अब्दुल्लाह सत्तार रहमतुल्लाह अलैह हैं जो सिलसिला ए सोहरवर्दी के बानी(संस्थापक) सुल्तानुल आरफ़ीन सैयदुस सलेहीन शेख़ सहाबुद्दीन सोहरवर्दी रहमतुल्लाह अलैह की 5वी पुश्त की औलाद में से हैं और हुज़ूर सैयदुल आरफ़ीन ख्वाज़ा बायजीद बुस्तामी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा हैं यानी सिलसिला सत्तारिया सिलसिला सोहरवर्दी की ही एक शाख है!

खानदानी पश्मन्जर

आपके परदादा नेशापुर से हिजरत करके हिन्द आए।आपके साथ आपके शहज़ादे शेख़ खतीरुद्दीन अलैहिर्रहमा भी थे।उनकी शादी हुई जिनसे 8 औलादे हुई।यानी आप 8 भाई थे।

1--शेख़ रुकनुद्दीन

2--शेख मोहम्मद फूल

3--शेख शाह अबुल खेर

4--शेख़ अबुल फतह

5--शेख़ कुतबुद्दीन

6--शेख़ मोहम्मद क़ुदस

7--शेख़ मोहम्मद काज़ीम

8-शेख़ मोहम्मद ख्वाज़ा गौस ग्वालियरी सत्तारी रहमतुल्लाह अलैह।

बचपन और तालीम

आपने बचपन ऐसा गुजारा है जैसे पचपन गुजारा जाता है।यानी आपने बहुत ही गम्भीर और दानिश्वर थे।दुनिया के शोर शराबे से दूर रहते और खामोशी आपको बहुत पसंद थी।7 साल की उम्र में आपने रूहानियत का वो मक़ाम हासिल किया है जो बहुतों को 60 साल में नही अता होता है।आप बचपन ही से तस्सवुफ में ऐसे ही दाखिल हो गए जैसे तालिब इल्म मदरसे में दाखिल होते है।आपके मुरीद व ख़लीफ़ा शाह फ़ज़्लुल्लाह सत्तारी ने लिखा है कि आपने सदरे हक़ अलैहिर्रहमा के पास क़ाफ़िया पढ़ी और 9 साल की उम्र मारफत हासिल कर ली।15 साल की उम्र ने आपने सारे उलूम हासिल कर लिए।इतनी कम उम्र में मक़ामे गौसियत हासिल होने में शायद ही कोई आपका सानी हो।

पीरो मुर्शिद की तलाश और मक़ामे गौसियत

जब आप जौनपुर में थे तो अपने दादा की कब्र पे जाकर फ़ातिहा पढ़ते थे।एक दिन आप फ़ातिहा पढ़ने के बाद वही रुक गए तहज्जुद के बाद ऊँघ आ गई जिससे आँख लग गई तो क़ब्र से आवाज़ आई कि ए मोहम्मद जाओ ख्वाज़ा अबुल फतह हिदायतुल्लाह सरमद अलैहिर्रहमा के पास चले जाओ।आप हिदायतुल्लाह सरमद अलैहिर्रहमा के पास गए तो उन्होंने कहा जाओ मोहम्मद सामने पहाड़ी पर एक बुजुर्ग है जो तुम्हारे लिए बेठे हैं आप जब पहाड़ पे पहुंचे तो देखा एक नूरानी चेहरे वाले बुजुर्ग आराम फरमा रहे हैं उन्होंने आपक़ो देखा और कहा आओ मोहम्मद मेरा वक़्त अब नज़दीक है मुझे मक़ामे गोसियत अता है जिसे में तुम्हारे ज़िम्मे कर देना चाहता हूँ और इसके बाद उन्होंने आपक़ो मक़ामे गोसियत अता किया जिसके बाद उनका इंतेक़ाल हो गया।आपने तदफीन का इंतज़ाम किया सुपुर्द ए ख़ाक किया और मन मे सोचने लगे कि ये हज़रत ख्वाज़ा अबुल फतह हिदायतुल्लाह सरमद अलैहिर्रहमा की नज़रे क़रम का ही नतीजा है और मुझे उन्ही का मुरीद बनना चाहिए इतना सोचने के बाद उनके पास गए और कहा हुज़ूर मुझे मुरीद बना लीजिए उन्होंने कहा मोहम्मद तुम्हारा फेज़ हमारे पास नही है तुम ख्वाज़ा हमीदुद्दीन सत्तारी राहमतुल्लाह अलैह के पास चले जाओ।

पीरो मुर्शिद

आप मुर्शिद की तलाश में सहारनपुर पहुंचे तो वहां देखा कि एक दरख़्त के पास एक बुजुर्ग खड़े है।आपने उनको देखती ही सलाम किया लेकिन वो आपको देखते ही रहे कुछ देर देखने के बाद उन बुजुर्ग ने अपने मुरीद अहमद शाह अलैहिर्रहमा से कहा बेटे अहमद देखो ये वही चेहरा है जिसकी बशारत हमे आक़ा अलैहिस्सलाम ने दी है।

दरसअल ख्वाज़ा हमीदुद्दीन सत्तारी रहमतुल्लाह अलैह ने 30 साल ताजदारे मदीना नूरम मुबीना सैयदुल अम्बिया महबूबे खुदा रसूल ए खुदा बदरुदुज़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहूँ अलैहि वसल्लम के दर पर रहकर मुजावरी करते रहे यानी आस्ताने के पास साफ सफाई करते झाड़ू देते अल्लाहु अकबर ये होते है औलिया अल्लाह जिस दर पर चन्द मिनट के लिये खड़े होकर आक़ा अलैहिस्सलाम की बारगाह में सलाम पेश करने के लिए बड़े बड़े मशायख उलेमा सूफिया दिन रात दुआ माँगते है आपके मुर्शिद ख्वाज़ा हमीदुद्दीन सत्तारी रहमतुल्लाह अलैह ने मुसलसल 30 साल उस मुकद्दस आस्ताने की मुजावरी की है।आप सिर्फ इसी बात से परेशान रहते की मेरे न कोई औलाद है न कोई काबिल मुरीद न जाने

मेरा सिलसिला आगे कैसे चलेगा।एक दिन आपक़ो आका अलैहिस्सलाम का ख्वाब आया और उन्होंने हज़रत ख्वाज़ा गौस मोहम्मद ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह का चहेरा दिखा कर कहा था ये तुम्हारा नायब होगा और बहुत बुलन्द मर्तबे पर फ़ायज होगा सिलसिला ए सत्तारिया को इसके जरिये बहुत तरक़्क़ी मिलेगी।फिर उन्होंने आपको मुरीद किया और फरमाया कि रियाजत व इबादत करो।आपने 10 साल वही रियाजत व इबादत में गुजारा नफ़्स को कुचल कर फेंक दिया।फिर आप जंगल निकल गए वहां जंगली जानवरों के साथ रहते जब कभी भूख महसूस होती तो पत्ते खा लेते और इसी दौर ने आपने जवाहिर खमसिया लिखीं है।

जब आप रियाज़त करके लौटे तो मुर्शिद ने मुरीद को बा मुराद पाया और बहुत खुश हुए फ़रमाया की 100 से ज्यादा मक़ाम में तुम्हे अता करता हूँ यहां तक कि में अपना नाम भी तुम्हे देता हूं।जब आपने जवाहिरे खमसिया मुर्शिद के सामने पेश की तो वो बहुत खुश हुए और कहा आज से मैने अपना सबकुछ तुम्हारे नाम किया और तुम मेरे जानशीन हो कहकर सारी खिलाफत व इजाजत अता कर दी।उसके बाद आप गाज़ीपुर चले आये।

(नोट--) यहाँ ये ध्यान रखना ज़रूरी है कि आप के दादा जिला जौनपुर में सबसे पहले रुके थे और उनकी कब्र भी जिला जौनपुर में है जबकि आपकी विलादत जिला ग़ाज़ीपुर में हुई है यानी आपका बचपन और जवानी गाज़ीपुर में ही गुजरी है।ओर आपके मुर्शिद जिला सहारनपुर से ताल्लुक रखते थे जबकि आखिर वक़्त में आप ग्वालियर चले गए और हमेशा के लिए वहीँ अपना ठिकाना बना लिया।ये समझना इसलिए भी जरुरी है की क़हीं पढ़ते वक्त हर जुमले में जिले का नाम बदलने से लोग कन्फ्यूजन में न पड़े की कहीं गाज़ीपुर आता है तो कहीं जौनपुर तो कहीं सहारनपुर और ग्वालियर इसीलिए इसको वाजेह(क्लियर) कर दिया गया है)

मुर्शिद का ख़त

आप 6 माह तक गाज़ीपुर में रहे अब आपके पीरो मुर्शिद की तबियत बिगड़ने लगी।उन्होंने क़ाज़ी रुकनुद्दीन अलैहिर्रहमा और क़ाज़ी ख़ुदा बख्श अलैहिर्रहमा को आपके के पास भेजा और कहलवाया सुनो मेरा बुलाया आया है लेकिन मेने 4 दिन की मोहलत ले ली है और हमने तुमको सबकुछ दे दिया है तुम जिसे मक़बूल कहोगे वो मक़बूल होगा तुम जिसे नकार दोगे वो मेरी फेहरिस्त से हट जाएगा।तुम मेरे जानशीन हो मेरे सारे

मुरीद और खानकाह ये सिलसिला सब तुम्हारे जिम्मे है अब तुम ही सम्भालो मेने तुम्हे सारे मर्तबे और हर सिलसिला की इजाजत व खिलाफ़त अता कर दिया और अब तुम ग्वालियर चले जाओ वहां दीन की तब्लीग शुरू कर दो ख़त पढ़ने के बाद रोने लगें और कहने लगे आज गौस मोहम्मद जो भी है मुर्शिद की बदौलत है अगर मुर्शिद की सोहबत न मिलती तो ये गौस मोहम्मद क़बका भटक चुका होता।आप वहदतुल वजूद के कायल थे।

ग्वालियर में आमद ओर हुमायू की अक़ीदत

मुर्शिद के हुक्म के मुताबिक आप ग्वालियर तशरीफ़ लाए।उस वक़्त दिल्ली की सल्तनत मुगल वंश के दूसरे बादशाह और बाबर के बेटे हुमायू के पास थी।बादशाह हुमायूं आपसे 6 साल छोटे थे।आपसे बहुत अक़ीदत रखते थे हत्ता तारीख़ के हवाले से यहां तक मालूम होता है कि वो आपके मुरीद थे।मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूंनी अलैहिर्रहमा ने लिखा है कि हुमायू आप से मुरीद थे।

वहीँ मशहूर लेखक पीटर हार्डी ने अपनी किताब "सोर्स ऑफ़ इंडियन ट्रेडिशन" के पेज नम्बर 438 पर लिखा है कि

बादशाह हुमायूं आपको रूहानी पेशवा मानते थे और आपसे मुरीद थे।मशहूर इतिहासकार कि

डॉक्टर तारक चन्द ने अपनी किताब "दा इंफ्लुएंस ऑफ इस्लाम ऑन इंडियन" में लिखा है कि हुमायूँ जब से आपसे मिला है वो आपका आशिक हो गया है आपसे इश्क़ की बुनियाद पर उसने बहुत सारे तोहफे दिये थे लेकिन आपने सब गरीबो में तक़सीम कर दिया।अपने पास कुछ न रखते और तसव्वुफ़ वाले दुनियापरस्ती को तर्क कर देते हैं उनके नज़दीक हीरे जवाहरात मिट्टी से भी कमतर होते हैं।

संगीत सम्राट तानेसन

संगीत सम्राट तानेसन को पूरी दुनिया जानती है लेकिन अक्सर अवाम में जो आम है वो ये कि वो बादशाह अकबर के नवरत्नों में से एक हैं।अज़ीज़ों चलो ये ठीक है कि वो बादशाह अकबर के नवरत्नों में से एक हैं लेकिन तसव्वुफ़ में उनका भी अपना मुकाम है और एक बात समझना जरूरी है कि वो गैर मुस्लिम नही है बल्कि उन्होंने कलमा पढ़ा है और हज़रत ख्वाज़ा गौस मोहम्मद ग्वालियर सत्तारी रहमतुलल्लाह अलैह के मुरीद हैं और आज भी आपके ही करीब आराम फरमा रहे हैं।

सैयद हुसैमुद्दीन अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि एक बार तानेसन के वालिद जो कि ब्राह्मण थे आपके पास आये और कहा बाबा हमारे हक़ में दुआ कर दीजिये कि औलाद पैदा हो जाए आपने दुआ फ़रमाई जिसके कुछ अरसे बाद तानेसन की विलादत हुई लेकिन कुछ दिन बाद तानेसन के वालिद और वालिदा का इंतेक़ाल हो गया था।जिसके बाद से वो आपके पास रहने लगे।और आपकी तरबियत में रहने के बाद बादशाह अकबर के पास गए और जब आपका इंतेक़ाल हुआ तो वसीयत के मुताबिक 360 मील दूर दिल्ली से ग्वालियर आपका जनांज़ा आया और वहीँ उनका आस्तान भी बनाया गया जिससे ये पता चलता है कि आप इस्लाम मे दाख़िल हो चुके थे और सिलसिला सत्तारिया भी उनको हासिल हुई।

(नोट--) अक्सर हम देखते हैं कि इन बादशाहो और शायरों के बारे में गैरो की किताब में एकदम से अलग तज़किरा मिलता है दरसअल वो सब झूठा है क्योंकि उनकी किताबो में इन बादशाहो के ताल्लुक से सब झूठा किस्सा बयान करते हैं और उसी किताब को पढ़कर हमारे मुस्लिम भाई भी इन्हें गाली देने लगते हैं मिसाल के तौर पर हुज़ूर औरंगजेब आलमगीर

रहमतुल्लाह अलैह की शान में गैरो ने कितने बड़े बड़े नाज़ेबा और झूठे इल्ज़ामात लगाए।जबकि वो तसव्वुफ़ के आला दर्जे पर फ़ायज दरवेश थे,सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी को गैरो ने अत्याचारी कहा जबकि वो हज़रत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद थे तो क्या वक़्त के क़लन्दर ने किसी ज़ालिम को अपना मुरीद बनाया।बादशाह हुमायूँ खुद ख्वाजा गौस मोहम्मद ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद थे यानी मेरे कहने का मकसद ये है कि जब वक़्त के गौस,क़ुतुब,अबदाल,क़लन्दर इन हस्तियों को मुरीद करते थे तो क्या इनकी इन हरकतों को नही जानते थे इसलिए पहले हमें चाहिए इनकी तहक़ीक़ करें और हम तो निस्बत देखते हैं जब इन बादशाहो की निस्बत इतने आला दर्जे के औलिया अल्लाह से है तो उनकी शान में गुस्ताख़ी करने का हमे कोई हक नही है)

हुमायूँ की हार और शेरशाह सूरी का जुल्म

उधर शेरशाह सूरी के हाथों जंग में परास्त होकर हुमायू जान बचाकर भाग गए।अब सुल्तान शेर शाह सूरी ने हुमायूँ के करीबियों को सताना शुरू कर दिया।तो इसने आपको भी निशाना बनाना शुरू किया।आप कुछ दिन के लिए ग्वालियर

से अलग चले गए जहां आप की चार बीवियां और 9 बेटे और 5 बेटियां व वालिदा रहती थी।उधर शेरशाह सूरी का भतीजा आपक़ो क़त्ल करने आया और उसने औरतो को सताना शुरू कर दिया बेटो को बंदी बना लिया था।इतना सब कुछ होने के बाद आपकी माँ ने गुस्से ने कहा मोहम्मद तेरी गौसियत का क्या फ़ायदा आखिर जब तू मुसीबत में भी खामोश रहेगा माँ का जुमला सुनने के बाद आप जलाल में आ गए आपकी नजर उठी एक तूफान सा बरपा हो गया इतने में एक तलवार मगरिब से नमूदार हुई और उसने मूली गाजर की तरह हज़ारो सिपाहियों को काट डाला कोई भी बचकर न जा सका इस वाकिये के बाद से फिर कभी शेरशाह सूरी ने आपको परेशान नही किया।।

गुजरात मे आमद और मेराजनामा

दरसअल उन दिनों आपने एक किताब मेराजनामा लिखी थी जिसका चर्चा हर तरफ था।जब आप गुजरात पहुंचे तो वो किताब शेख़ अब्दुल अली मुत्तक़ी अलैहिर्रहमा ने पढ़ी और पढ़ने के बाद उसपर एतराज़ किया।एतराज़ बहुत बढ़ गया उन दिनों में गुजरात मे एक मुजद्दीद मुहद्दिस और सबसे बड़े इल्मी दबदबे पर फ़ायज हज़रत सैयद वजीहुद्दीन अल्वी

सत्तारी गुजराती रहमतुल्लाह अलैह के पास मामला आया तो वो 250 मुफ्ती ए क़राम को लेकर आपके पास आये उस वक़्त आप एक कमरे में बैठे थे वो कमरे के अंदर चले गए रात भर बेठे रहे सुबह हुई तो सैयद वजीहुद्दीन अल्वी सत्तारी रहमतुल्लाह अलैह ने उलेमाओं से कहा अगर कल मुझे ख्वाजा गौस मुहम्मद ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह की सोहबत न मिलती तो में मुसलमान न होता उन्होंने फ़रमाया कहा सुनो तुम सब अहले काल हो वो अरबाबे हाल हैं ओर उनके मक़ाम को समझ पाना सबके बस की बात नही है जो मंज़िल में पूरी जिंदगी में नही पा सका वो एक रात उनकी सोहबत में बैठने से हासिल हो गईं वो आपके दीवाने हो गए सारे एतराजात ख़त्म हो गए।वहां सैयद वजीहुद्दीन अल्वी रहमतुल्लाह अलैह को आपने मुरीद किया और ख़िलाफ़त व इजाजत देकर वापिस आ गए 14 रमज़ान 970 हिजरी को आपने बाजहिर दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया।लेकिन आपका नाम आज भी अहले तसव्वुफ़ के दरमियान जिंदा है और ताक़यामत तक ज़िंदा रहेगा आप की जात से आज भी लोगो को फेज़ मिलता है और ये मुबारक सिलसिला ता क़यामत तक चलता रहेगा।अल्लाह आपके

सदके तुफ़ैल हम सब को नेक सालेह मोमिन बनने की तौफ़ीक अता फ़रमाए।

सैयद वजीहुद्दीन अल्वी सत्तारी अलैहिर्रहमा

विलादत

आपकी विलादत के ताल्लुक से 2 रिवायत हैं जिनमे एक रिवायत् के मुताबिक 902 हिजरी और दूसरी के मुताबिक 910 हिजरी पाई गई है।आपके वालिद का नाम सैयद नसरुल्लाह अल्वी था जो उस दौर में गुजरात के क़ाज़ी थे।

नाम,नसब

आपका नाम वजीहुद्दीन था जिसका मायने होता है दीन की खिदमत करने वाली कौम का सरदार ।वही आप मुजद्दीद क़ुतुब वली ए क़ामिल हैं।

नसब

आप हाशमी खानदान के चश्मों चराग़ हैं।आप अल्वी सादात हैं लेकिन आपने अपनी ज़िंदगी मे कभी अल्वी सादात होने की बात अवाम में जाहिर नही होने दी।

सत्तारी

आपके नाम मे सत्तारी मिलता है और जो अहले तसव्वुफ़ से जुड़े हुए हैं वो सिलसिला ए सत्तारिया के बारे में जानते है लेकिन हो सकता है कि अवाम की नज़र के सामने से ये सिलसिला पहले न गुजरा हो।

हिन्द में अक्सर सिलसिला चिश्तिया,कादरिया,नक्शबंदी, सोहरवर्दी इन्ही चार सिलसिला को ज्यादातर अवाम जानती है।

लेकिन आपक़ो ये जानकर हैरानी होगी कि सिलसिला सत्तारिया ये नया सिलसिला नही बल्कि बहुत पुराना सिलसिला है।

इसे रूम में बिस्तामिया

ईरान में इश्क़िया

हिंदुस्तान में सत्तारिया

कहा जाता है।इस सिलसिले के बानी(संस्थापक) शेख़ सिराजुद्दीन अब्दुल्लाह सत्तार रहमतुल्लाह अलैह हैँ जो सिलसिला सोहरावर्दी के बानी(संस्थापक) शेख़ शयूख उमर सहाबुद्दीन सोहरावर्दी की औलाद में से हैं और वो सुल्तानुल आरफ़ीन हज़रत ख्वाज़ा बायजीद बुस्तामी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा हैं।यानी कि आप सिराजुद्दीन अल्वी रहमतुल्लाह अलैह का सिलसिला हज़रत सुलतानुल आरफ़ीन बा यज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह अलैह से मिलता है।

शेख़ सिराजुद्दीन अब्दुल्लाह सत्तार की हिन्द आमद

सत्तारिया सिलसिला के बानी(संस्थापक) शेख़ सिराजुद्दीन अब्दुल्लाह सत्तार रहमतुल्लाह अलैह जब हिन्द आये तो आप नक्कारा बजाया करते थे आप जब नक्कारा बजाते तो लोग उसकी आवाज़ सुनकर इकठ्ठा हो जाते तो आप कहते की आओ अगर कोई अल्लाह से मिलने का
तालिब(ख्वाहिशमंद)है तो आये में उसे अल्लाह से मिलवा दूं अल्लाह अल्लाह इतने बड़े मक़ाम पर फ़ायज थे सिलसिला ए सत्तारिया के बानी और क्यों न हो जो औलाद हो शेख़ सहाबुद्दीन सोहरवर्दी रहमतुल्लाह अलैह की और ख़लीफ़ा हो

हज़रत बा यजीद बुस्तामी रहमतुल्लाह अलैह का तो क्यों न मक़ाम ए गौस पर फ़ायज हो।

(नोट--) यहां पर शेख़ सिराजुद्दीन अब्दुल्लाह सत्तार रहमतुल्लाह अलैह का ज़िक्र इसलिए किया गया है क्योंकि आप सत्तारी सिलसिला के बानी है जिस सिलसिला से हिन्द में दीन **का** बहुत काम हुआ है इसीलिए अज़ीज़ों आप को ये समझना आसान हो गया कि सिलसिला ए सत्तारिया कितना मोतबर और बुलन्द व बाला सिलसिला है।सूफिया फरमाते हैं कि हिन्द में इस्लाम फैलाने में इन 6 सिलसिले की बहुत बड़ी कुर्बानी रही है।

1-सिलसिला ए कादरिया

2-सिलसिला ए चिश्तिया

3-सिलसिला ए नक्शबंदिया

4-सिलसिला ए सोहरवर्दीया

5-सिलसिला ए सत्तारिया

6-सिलसिला ए ओवेशिया

सिलसिला ओवेशिया का ज़िक्र इसी किताब में हज़रत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह के उनवान पर कर आया हूँ)

अली उस सानी

वैसे तो ये बात हर मोमिन जानता है कि मर्तबे में सीरत में सूरत में इबादत में रियाजत में शुजाअत में सखावत में इमामत में इल्म में अदब में फ़िक़्ह में उसूल में कोई भी शख्श दामादे मुस्तफ़ा सरताजे ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा अमीरूल मोमिनीन मौलाए क़ायनात हज़रत अली करमल्लाहु वजहुल क़रीम का सानी नही हो सकता।आप ने पहले भी पढ़ा है कि एक बार हज़रत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह ने ख्वाहिश की थी कि मुझे अली के जैसा बना दिया जाए लेकिन जवाब आया था नही क़ायनात में अली दो नही होंगे फिर उनकी खुशबू आपको अता हुई जिससे उन्हें बू अली कहा जाने लगा।

लेकिन यहां पर आखिर आपको अली उस सानी क्यों कहा जाता है इस पर ध्यान देना है और समझना है।

दरसअल जिस तरह से नबी क़रीम सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम ने मौलाए क़ायनात को को डायरेक्ट इल्म अता

किया था ठीक उसी तरह आपको भी नबी क़रीम ने डायरेक्ट इल्म अता किया था।

नबी ने इल्म अता किया

दरसअल आप जब तालीम हासिल कर ही रहे थे कि आपके उस्ताद अल्लामा इलमुद्दीन अलैहिर्रहमा का इंतेक़ाल हो गया जिसके बाद आपको हमेशा ये सोच व फिक्र रहती कि आख़िर मेरे उस्ताद ने कौन कौन से इल्म अभी मुझे नही सिखाये हैं।एक दिन आप रात में सो रहे थे कि सैयदुल अम्बिया ताजदारे मदीना हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने ख़्वाब में आकर कहा नवासे वजीहुद्दीन फिक्र न करो हमने तुम्हे हर उस चीज़ का इल्म अता किया है जो तुम और तुम्हारे उस्ताद भी न जानते थे।और ये कहकर उन्होंने एक कागज आपको दिया और कहा अगर क़ोई पूछे कि तुम्हारे पास कितना इल्म है तो तुम ये लिस्ट याद करके उसे बता देना तो ये वो वाकिया था जिसके बाद से आपके सीने में इल्म का समंदर ठहाठे मारने लगा था।आपके इल्म की तूती बोलने लगी थी क्यों न हो जब दादा बाबुल इल्म हो और नाना मदीनतुल इल्म तो बेटा इल्म का समंदर क्यों न हो--?

आपका खानदान और हिन्द में आमद

आप के जद्दे अमजद यमनी है जिसके बारे में नबी क़रीम ने फ़रमाया है कि यमन वलियों का शहर है और शाम नबियो का।यमन में मौलाए क़ायनात रजिअल्लाहू तआला अन्हु गवर्नर बनकर गए थे जहां लाखों यमनी ने उनके हाथ पर इस्लाम का दामन थामा था।आपके जद्दे अमजद में सैयद बहाउद्दीन अलैहिर्रहमा यमन से मक्का गए वहाँ रहकर दीन की तब्लीग करने लगे कुछ दिन बाद हुक्म हुआ कि हिन्द की तरफ जाओ फिर वहां से हिन्द तशरीफ़ लाए।

खानदानी पशमंजर

आपके जद्दे अमजद अदालत में जज होते थे यानी क़ाज़ी क्योंकि उस वक़्त जज बनने के लिए दुनियावी तालीम की बजाय दीनी तालीम हासिल करनी पड़ती थी।उनके बेटे सैयद अताउद्दीन अल्वी अलैहिर्रहमा मस्जिद में इमाम थे।उनके बेटे सैयद इमामुद्दीन अल्वी अलैहिर्रहमा और उनके बेटे हज़रत सैयद नसरुल्लाह अल्वी अलैहिर्रहमा उस वक़्त शहर के क़ाज़ी भी थे।उस वक़्त क़ाज़ी का मक़ाम बहुत बड़ा होता था।

तालीम(शिक्षा)

जब आप 4 साल के हुए तो रस्मे बिस्मिल्लाह अदा हुई और इब्तिदाई तालीम शुरू हुई।5 साल बाद आपने क़ुरआन मज़ीद हिफ़्ज़ कर लिया।उस दौर में घर की जुबान फारसी थी क़ुरआन हिफ़्ज़ करने के बाद आपने आला तालीम की ख्वाहिश की फिर आपने चचा अल्लामा सैयद शमशुद्दीन अहमद अलैहिर्रहमा और मामू से तालीम हासिल की क्योंकि आपका सारा घराना इल्मी दबदबे वाला था।होश सम्भालने(बालिग होने के बाद)के बाद शरीयत पर अमल करना शुरू कर दिया।

इल्मी दबदबा

आपको 60 से ज्यादा उलूम आते थे।आपने 24 साल की उम्र तक इल्में दीन सीखा है।जब आपने तालीम मुक़म्मल कर ली और 60 से ज्यादा उलूम पर अपना क़ब्ज़ा कर लिया तो आपने मदरसा आलिया अल्विया की बुनियाद रखी।आपने अपनी ख़ुद की ज़मीन पर मदरसा क़ायम किया।आपके इल्मी दबदबे को तस्लीम करते हुए गुजरात के उलेमा ने आपक़ो मुफ्ती का खिताब दिया।यानी इससे आपको ये इख्तियार हो गया कि 24 साल के नोजवान के फतवे को सारे गुजरात को मानना पड़ेगा।

(नोट--) अज़ीज़ों यहां मुफ्ती ख़िताब का देने का मतलब ये है कि उस दौर में मुफ्ती की बड़ी इज्जत और अजमत हुआ करती थी क्योंकि वो हक़ीक़ी मुफ्ती हुआ करते थे इल्म का समन्दर हुआ करते थे शरीयत पर चलने वाले हुआ करते थे आजकल के मुफ्ती की तरह नही आजकल ये अलक़ाब तो हर गाँव मे सुनाई देता है लेकिन इनमें और उनमें फर्क होता है और वो फर्क एक कम फ़हम इंसान भी महसूस कर सकता है)

जब आपने मदरसा क़ायम किया तो वहां बड़े बड़े उलेमा फुकहा की आमद होने लगी।लाहौर से पढ़ने के लिए बच्चे आये।आपने 80 हज़ार तालिब इल्म को आलिम बनाया है क़ुरआन का हाफिज़ बनाया है।

अज़ीज़ों यहाँ से मर्तबा देखो अल्लाह वालो का

मेरे रसूल की हदीस है कि

"तुम सब में सबसे बहतर वो शख्श है जो क़ुरआन सीखे और दूसरों को सिखाए"

यहां तो आप की जात ने 80 हज़ार को क़ुरआन सिखाया है अल्लाह अल्लाह तो आपकी शान क्यों न बुलन्द हो क्यों न आपका तज़किरा तज़किरा ए औलिया ए हिन्द में किया जाए।

आप मदरसे से बाहर सिर्फ 4 बार ही निकले हैं।

पीर-मुर्शिद की आमद

अगर औलिया अल्लाह की बात हो रही हो तो जबतक पीरों मुर्शिद का तार्रुफ़ नही होता है बात ता क़यामत तक कभी पूरी ही नही पायेगी।क्योंकि इंसान कितना ही नेक क्यों न हो,कितने ही ऊंचे हसब नसब से क्यों न हो कितना ही बड़ा आलिम क्यों न हो जबतक मुर्शिद की सोहबत नही मिलती वो हक़ीक़त से दूर ही रहता हे बगैर मुर्शिद की नज़रे क़रम से कोई मारफत और हक़ीक़त का लुत्फ पा ही नही सकता।

एक बार 948 हिजरी में हज़रत ख्वाजा गौस मुहम्मद ग्वालियरी सत्तारी रहमतुल्लाह अलैह ने मेराजनामा लिखा उस वक़्त आप गुजरात मे ही थे।जब उनका मेराजनामा शेख़

अली मुत्तक़ी अलैहिर्रहमा की नज़र के सामने आया तो उन्होंने कहा ये गलत है ये जिसने भी लिखा है वो आदमी मुसलमान ही नही है बादशाह को इसका क़त्ल कर देना चाहिए वरना एक नया फितना पैदा हो जाएगा।जब बात आप तक आई तो आप ख्वाजा गौस मोहम्मद ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह से मिलने चले गए।आप कमरे में दाखिल हुए पूरी रात गुज़र गई आप वहीँ बैठे रहे आपके भतीजे सैयद शाह हाशिम अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि आप कहते रहते थे कि अगर ख्वाजा से वो मुलाक़ात न होती तो सैयद वजीहुद्दीन अल्वी रहमतुल्लाह अलैह कभी मुसलमान न होते।अल्लाहु अकबर अज़ीज़ों ध्यान दो इतना पाए का आलिम जो गुजरात का मुफ्ती था जो इल्म का समंदर था जिसका हसब नसब हर नसब से आला था यानी हाश्मी खानदान का चश्मो चराग़ था उसके बावजूद अगर उन्हें मुर्शिद न मिलते तो वो मुसलमान न होते।यहां हम और आप 5 वक़्त की नमाज़े पढ़ने के बाद भी तकब्बुर से फुले नही समाते अल्लाह अल्लाह हम अपने अंजाम की फिकर करे और इश्क़ औलिया अल्लाह में डूब जाए वरना ज़िंदगी इतनी नही कि बार बार आपक़ो मौक़ा दे।

उस रात आपक़ो जो मारफत हासिल हुई वो पूरी ज़िंदगी नही हुई थी।अगली सुबह जब हुई तो शेख अब्दुल मुत्तकी अलैहिर्रहमा का फतवा जब आपके सामने आया तो आपने उसे पढ़ते ही फाड़ दिया जबकि वो सिर्फ आपका सिग्नेचर चाह रहे थे क्योंकि अगर उस फतवे पर सारे गुजरात के उलेमा सिग्नेचर कर देते और आपका सिग्नेचर न होता तो वो सिर्फ एक रद्दी के कागज़ से ज्यादा हेसियत न होती उस फतवे का ये मक़ाम आपके इल्मी एतबार से था।आपने फतवा फाड़ दिया और कहा सुन लो हम अहले काल है और वो अरबाबे हाल हैं।उनके इस जुमले से सारे इलज़ाम खत्म हो गए सब आपके फैसले से खुश थे।तभी शेख़ अली मुत्तक़ी अलैहिर्रहमा ने आपक़ो मुजद्दीद कहा।

बचपन और तक़वा

जब आप छोटे थे तो एक दिन आपने दूध नही पिया माँ परेशान हो गई अगले दिन फिर आपने दूध नही पिया तो उन्होंने वज़ू किया जैसे ही वजू करने के बाद उन्होंने दूध पिलाया आपने फौरन दूध पी लिया।अब उन्होंने आपको आज़माने की नीयत से फिर वजू नही किया फिर आपने दूध नही पिया जब उन्हें

यक़ीन हो गया कि जबतक में वज़ू न कर लूं मेरा बेटा दूध नही पीता है इसीलिए खानदान में आपको सब बहुत मानते थे।

घर का खाना छोड़ दिया

आप शरीयत के पाबन्द थे।हराम हलाल का ख़्याल रखते थे।एक बार आपने 2 महीने घर का खाना नही खाया।जब भूख लगती आप जंगलो मे चले जाते और घास पत्ते खा लेते जब वालिद ने देखा तो उन्होंने कहा बेटे इतना कमज़ोर हो गए हो क्या बात है खाना क्यों नही खाते हो आपने जवाब दिया अब्बा जान आप शहर के क़ाज़ी(जज) है आपका दबदबा अवाम पर है आपको पूरा गुजरात जानता है मुझे शक है कि जब आपका खादिम बाजार से सब्ज़ी लाता है तो शायद आपके दबदबे और ओहदे की वजह से वो पैसा न लेता हो और हम अंजान में हराम लुकमा खाते हो इसी डर से में घर का खाना नही खाता हूँ।बेटे का जवाब सुनकर वालिद साहब मुस्कुराये और कहा बेटे अगर में हराम और हलाल लुकमे पर ध्यान न देता होता तो अल्लाह मुझे तुझ जेसा नेक सालेह बेटा न अता फरमाता।

आप आखरी वक़्त में बहुत कमज़ोर हो गए थे।एक दिन आपने सोचा अब कल से में हदीस नही पढ़ाऊंगा क्योंकि उम्र बहुत ज्यादा हो चुकी थी उसी रात आपक़ो नबी क़रीम की ज़ियारत

हुई और कहा ए नवासे तुम जब हदीस पढ़ाते हो तो हम तुम्हारे हल्के मे बेठकर सुनते हैं सुबह हुई तो आप रोने लगें और उसके बाद से आप जबतक बज़ाहिर ज़िंदा रहे आपने खुद हदीस पढ़ाई बड़े शोक से आप हदीस पढ़ाते थे।जब आपका इंतेक़ाल हुआ तो सारा गुजरात सदमे में था।आप के जनाज़े में एक सैलाब था हर किसी की यही ख्वाहिश थी काश में एक बार नायब ए गौसे आज़म के जनाज़े को कांधा दे सकूँ लाखो के मजमे के बीच से आशिके रसूल का जनाज़ा जा रहा था आज भी आपके आस्ताने से लोगो को फेज़ मिलता है और ताक़यामत मिलता रहेगा।

सैयद वजीहुद्दीन अल्वी रहमतुल्लाह अलैह एक नज़र में

1--आप कहते रहते की ख्वाज़ा गौस मोहम्मद ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह ने मुझे खुदा तक पहुँचाया है।

2--शाह मुहद्दिस अब्दुल हक़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं कि जब में गुजरात मे रुका तो मे भी उनसे मिलने गया मेने उन्हें वली ए क़ामिल पाया और आप रियाज़त बहुत करते थे ।

3--मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी अलैहिर्रहमा ने अपनी किताब मुन्तख़बुत तवारीख में लिखा है कि शायद ही कोई

किताब बची हो जिसकी शरह या हाशिया न लिखी हो और आप जिसके हक़ में दुआ करते थे वो फौरन पूरी हो जाती थी।

4--आपने सिर्फ 4 बार मदरसे से बाहर अपने कदम निकाले हैं वरना आप हमेशा मदरसे में ही रहते और तालीम सिखाते रहते।

5--शेख़ अली मुत्तक़ी अलैहिर्रहमा ने आपको मुजद्दीद कहा।

6--आप कहते रहते थे कि ज़ाहिर शरीयत पर ऐसी नज़र होनी चाहिए जैसी शेख अब्दुल मुत्तक़ी अलैहिर्रहमा की है और हक़ाएक़ पर एसी नज़र होनी चाहिए जैसी हमारे मुर्शिद ख्वाज़ा गौस मुहम्मद ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह की है।

7--आपक़ो 60 से ज्यादा उलूम आते थे 80 हज़ार तलबा को आपने हाफिज़/आलिम बनाया है।

8--आपके जद्दे अमजद यमन से हिन्द आये थे।

9--आपका आस्ताना हिंद के शहर गुजरात मे है।आप का सिलसिला सत्तारिया है।

10--आप एक वली ए क़ामिल,क़ुतुब ए गुजरात,मुजद्दीद, मुहक़्क़ीक़ है ताक़यामत तक आप ज़िंदा रहेगें।

शाह मुहद्दिस अब्दुल हक़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह

जब भी कहीं पर लफ़्ज़े मुहद्दिस का जिक्र हो तो एक नाम ज़हन में गर्दिश करता रहता है और वो नाम है हज़रत अल्लामा शाह मुहद्दिस अब्दुल हक़ देहलवी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह का है।

विलादत,नाम,नसब

आप की विलादत 1551 ईस्वी दिल्ली में हुई।आपके बचपन का नाम अब्दुल हक़ था।

नसब

आप हज़रत आगा मुहम्मद तुर्क बुखारी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद में से हैं।आपके वालिद का नाम हज़रत अल्लामा सैफ़ुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह था।आपके जद्दे अमजद आगा मुहम्मद तुर्क बुखारी रहमतुल्लाह अलैह जब बुखारा से दिल्ली आए थे उस वक़्त अलाउद्दीन खिलजी की हुकूमत थी।आगा मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह अदब और अस्करी निजाम में

बहुत माहिर थे आपने जब बुखारा से हिंदुस्तान के लिए हिजरत की उस वक़्त आपके साथ मुरीद और कुछ लोग भी आये थे सबको लेकर आप गुजरात आये और क़याम किया। एक रिवायात के मुताबिक अल्लाह ने आपको तकरीबन 100 औलादे अता की थी जिसमे 99 बच्चे इंतेक़ाल कर गए थे और सिर्फ 1बच्चा बचा था जिसका नाम शेख मोइजुद्दीन था,उसके बाद शेख मूसा,और शेख फ़िरोज़ जो कि जंग में शहीद हो गए थे उनके बाद एक बेटा हुआ जिसका नाम शाद उल्लाह था।उनके दो बेटे थे जिनमें आपके वालिद हज़रत शेख सैफ़ुद्दीन अलैहिर्रहमा भी थे।

आपके वालिद

आपके वालिद का तज़किरा किये बगैर आपकी सवानेह का एक भी हिस्सा बयान नही किया जा सकता है और न ही समझाया जा सकता है।

आपके वालिद को शेख अमानुल्लाह पानीपती अलैहिर्रहमा जैसे आलिम और वली की सोहबत मिली है।आप एक सूफी/आलिम/मुत्तक़ी/परहेजगार/वली थे।जिसका असर आप पर भी पड़ा।आपके वालिद सुल्तानुल औलिया महबूबे सुब्हानी हज़रत सैयदना शेख अब्दुल कादिर जीलानी

रहमतुल्लाह अलैह के सच्चे आशिक थे।हर वक़्त उनका विर्द करते रहते थे।

आपका बचपन और तालीम

आपने बचपन मे अपने वालिद हज़रत सैफ़ुद्दीन अलैहिर्रहमा से तालीम हासिल की।सबसे पहले वालिद साहब से आपने तीन पारे पढ़े उसके बाद आपने खुद क़ुरआन पढ़ना शुरू किया और 3 महीने में क़ुरआन मुकम्मल किया

फिर आपने खत्ताती(लिखना) सीखनी शुर किया।क्योंकि उस दौर में आजकल की तरह प्रिंटिंग प्रेस नही थे लिहाजा मुसन्निफ़ को अपने हाथों से ही लिखना होता था।लिहाजा आपने ये हुनर भी सिर्फ 1 महीने में सीख लिया फिर जो किताब आपके वालिद को अहम लगती वो आपको शुरू का पढ़ा देते थे उसके बाद आप उसको पूरी पढ़ते और याद कर लेते।आप फरमाते हैं कि एक बार किताब पढ़ने के बाद वो किताब आपको हमेशा याद रहती।आपने सबसे पहली किताब दीवाने हाफिज़ और हज़रत शेख सादी रहमतुल्लाह अलैह की किताब बोस्तान पढ़ी।उस दौर में बच्चो को नज़्म बहुत याद कराई जाती थी लेकिन आपके वालिद ने आपको चन्द नज़्म याद करने के लिए दिए और आपने उनको चन्द

दिनों में याद कर लिया।फिर आपने मीज़ान, मिस्बाह,काफिया जैसी किताबो को याद कर लिया आप जिस किताब को पढ़ते सारी आपको याद हो जाती थी।

12 साल की उम्र में शरह शमशिया, शरह अक़ाएद जैसी किताबें याद कर लीं।उसके बाद जब आपकी उम्र 15 साल हुई तो आपको जो किताब मिलती आप पढ़ने लग जाते और याद कर लेते।

तालीम से लगाव

तालीम से लगाव ही है कि आप का तज़किरा आज भी हो रहा है और ताक़यामत तक आपका

नाम यूं ही अदब के साथ लिया जाता रहेगा।आप 18-18 घण्टे रोज मुसलसल पढ़ते रहते और कभी कभी तो 20-22 घण्टे तक आप पढ़ते रहते थे।मिया यूं ही नही कोई मुहद्दिस बन जाता है अल्लाह अल्लाह एक तो आपका ज़हन माशाल्लाह उसके बाद ये ग़ौरो फिक्र तो फिर क्यों न आपकी जात मुहद्दिस हो।आप तालीम में इतना मशगूल रहते की उलेमा फरमाते हैं कि कभी कभी सर पर जो पगड़ी बंधी हुई थी उसमें आग लग जाती और जबतक वो आग आपकी दाढ़ी में न लग जाती तबतक आपको मालूम ही न होता।हिंदुस्तान में इल्म

हासिल करने के बाद आप बुखारा और समरकंद भी गए फिर आप तालीम हासिल करने के बाद दिल्ली आ गए।

(नोट--) यहाँ ये ध्यान देना जरूरी है कि उन दिनों लोग चराग के सामने ही बैठकर पढ़ते थे इसीलिए आपक़ी पगड़ी में कभी कभी चराग की लपटों के छूने की वजह से ही आग लग जाती थी|

पीरो मुर्शिद

जब आप बुखारा और समरकंद से तालीम हासिल करके दिल्ली आए तो आपके वालिद साहब ने आपको कहा कि जाओ फतेहपुर सीकरी और हज़रत सैयदना शेख मुहम्मद मूसा गिलानी रहमतुल्लाह से बैत करके आओ।अज़ीज़ों यहाँ ये जरूर समझो कि आखिर क्यों आपके वालिद साहब ने आपको सैयदना शेख मुहम्मद मूसा गिलानी के पास ही भेजा जब की उस वक़्त दिल्ली और भी दीगर आसपास के इलाकों में एक से बढ़कर एक वली अल्लाह,मशायख की जमात थी तो उसके पीछे सबसे बड़ी वजह ये है कि आपके वालिद साहब सैयदना सरकार गोसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह के जानिसार आशिक थे और हज़रत सैयदना शेख़ मुहम्मद मूसा रहमतुल्लाह अलैह हुज़ूर गौसे आज़म सरकार रहमतुल्लाह

अलैह की औलाद में से हैं यानी आपके पीरो मुर्शिद हसनी/हुसैनी सादात हैं।इसलिए आपके नाम मे क़ादरी लगा रहता है।

वालिद साहब का आखरी वक़्त

आपके वालिद हज़रत सैफ़ुद्दीन अलैहिर्रहमा आखरी वक़्त में क़ुरआन की बहुत तिलावत करते थे जब किसी सूरह की आयत में अज़ाब का तज़किरा होता तो वो ज़ोर-ज़ोर से रोने लगते और जब कही पर अल्लाह की रहीमी का ज़िक्र होता है उसकी समदानियत का ज़िक्र होता तब आप मुस्कुरा देते। जब आपका आखरी वक़्त आया तो आपने अपने बेटे हज़रत शाह मुहद्दिस अब्दुल हक़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह को बुलाया और क़ुरआन सुनना चाहा।फिर आपने वालिद साहब को क़ुरआन सुनाया उसके बाद उनको सुकून मिला फिर उनकी जुबान से एक जुमला निकला जो यूं था

"में करीम के पास आया हूँ न तोशा है न नेकी है और तोशा लेकर क्यो जाए तो जब वो क़रीम है तो तोशा लेकर जाने से उसकी बड़ाई कम हो जायेगी"

फिर आपके वालिद साहब ने आखरी जुमला अदा किया और दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया

"मेरा रब अल्लाह है,मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहूँ अलैही वसल्लम मेरे नबी और रसूल है मेरा दीन इस्लाम है और मेरे शेख़ अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह हैं"

(नोट-) जीलानी को गिलानी भी पढ़ा जाता है|

हज का इरादा

जब आपकी उम्र 31 साल थी तो उस वक़्त दिल्ली में हज़रत शेख़ इस्हाक़ सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह दीन की तब्लीग कर रहे थे आप उनकी महफ़िल में भी जाकर बैठते थे।उस वक़्त आप बहुत मायूस रहने लगे थे जिसकी दो वजह थी एक तो आपके रहबर आपके उस्ताद आपके वालिद हज़रत सैफ़ुद्दीन अलैहिर्रहमा का इंतेक़ाल हो गया था और दूसरा उस वक़्त हिंदुस्तान के हालात बहुत खराब थे।दीने अकबरी जैसा फितना उस दौर में ही सर उठा चुका था।आपने अपनी वालिदा से हज पर जाने की इजाजत माँगी तो उन्होंने कहा ठीक है लेकिन एक वायदा करो कि किसी तीसरे मुल्क नही जाओगे आपने कहा नही जाऊंगा अम्मी जान उसके बाद आप गुजरात गए लेकिन तबतक पता चला कि पानी का जहाज जा

चुका है क्योंकि उन दिनों पानी के रास्ते से ही लोग हज पर जाते थे।फिर जब आप पहले हज पे नही जा सके तो आपकी मुलाकात गुलज़ार ए अबरार के मुसन्निफ़ से हुई।तबकाते अकबरी के मुसन्निफ़ मिर्जा निजामुद्दीन के घर अहमदाबाद में रहे उसके बाद सैयद वजीहुद्दीन अल्वी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह से आपने मुलाकात की और शहबाज़ ए लामकानी मीर ए नूरानी शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुअल्लाह अलैह पढ़ने की इजाजत ली।

पहला हज

1588 ईस्वी में जब आप हज के लिए निकले तो जिस जहाज में आप सफर कर रहे थे उसमे एक दीवाना जो एक कौन कौन में बैठा "या शेख अब्दुल कादिर,या शेख़ अब्दुल कादिर का विर्द कर रहा था।उसे देखकर आप बहुत खुश हुए क्योंकि आप और आपका खानदान गौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह का शैदाई आशिक था।

मक्का शरीफ में आमद

जब आपकी आमद मक्का शरीफ में हुई तो उस वक़्त शेख अब्दुल वहाब मुत्तक़ी रहमतुल्लाह अलैह के इल्म व तक़वे की तूती बोलती थी।मक्का के बड़े बड़े उलेमा इनसे हदीस सीखते

और पढ़ते।जब आपने उनके बारे में सुना तो आप उनकी बारगाह में चले गए आप की मोहब्बत शेख से बढ़ती जा रही थी फिर रमज़ान में आपने वहीँ पर एतिकाफ किया फिर जब हज का महीना आया आपने उन्ही के साथ हज किया उसके बाद शेख़ अब्दुल वहाब मुत्तक़ी रहमतुल्लाह अलैह ने आपको एक हुजरा दिया जिसमें रहकर आप मुशाहिदा,मुजाहिदा और अमल करते रहे आपसे मिलने के लिए शेख़ हफ्ते में एक दिन जाते और चले आते।

नूरानी ख्वाब

नूरानी ख्वाब से मुराद उस ख्वाब की जिसमें मोमिन अपने प्यारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का दीदार करे।और आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की हदीस मुबारक भी है कि

"जिसने ख्वाब में मुझे देखा उसने मुझे ही देखा क्योंकि शैतान **हर शक्ल में आ सकता है सिवाय मेरे**"

एक दिन आपको नबी क़रीम का ख्वाब आया की हदीस पढ़ा रहे है और फिर दूसरा ख़्वाब आपको सरकार सैयदना मौला

इमाम हुसैन रजिअल्लाहू तआला अन्हु का ख्वाब आया कि आप दुश्मनो से जंग लड़ रहे हैं।उसके बाद आप नींद से बेदार हुए तो शेख को बताया ख्वाब सुनकर शेख ने फ़रमाया कि तुमको हदीस की तालीम लेनी है और हिन्द में जो लोग आज हदीस की बेहुरमती करने में लगे हैं उनसे इल्मी जंग करनी है।

हदीस की तरफ तवज़्ज़ो

इस नूरानी ख्वाब और शेख की पेशनगुई के बाद आप ने हदीस शरीफ को फिर से पढ़ना शुरू कर दिया आपने शेख अब्दुल वहाब मुत्तक़ी रहमतुल्लाह अलैह से तीन साल तक हदीस पढ़ी आपने सबसे ज्यादा मुस्लिम शरीफ पढ़ी उसके बाद आप एक हुजरे में बैठकर रियाज़त व इबादत करते रहे जब आपकी तालीम मुकम्मल हुई तो शेख ने आपको हिन्द वापिस लौटने को कहा।लेकिन आप ने ज़िद कर ली और कहने लगे में मदीना मुनव्वरा छोड़ कर नही जाऊंगा आप का इश्क़ आपको जाने नही दे रहा था और शेख का फर्ज उन्हें रुकने नही दे रहा था फिर आपने कहा अच्छा मुझे बगदाद तो चले जाने दो वहां की हाजरी करके चला जाऊँगा।शेख ने कहा हरगिज़ नही तुम शेख़ अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह से जिस क़दर मोहब्बत करते हो मुझे यकीन है कि तुम

वही रुक जाओगे और लौटकर कभी घर नही जाओगे और एक तो आपकी माँ की भी आखरी नसीहत भी थी कि बेटा किसी तीसरे मुल्क मत जाना क्योंकि वो भी जानती थी कि आप बगदाद पहुंचने के बाद कभी वापिस नही आएंगे ।उसके बाद जब आपको माँ की दी हुई नसीहत याद आई तो आप हिन्द वापिस आने को तैयार हुए जितने दिन आप मदीना मुनव्वरा में रहे आपने कभी जूते या चप्पल नही पहनी आप नंगे पैर ही वहाँ अदब के साथ बैठे रहते।फिर जब आप वहां से हिन्द के लिए रवाना होने लगे तो शेख ने आपको हुज़ूर गौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह का झुब्बा मुबारक अता किया अल्लाह अल्लाह ये आपके लिए शायद सबसे नायाब तोहफा था जिसे पाकर आप शेख के क़दमो में गिर गए क़दमबोशी करके हिन्द की और चल पड़े।

दिल्ली वापसी

फिर जब आप वहां से रवाना हुए तो 1591 में आप दिल्ली पहुंचे।यहाँ पहुंचकर आपने एक मदरसा और एक बहुत बड़ी लाइब्रेरी बनाई।जो उस वक्त दिल्ली की सबसे बड़ी लाईब्रेरी थी क्योंकि आप मक्का से अपने साथ बहुत सारी किताबे भी लाये थे आपकी लाइब्रेरी में बड़े बड़े उलमा आते जो किताबो

को ले जाते और पढ़कर वापिस कर देते फिर यही से आपने दीन की तब्लीग का काम शुरू कर दिया।

आपके कारनामे

आप रहमतुल्लाह अलैह इल्म व इश्क़ दोनो के समंदर थे।आपने 100 किताबें लिखी हैं जिसमें 60 किताबे बहुत ही मोतबर(विशेष) हैं और 40 रिसाले हैं।जिनमे कुछ मशहूर व मोतबर किताबें जैसे अखबारुल अख़्यार, फतुहुल ग़ैब,जज़्बुल कुलूब,तकमितुल ईमान,मिश्कात शरीफ का तर्जुमा आपने अरबी और फारसी दोनो ज़ुबानों में किया है।उस वक़्त हिन्द में फारसी ज़ुबान का बोलबाला था इसलिए आपने फारसी और अरबी दोनो ज़ुबान में तरजुमा किया है।आपने सरकार गौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की शान और तसव्वुफ़/अमल/अक़ाएद पर बहुत बड़ी बड़ी किताबे लिखी है।

अबुल फ़ज़ल फैज़ी

अबुल फजल फैज़ी जो उस वक़्त बादशाह अकबर के दरबार मे नवरत्न था उससे आपकी दोस्ती थी लेकिन जब वो कुफ्र के रास्ते पर चल पड़ा तो आपने फ़रमाया

"फैज़ी नफासत व बलाग़त ने मुमताज़ रोजगार तो था ही लेकिन अफसोस उसने कुफ्र और गुमराही में गिरकर बदबख्ती के निशान अपने जिस्म व किरदार पर लगा लिए अब मोमिनो के लिए उसका और उसकी जमात का नाम लेना मुनासिब नही"

(फेहरिस्तुत तवालीफ)

मुजद्दीद अल्फे सानी रहमतुल्लाह अलैह और आप

अमूमन हज़रात ये समझते हैं कि हज़रत शेख मुजद्दीद अल्फे सानी रहमतुल्लाह अलैह और आप के बीच इख़्तिलाफ़ था जबकि हक़ीक़त में ऐसा कुछ भी नही था।एक मुजद्दीद था तो दूसरा मुहद्दिस एक ने तौहीद को सामने रखकर काम किया है तो दूसरे ने रिसालत को दोनो के रास्ते अलग अलग लेकिन काम एक ही था।यहां ध्यान देने वाली बात ये है कि आप मुजद्दीद अल्फे सानी रहमतुल्लाह अलैह से 9 साल बड़े है।आप मे और मुजद्दीद अल्फे सानी रहमतुल्लाह अलैह में एक फ़र्क़ ये था तो आपने दरबार से दूर रहकर अकबर के फ़ितने की मजम्मत (विरोध) किया और मुजद्दीद अल्फे सानी रहमतुल्लाह अलैह ने दराबर में घुसकर अकबर के सामने उसे चैलेंज किया।लेकिन इसका मतलब ये नही की आप और

मुजद्दीद में इख्तिलाफ था लिहाजा अवाम को वैसे भी बड़ो के मसले पर चुप रहने का हुक्म है तो इस मामले में खुदा के लिए इन दोनों मुकद्दस हस्तियों पर अपनी जुबान बन्द ही रखे तो बहतर है।

हनफी से शाफई

एक बार आपके मन मे आया कि मेरे पेशवा सरकार गौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह हम्बली हैं तो में शाफ़ाई बन जाऊं तभी शेख़ अब्दुल वहाब मुतक़्क़ी रहमतुल्लाह अलैह ने इमाम ए आज़म अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित रहमतुल्लाह अलैह की शान में ऐसा लेक्चर दिया उस दिन से आपने कभी भी शाफई होने की सोची भी नही।

(नोट- हनफी -ये उसको कहते है जो इमाम ए आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह की मानने वाले होते हैं आप पहले इमाम माने जाते है

शाफई--ये इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के मानने वाले हैं इन्हें दूसरा इमाम कहा जाता है

हम्बली--ये तीसरे इमाम इमाम हम्बल रहमतुल्लाह अलैह के मानने वाले होते हैं सैयदना सरकार शेख अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह भी हम्बली हैं।

मालिकी--ये चौथे और आखरी इमाम इमाम मलिक रहमतुल्लाह अलैह के मानने वाले होते हैं।)

(मसलके आला हजरत--ये कोई नया मसलक नही है अगर कोई ऐसा सोचता है तो वो गलत है ये मसलके आज़म अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह का ही एक नक्शा(रूप) है ये इमाम ए आज़म के मसलक से हटकर नही है अगर कोई इसे नया मसलक समझ कर इसे फॉलो करता तो ये गुनाह ए अज़ीम है)

ख़ानक़ाह की तामीर

आपने 1611 में एक खानकाह बनाई जिसका नाम रखा ख़ानक़ाह ए कादरिया।जहां पर आपने हदीस,तसव्वुफ़,फ़िक़्ह ए हनफी,हुकुकुल इबाद पर उम्दा किताबे तहरीर की आपकी ज़िंदगी का एक एक लम्हा सुन्नते मुस्तफा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम पर अमल करते हुए गुजरा है आप एक क़ामिल वली

अल्लाह भी है तसव्वुफ़ पर आपने बहुत सारी किताबे लिखीं है।आपके तसव्वुफ़ की झलक यहां से मिलती है कि आप अहले बैत को बेझिझक अलैहिस्सलाम कहते थे।आप औलिया अल्लाह के आस्ताने पर जब भी जाते तो चप्पल उतार देते थे।1619 ईस्वी में आपका इंतेक़ाल हुआ लेकिन आपके काम ताक़यामत तक आपके इल्म व इश्क़ की गवाही देते रहेंगे।

मीर सैयद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 915 हिजरी में हुई आपका नाम मीर सैयद अब्दुल वाहिद था!

नसब

आपका शजरा ए नसब आला खानदान से मिलता है आप इमाम जैनुल आब्दीन रजिअल्लाहू तआला अन्हु के शहज़ादे इमाम जैद शहीद रजिअल्लाहू तआला अन्हु की औलाद में से हैं। इसीलिए आप को जैदी/हुसैनी सैयद भी कहा जाता है।

आपकी तालीम

आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपने घर पे ही इब्तिदाई तालीम हासिल की और दीन की तब्लीग में लग गए औऱ तसव्वुफ़ के रास्ते पर निकल पड़े आप तसव्वुफ़ बचपन ही से पसन्द करते थे और आपका खानदान मुबारक हमेशा से ही इल्म और

रूहानियत का शफ़्फ़ाफ़ आईना रहा है अल्लाह रब्बुल इज्जत का खास करम इस खानवादे पर रहा है कि हर वक़्त में इस खानदान से एक न एक नगीना जरूर मिलता रहा है जिससे मारफत व रूहानियत फ़ख्र कर सके आपकी शान बहुत ही निराली है आप का मक़ाम बहुत आला है।

बिलग्रामी

आप के नाम में बिलग्रामी लगा रहता है दरसअल आप बिलग्राम में रहने की वजह से आपके नाम मे बिलग्रामी लगा रहता है अब बिलग्राम शरीफ की अज़मत जानने के लिए इतना जानना जरूरी है कि आला हज़रत अजीमुल बरक़त इमाम अहमद रज़ा खान फ़ाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह के पीरो-मुर्शिद और उनका पीर खाना महरेरा शरीफ़ के सादात के जद्दे अमज़द बिलग्राम शरीफ से ही गये थे आज भी महरेरा शरीफ और मसौली शरीफ में आप के खानदान के लोग रहते हैं यानि की जितने भी जैदी सादात हिन्द के यूपी में है उनकी असल बिलग्राम शरीफ में है जिनमे फातहै बिलग्राम मखदूम सैयद मोहम्मद सुगरा रहमतुल्लाह अलैह सारे सैयदों के जद हैं।आप रहमतुल्लाह अलैह की शान और अज़मत

निराली है आप तक़्वे और परहेज़गारी के कायल थे।आप अपने वक़्त के इमाम ए शरीयत व तरीक़त थे।

नबी करीम से आपकी निस्बत और आपकी मोहब्बत

आप रहमतुल्लाह अलैह की निस्बत अपने जद्दे आला ताजदारे मदीना सैय्दुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम से आपकी मोहब्बत और निस्बत का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि एक बार मौलाना आजाद बिलग्रामी अलैहिर्रहमा दिल्ली में रुके हुए थे वहां उनकी मुलाकात सिलसिला ए चिश्तिया के अज़ीम बुजुर्ग शेख कलीमुल्लाह चिश्ती अलैहिर्रहमा से हुई दोनों बुजुर्गों में देर तक बात हुई तभी मौलाना आजाद बिलग्रामी अलैहिर्रहमा ने आप रहमतुल्लाह अलैह का तज़किरा छेड़ा तो शेख कलीमुल्लाह चिश्ती ने आप की बहुत तारीफ की और फरमाया कि मैने एक बार ख्वाब देखा की में मदीने शरीफ में हूँ प्यारे आक़ा अलैहिस्सलाम का दरबार सज़ा था मेने देखा कि आक़ा अलैहिस्सलाम किसी शख्श से मुस्कुरा कर गुफ्तगू कर रहे थे मेने सोचा कि आखिर ऐसा कौन खुशनसीब होगा जिससे ताजदारे आलम महबूबे खुदा शफकत और मोहब्बत

के साथ गुफ्तगू कर रहे हैं इतने में मेरे साथ एक बुजुर्ग थे वो बोल पड़े की ये कोई और नही बल्कि मीर सैयद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह हैं अल्लाहु अकबर।

मौत से डर लगता है

एक बार एक शख्श आपकी बारगाह में हाज़िर हुआ और उसने फ़रमाया कि में मौत से बहुत डरता हूँ कोई ऐसा वज़ाएफ़ बता दीजिए कि मौत का डर खत्म जो जाए आपने उससे फ़रमाया की जाओ आज से रोजाना जो हो सके सदका दिया करो और फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ नफिल भी अदा किया करो उसने ऐसा ही किया कुछ दिनों बाद वो शख्श आपकी बारगाह में हाजिर हुआ तो आपने पूछा क्या हुआ अब केसी हालत है उसने आपके क़दमो में गिरकर क़दमबोशी की और कहा हुज़ूर कल तक मौत से डरता था और आज मौत को गले लगाने का हर वक़्त मन करता है लेकिन ऐसा क्यों और कैसे हुआ--?आपने आखिर कौन सा जादू कर दिया।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया की जब बन्दा कहीं पर रहने के लिए अपना घर बना लेता है तो उसे वहां जाकर रहने का मन करने लगता है और जबसे आप सदक़ा करने लगे हो तबसे जन्नत में तुम्हारा घर तामीर हो गया है इसीलिए अब तुम्हे

मरने से डर नही लगता है क्योंकि अब तुम्हारे पास मरने के बाद रहने का ठिकाना हो गया है

शबा सनाबिल शरीफ

शबा सनाबिल शरीफ आपकी बहुत ही मोतबर किताब है जो आपकी शोहरत के लिए भी काफी जानी जाती है आप की शान व अज़मत बहुत ही निराली है आपकी शान में आला हज़रत अजीमुल बरक़त अलैहिर्रहमा ने अपनी किताब फतावा रिज़्विया में आपकी शान को 2 पेज में तसानीफ़ किया है जिससे आपकी शान का अंदाज़ा लगाया जा सकता है आप का नाम हम अहले तसव्वुफ ता कयामत तक अदब से लेते रहेंगे आज भी आपका मुबारक खानदान शाद व आबाद है और ये सिलसिला ता क़यामत तक चलता रहेगा।

शाह मुहिबबुल्लाह इलाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 2 सफर 996 हिजरी और अंग्रेज़ी केलेंडर के मुताबिक 1558 ईस्वी में सदरपुर जिला खैराबाद में एक अज़ीम खानदान में हुई थी उस वक़्त मुगल बादशाह अकबर की हुकूमत पूरे मुल्क पर थी।आपका नाम शाह मुहिबबुल्लाह था।आप चिश्तिया सिलसिला के अज़ीम बुजुर्ग हैं।मुगल बादशाह शाहजहां के दौर में आपकी विलायत के डंके हिन्द की सरजमीं पर बज रहे थे।आप वहदतुल वजूद के कायल थे।आपके वालिद का नाम शेख मुबारिज़ व दादा का नाम शेख पीर था।आपके पूर्वज हज़रत क़ाज़ी शुएब अलैहिर्रहमा जो हज़रत ख्वाजा फरीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह के दादा थे वो चंगेज़ खान के जुल्म से तंग आकर लाहौर चले और क़स्बा कसूर में रहने लगे उस वक़्त वो हिस्सा भी हिन्द में ही था।

नसब

आप का शजरा ए नसब ख्वाजा फरीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाहस अलैह से 23वीं पुश्त में जाकर मिलता है।

1--शेख मुहिबबुल्लाह इलाहाबादी अलैहिर्रहमा

2--शेख मुबारिज अलैहिर्रहमा

3--शेख पीर अलैहिर्रहमा

4--शेख बड़े अलैहिर्रहमा

5--शेख मते अलैहिर्रहमा

6--शेख रजीउद्दीन अलैहिर्रहमा

7--शेख ओहदउद्दीन अलैहिर्रहमा

8--क़ाज़ी शेख अमज़दउद्दीन फैयाज़ अलैहिर्रहमा

9--शेख हाजी जमीलुद्दीन अलैहिर्रहमा

10--शेख रफीउद्दीन अलैहिर्रहमा

11--शेख मुहिबबुल्लाह फैयाज़ अलैहिर्रहमा

12--हाज़ी शेख रुस्तम अलैहिर्रहमा

13--हाज़ी शेख हबीबुल्लाह

14--हाज़ी शेख इब्राहिम अलैहिर्रहमा

15--क़ाज़ी शेख अलाउद्दीन फैयाज़ अलैहिर्रहमा

16--शेख इमाम क़ासिम अलैहिरहमा

17--क़ाज़ी शेख अब्दुल रज्जाक अलैहिर्रहमा

18--शेख अब्दुल कादिर अलैहिर्रहमा

19--हाज़ी शेख अबुल फतेह अलैहिर्रहमा

20--शेख अब्दुस्सलाम अलैहिर्रहमा

21--शेख खिज्र फ़ैयाज़ अलैहिर्रहमा

22--शेख सहाबुद्दीन गंज इल्म अलैहिर्रहमा

23--हज़रत ख्वाजा फरीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह।

रसूल ए करीम का ख्वाब में दीदार

प्यारे आक़ा करीम को ख्वाब में देखने की सआदत कई औलिया अल्लाह को हासिल हुई है आक़ा रसूल्ल्लाह की हदीस मुबारक़ भी है कि

" जिसने ख्वाब में मुझे देखा उसने यक़ीनन मुझे ही देखा क्योंकि शैतान दुनिया मे हर शक्ल में आ सकता है लेकिन मेरी शक्ल में नही"

(मिस्कात शरीफ--सफा नम्बर 396)

आप लाहौर में जिस मकान में रहते थे उसी मक़ान के एक भाग में एक पागल को रखा गया था एक रात उस पागल आदमी का इंतेक़ाल हो गया उसकी बीवी जोर जोर से रोने लगी आप ने जब उसका रोना देखा तो आप पर अज़ीब केफियत तारी हुई।ये देखकर आपके मन मे यह राज जानने की ख्वाहिश हुई आपके मन मे शैतान शक पैदा करता रहा आप के मन मे मानो सवालों का भूकम्प आ गया हो आप बेचैन हो उठे हर वक़्त बेचैन रहते एक रात को जब आप बहुत ही ज़्यादा परेशान हो गए तो नीदं आ गई ख्वाब में मदीने के ताजदार गरीबो के पालनहार आक़ा ए नामदार सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ख्वाब में जलवागर हुए और फ़रमाया ए

मुहिबबुल्लाह तुमने जो देखा है वही सच है और उसी पर कायम रहो।इसका असर ये हुआ की जब आपकी आँखे खुली तो आपकी सारी बेचैनी दूर हो गई उसके बाद आपने वो घर छोड़ दिया और दूसरा मक़ान किराया पर ले लिया अगले दिन फिर रात में आपने ख्वाब देखा कि कोई शख्श कह रहा है कि इसी मकान से थोड़ी दूरी पर हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम खड़े हैं और तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं आप फौरन दौड़ कर गए तो आपको सबसे पहले सैय्दुल औलिया इमामुल औलिया मौला अली क़रमल्लाहू वजहुल करीम की ज़ियारत हुई।फिर उसके बाद आक़ा अलैहिस्सलाम आपके सामने हाज़िर हुए और कहा "जा तू मक़बूलो में से है" आप बेहोश होकर गिर पड़े आंख खुली तो आप घर आये लेकिन अब आपके मन मे दुनिया की मोहब्बत हट गई थी आप सिर्फ अल्लाह की याद में डूब गए उसके बाद फिर वो रोज़ी रोटी के चक्कर मे अहमदाबाद आये और एक बार फिर ख्वाब देखा लेकिन इस बार आक़ा अलैहिस्सलाम का ध्यान अपनी और कम पाया तो आप गमगीन हो गए दिन रात फिर से यही सोचकर बेचैन उदास रहने लगे कि आखिर क्या खता हो गई है जो सरकार हमसे रूठ गए हैं आपका दिल चाहता था कि अब सबकुछ छोड़कर जंगलो की तरफ चला जाये यही सब

सोचकर आपका दिल इतना घबराया की आप फिर से सदरपुर चले आये और इबादत व रियाज़त में मशरूफ हो गए हर वक़्त तसव्वुफ़ के कायदों उसूलों पर चलते हुए ज़िन्दगी गुज़ारने लगे ज़्यादातर वक़्त आप फाका करते थे मुर्शिद की बातों पर अमल करते थे।

(अनफ़ासुलख्वास)

पीरो-मुर्शिद

आप रहमतुल्लाह अलैह जब भी औलिया अल्लाह की क़रामतो को सुनते तो झूठी बात कहकर टाल दिया करते थे हां लेकिन बाद में उस पर ताज़्जुब भी करते और सोचते रहते की क्या ऐसा मुमकिन है।एक बार किसी ने आपसे हज़रत अबू सईद गंगोही रहमतुल्लाह अलैह की क़रामतो के बारे में बताया तो आपने फ़रमाया कि में सोच भी नही सकता कि क्या कोई इंसान ऐसा भी कर सकता है फिर आपने उनसे मुलाकात करने की ठानी और फिर उनसे मुतासिर होकर बैत कर ली आप अक्सर फ़रमाया करते थे कि इब्तिदा में में अपने मुर्शिद को न तो इतना बड़ा फ़क़ीर मानता था और इतना बड़ा दरवेश न ही मेरी उनमे उस तरह की अक़ीदत थी जैसी बाद में हुई हालांकि धीरे धीरे आप पर मुर्शिद का ऐसा असर हुआ

कि आप उनके कायल हो गए तस्व्वुर ए शेख में खो गए हर वक़्त यादे इलाही में मशगूल रहते बाद में आपसे खुद सैकड़ो क़रामते ज़ाहिर हुई हैं।

आपकी वो किताबे जो खानकाह में मौजूद है

आपने किताबे लिखी हैं जो खानकाह में आज भी सही सलामत मौजूद हैं उनकी लिस्ट कुछ इस तरह है

1--तर्जुमतुल किताब(अरबी)

2--शरह फुसूसुल हिकम(अरबी)

3--शरह फुसुसुल हिकम(फारसी)

4--मनाज़िर अखसुल ख्वास(फारसी)

5--अंफासुल ख्वास(अरबी)

6--अकाएदुल ख्वास(अरबी)

7--गायातुल गयात(फ़ारसी)

8--हफ्ते अहकाम(फारसी)

9--रिसाला ए तस्विया(अरबी व उर्दू)

10--शरह तस्विया (फारसी)

11--इबदतुल ख्वास(फारसी)

12--औरादे मुहिब्बी(फारसी)

13--रिसाला तौहीद कलमतुत तौहीद(फारसी)

14--रिसाला सेरे इलाही(फारसी)

15--रिसाला वजूद मुतलक़

वो किताबे जो खानकाह में नही है

आप रहमतुल्लाह अलैह की लिखी हुई वो किताबे जो आज खानकाह में मौजूद नही हहैं उनका तज़किरा यहाँ देखे

1--हाशिया तर्जुमतुल किताब(अरबी)

2--तरकुल ख्वास(फारसी)

3--इमालतुल कुलूब(फारसी)

4--मुफालीत आमा(अरबी)

5--सिररूल ख्वास(फारसी)

6--किताबुल मुबीन(अरबी)

7--मुरातिब वजूद(फारसी)

8--रिसाला इनाअतुल अख्वान(फारसी)

9--मोनिसुल आरफीन(फारसी)

आपकी किताबो में शेख मुहीउद्दीन इबनुल अरबी के इरशादो की तशरीह आप रहमतुल्लाह अलैह ने बहुत ही आसान जुबान में किया है जिससे आम से आम इल्म रखने वाला इंसान भी आसानी से समझ जाएं।

आपके खुल्फा

आपकी शान का अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि आप की खुल्फा की गिनती भी वक़्त के अज़ीम बुजुर्ग और आलिमे दीन में होती है आपके कुछ मशहूर खुल्फा का ज़िक्र यहां किया जा रहा है ध्यान दे

1--शेख ताजउदीन अलैहिर्रहमा

2--शाह मोहम्मद फय्याज अलैहिर्रहमा

3--सैयद मीर कबीर कन्नौजी अलैहिर्रहमा

4--शाह दिलरुबा अलैहिर्रहमा

5--मोहसिन फानी कश्मीरी अलैहिर्रहमा

6--क़ाज़ी सदरुद्दीन घासी अलैहिर्रहमा

7--क़ाज़ी यूसुफ अलैहिर्रहमा

8--क़ाज़ी अब्दुल रशीद अलैहिर्रहमा

9--शेख अहमद

(नोट--) यहां पर क़ाज़ी अब्दुल रशीद जो कि दूसरे बुजुर्ग है न कि रशीद अहमद गंगोही क्योंकि रशीद अहमद गंगोही के पीरो मुर्शिद शेख इम्दादुल्लाह मज़ाहिर मक्की है न कि आप रहमतुल्लाह अलैह|

आपकी औलादे

आपका खानदान मुबारक आज भी फल फूल रहा है।

1--शेख ताजुद्दीन अलैहिर्रहमा

2--शाह मोहम्मद सैफ उल्लाह अलैहिर्रहमा

3--शाह मोहम्मद हबीबुल्लाह अलैहिर्रहमा

4--शाह गुलाम हबीबुल्लाह अलैहिर्रहमा

5--शाह मोहम्मद खलील अलैहिर्रहमा

6--शाह मोहम्मद उबैदुल्लाह अव्वल

7--शाह मोहम्मद हबीब उल्लाह अलैहिर्रहमा

8--शाह मोहम्मद फ़ज़्लुल्लाह अलैहिर्रहमा

9--शाह मोहम्मद नेमतुल्लाह अलैहिर्रहमा

10-- शाह मोहम्मद उबैदुल्लाह सानी अलैहिर्रहमा

11--शाह मोहम्मद सैफुल्लाह सानी

12-- शाह मुफ़्ती मुहम्मद मुकररुब उल्लाह

दारा शिकोह क़ादरी से आपकी अक़ीदत

अज़ीज़ों हमे यहां ये ध्यान रखना है की दारा शिकोह क़ादरी अलैहिर्रहमा बादशाह शाहजहां के बड़े शहज़ादे थे फ़क़ीरों/सूफियों से बहुत मोहब्बत करते थे उन्होंने अपने दौर में कई खानकाहै बनवाई और मस्जिदों को तामीर कराया और

वक़्त के सेकड़ो नामवर हस्तियों से फेज़ लिया है आप भी उनसे बहुत अक़ीदत रखते थे।आपकी अक़ीदत इस शेर में भी दिख जाती है कि

ब हसब हर कसे बऊन रसद

जाके फ़रज़न्द मुर्तज़ा आमद

चूं दिले ताला रबूदर ओसत

नामें ऊ शाह दिल रुबा आमद

ब ज़हूर आयद अज़ क़रामते ऊ

उनचे अज़ जुमला औलिया आमद

दर तरीके हिदायतों इरशाद

आ मोहम्मद की हकनोमा आमद

चूं ज़बराए सूरतों मानी

अमरे खेरे चुनीबज़ा आमद

साले तारीख़ इं खजिस्ता मोक़ाम

मस्जिदे आरिफा खोदा आमद

आपकी इस शायरी से उनसे आपकी अक़ीदत समझी जा सकती है आपने इस दुनिया ए फानी को 30 जुलाई 1648 ईस्वी को अलविदा कहा लेकिन आज भी आपके चाहने वाले बड़े ही अक़ीदत से आपके दर पे हाज़री देते हैं और फेज़याब होते रहते हैं और ये सिलसिला ता कयमात तक चलता रहेगा।

हज़रत सैयदना अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 990 हिजरी और अंग्रेज़ी तारीख़ के मुताबिक 1592 ईस्वी में क़स्बा नरेला दिल्ली में हुई।आपका नाम अमीर अबुल उला जिसमे अमीर आपका मौरूसी लक़ब है और तख़ल्लुस इंसान है।आप मीर साहेब,सैय्यदना-सरकार-महबूब-ए-जल्ल-ओ-इला और सरताज-ए-आगरा वगैरह के ख़िताब से मशहूर हुए।आपके वालिद का नाम अमीर-अबुल-वफ़ा और वालिदा बेग़म बीबी आरिफ़ा थी इनके अलावा आपकी एक हमशीरा भी थीं।

नसब

वालिद की तरफ से आप हुसैनी सादात हैं आपका शजरा ए नसब इमाम जैनुल आब्दीन रजिअल्लाहू तआला अन्हु से मिलता है और वालिदा की तरफ से आप का शजरा ए नसब

हज़रत अबूबकर सिद्दीक रजिअल्लाहू तआला अन्हु से मिलता है।

शजरा ए नसब(वालिद)

वालिद की तरफ़ से आपका शजरा ए नसब इमाम जैनुल आब्दीन रजिअल्लाहू तआला अन्हु से मिलता है जो कुछ इस तरह है

सैयदना हज़रत मीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर अबुल वफ़ा रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर अब्दुस्सलाम रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर अब्दुल मलिक रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर अब्दुलबासित रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर तकीउद्दीन किरमानी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर शहाबुद्दीन महमूद रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर इमामुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर अली रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर अशरफ़ रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर अईजुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर शरफ़ुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर मुजतबा रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर गिलानी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर बादशाह रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर हसन रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर हुसैन रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर मोहम्मद रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर मोहम्मद रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर अली रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर हुसैन रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर इस्माईल रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर मोहम्मद रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना मीर अब्दुल्लाह बाहिर रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना इमाम ज़ैनुल आब्दीन रजिअल्लाहू तआला अन्हु

सैयदना सरकार मौला इमाम हुसैन रजिअल्लाहू तआला अन्हु

सैयदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली करमल्लाहु वज़हुल करीम

(हुज्जतुल आरफीन सफा नम्बर--57)

माँ की तरफ़ से आपका शजरा ए नसब

सैयदना अमीर अबुल उला रहमतुलल्लाह अलैह

सैयदना मख्दूमा बीबी आरिफ़ा रहमतुल्लाह अलैहा

हज़रत ख्वाजा मोहम्मद फ़ैज़ अलैहिर्रहमा

हज़रत ख़्वाजा अबुल फ़ैज़ अलैहिर्रहमा

हज़रत ख्वाजा अब्दुल्लाह अलैहिर्रहमा

हज़रत ख्वाजा उबेदुल्लाह अहरार अलैहिर्रहमा

हज़रत ख्वाजा महमूद अलैहिर्रहमा

हज़रत ख़्वाजा शहाबुद्दीन शाशी अलैहिर्रहमा

चार पुश्त बाद ख्वाज़ा मोहम्मद अल बगदादी से होता हुआ सैयदना ख़लीफ़ा ए अव्वल अमीरूल मोमिनीन हज़रत अबूबकर सिद्दीक रजिअल्लाहू तआला अन्हु से जाकर मिलता है।

(सिलसिलतुल आरेफीन व तज़किरतुल सिद्दीकीन)

जद्दे अमज़द की हिंदुस्तान आमद

हज़रत अमीर तकीउद्दीन किरमानी रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे सैयदना अमीर अब्दुलबासित अलैहिर्रहमा समरकन्द(उजेबेकिस्तान) के रहने वाले थे।समरकन्द में आपके खानदान के अफ़राद दौलत ओ सरवत और जाह-ओ-मन के अलावा शुजाअत-ओ-बहादुरी और ज़ोहदा-ओ-तक़वा के लिए मशहूर थे उनके दो फ़रज़न्द थे अमीर अब्दुल-मलिक और अमीर ज़ैनुल-आब्दीन,अमीर अब्दुल मालिक के साहबज़ादे यानी हमारे हज़रत सैयदना अबुल उला के जद्दे अमज़द सैयदना अब्दुस्सलाम समरकन्द से सल्तनत छोड़

कर करके मुगल वंश के बादशाह जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर के ज़माने में 963 हिजरी सन 1555 ईस्वी को अपने अहल-ओ-अहयाल के साथ लाहौर होते हुए हिंदुस्तान की सरजमीं पर आए जहां दिल्ली के क़स्बा नरेला में क़याम फ़रमाया।वहीँ पर आपकी विलादत हुई कुछ अरसा वहाँ रहने के बाद वहाँ से फतेहपुर सीकरी पहुंचे वहां बादशाह अकबर से मुलाकात हुई और उनकी ख्वाहिश पर वही अपनी क़यामगाह बनाई।

आपका बचपन

आप कमसिन ही थे कि वालिद साहब का इंतेक़ाल हो गया जहां उनके जिस्मे अतहर को फतेहपुर से दिल्ली ले जाया गया और वही मदरसा लाल-दरवाज़ा के करीब सुपुर्द-ए-ख़ाक किया गया लेकिन अब कोई वाकिफ़-कार बाकी न रहा कि निशान-ए-मज़ार बता सके।

वालिद ए मोहतरम में महरूम होने के बाद आपके दादा सैयदना मीर अब्दुस्सलाम आपसे बहुत मोहबत करते थे एक बार वो हज करने हरीमैन/शरीफैन गए जहां से लौट कर न आए और उनकी क़ब्रे अनवर जन्नतुल बक़ी में ही है।हज़ से पहले आपके दादा ने आपको नाना ख्वाजा फैज़ुल हसन

अलमारूफ़ मोहम्मद फ़ैज़ अलैहिर्रहमा के सुपुर्द कर दिया था अभी आप अच्छी तरह सिन्न-ए-शऊर को पहुंचे भी न थे कि नाना ने एक जंग में जाम-ए-शहादत नोश फ़रमाया इस तरीके से आपका खानदान बचपन ही से कई तरह के सदमो का शिकार होता चला गया लेकिन कहते हैं कि अल्लाह उन्ही को मक़ाम-ए-विलायत से नवाज़ता है जिन्हें सब्र-ओ-तहम्मुल के रास्ते से गुजारता है।

आपके नाना ख्वाजा मोहम्मद फैज़ अलैहिर्रहमा बंगाल के हाकिम मान सिंह की तरफ से निज़ामत के आला ओहदे पर फ़ायज़ थे आपकी तालीम व तरबियत नाना की निगरानी में शुरू हुई।आपके नाना न सिर्फ मुगल सल्तनत के ओहदे दार थे बल्कि तसव्वुफ़ के आला दर्जे पर फ़ायज़ दरवेश वली ए क़ामिल थे उन्ही की सोहबत से आप रहमतुल्लाह अलैह तेज़ी के साथ कमाल ए मारफत तक पहुँचे।

आप अपने नाना के ज़रिये फ़ंन ए सिपहगारी,तीरंदाजी, मुआमला-फहमी,रास्त गोई,खुश-
तदबीरी,इस्तिकलाल,शुजाअत, और जवां-मर्दी का बहुत जल्द आला नमूना बन गए।

(नजात-ए-क़ासिम-सफा नम्बर-15)

जहाँगीर के दरबार मे

आप अकबराबाद पहुंचे तो उस वक़्त मुगल सल्तनत का सुल्तान जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर का बेटा जहाँगीर तख्त पर बैठा।उधर आप अकबराबाद में थे और इधर जहांगीर के दरबार मे आपके हुस्नो-जमाल के चर्चे होने लगे एक रोज़ दीवान-ए-खास में जहाँगीर ने लोगो की आजमाईश की ख़ातिर नारंगी पे निशाना-बाज़ी रखा तो ख्याल हुआ कि हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह को बुलाऊँ तो आप वहाँ हाज़िर हुए चुनांचे आप का पहला निशाना चूक गया लेकिन दूसरा निशाना दुरुस्त हुआ आपकी इस सुबुक-दस्ती पर सब हैरान थे खुशी के मारे जहाँगीर ने एक जाम शराब का आपको बढ़ाया लेकिन आपने नज़र बचाकर शराब को आस्तीन में डाल दिया बादशाह ने गोशाई चश्म से देख लिया और क़बीदा होकर कहा कि ये खुद-नुमाइंयां मुझको पसन्द नही है वोनश-ए-शराब में बदमस्त तो बदमस्त तो था ही उसने फिर आपको दूसरा गिलास शराब का दिया पीने के लिए आपने फिर वैसा ही किया।ये देखकर बादशाह ने कहा क्या तुम गज़ब-ए-सुल्तानी से नही डरते हो--?बस ये सुनकर आपको जलाल आ गया और फ़रमाया में गज़ब-ए-सुल्तानी से नही डरता हूं बल्कि

में खुदा-ओ-रसूल से डरता हूँ ये कहकर ऐसे अंदाज़ में नाराए तकबीर कहा की मौजूद सारे लोग कांप गए और खुदा कि मर्ज़ी से दो शेर आपकी जुबान से अदा हुए और उन्ही दो शेर पढ़ते हुए आप दरबार से बाहर निकले

"ई हमा तम-तराक़ कुन-फ़यकुम

जर्रे-ई-नीस्त पेश-ए-अहल-ए-जुनूँ"

(अनफास-उल-आरेफीन-सफा नम्बर--22)

पीरो-मुर्शिद

ख्वाजा ए हिन्द सैयदना मोईनुद्दीन हसन चिश्ती संजरी रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से अपने अम्म-ए-मुअज़्ज़म हज़रत अमीर अबदुल्लाह नक्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह से मुरीद हुए वफात से पहले हज़रत अमीर अब्दुल्लाह नक्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह ने आपको अपना सज्जादानशीं मुन्तख़ब करके ख़िलाफ़त व इज़ाज़त से सरफ़राज़ किया।

आपको सिलसिला ए चिश्तिया की ख़िलाफ़त हज़रत ख़्वाजा बुजुर्ग से बराह ए रास्त(फ़ैज़-ए-उवैसी)थी जब कोई सिलसिला-चिश्तियां में बैअत होना चाहता था तो आप ख्वाज़ा बुजुर्ग के

बाद अपना नाम तहरीर फ़रमाते।हज़रत शाह हयातुल्लाह मुनअमी लिखते हैं कि

"मैंने दार-उल-खैर अजमेर में खादिमों के पास अगले वक़्त के शजरे सिलसिला ए चिश्तियां अबुल उलाइया के इसी तरह से लिखे देखे"

आपकी शायरी

आप एक बेहतरीन शायर भी थे।आपके बारे में मशहूर शायर सीमाब अकबराबादी लिखते हैं कि

"आप शायर थे एक रिसाल-ए-मुख़्तसर जो मसाएल-ए-फना-ओ-बक़ा पर मुश्तमिल है आपकी तसानीफ़ में मौजूद है इसके अलावा चंद मकतूबात और एक मुख़्तसर सा दीवान भी आपकी यादगार है।

(कलीम-ए-अजम सफा नम्बर 147)

आप शायरी में "इंसान" तखल्लुस रहता,आप फ़रमाते हैं

सररिश्ती-ए-नस्ब-ब-अली वली रसीद

इंसान तख़ल्लुसम शुद नामम अबुल उला

वहीँ आप अक्सर ये कलाम पढ़ा करते थे

इलाही शेवः-ए-मर्दांगी दह

ज़ना मर्दा दीन-ए-बेगांगी दह

(हुज्जतुल आरफ़ीन)

और कुछ लोगो का बयान है कि आप अक्सर ये शेर पढ़ा करते थे कि

जुदाई मबादा मर अज़ ख़ुदा

दिगर हरचे पेश आयदम शायदम

वहीं एक और शेर जो कि हर वक़्त आपकी ज़ुबान पर रहता था वो

"दर्दम अज़ यारस्त व दर मा नीज़ हम

दिल फिदाए ऊ-शूदा-ओ-जां नीज़ हम

(निजात ए क़ासिम)

एक और शेर जो आपको बहुत पसंद था

फ़ैज़-ए-रूहुल-कुदुस अर बाज़ मदद फ़रमाएद

दीगराँ हम ब कुनन्द आँ चे मसीहा मी कर्द

(मिरातुल-कौनेन)

महफिले शमा

आप महफ़िले शमा के बहुत शौकीन थे।वज़्द और शमा में अक्सर मशगूल रहते ज्यादातर वज़्द की केफीयत में रहते जब भी गायत-ए-ज़ज़बाही शौक़ में होते तो अक्सर शायरी करने लगते और शेर गुनगुनाते रहते।इशराक की नमाज़ के वक़्त 9 सफर उल मुजफ्फर 1061 हिजरी को आपने दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया जिसको हज़रत अमीर अकबराबादी ने कताए-ए-तारीख़-ए-रहलत कही है

दर सिन्न-ए-अलिफ व वाहिद व स्तीन

शूद मक़ामश मुक़ाम-ए-इल्लिय्यीन

याफ़्त तारीख-ए-दिल गमनाक

रफ्त-क़ुत्ब-ए-ज़मान ब आलम पाक

सूफी शेख़ सईद सरमद शहीद क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह

विलादत

आपकी विलादत 1590 ईस्वी में ईरान के शहर काशान में एक यहूदी घर मे हुई थी।ईरान के काशान में एक जगह है इसमेहांन जहां पर ईरानी यहूदियों की तादाद 25 से 35 हज़ार तक है।

ख़ानदानी पश्मन्जर और आपका पेशा

आपके ख़ानदान में सब ताजिर थे आप भी तस्वीर वगैरह बनाया करते जिनकी कीमत ईरान में कम मिलती थी एक दिन आपके मन मे आया क्यों न हिन्द चला जाये लेकिन आपको हिन्द के बारे में ज्यादा मालूम न था जब आपने हिन्द के बारे में पता लगाने की दिलचस्पी दिखाई तो काफी तहक़ीक़ क़रने के बाद ये पता चला की ज्यादातर वहाँ सूफिया का क़ब्ज़ा है अब आप सूफियो के बारे में जानने के लिए वही की एक ख़ानक़ाह में आने जाने लगे सूफिया के तौर तऱीके देखने लगे।एक दिन

आप ख़ानक़ाह की तरफ जा रहे थे कि रास्ते मे एक बुजुर्ग मिले और उन्होंने कहा तुम हिन्द चले जाओ और वहाँ जज़्बो की तिजारत करो।उसके बाद आप हिन्द आये।

हिन्द में आमद

आप समन्दर के जरिए ठठ्ठा बंदरगाह पर उतरे उसके बाद वही सराय में एक अच्छा सा कमरा ले लिया और रहने लगे उस वक़्त हिन्द में मुगल बादशाह शाहजहां की हुकूमत थी।आप अपना माल बेचने के लिए इधर उधर घूमते की कोइ ग्राहक मिल जाए।एक दिन घूमते घूमते नाच गाने के अड्डे पर चले गए जहां पर एक लड़के की आवाज सुनकर मदहोश हो गए।उसकी आवाज़ में जादू था।आप रोज वही जाते उसे सुनते एक दिन जब आप उसी जगह तो गए पता चला कि अब नाच गाने का वक़्त खत्म हो चुका है और वो लड़का अपने घर चला गया है।आप को बहुत बुरा लग रहा था पूरी रात आप को नींद नही आई फिर सुबह फ़ज़र के वक्त मस्जिद में अज़ान हुई जिसकी आवाज़ सुनकर आप की केफियत अजीब हो गई।आप मस्जिद की और बढे एक शख्स ने कहा आओ नमाज़ पढ़ते हैं आपने कहा में मुसलमान नही हूँ उन्होंने कहा

आओ कलमा पढ़ लो आप अंदर गए कलमा पढ़ा इस्लाम मे दाखिल हुए और तभी आपका नाम सईद रखा गया।

अभयचन्द और आप

आप ने जब कलमा पढ़ लिया तो वहाँ के हिन्दुओ को ये अच्छा नही लगा।उनमें से एक ब्राह्मण ने आपसे कहा कल आपकी दावत मेरे घर पर है उसके बाद ब्राह्मण घर गया वहां अपने लोगो को मिशन बताया कि किसी भी तरह करके इसे मुसलमान से फिर से यहूदी बनाना है।आप उसके घर पहुंचे सब आपको बहकाने की नाकाम कोशिश में लगे हुए थे इतने में दरवाज़ा खुला तो वही लड़का अंदर दाखिल हुआ जिसकी आवाज़ के आप दीवाने थे उसको देखते ही आप इसे देखते ही रह गए उन ब्राह्मण ने बताया ये हमारा बेटा है आपने कहा हाँ में इसकी आवाज़ का दीवाना हूँ ये सुनकर ब्राह्मण खुश हुआ कि चलो इसी बहाने से अब इसका ईमान बदलवाया जाएगा।अज़ीज़ों हमे ये ध्यान देना है कि आप ने उस लड़के की आवाज़ में कुछ और ही देखा और महसूस किया और जब हम ईरान के सूफियो की तारीख़ पढ़ते हैं तो हमे पता चलता है कि मंज़िल तक पहुँचने के लिए ज्यादातर सूफियो ने इश्क़ ए मज़ाज़ी का सहारा लिया है।आप अभयचन्द के कमरे में जाते

और कलाम लिखकर देते और वो उसे गाता और फिर ऐसा समा बनता की आप 3-3 दिन कमरे से बाहर नही निकलते आप सुनते रहते और वो गाता रहता।मालूम होता था कि मौलाना जलालुद्दीन रूमी रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत ख्वाज़ा शम्स तबरेज़ रहमतुल्लाह अलैह की केफियत आप दोनों के अंदर आ गई हो।जब मसला हद से ज्यादा बढ़ने लगा और ब्राह्मण को लगा ये तो उल्टा हो रहा है हम तो उसे यहूदी बनाने के लिए ये सब कर रहे हैं और वो तो मेरे बेटे को भी मुसलमान बना रहा है तो उन्होंने आप को मना कर दिया और कहा आज के बाद हमारे घर को मत आना उधर सराय के मालिक ने भी आपक़ो सराय से निकाल दिया फिर वहां के लोगो ने भी आपको वहां से निकाल दिया।

दिल्ली आमद और मज़्जूब

अभयचन्द जो आपका मुरीद था उसकी जुदाई में आपका हाल बुरा हो गया था।आपने अपने कपड़े फाड़ लिए फिर आप दिल्ली पहुंचे तो उस वक़्त बादशाह सहाबुद्दीन मोहम्मद खुर्रम शाहजहाँ था।

दारा शिकोह क़ादरी से अक़ीदत

दारा शिकोह क़ादरी बुजुर्गों से बहुत अक़ीदत रखता था।वो शाहजहाँ का सबसे बड़ा बेटा था।वो आपसे मुतासिर था आपकी शान क़ो समझता था।जब शाहजहाँ ने दारा शिकोह कादरी को वली अहद का एलान किया तो औरगंजेब आलमगीर बहुत नाराज हुए उन्होंने दारा शिकोह को कैद क़रा दिया और सारे भाई बहन को भी बंद करवा दिया।

औरगंजेब और आपकी शहादत

औरंगजेब आलमगीर उस वक़्त दारा शिकोह के करीबियों को क़त्ल करवाने की मुहिम चला रहै थे जब उसे आपके बारे में पता चला तो उन्होंने आपको भी दरबार मे बुलवाया जहां उलेमाओ की जमात पहले से मौजूद थी।अब आप पर मुकदमा शुरू हुआ।

1--सवाल--तुम नंगे रहते क्यों रहते हो शरीयत में इसका हुक्म नही है-?

1--जवाब--एक कपड़ा था किसी चोर ने चुरा लिया है इसलिए हम नंगे रहते हैं और हमे ख़बर तक नही होती कि हम नंगे हैं।

2--सवाल--तुम मेराज के मुनकिर हो जबकि ये क़ुरआन से साबित है लिहाजा तुम क़ुरआन के मुनकिर हो और क़ुरआन के मुनकिर को ज़िंदा रहने का कोई हक नही है--?

आपने कहा क्या सबूत है कि में मेराज का मुन्किर हूँ।

उलेमाओं ने आपकी रुबाई से 2 अशआर पढ़े जो आपने लिखे थे

"मुल्ला गो यद की बर फलक शुद अहमद

सरमद गो यद फलक ब अहमद शुद"

यानी आपने लिखा था कि मुल्ला कहता है कि आप मेराज़ की रात फलक पर गए जबकि में कहता हूँ कि सातों आसमान आपके सीने में हैं।

आपने कहा मेने तो तौहीद बचाया की क्योंकि जब अल्लाह की हद साबित हो जायेगी तो उसकी शान में कमी हो जायेगी क्योंकि अल्लाह तो ला महदूद है और मुल्ला उसकी हद 7 आसमान तक ही तय कर रहा है।

3--सवाल--आप आधा कलमा क्यों पढ़ते हो--?

3-जवाब--आपने जवाब दिया कि में अभी यही तक पहुंचा हूँ ।अब उलेमाओ ने आप पर शिर्क और बिदअत के फतावे लगा दिये।

आपके एक शागिर्द शाह असदुल्लाह ने कहा हुज़ूर पूरा कलमा पढ़ दीजिये और कपड़े पहन लीजिये और चलिए हम अलग चलते हैं आपने कहा असद शाह मंसूर का वाकिया पुराना हो गया आओ दिल्ली को नया वाकिया देते हैं।अगले दिन जामा मस्जिद के नीचे आपक़ो शहीद किया गया जैसे ही आपका सर धड़ से अलग हुआ आपने पूरा कलमा पढ़ा जिसे सुनकर सब दंग रह गए।आपका रोज़ा वहीँ पर है आपके बगल हरे भरे शाह रहमतुल्लाह अलैह का भी रोज़ा है जो आपके पीरो-मुर्शिद भी हैं आपने 324 रुबाइयाँ लिखी हैं।

सैयद शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अल बाँसवी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 1636 ईस्वी को उत्तर प्रदेश के जिला बाराबंकी के सूबा महमूदाबाद के गाँव रसूलपुर में हुई थी।

नाम,लक़ब

आप का नाम क़ुत्बुल अकताब मख्दूम उल आफाक सैयद शाह अब्दुर्रज्जाक अल बाँसवी क़ादरी हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह है।

नसब

आप हसब नसब के एतबार से आली और मोतबर हैं क्योंकि आप सादात घराने के चश्मों चराग़ हैं।

इबादत और मुजाहिदा

आप आधी रात को नहर के किनारे बरगद के दरख्त के साये में बैठ जाते और ज़िक्रे इलाही में मशगूल हो जाते।फजर की

नमाज़ के वक़्त वजू करके नमाज़ पढ़ते फिर वहीँ बेठकर इबादत करने में मशगूल हो जाते जब दिन का एक पहर निकल आता तो आप वहां से उठकर वापिस हुजरे में आते।

मुल्ला निज़ामुद्दीन अलैहिर्रहमा की आपसे अक़ीदत

मुल्ला निज़ामुद्दीन फिरंगी महली अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि शाह अब्दुर्रज्जाक साहब अफ़राद के मर्तबे पर फ़ायज़ थे जो कुतुब के मुकाबिल और हमपल्ला होता है वो लिखते हैं कि जब जब मैने उनके दस्ते मुबारक पर अपना हाथ दिया तो उन्होंने अपनी कुव्वते बातनी से मेरा इल्म वापिस ले लिया मेने अपने मन मे सोचा कि खुदा तक रसाई तो नसीब हुई लेकिन सारी ज़िन्दगी की मेहनत बर्बाद हो गई उसके बाद शाह साहब ने सारा इल्म वापिस लौटा दिया जिससे में बहुत खुश हुआ और मैने अल्लाह का शुक्र अदा किया।

(मलफूज़ शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़)

मुल्ला कमालुद्दीन अलैहिर्रहमा की बैत का वाकिया

मुल्ला कमालुद्दीन अलैहिर्रहमा अपने उस्ताद मुल्ला निज़ामुद्दीन अलैहिर्रहमा से कहते रहते कि आपने एक जाहिल इंसान से मुरीद होकर अपने इल्म की पेशानी को दागदार कर

लिया वो इरशाद फ़रमाते जिस वक्त तुम्हे शाह साहब अलैहिर्रहमा की रूहानियत का इल्म होगा तुम खुद ही मुतकिल हो जाओगे।जब उनकी ज़ाहिरी तालीम मुकम्मल हो गई तो उन्होंने मुर्शिद की तलाश शुरू की।एक जगह दौराने मुताला मुल्ला कमाल को कुछ शुबा(शक)पैदा हुआ इतना इल्म होने के बावजूद उन्हें कुछ समझ नही आ रहा था इसी फिक्र में थे कि नींद आ गई तो ख्वाब में देखा कि में अपने मसकन फतेहपुर के किनारे खड़ा हूँ अचानक एक सवार नमूदार हुआ तो मैने अपने साथियों से पूछा ये किसकी सवारी है जो इतनी शान ओ शौकत के साथ आ रही है उन्होंने जवाब दिया कि ये रसूल ए खुदा की सवारी है।ये आप रसूल ए आज़म के पास गए और कहा हुज़ूर मुझे खुसूसल हिकम के एक मक़ाम में शुबा पैदा हो गया जो किसी भी तरह दूर नही होता हुज़ूर ने दस्ते मुबारक उठाकर बाँसा की तरफ इशारा फ़रमाया।ये देखकर वो उठे तो वो समझ गए कि ज़रूर शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अल बाँसवी रहमतुल्लाह अलैह की तरफ इशारा है लेकिन गुरुर की वज़ह से तबियत को गवारा नही हुआ फिर आपने पता किया कि मेरे उस्ताद कहाँ है--? पता चला की वो भी उस वक़्त बाँसा में थे आपने सोचा लाओ आज उस्ताद से मिल लेता हूँ और शाह साहब से को भी देख लेता हूँ

ये सोचकर मुल्ला कमाल बांसा पहुंचे तो उनके उस्ताद ने कहा खूब आये हो आज हज़रत से भी मुलाकात हो जायेगी ये सुनकर मुल्ला कमाल ने गुरुर भरे लहज़े में कहा में आपसे मिलने के लिए आया हूँ हज़रत से मुझे कोई क़ाम नही है इतने में आप रहमतुल्लाह अलैह आदत के मुताबिक बरगद के दरख्त से इबादत से फारिग होकर आये और कहा कि मुल्ला निजामुद्दीन तुम अपना मसला पूछो में मोहिउद्दीन की सूरत में था जिसने फुसुस और फतुहात लिखी तुम जो पूछना चाहो पूछ लो उन्होंने आपसे मसला पूछा आपने दम भर में मसला हल फ़रमा दिया और वो फौरन आपके क़दमो में गिर गए और आपसे बैत हुए।

पीरो मुर्शिद

हज़रत सैयद अब्दुस्समद खुदानुमा रहमतुल्लाह अलैह आपके पीरो मुर्शिद हैं आप को बैत करके अपने पास ही रखा और राहे सुलूक तय कराई ख़िलाफ़त व इजाजत देकर रुखसत किया और फ़रमाया फ़क़ीर यहाँ रहता है आप जहां भी चाहो रहो आप को अपने मुर्शिद की रूहानी क़ुव्वत से इस तरह मुशाबिहत हो गई थी कि आप जो चाहते मुर्शिद से दरयाफ्त कर लेते उसके बाद आप शाहजहाँबाद दिल्ली से

आस्तानो पर हाज़री देते हुए बाँसा के लिए रवाना हुए जब आप चलने लगे तो एक बुज़ुर्ग ने नसीहत दी कि कभी पेटभर के खाना न खाना और ग़हरी नींद में न सोना और मुर्शिद को बदनाम मत करना।

आप वतन वापिस आये और इबादत व रियाज़त में मशरूफ़ हो गए अपनी बुज़ुर्गी के राज को पोशीदा रखते थे शोहरत आपको बिल्कुल भी पसन्द न थी।

आपकी शौहरत की वजह

एक बार एक अमीर के घर मुलाज़िम थे उस अमीर के मदरसे में पढ़ने वाले तुलबा आपस मे गुफ्तगू कर रहे थे की हुज़ूर नबी ए अकरम का ये मोजिज़ा मशहूर है कि एक कमरबन्द हुज़ूर की कमर शरीफ़ से गुज़र कर बाहर निकल आया था क्योंकि ये बात अक्ल से बाहर थी आप वही खड़े थे ये सुनकर कहा हुज़ूर का मोजिज़ा हरगिज़ क़ाबिले ताज़्जुब नही है उनमें से एक तालिब ए इल्म ने गुस्सा होकर आपको झिड़क दिया और कहने लगा तुम खाविंद हो तुम्हे इस का क्या इल्म जब बहस बढ़ गई तो आपने जलाल में आकर कहा मेरे हुज़ूर का मक़ाम तो बहुत आला है उनकी उम्मत के औलिया के गुलाम भी ये ताक़त रखते हैं कि कमरबन्द उनकी कमर से बाहर आ

जाये।तालिब ए इल्म ने कहा तो फिर आप ही ये दिखा दीजिये आप खड़े हुए और एक कम्बल को कमर के गिर्द लपेटा उस तालिब ए इल्म ने कम्बल अपने हाथ से पकड़ा आप बेतकल्लुफ बाहर हो गये इस पर वो कहने लगा हो सकता है कि आपने कम्बल ढीला बांधा है आपने कहा तू ही बांध लें उस तालिब ए इल्म ने इस बार कम्बल खुद अपने हाथों से बाँधा था और आप इस बार भी फौरन निकल गए अब वहां मौजूद लोग हैरान हो गये अमीर भी आपका गुलाम हो गया उस दिन से आपने मुलाज़िमत छोड़ दी और गोशानशीनी अख्तियार कर ली इस तरह आप की शौहरत अब हर तरफ फैलने लगी थी।

चाँद के दो टुकड़े होना

चाँद के दो टुकड़े करना ये हमारे नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का एक छोटा सा और मशहूर मोजिज़ा है ये करामत ज्यादातर वलियों से सादिर नही हुई है लेकिन शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अल बासँवी रहमतुअल्लाह अलैह की करामत में एक क़रामत ये भी है कि आपने भी चाँद के दो टुकड़े कर दिए।

(नोट--) यहाँ ये ध्यान रखना जरूरी है कि तसव्वुफ़ में हर वली किसी न किसी नबी के हमकदम यानि नक्शेकदम पर होता

है और हज़रत शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अल बांसवी रहमतुल्लाह अलैह अपने जद्दे करीम सैय्दुल अम्बिया व अस्फिया हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के हमकदम हैं|

ईरान के फ़ाज़िल का मसला हल किया

ईरान का एक फ़ाज़िल हिकमते फ़लसफ़ा का बहुत इल्म रखता था।एक बहुत क़दीम फ़सल्फा का कौल है कि आसमान और फलक में टूटफूट नही हो सकती यानी इस कौल के मुताबिक ये मतलब निकलता है कि क़यामत नही आएगी।जब ईरान के फ़ाज़िल ने ये पढ़ा तो परेशान हुआ आखिरकार उसने हिन्द आने का फैसला किया उधर वो आपके पास आने के लिए रवाना हुआ उधर आपने अपने खादिम से कहा खबरिया खबर देत है कि विलायती महमान आवत है।कुछ दिन बाद वो बाँसा शरीफ पहुंचा आपने उस का इस्तेकबाल किया और कहा पटका खोलकर आराम करो लेकिन उसने कहा जबतक मेरे मसले का हल नही मिलेगा तब मे यहाँ आराम नही करूँगा बार बार ज़िद करने पर आपने जलाल में आकर कहा दिखा दूं या बता दूं उसने कहा दिखा दीजिये सरकार आपने कहा बैठ जाओ और उसके सर पर अपनी मुबारक चादर डालकर कहा देख़ो उसने देखा कि

आसमान रेज़ा रेज़ा हो रहा है ये देखकर वो बेहोश हो गया चौथे दिन होश आया तो आपके दामन ए करम से वाबस्ता हो गया आपका गुलाम बन गया।

मौलवी मोहम्मद रज़ा की बैत

मुल्ला निज़ामुद्दीन फिरंगी महली अलैहिर्रहमा से उनके छोटे भाई मौलवी मोहम्मद रज़ा ने कहा कि आपने किस जाहिल पीर से बैत की है आप ये सुनकर खामोश रहे एक दिन मौलवी रज़ा ने कहा में बड़ा परेशान हूँ कि आखिर किसकी बैत करूं उन्होंने एक दुआ बताई और कहा ये दुआ पढ़कर रसूल ए खुदा की जानिब से सवाल करो जो हुक्म होगा उस पर अमल करना।मौलवी रज़ा ने रात में ख्वाब देखा तो उसमें आक़ा अलैहिस्सलाम ने शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अल बाँसवी रहमतुल्लाह अलैह की तरफ इशारा फ़रमाया वो मजबूरन बाँसा शरीफ गए और आपके हुजरे के बाहर खड़े होकर आपको आवाज़ दी आप बाहर आये तो उनको देखकर कहा तुम सुल्तानुल उलेमा कुतबुद्दीन अलैहिर्रहमा के शहज़ादे और में कहा जाहिल एक चश्म फ़क़ीर आप मेरे दरवाज़े पर क्यों आये है--?मौलवी रज़ा ने कहा में खुद नही आया हूँ बल्कि आक़ा अलैहिस्सलाम ने भेजा हे मुझे बैत करो आपने कहा तुम्हारा

नफ़्स बहुत सर्कस हे जबतक वो मुर्दा नही होगा में तुम्हे अपनी बैत में नही लूंगा मौलवी रज़ा ने कहा आप जो हुक्म देंगे में करूँगा आपने कहा तांगा के सारे असबाब रस्सी,अगाड़ी, पिछाड़ी अपनी पीठ पर लाद कर मेरे साथ लखनऊ चलो और फिरंगी महल में दाखिल हो तब में समझूंगा की तुम मेरी बैत के काबिल हो चुके हो उसके बाद उन्होंने वैसा ही किया फिर आप ने मौलवी रज़ा साहब को अपनी बैत में दाख़िल फ़रमाया।

आपके खुल्फा

मज़हर ए विलायत मोहम्मदी हज़रत शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अल बाँसवी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह अपने अहद में दायरे विलायत का नुक्त ए पुरकार थे बड़े बड़े शहबाज ए तरीक़त व शरीयत आपकी निगाहे व जज़्बो क़रामत के असीर थे।आपके खुल्फा में सैयद मीर इस्माईल वास्ती जैदी मसौलवी रहमतुल्लाह अलैह,मुल्ला निज़ामुद्दीन फिरंगी महली अलैहिर्रहमा ,मुल्ला कमालुद्दीन साहब अलैहिर्रहमा,मौलवी मोहम्मद रज़ा अलैहिर्रहमा आपके खुल्फा थे ये सारे हज़रात आपकी ही जुल्फों के असीर थे।आप रहमतुल्लाह अलैह की

बाँसा शरीफ के बगल महमूदाबाद में विलादत हुई जबकी बाँसा शरीफ़ आपका ननिहाल है।

मोहर्रम और ताज़िया से अक़ीदत

मोहर्रम के महीने में आप ताज़िया का बड़ा ऐहतराम करते थे ताज़िया के सामने नंगे पैर बैठ जाते थे और याद ए हुसैन में खुद को डुबो लेते आप की इमाम से निस्बत और मोहब्बत के वाकिये अगर लिखे जाए तो शायद ये किताब भर जाए लिहाजा सिर्फ इतना जान लेना जरूरी है कि आप की अक़ीदत ताज़िया से किस कदर थी आप ताज़िया का बड़ा एहतराम करते थे।

एक नज़र में

1--आपकी पैदाइश यूपी के जिला बाराबंकी के महमूदाबाद में 1636 ईस्वी में हुई।

2--आप हुसैनी सैयद हैं यानी वालिद की तरफ से आपका शजरा ए नसब सैयदुश शोहदा हज़रत इमाम हुसैन रजिअल्लाहू तआला अन्हु से जाकर मिलता है।

3--आपके मुर्शिद गुजरात के सैयद शाह अब्दुस्समद खुदा नुमा रहमतुल्लाह अलैह हैं।

4--आपको हुज़ूर शैखुल आलम रूदौलवी रहमतुल्लाह अलैह से भी बातनी फेज़ हासिल हुआ है।

5--सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह से भी आपको बातनी फेज़ मिला है।

6--आप सिलसिला ए कादरिया के अज़ीम बुजुर्ग हैं।

7--बाँसा आपका ननिहाल है जहां आज आपका आस्ताना शरीफ़ हैं।

8---सरकार ए मसौली रहमतुल्लाह अलैह आपके मुरीद व ख़लीफ़ा थे आपसे बहुत मोहब्बत रखते।

9--आपने इशारे से चांद के दो टुकड़े कर दिए थे आप रसूल ए करीम के हमक़दम थे।

10--आप ग़ैब ए इलहामी से केफीयत जान लेते थे और जो भी आपके पास आने वाला होता उसकी खबर आप खादिम को पहले से देते रहते थे।

11--आप ताज़िया का बहुत ऐहतराम करते थे।

12--अठासी साल की उम्र में 1724 ईस्वी में आपने बज़ाहिर इस दुनिया ए फानी को अलविदा कहा।

सैयदना मीर मोहम्मद इस्माइल मसौलवी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 1034 हिजरी को बिलग्राम शरीफ़ में हुई।आपके वालिद का नाम सैयद इब्राहीम सानी जैदी अलैहिर्रहमा है।

शजरा ए नसब

आपका शजरा ए नसब आला और मोअज़्ज़्म है क्योंकि आप ज़ैदी/हुसैनी सादात हैं।आप के जद्दे करीम में सबसे बड़ा नाम फातहे बिलग्राम हज़रत सैयद मोहम्मद सुगरा वास्ती रहमतुल्लाह अलैह का मिलता है।जो सादाते महरेरा के भी जद्दे अमजद हैं।आपका शजरा ए नसब कुछ यूँ है

सैयद मीर मोहम्मद इस्माइल अलैहिर्रहमा

सैयद इब्राहिम सानी अलैहिर्रहमा

सैयद शाह मीर अलैहिर्रहमा

सैयद शाह नियामतुल्लाह अलैहिर्रहमा

सैयद तैयब अलैहिर्रहमा

सैयद बदले अलैहिर्रहमा

सैयद हुसैन अलैहिर्रहमा

सैयद फ़ज़्लुल्लाह सनी अलैहिर्रहमा

सैयद मोहम्मद अलैहिर्रहमा

सैयद फ़ज़्लुल्लाह अव्वल अलैहिर्रहमा

सैयद अलाउद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयद इब्राहिम अव्वल अलैहिर्रहमा

सैयद नासिर अलैहिर्रहमा

सैयद मसऊद अलैहिर्रहमा

सैयद सालार अलैहिर्रहमा

सैयद मोहम्मद सुगरा अलैहिर्रहमा

बचपन और तालीम

आप बचपन ही से शोर शराबे को पसंद नही करते थे।इब्तिदाई तालीम घर पर हुई जिनमें हज़रत अल्लामा उस्तादुल मुहक्कीकीन मीर मोहम्मद तुफैल बिलग्रामी अलैहिर्रहमा से सीखी।तालीम की गरज से आप वक़्त के लखनऊ के सबसे मशहूर इदारे फिरंगी महल भी गए जहाँ से आपने आला तालीम हासिल की।अब जब आप ज़ाहिरी इल्म से फेज़याब हो चुके तो रूहानी इल्म के लिए मुर्शिद ए क़ामिल की तलाश में निकल पड़े।

पीरो-मुर्शिद

आप जब बज़ाहिर इल्म हासिल कर चुके तो मुर्शिद की तलाश में निकल पड़े क्योंकि औलिया अल्लाह का मामूल रहा है कि पहले वो तालीम की तरफ तवज़्ज़ो देते हैं और फिर तसव्वुफ़ की तरफ़।आप मुर्शिद ए क़ामिल की तलाश में घर से निकल पड़े उस वक़्त जिला बाराबंकी के करीब एक गाँव जिसका नाम बाँसा शरीफ़ है जहां आले रसूल क़ुत्बुल अकताब सैयद शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अल बाँसवी क़ादरी हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह थे जिनकी विलायत और बुजुर्गी का डंका बज रहा था आप भी उनकी खिदमत में हाजिर हुए।

मुर्शिद का गुस्सा और मौलाए क़ायनात का ख्वाब में दीदार

आप की बैत के ताल्लुक से सूफिया और उलेमा फ़रमाते हैं कि आप जब सैयद शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अल बाँसवी हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह के पास गए तो उनकी खिदमत करते रहते हर वक़्त उनके साथ रहने लगे एक बार सैयद शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अल बाँसवी रहमतुल्लाह अलैह चादर बिछाकर अज़कारे बातनी में मसरूफ थे कि आपने उनकी चादर खींच ली जिसपर उनको गुस्सा आ गया और कहा तुम न खुद कुछ करते हो और न हमे करने देते हो ये जुमला सुनकर आप बहुत रंजीदा हुए और आप उनके पास से वापिस चले आये उधर उसी रात में सैयद शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अल बाँसवी रहमतुल्लाह अलैह को इमामुल औलिया सैयदुल औलिया मौलाए क़ायनात करमल्लाहु वजहुल करीम का दीदार हुआ जिसमे मौलाए क़ायनात ने फ़रमाया सुनो मेरा बेटा तुम्हारे पास इल्मे बातिन सीखने गया था और तुमने मेरे बेटे को आज रंजीदा कर दिया जो कि तुम्हारे पास रूहानी इल्म के लिए आया था जब उन्होंने आँख खोली तो फौरन आपकी तलाश में निकल पड़े इधर आपने अपने बाबा मौलाए क़ायनात के हाथ पर बैत कर ली थी

उधर क़ुत्बुल अकताब आपको तलाश करते हुए आपके पास आये और बड़ी इन्किसारी के साथ कहा मीर साहब आप उठिए आप सो रहे हैं और मेरी तमाम उम्र की मेहनत पर पानी फिरने वाला है आपने फ़रमाया की मेने अपने जद्दे अमज़द से बैत कर ली है उन्होंने कहा वो में जानता हूँ सैयद साहब लेकिन जाहिरी बैत मुझसे करो उसके बाद आपने उनकी बैत की और उनके साथ बाँसा शरीफ चले गए और उनकी सोहबत में रहे जहाँ रहकर आपने विलायत की तमाम मन्ज़िले तय की।

मुर्शिद और मुरीद

जब आप बाँसा शरीफ जाते तो आपके जाने से पहले ही आपके मुर्शिद अपने मुरीदों से कहते सुनो मेरे मुरीद मीर सैयद साहब आ रहे हैं उनकी शान में गुस्ताखी न होने पाए जब आप बाँसा जाते तो आपको मुर्शिद अपने पास बिठाते और अपने फैज़ान से नवाजते।

महिफल ए शमा के शौकीन

आप सिलसिला ए कादरिया में बैत होने के बावजूद महिफल ए शमा के बहुत ही शौकीन थे।आपके पीर भाई मुल्ला निजामुद्दीन फिरंगी महली अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि आप

महफिले शमा के बहुत शौकीन थे आपकी महफ़िल में हर वक़्त शमा होती रहती अलगर्ज़ सिवाए फ़राएज़,नफिल,वाजिबात के आप ज्यादातर वक़्त महफ़िल ए शमा सुनकर ही बिताते थे।

(मनारूल अनवार)

उस ज़माने में शाह साकिरुल्लाह साहब आपकी बारगाह में मुरीद बनने पहुंचे तो आपको देखा कि आप महफ़िल ए शमा में मशगूल हैं ये देखकर उन्होंने मन मे सोचा की शेख ए क़ामिल होकर खिलाफ ए शरीयत काम कर रहे हैं।एक दिन आप मुर्शिद के साथ बैठे थे इतने में क़व्वाल डफ और मजामीर लेकर हाजिर हुए उन्हें देखकर इन्होंने उठना चाहा लेकिन आपने रोक लिया फिर क़व्वाली शूरू हुई तो आप रहमतुल्लाह अलैह क़व्वाली शुरु होते ही मुरकाबे मे चले गए और सर झुका लिया और साथ मे वो भी चले गए तो देखते हैं कि वहाँ न क़व्वाल है न डफ बल्कि सामने रसूल ए खुदा जलवागर हैं और दरबार लगा है जहां पर मीर इसमाईल रहमतुल्लाह अलैह हुजूर ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बगल खड़े हैं और प्यारे आक़ा कभी महफ़िल को देखते कभी आप रहमतुल्लाह अलैह को फिर वो मुराकबे से

बाहर आये तो आपने फ़रमाया साकिरुल्लाह किसी को शमा के ज़रिए एसी महफिल मिले और खतराते नफ्सानी का वाहिमा दिल मे न गुज़रे तो शमा जायज़ है उसके बाद से उन्होंने कभी शमा पर एतराज नही किया।

(नोट--अहले तसव्वुफ़ में सूफियों के नज़दीक शमा पर दो गुट है जो दोनों हक़ पर हैं और ये कोई आम सूफी या आजकल के सूफी से नही बल्कि हज़रत सैयदुत ताइफा ख्वाज़ा जुनैद बगदादी रहमतुल्लाह अलैह से 100 साल पहले भी शमा होती थी और उनके दादा मुर्शिद ख्वाज़ा मारूफ क़र्खी रहमतुल्लाह अलैह के ज़माने से शमा में इख्तिलाफ था लेकिन मुस्तनद सूफिया/औलिया ने खुद इसमें हिस्सा लिया है जिनमे एक से एक बढ़कर एक मुकद्दम व मोअज़ज़्म शख्शियते हैं।

मरी भैंस को ज़िंदा किया

आपकी करामत बहुत सारी हें।एक ग्वाला आपके पास रोज़ दूध लेकर हाजिर होता था एक बार वो मुसलसल तीन दिन नही आया तो आपने उसका हाल चाल जाना चाहा कि आखिर वो क्यों नही आया आप जब उसके घर गए तो उसने बताया हुज़ूर मेरी भैंस मर गयी हैं आपने कहा चलो उसके पास ले चलो आप जब उसके पास गए तो दुआ पढ़ी और कहा रब के

हुक्म से उठ जाओ आपका हुक्म सुनते ही वो तीन दिन की मरी भैंस उठकर खड़ी हो गई।

विलायत का इम्तेहान

हर ज़माने में लोगो ने औलिया अल्लाह की बुजुर्गी का इम्तेहान लिया है।एक बार आपके मुरीद नवाब खुदा यार खां वजीरुल मुमालिक की बारगाह में गये।उसने कहा ये औलिया अल्लाह सब झूठे हें आपने कहा हुजूर आप ऐसा न कहे मेरे मुर्शिद अभी हयात हैं और वो अल्लाह के वली हैं ये सुनकर वजीर ने कहा तो फिर चलो तुम्हारे मुर्शिद का इम्तेहान ले ही लिया जाए उन्होंने सरकार ए मसौली के नाम एक खत तहरीर किया जिसमे लिखा था की हज़रत मेरी बेगम हमल से है उनको लड़का होगा या लड़की।उन्होंने खत को बंद किया और सिपाहियों के साथ आप के पास मसौली भेजा जब वो पहुँचा तो उस वक़्त महफिले शमा में आप मशगूल थे कोई भी आपको आवाज़ नही दे रहा था आखिरकार आपके मुरीदों ने देखा तो कहा हुज़ूर नवाब सफदरजंग के सिपाही और दरोगा आए हैं तो आपने कहा अंदर आओ उसके बाद उसने खत दिया आपने खत को पढ़े बगैर ही उसके ऊपर लिख दिया कि उन्हें बेटा होगा और उसका नाम जलालुद्दीन हैदर रखना चाहिए

और खत को दरोगा को दे दिया दरोगा ने कहा मीर साहब आपने तो खत देखा ही नही आपने कहा तुझे इससे क्या गर्ज़ जो जवाब देना था मेने दे दिया उसके बाद दरोगा ने कहा हुज़ूर कुछ अशरफिया और ख़ज़ाने है क़बूल फरमाए और अगर ज़रूरत हो तो हुक्म करे ये सुनकर आप जलाल में आ गए आपने दरोगा से कहा आओ खुद देख लो जब दरोगा अंदर आया तो आपने मुरीदों से कहा फर्श को उठाओ खुद्दाम जिस फर्श को उठाते वहां से सिर्फ़ और सिर्फ अशर्फियां ही दिखाई पड़ती हर तरफ खज़ाना ही खज़ाना था।आपने कहा जाकर नवाब से कह देना की मीर किसी गुलाम के दर पर नही बल्कि सुल्तान के दर पर बैठा और हमारे ख़ज़ाने में कभी कमी नही आएगी क्योंकि ये अल्लाह की तरफ़ से ग़ैबी खज़ाना है जो कभी कम नही होगा।उसके बाद वो दरोगा जब नवाब के पास पहुंचा और सारा वाकिया सुनाया तो उन्होंने कहा यक़ीनन वो वली ए क़ामिल हैं और फिर नवाब ने अपने जुमले से तौबा अस्तग़फ़ार की।

मसौली शरीफ़

आपका आस्ताना अपने मुर्शिद के थोड़ी दूरी पर ही मसौली शरीफ जिला बाराबंकी में है।आप ज़ैदी हसैनी सैयद

हैं।सरकार ए देवा हाजी हाफ़िज़ सैयद वारिस अली शाह रहमतुल्लाह अलैह बड़ी अक़ीदत से आपकी बारगाह में हाज़िरी देते थे और आपसे बहुत अक़ीदत रखते थे।आपके जद्दे अमज़द जिला हरदोई के बिलग्राम शरीफ़ में आराम फरमा है जिनमे सबसे बड़ा नाम फातहे बिलग्राम सैयद मोहम्मद सुगरा रहमतुल्लाह अलैह का है आप के दर से आज भी लोग फेज़याब हो रहे हैं और ताक़यामत तक होते रहेंगे।

हाजी वारिस अली शाह रहमतुल्लाह अलैह

इससे बढ़कर क़रम की दलील क्या होगी
में डूबता हूँ समंदर उछाल देता है

विलादत,नाम,नसब

आपके वालिद का नाम हाजी सैयद कुर्बान अली शाह अलैहिर्रहमा है जिन्हें फ़ाज़िल ए बगदाद भी कहा जा सकता है क्योंकि बगदाद के इदारे से फ़ाज़िल थे।आपकी विलादत के 2 साल बाद आपके वालिद साहब का इंतेक़ाल हो गया उसके बार वालिदा ने आपकी परवरिश की फिर जब आपकी उम्र 5 साल की उम्र ही तो आपकी वालिदा का भी इंतेक़ाल हो गया उसके बाद आपकी परवरिश दादी ने की।

शजरा ए नसब

आप का खानदान क़ायनात का सबसे अज़ीम खानदान है आप फ़ातमी सादात हैं यानी आप सैयदा ए क़ायनात की औलाद हैं।अल्लाह अल्लाह जिसकी दादी फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा हो उनका पौता हाजी वारिस अली शाह रहमतुल्लाह अलैह क्यों न इतना रुतबा वाला हो।

बचपन, तालीम

आप बचपन से ही तसव्वुफ़ की तरफ लगाव रखते थे आपकी विलायत के ताल्लुक से अक्सर सूफिया की जमात का ये अक़ीदह है कि आप पैदाइशी वली हैं आप बचपन मे अपनी उम्र के दूसरे बच्चों को बताशे बाँटते और जरूरत मन्दो की मदद करते थे इससे आपको सुकून मिलता।खेल कूद,शोर शराबे से आप बहुत दूर रहते थे।

तालीम

आपने 5 साल की उम्र में क़ुरआन क़रीम पढ़ना शुरू किया और 2 साल में यानी जब आपकी उम्र 7 साल हुई तो आप क़ुरआन हिफ़्ज़ कर चुके थे।उसके बाद आप अपने बहनोई सैयद खादिम हुसैन अलैहिर्रहमा के पास लखनऊ में रहने

लगे आपको उन्ही से बैत और खिलाफत अता हुई है।वो आपकी तरफ बहुत तवज़्ज़ो देते और जब उन्होंने आपको तसव्वुफ़ में माहिर कर दिया कमालात अता कर दिया तो लखनऊ से हिजरत करने को कहा।

हुस्नो-जमाल

आप बचपन ही से हुस्नो जमाल का पैकर थे जो भी आपको देखता आप मुस्कुराते हुए ही दिखाई पड़ते थे आप को देखने वाला आप पर फिदा हो जाता था और क्यों न हो आला हजरत अजीमुल बरकत इसीलिए तो फरमाते हैं कि या रसूलल्लाह

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का

तू है एन-ए नूर तेरा सब घराना नूर का

आपका नूरानी दिलकश चेहरा जो देखता वो मदहोश हो जाता था।

आपका सफर और दीन की तब्लीग

एक जगह से दूसरी जगह के के सफर का रिवाज अम्बिया ए क़राम से चला आ रहा है और आजतक चल रहा है चाहे अबुल अम्बिया हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हो,या हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम हो या खुद सैयदुल अम्बिया सरकार ए दो आलम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने खुद मक्का से मदीना हिजरत की और वलियों की जमात में हज़रत ख्वाज़ा मोइनुद्दीन चिश्ती हसन संजरी रहमतुल्लाह अलैह, सरकार सैयद बदिउद्दीन ज़िंदा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह,सरकार ख्वाज़ा कुतबुद्दीन बाख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह,सैयद अलाउद्दीन अली अहमद साबिर क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह,हुज़ूर शैखुल आलम शेख अब्दुल हक़ रूदौलवी रहमतुल्लाह अलैह,ख्वाज़ा मुहम्मद नबी रज़ा शाह रहमतुल्लाह अलैह,सैयद मख्दूम अशरफ जहाँगीर सिमनानी रहमतुल्लाह अलैह ने हिजरत की और ये हिजरत लगभग लगभग ज्यादातर औलिया अल्लाह ने की है।

अजमेर के लिए रवाना

जब आपकी उम्र 14 साल हुई तभी आपके बहनोई व पीरो मुर्शिद हज़रत सैयद खादिम अली शाह अलैहिर्रहमा का इंतेक़ाल हो गया।ख्वाब में उन्होंने आपको हिजरत करने की ताकीद की उसके बाद आप अजमेर के लिए निकल गए जहां एक खादिम ने कहा शहज़ादे यहां जूता उतार दिया करो ये जुमला आपके दिल मे घर कर गया और तारीख शाहिद है उसके बाद से आपने ज़िंदगी भर जूता/चप्पल नही पहना।

हज का सफर

अजमेर से मुंबई और फिर 1253 में आखिरकार आप हज के लिए रवाना हुए जिस जहाज पर आप सवार थे उसी जहाज में मुंबई का मालदार सेठ था जिसका नाम जियाउद्दीन था।उसको नबी करीम का ख्वाब में दीदार हुआ आपने फ़रमाया ए जियाउद्दीन तू खुद खाता है और मेरे बेटे क़ो भूखा रखता है जब सेठ सुबह उठा तो उसने सारे मुसाफिरों को दावत पर बुलाया फिर उसी रात में नबी क़रीम उसके ख्वाब में जलवागर हुए और कहा ए जियाउद्दीन तू खुद खाता है और मुसाफिरों को खिलाता है लेकिन मेरे बेटो को भूखा रखता है अगले दिन उसने फिर दावत की सभी ने खाना खाया फिर रात

में आपने ख्वाब देखा और वही अल्फ़ाज़ थे अब वो सेठ परेशान हो गया वो उठा और जहाज की तलाशी शुरू की जब सब जगह तलाश लिया तो फिर जाकर तहखाने में आप मिले।आप उस वक़्त अल्लाह की इबादत में मशगूल थे नूरानी चेहरा चमक रहा था वो आपके क़दमो मे गिर गया और कहने लगा शहज़ादे मुझे माफ कर दो जो मैने आपको दावत पर न बुलाया आपकी ही बदौलत मुझ बदकार ने तीन मर्तबा रुखे वददुहा का दीदार किया और कहने लगा सरकार चलिए दावत क़बूल करे आपने उसकी दावत क़बूल की उस वक़्त आप रोज़े की हालत में थे फिर आपने उसके पास अफ्तार की।

मक्का में हाजरी

जब आपके मुबारक क़दम मुबारक सरज़मीं पर पड़े तो एक बुजुर्ग शख़्स ने आपको देखकर सलाम किया आपने उनके सलाम का जवाब दिया।उसके बाद उन शख्श ने कहा शहज़ादे में आपके ही इंतज़ार में था लो में तुम्हे कुछ अमानते देता हूं ये रख लो।

आपने फ़रमाया शुक्रिया बाबा लेकिन में इसे नही **ले सकता** हमारे घर मे किस चीज की कमी है हमारे यहां हर खज़ाना

है,विलायत,सखावत,शुजाअत, शहादत,इमामत,मारफत, तरीक़त सब तो हमारे घर में है लिहाजा हमे किसी चीज़ की कमी नही है आपका जवाब सुनकर बुजुर्ग ने मुस्करा कर जवाब दिया हां में जानता हूँ लेकिन ये अमानत आपके नाना जान की है जो आपको देने का हुक्म है ये कहकर बुजुर्ग ने आपको वो अनमोल तोहफा दिया और आपकी गोद **में** सर रखा उनका सर रखना था कि रूह बदन से परवाज़ कर गई।अब सरकार हाजी वारिस अली शाह रहमतुल्लाह अलैह सोचने लगे या अल्लाह मेरे पास तेरे सिवा और क्या है अब में इनका इंतज़ाम कैसे करूँगा आप ये सोच **ही** रहे थे कि वो बुजुर्ग एक चिड़िया की शक्ल में बनकर उड़ गए।अल्लाह अल्लाह बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है और जहां इंसान का ज़हन काम करना बन्द करे अल्लाह वालो के हर काम आम इंसानो की समझ से बाहर होते हैं बस इतना याद रखना चाहिए कि अल्लाह उनका है और वो अल्लाह के हैं।

मदीना मुनव्वरा की हाज़िरी

जब आपने देखा कि अभी हज के महीने में वक़्त है तो आपने नाना की बारगाह में हाज़िर होने का फैसला किया और मदीना मुनव्वरा की तरफ निकल पड़े।जैसे ही आप सरवरे क़ायनात

अलैहिस्सलाम के आस्तान ए मुबारक के पास पहुँचे तो दरवाज़ा बन्द हो गया।ये देखकर आप रोने लगे और तारीख में है कि आप इतना रोये की आपकी आवाज मदीना की गलियों में गूंज रही थी आपक़ी आवाज सुनकर सब इकट्ठा हुए देख रहे थे कि कैसे एक 15 साल का खूबसूरत हसीन जमील शहज़ादा रो रहा है उसके बाद जाकर दरवाज़ा खुला और ग़ैब से आवाज़ आई कि सुनो नवासे अगर हम तुमसे अकेले में मिल लेते तो लोग तुम्हे पहचानते नही अब वो तुम्हारी क़दर करेंगे उसके बाद नाना और नवासे की बात हो रही थी लोगो को सिर्फ दो तरह की आवाज़ें सुनाई दे रही थी लेकिन कुछ समझ में नही आ रहा है कि अब आप को वहां से क्या क्या मिला ये तो या देने वाला जानता है या लेने वाला अल्लाह अल्लाह ये शान है मेरे हाजी वारिस अली शाह की।

एहराम का रंग पीला क्यों

आम तौर पे यू ट्यूब के ज़रिए दो चार तक़रीरे सुनकर और 2-4 किताबे पढ़कर छुटपुटिया किस्म के लोग भी सवाल करने लगते हैं कि जब नबी ने सफेद रंग अफ़ज़ल बता दिया है तो फिर वारसी पीला क्यों पहनते हैं और ये सवाल पहले तो बद अक़ीदह किस्म के लोग करते थे लेकिन आजकल खुद को

अहले सुन्नत वल जमात का कहने वाले भी सवाल उठाते है क्या वक़्त आ गया है अल्लाह अल्लाह आज के दौर में मौला ऐसे जाहिलो/गुस्ताखो/शेतान के चेलो से हम सबको बचाए।मेरे वारिस ने कभी अपनी मर्ज़ी से ये एहराम नही पहना।

पीला रंग

जब आप नाना की बारगाह से वापिस आये तो आपने जन्नतुल बक़ी में दादी सैयदा फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा की बारगाह मे हाज़िरी देने का फैसला किया।उस वक्त ना महरम उनकी क़ब्र पर नही जा सकता लेकिन चूंकि आप तो ऐसी पाक माँ के ही शहज़ादे हैं इसलिए आप वहाँ गये।जब आप माँ फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा की कब्र ए अनवर पर हाज़िर हुए तो आप क़ब्र से लिपट लिपट कर रोने लगे और इतना रोये इतना रोये की आपका एहराम सफेद से जर्द हो गया।जब आप बाहर आए तो आपके चाहने वालो ने देखा की एहराम का रंग सफेद से ज़र्द है तो पूछा हुज़ूर ये क्या एहराम का रंग जर्द कैसे हो गया।

आपने उनसे कहा सुना सुना हमारी दादी जान ने हमे रंग दिया है।उसके बाद सऊदी का बादशाह मलिक ने जब आपको इस

हालत में देखा तो आपको क़ुरआन और हदीस का दरस देने लगा कि सफेद एहराम पहना करो आपने कहा आप ही लाकर पहना दो एक रिवायत में है कि उसने 17 बार और दूसरी रिवायत में है कि उसने 7 मर्तबा आपको एहराम पहनाया और जितनी मर्तबा उसने सफेद एहराम पहनाया उतनी मर्तबा वो पीला हो जाता अल्लाह अल्लाह तभी से आपने उसी एक एहराम में अपनी सारी ज़िंदगी गुजार दी।

(नोट--) हमे किसी वली अल्लाह के तौर तरीके और उनकी शान में टीका टिप्पणी करने से बचना चाहिए न जाने अल्लाह को कौन सी अदा ना पसन्द हो जाये और आपके सारे आमाल पल भर में जाया हो जाये क़ुरआन क़रीम में अल्लाह का इरशाद है कि जिसने मेरे वलियों से दुशमनी की उसने मुझसे दुश्मनी की तो फिर सोचो कि वो अल्लाह के यहां कितने मक़बूल हैं और तुम 4 किताबें पढ़कर उन पर इल्ज़ामात मत लगाओ उनके सामने अपना इल्म मत पेश करो अरे पागल तुम्हारे जितना इल्म तो उनके यहाँ नोकरो को रहता है इसलिए हमें अपनी औकात में रहना चाहिए जिसमें हमारा ही फायदा है हमारे चेहरे पर दाढी तक नही आती, सुबह से शाम तक हम

गुनाह करते रहते हैं,हमारे जाहिरी ऐब तो कम नही होते और हम उनकी शान मे गुस्ताखी करने लगते है जिनकी तहज्जुद कभी क़ज़ा नही होती जो अल्लाह के दोस्त होते हैं उनकी बराबरी आम इंसान,आम आलिम,मुफ्ती क़भी नही कर सकता इतना याद रखना चाहिए|

फ़ातमी खज़ाना

इसी वाकिये के बाद आप कहते कि हमारे ऊपर किसी माई के लाल का एहसान नही है हमे हमारी दादी से डायरेक्ट फकीरी अता हुई है इसलिए सूफिया अक्सर कहा करते हैं कि आपको फ़ातमी खज़ाना मिला है।एक बार आला हज़रत के पीरो मुर्शिद के शहज़ादे सरकार सैयद नूरी मियाँ रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया की हाजी वारिस अली शाह को तो फातमी खज़ाना मिला है जितना बांटे कभी कम नही होगा अपना क्या अपनी तो गाढ़ी कमाई है एक बार सोचना पड़ता है।

अहमद रज़ा से आला हजरत

14वीं के सदी के मुजद्दीद इमाम अहमद रज़ा खान फ़ाज़िल ए बरेलवी को आला हजरत का लक़ब भी किसी और ने नही देवां के सुल्तान सरकार हाजी वारिस अली शाह रहमतुल्लाह अलैह ने ही दिया है।

(नोट--यहाँ इस जुमले से मुराद ये है कि इमाम अहमद रज़ा खान फ़ाज़िल ए बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह का मर्तबा भी अपनी जगह है लेकिन सरकार हाजी वारिस अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के मर्तबे से अफ़ज़ल कर देना ये दुरुस्त नही है क्योंकि उन्हें आला हजरत का लक़ब भी आपने दिया है अब अक्सर उन वारसियो से भी कहना चाहता हूँ कि जो आला हजरत की शान घटाने से कुछ नही होगा वो अल्लाह के वली हैं,रसूल और आले रसूल के शैदाई थे और उन्हें आला हजरत का लक़ब भी मेरे देवां के सुल्तान ने दिया है अब उनकी शान में कुछ भी कहने से पहले 100 बार सोचा करो)

क़रामते

हयात ए वारिस में है कि अगर आपकी क़रामतो को लिखा जाए तो 7 जिल्दों की किताबें लिखनी पड़ेगी लेकिन आपकी करामत नही बयान हो पाएगी।यहां चन्द क़रामतो को आप पढ़े और सरकार ए देवां की शान व अज़मत का अंदाज़ा लगाए।

पागल ऊँठ को ठीक किया

एक बार एक ऊँठ पागल हो गया वो लोगो का बहुत नुकसान कर रहा था। उससे पड़ोसी/रहागीर/मालिक सब परेशान हो गए आखिर में जब उसका मालिक बहुत परेशान हो गया तो मायूस होकर आपके पास आया और कहा बाबा मेरा ऊँठ पागल हो गया आप यही से दुआ कर दीजिये आपने कहा मुझे उस ऊँठ के पास ले चलो उसने कहा नही बाबा वहां जाना ठीक नही है इस वक़्त वो ऊँठ आपे से बाहर है वो आपको भी नुकसान पहुँचा सकता है आपने कहा लेकिन मुझे उसके पास ले चलो जब आपने ज़िद की तो वो आपको उस ऊँठ के पास ले गया ।रास्ते मे आपने एक बबूल की टहनी ली और उसके सर पर उस टहनी से हल्का सा वार किया जैसे ही आपने वार किया वो बेकाबू दीवाना पागल ऊँठ शांत हो गया और आपके सामने अदब से बैठ गया।अज़ीज़ों ये होते है अल्लाह वाले इंसान तो इंसान जानवर भी इनकी ताज़ीम करते हैं और जो इनकी ताज़ीम नही करता वो मोमिन तो दूर की बात जानवर से भी बदतर है.

दरभंगा में आमद

दरभंगा के एक वारसी मज़्जूब फ़क़ीर ने पेशनगुई की थी कि जल्द यहाँ ताशे बजेंगे और रोशनी होगी नवाब की हवेली गिर जाएगी।तारीख़ में है कि जब आप दरभंगा की सरज़मी पर पहुंचे तो लाखों की तादाद में लोग आपको देखने के लिए बेताब थे।लोग ताशे बजाने लगे और जब आपकी आमद हुई और आप नवाब सादिक अली के दरबार मे पहुंचे तो आपके चाहने वाले इतने थे कि उनके वज़न से नवाब का गेट और दीवारे टूट कर गिरने लगी लेकिन आपके किसी चाहने वालो को खरोंच तक नही आई।उसके बाद आपने पांडवा की तरफ 10 कोस का सफर किया पैदल चलने के बावजूद 10 हज़ार की भीड़ अभी भी आपके पीछे थी आपके खादिम ने कहा हुज़ूर इन्हें वापिस कर दीजिए वरना ये आपका साथ कभी नही छोड़ेंगे।ये सुनने के बाद आपने पालकी रुकवाई और कहा आओ तुम लोग मेरी पालकी छू लो मेरे मुरीद बन जाओगे लोग आपकी पालकी छूते और खुशी से एक दूसरे को गले लगाकर मुबारकबाद देते मानो आज ईद का दिन था और क्यों न हो जिन्हें पीर ऐसा मिल जाये तो उन मुरीदों का तो हर दिन ईद से कम नही होता!

बेनज़ीर शाह वारसी

आपके साथ उर्दू के बहतरीन शायर बेनज़ीर शाह वारसी भी थे आपका क़याम एक जंगल मे हुआ साथ मे बेनज़ीर वारसी भी थे वो सोने बनाने का काम भी करते थे और इसके शौकीन भी थे ये देखकर आपने फ़रमाया की जाओ बाग के खन्दक में जो घास लगीं है ले आओ वो गए और घास ले आये और तांबे के पैसे उसपे लगाए ये लगाना था कि वो घास सोने मे तब्दील हो गई ये देखकर उनकी खुशी का ठिकाना नही रहा फिर कुछ देर बाद आप खेवली गए जहां एक बूढ़ी औरत आई और कहने लगी हुजूर कल मेरी नवासियों की शादी है और कुछ इंतज़ाम भी नही है आपने बेनज़ीर से फ़रमाया वो सोना उन्हें दे दो कुछ देर के लिए उन्हें खराब तो लगा लेकिन उन्हें वो घास के बारे में पता था ही ये सोचकर वो सोना ले आये और दे दिया।फिर जब आप आराम कर रहे थे तो बेनज़ीर घास को लाने के लिए उठे लेकिन जब वहां पहुंचे तो देखा कि वो घास है ही नही सोच में पड़ गए कि इतना हरा भरा जंगल आख़िर गायब कहाँ हो गया जब वो मायूस होकर वापिस लौट आये तो आपने पूछा क्या हुआ बेनज़ीर घास नही मिली क्या उन्होंने थके हुए लहज़े जवाब दिया नही सरकार।

आपने शफ़क़त से उन्हें अपने पास बिठाया और नसीहत फ़रमाई तुम कीनिया के पीछे क्यों भागते हो उस ख़ुदा को याद करो और उसकी याद में ऐसा गुम हो जाओ की तुम खुद कीनिया हो जाओ ये सुनकर वो इबादत/रियाज़त में लग गए और आपकी दुआ से वो खुद एक कुन्दन बन गए और विलायत के मनसब पर फ़ायज हुए आज उन्हें हज़रत बेनज़ीर शाह वारसी रहमतुल्लाह अलैह के नाम से जाना जाता है।आपकी इस करामत को अगर शायरी के अल्फ़ाज़ दूं तो कुछ यूं होगा

निस्बत हुई मुझे जबसे तेरे नाम से

दुनिया पुकारती है बड़े एहतराम से

एक कोढ़ी का कोढ़ दूर किया

एक बार चन्द्र गढ़ में रुके तो लोग आपकी जियारत को आते रहते दिन भर भीड़ लगी रहती वही एक भंगी भी था जो आपसे बहुत अक़ीदत रखता था लेकिन उसे एक खतरनाक बीमारी कोढ़ की थी जिससे लोग उससे नफरत करते उसे अपने पास

भटकने तक नही देते वो दूर से आप का दीदार करता एक दिन आपका दरिया ए मोहब्बत जोश मारने लगा और आपने कहा सुनो मेरी तरफ शक्ल करके खड़े जाओ और मेरी आँखों में देखो में तुझे आंखों के जरिये मुरीद करता हूँ उसने वैसा ही किया आपने उसकी तरफ देखा आपकी नज़रों का पड़ना था कि उसके जिस्म से कोढ़ दूर हो गया और वो आपका मुरीद भी हुआ।

निगाहें वली में ये तासीर देखी
बदलती हज़ारो की तकदीर देखी

एक ही वक़्त में कई जगह मौजूद रहे

अमूमन कई वली अल्लाह की ये करामत जाहिर हुई है कि वो एक वक्त में क़ई जगहो पर नज़र आए हैं।फिरंगी महल से मौलाना अब्दुल अहद साहब तहरीर करते हैं कि में नवाब मंगरोल की दावत पर काठियावाड़ जा रहा था जिस डिब्बे में में बैठा था उसी में एक अंग्रेज़ बैठा था उसने कहा मियाँ क्या हाजी वारिस अली शाह को जानते हो मेने कहा उनको तो

सारा ज़माना जानता है उसने कहा कि उनकी कोई करामत हो तो बताओ आपने कहा कि एक बार मेरे मामू की बेटी हज पर गई थी और जब वो वापस आई तो उसने कहा में हाजी साहब की मुरीद हो गईं हूँ ये कहकर वो खुश होते हुए कमरे में चली गई लेकिन जैसे ही हम लोगो ने सुना तो हैरत में पड़ गए क्योंकि उन दिनों सरकार वारिस अली शाह रहमतुल्लाह अलैह हिंदुस्तान में ही थे। तो ये थी आपकी करामत।उसके बाद उन्होंने उस अंग्रेज से बताया कि उनकी क़रामतो में ये है कि उन्होने कई ईसाइयों/यहूदियों को इस्लाम के दामन से सरफराज़ किया है।बहुत से फ्लॉसफरो ने आप से मुतास्सिर होकर इस्लाम का दामन थामा है।कुस्तुन्तुनिया का सुल्तान अब्दुल मजीद आपका मुरीद था।रूस,जर्मनी,स्पेन,नेपाल, दमिश्क़,नजफ़,कर्बला,अफ्रीका,पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्री लंका जैसे मुल्कों में आपकी विलायत का डंका बजता था।

क़दमो के निशान नही होना

आप नंगे पैर ही चलते आपके बारे में एक करामत बहुत ही मशहूर थी कि आप नंगे पैर चलते हैं और क़दमो के निशान नही बनते हैं।एक बार आप लखनऊ के ताल्लुकदार मोहम्मद अहमद खान वारसी के यहाँ तशरीफ ले गए जहाँ उनकी

शहजादियों ने आपकी करामत को परखना चाहा तो उन्होंने रास्ते मे आपके इस्तेकबाल(स्वागत)के लिए दरी बिछवाई और उस पर चांदी का वरक डलवाया आपके पैर धुलकर कहा बाबा तशरीफ़ ले आये आप उस दरी पर बिछी हुई चांदी की वरक से होकर गुजर गए जब उनके घर पर पहुंचे तो कहा बेटियों तुम्हारी चांदी बेकार हो गई देखो मेरे पैर में कुछ भी नही ये सुनना था कि सब आपके क़दमो में गिर गई और गलती की माफी मांगनी लगी क्योंकि वो जान गई थी जिनके जमाल का ये आलम है उनके जलाल का आलम का क्या होगा-?उसके बाद आपने नसीहत की सुनो किसी फ़क़ीर की फकीरी का इम्तिहान मत लिया करो वरना घाटे में रहोगे।इससे आप ने सारे ज़माने को ये नसीहत दे दी कि फ़क़ीर की क़रामतो से उसकी फकीरी मत जाना करो वरना बहुत घाटे में रहोगे बहुत से वली अल्लाह ऐसे भी है जिनसे बहुत कम क़रामते जाहिर सादिर हैं तो क्या वो वली नही लिहाज़ा इस तरह की सोच नही रखनी चाहिए कि वली हमेशा क़रामाती ही होगा।

घास-आग एक दूसरे से अलग

एक बार आप मलिहाबाद तशरीफ़ ले गए जहाँ पर बशीर वारसी जो मशहूर शायर जोश मलिहाबादी के घर के है आप वहां तशरीफ ले गए।उनके घर की औरते भी आपकी मुरीदा थी वो आप के सामने बैठ गईं और आपकी तबियत हाल चाल वगेरह दरयाफ्त करने लगी इतने में वहाँ खड़े एक नोकर ने मन मे सोचा फ़क़ीर है तो क्या हुआ लेकिन औरत के सामने मर्द की शक्ल तो है और कितना भी हो जाए घास और आग कभी एक जगह रहकर सही सलामत नही रह सकती इन्हें औरतो से पर्दा करना चाहिए।वह अपने मन मे सोच ही रहा था की आपने फ़रमाया बरखुरदार यहाँ आइये वो डरते हुए आया अपने कहा जाओ घास और आग लाओ अब तो वो कांपने लगा था उसे पता चल गया कि आप जान गए हैं फिर भी वो डरता डरता घास और आग लाया आपने कहा अब घास को इस आग से जलाओ उसने घास को खूब जलाया लेकिन उस सूखी घास पर आग का कोई असर नही हुआ अब आपने फ़रमाया इसी तरह अल्लाह वालो का हाल होता है जो अपने नफ़्स को कुचल देता है उस पर कुछ भी असर नही करता वो

ये सुनते ही क़दमो में गिर गया और माफी मांगने लगा आप उसको माफ करते हुए वहां से चले आए।

मेरे सामने शराब मत पीना

एक शख्श जो आपसे बहुत इश्क़ करता था और आपसे मुरीद बनना चाहता था लेकिन उसकी एक बुरी आदत थी कि वो शराब बहुत पीता था।उसने आपसे कहा हुजूर में शराब पीता हूँ वरना आप मुझे मुरीद कर लेते।आपने फ़रमाया आज में तुझे मुरीद कर लूंगा उसने समझा कि अभी जैसे ही शर्त रखूँगा तो छोड़ देंगे।उसने कहा हुज़ूर मेरी एक शर्त है कि में शराब पीना बन्द नही करूँगा आपने फ़रमाया पहले से ज्यादा पीना।ये सुनकर वो सकपका गया आपने कहा मेरी भी एक शर्त है कि तुम दुगुनी शराब पियो लेकिन मेरे सामने मत पीना वो राजी हुआ।आपने उसे मुरीद किया उसके बाद जब उसे शराब की लत लगी उसने बोतल निकाला और पैग़ बनाया जैसे ही पैग हाथ मे लिया आप को सामने पाया जल्दी से गिलास फेंक दिया ।फिर वो जहां भी बोतल खोलता आपको सामने पाता परेशान हो गया कहने लगा हुज़ूर ये क्या आप तो हर जगह हाज़िर हैं अब में शराब के बिना क़हीं मर न जाऊँ।ये सुनना था कि आपने कहा उसमे क्या पीता है पीना हो तो मेरे

नज़रों में देख उसने आपकी नज़रों में देखा कुछ देर बाद वो बेहोश गया उसके बाद उसने शराब को हाथ तक नही लगाया सूफिया फरमाते हैं कि वो शख्श कोई और नही बल्कि मशहूर ज़माना शायर/वली हुज़ूर सैयद बेदम शाह वारसी रहमतुल्लाह अलैह थे।

(नोट--) औलिया अल्लाह के ताल्लुक़ से एक दो रिवायत इधर उधर हो जाती है चाहे वो क़रामतो के ताल्लुक से हो या नाम वगेरह लेकिन उसकी सच्चाई से इनकार नही किया जा सकता है,क्योंकि सिर्फ रिवायात का ही फर्क होता है हक़ीक़त का नही)

बहराईच में हाज़री

एक बार आप और आपके साथी सैयदुश शोहदा फिल हिंद सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा की मज़ार पर हाजिरी देने जा रहे थे रास्ते में घाघरा नदी मिली जो उस वक़्त उफान पर थी।आपने मुरीदों से कहा आज तैर कर दरिया पार करेंगे ये सुनकर वो डर गए क्योंकि उनमें तैरना किसी को नही आता था लेकिन आपका हुक्म था तो सब दरिया में उतर गए जब आपके मुरीदो ने देखा तो देखते रह गए क्योंकि उसमें

टखने तक पानी था जबकि वो पहले ऐसे लग रही थी कि चार चार हाथी एक के ऊपर एक खड़े कर दिये जायें तो समा जाए उसके बाद आप सैयद सालार गाज़ी रहमतुल्लाह अलैह के आस्ताने पर पहुंचे!

वलियों से फेज़

एक फ़क़ीर दूसरे फ़क़ीर की ताज़ीम,एक वली दसूरे वली की ताज़ीम,एक बुजुर्ग दूसरे बुजुर्ग की ताज़ीम,एक क़लन्दर दूसरे क़लन्दर का मर्तबा और उसकी ताज़ीम हम से आपसे बहतर जानते और करते है।आपको सैयद बदिउद्दीन ज़िंदा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह,सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा,सैयद अब्दुर्रज़ाक़ शाह बाँसवी रहमतुल्लाह अलैह,सैयद मीर मुहम्मद इस्माइल वास्ती रहमतुल्लाह अलैह,शैखुल आलम मख्दूम अब्दुल हक़ रूदौलवी अलैहिर्रहमा,हज़रत शाहमीना शाह रहमतुल्लाह अलैह जैसे वलियों से आपने फेज़ लिया है और आप जब भी इन वलियों के दरबार मे गए है अदब और ताज़ीम के साथ गए हैं और क़यामत तक ज़माने को ये पैगाम दे दिया कि सुनो लोगो ये वो लोग जिनकी बारगाह में खुद आलमपनाह अशरफुल आलमीन इस तरह से गुलाम की हैसियत से जा रहे हो तो

हमारी तुम्हारी औक़ात ही क्या है तुम तो यहाँ अगर घुटनो के बल चलो तब भी कम है।

अज़ीज़ों आज हमने वलियों के आस्ताने को खिलवाड़ समझ लिया है जैसे पाते है चले जाते है न पाकी का ख्याल,न अदब का ख्याल,न ताज़ीम का खयाल, न उनकी शान और मर्तबे का ख़्याल अल्लाह की बारगाह में दुआ किया करो कि गलती से भी उसके दोस्तों(वलियों)की शान ने या उनके दराबर में तुमसे हमसे कोई गलती न हो जाए।

आप एक नज़र में

1-आपको अशरफुल आलमीन कहा जाता है-

2--आपको आलमपनाह भी कहा जाता है-

3--आपने अपनी पूरी ज़िंदगी यानी 86 साल में सिर्फ 900 ग्राम खाना खाया-

4--आप मोहर्रम में पानी नही पीते थे-

5--पैदा होते ही आपने रोजा रखा है-

6--आपकी पैदाइश पहली रमज़ान को हुई है-

7--1905 ईस्वी को आपने बाजहिर इस दुनिया को अलविदा कहा-

8--आपने अपने विसाल से एक दिन पहले अपने मुरीदों को इब्तिला कर दी थी-

9--आप बेहद हसीनो जमील थे-

10--आप पहले सूफी थे जिन्होंने समंदर के जरिये पूरी दुनिया का सफर किया है-

11--आपके उम्दा एखलाक की वजह से बचपन मे आपको मिट्टन मियाँ के नाम से भी पुकारा जाता था-

12--आप को शोर शराबा बिल्कुल भी पसन्द नही है-

13--आपने कहा है कि में तुम्हे इन्हीं एहराम पोशों में मिलूँगा मुझे तलाश करना हो तो इन्ही की बीच करना-

14-आप सबरों शुक्र का पैकर थे कहते हैं जब से आपने कर्बला शरीफ की हाजिरी दी थी उसके बाद आपको भूख और प्यास से नफरत हो गई थी-

15--मौला अली की शान बयान करने पर आप पर कुछ उलेमाओ ने शिया का फतवा लगाया था-

16--उलेमा अक्सर आप पर उंगली उठाते हुए कहते हैं कि आप नमाज़ नही पढ़ते थे जबकि आपकी नमाज़ मस्जिद ए नबवी में होती थी-

17--हर धर्म के लोग आपके आस्ताने पर जाते है और आपसे अक़ीदत रखते थे।

18--आप हमेशा यही कहा करते थे कि सुना सुना मोहब्बत करो-

19-आप ने सभी को इज्जत दी सब को गले से लगाया है।

20-आपका आस्ताना उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से सटा हुआ जिला बाराबंकी से 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित देवां शरीफ में है-

बाबा ताजुद्दीन नागपुरी अलैहिर्रहमा

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 27 जनवरी 1861 ईस्वी को हुई।आपका नाम ताजुद्दीन था।

नसब

आपके मुरीद शेख़ कुतबुद्दीन ने ताजे कुतबी नाम की एक किताब लिखी थी जिसमे उन्होंने आपका शजरा ए नसब हज़रत अबू बकर सिद्दीक रजिअल्लाहू अन्हु के साथ मनसूब किया जब आपने देखा तो आपने कहा कुतबुद्दीन में इमाम हसन अक्सरी राजिअल्लाहू अन्हू की औलाद से हूँ यानी आप अस्करी सैयद हैं और अस्करी सैयद हुसैनी सैयद होता है इस ऐतबार से आपका शजरा ए नसब बहुत ही आला है।

ताजुल औलिया क्यों

आपको ताजुल औलिया भी कहा जाता है जिस्का मतलब है औलिया का ताज जो अरबी का लफ्ज़ है शाही टोपी को भी ताज कहा जाता है और उर्दू में इसका मायना सरदार भी है।वही औलिया अल्लाह के नज़दीक इसका मायना है कि मौसम बहार के बाद दूसरी बारिश।

यानी अल्लाह की रहमत की पहली बारिश नबूवत और दूसरी बारिश से मुराद विलायत रहमत की बारिश।

बाबा

आपके नाम से पहले बाबा लफ्ज़ मिलता है जो फारसी जुबान का लफ्ज़ है पहले के ज़माने में ये लफ्ज़ बूढ़े आदमी के लिए था फिर बाद में ये लफ्ज़ मुर्शिद और बाप की तरफ तवज़्ज़ो कर दिया गया लेकिन अहले तसव्वुफ़ में क़लन्दर के एक मायने बाबा के होते हैं इसीलिए आपके नाम से पहले बाबा लगा रहता है।

ताजुद्दीन

आप दीन का ताज थे जिसको देखते हुए आपके जद्दे अमज़द ने आपको ताजुद्दीन का लक़ब दिया।

विलादत

जब आपकी विलादत हुई थी उस वक़्त आप रोये नही ये देखकर माँ-बाप परेशान हो गए लोगो ने कहा लोहा गर्म करके जिस्म पर लगाओ हो सकता है कि आप आंख खोंल दे जैसे ही उन्होंने लोहा लगाया आपने फौरन आँख खोंल दी आपका नाम मोहम्मद रखा गया अमूमन औलिया अल्लाह के बचपन का नाम मोहम्मद ही मिलता है क्योंकि इस नाम मे बरकत और रहमत है।

(नोट--) अक्सर ये कहा जाता है कि जब बच्चा पैदा होता है उसे शैतान उसे चुटकी काटता है जिससे वो रोता है लेकिन यहाँ ये साबित हो गया कि आप शैतान की चुटकी से नही रोये)जब आप 1 साल के हुए तो आपके वालिद साहब का इन्तेकाल हो गया अब आपकी वालिदा पे आपकी तालीम व तरबियत की ज़िम्मेदारी आ गई।

बचपन और तालीम

जब आपकी उम्र 6 साल की हुई तो मामू ने आपको एक मदरसे में दाखिल कर दिया जहां आपने क़ायदा और अरबी पढ़ना शुरू किया और साथ साथ दुनियावी तालीम भी हासिल करते रहे जब आपकी उम्र 9 साल हुई तो वालिदा का भी इंतेक़ाल हो गया अब नानी पर आपकी तालीम व तरबियत की

ज़िम्मेदारी आ गई।एक दिन आप मदरसा पढ़ने गए थे वहां से बहुत ही मशहूर आलिम सैयदा अब्दुल्लाह शाह अलैहिर्रहमा की नज़र आप पर पड़ी उन्हें देखकर आप वही खड़े रहे।उन्होंने आपके उस्ताद से कहा उस बच्चे को बुलवाओ उन्होंने अपनी जेब से कुछ खजूर निकाले और आधा खाकर कहा लो ये खा लो और नसीहत दी कि क़ुरआन को ऐसे पढ़ा करो जैसे ये तुमपर नाज़िल हो रहा हो उसके बाद उन्होंने आपके उस्ताद से कहा इस बच्चे को तालीम कम दिया करो औऱ तसव्वुफ ज्यादा।

क़ुरआन और आप

आप फ़रमाते हैं कि जबसे मैने सैयद अब्दुल्लाह शाह अलैहिर्रहमा के झूठे ख़जूर खाये है तो मैने क़ुरआन को ऐसे पढ़ा जैसे ये मुझ पर नाज़िल हुई हो आप तीन दिन तक रोते रहे अज़ीज़ों रोना भी दो तरह का होता है एक खुदा के लिए रोना और दूसरा खुदाई के लिए आप खुदा के लिए रोते थे।आपने क़ुरआन बहुत पढ़ा और इतना पढ़ा कि चंद दिनों में ही हाफ़िज़ हो गए फिर आप उनके पास गए उन्होंने आपको कलंदरी फेज़ दिया और फिर रुखसत हो गए। आप क़ुरआन

पढ़ने में लग गए।आप हर वक़्त क़ुरआन मज़ीद पढ़ते थे आप चलते फिरते उठते बैठते हर वक़्त क़ुरआन पढ़ते थे।

आपका फ़ौज़ में शामिल होना

जब आपकी उम्र 18 साल हुई तो एक बार बहुत ही भयानक तूफान आया हर तरफ हाहाकर मच गया। तूफान ही तूफान चारो तरफ लोगो के मकान तबाह हो गए आपका भी मकान उसी में शामिल था आपके मामू ने फोर्स डिपार्टमेंट में नोकरी कर ली लेकिन उससे भी घर का खर्चा चलना मुश्किल हो गया ये सब देखकर आपने फ़ौज़ में जाने का फैसला किया वही आपका फ़ौज़ में जाना भी खुदा की मर्ज़ी ही थी क्योंकि अगर आप फ़ौज़ में न जाते तो अंग्रेज़ो को क़ुरआन कौन सिखाता।आपको कई ज़ुबाने आती थी आपने फ़ौज़ में रहकर कई अंग्रेज़ो को क़ुरआन पढ़ाया है जिनमे मिस्टर विलयम बहुत ही मशहूर नाम है।आप हैदराबाद दक्कन में भी रहे और कुछ वक्त मध्य प्रदेश में भी गुजारा लेकिन अज़ीज़ों आपने अभी तक यानी 24 साल तक जो भी ज़िन्दगी गुज़ारी है ये सालिक की है अभी तो मज़्ज़ुब वाली ज़िन्दगी की तरफ आप को जाना है।

मज़्ज़ूब

जब आपकी उम्र 25 साल हुई तो आप सागर गए जहाँ आपकी आमद की शोहरत होने लगी उस वक़्त सागर में एक क़लन्दर सैयद दाऊद शाह अलैहिर्रहमा थे जिनसे आपने मुलाकात की आप उनके पास बैठे रहते जब मोहब्बत बढ़ती गई तो आपकी तवज़्ज़ो एकदम से तसव्वुफ़ की तरफ़ आ गई और नोकरी की तरफ से कम होने लगी।

कलंदर की वफात और आप की हालात में फर्क

क़लन्दर की वफात के बाद आप को बहुत बड़ा सदमा लगा।आप रोज उनकी मज़ार पर चले आते और रात भर बैठे रहते सुबह उठकर वापिस काम पर आते एक दिन नानी ने गौर किया कि जैसे ही रात होती है आप कहीं चले जाते हैं और सुबह होते ही वापिस आ जाते हैं एक दिन सुबह आप जब घर आये तो नानी ने कहा नाश्ता कर लो आपने कहा नही आजकल हम लड्डू पेड़े खाते है हमे भूख नही लगती।आप अपनी जेब मे दो पत्थर रखते थे एक दिन भूख लगी आपने जेब से पत्थर निकाला और खा गए उधर नानी ने जब ये माजरा देखा तो पूछा ये क्या था आपने फ़रमाया यही हमारा लड्डू पेड़ा है नानी जो खुद वलीया थी फौरन समझ गई कि आपका मक़ाम बदलने वाला है लिहाजा उन्होंने कुछ नही कहा।उधर

जब फ़ौज़ से आपकी नानी के नाम खत आया कि आपके नवासे इस वक़्त बदले बदले से गुमसुम रहा करते हैं इनका इलाज कराइये नानी ने खत पढ़कर जवाब दिया कि ये तसव्वुफ़ का रंग है इन्हें कुछ नही हुआ है में गारंटी देती हूँ उधर जब आपका ज्यादातर वक़्त आलमे इस्तेग्राक में गुजरने लगा हर वक़्त जज़्ब की केफीयत में रहने लगे कुछ दिनों बाद आपने फ़ौज़ की नोकरी से इस्तीफा दे दिया।

लोग पागल समझने लगें

आपने अपने कपड़े फाड़ लिए लोग आपको पागल समझने लगे।जबकि सूफिया फरमाते हैं कि जब इंसान रूह से अल्लाह का ज़िक्र करता है तो जातुल्लाह और सिफ़्तुल्लाह में ऐसा गुम हो जाता है तो उसे यहां की कोई फिक्र नही होती।इसे आसान लफ़्ज़ों में अगर समझना है तो कुछ यूं समझिए कि अगर इंसान इल्म में गौर करने लगे उसे आलिम कहा जाता है जब रब की जात में गौर करे तो उसे आरिफ कहा जाता है।आपने फ़रमाया तफ़क्कुर की एक घड़ी 2 साल की इबादत से बेहतर है। एक दिन आपने फ़रमाया कि में ताजुल आरफीन हूँ इस जुमले के बाद से आपको सालिक मज़्ज़ूब कहना गलत नही है।जब अवाम के कहने पर कुछ

लोगो ने आपको डॉक्टर को दिखाया तो डॉक्टर ने आपको देखते ही कहा

हम क्या करें इलाज़ इस लाइलाज का

जो खुद लुक़मान है और खुद दवा

आपका एक एक लम्हा तदब्बुर,तफ़क्कुर में गुज़रा है।4 साल बाद आपकी केफीयत बढ़ गई।

आपकी शौहरत

लोग आपको पागल समझकर पत्थर मारते थे।एक लुहार आपसे बहुत अक़ीदत रखतां था।एक दिन आप तेज़ी से उस लुहार के यहाँ गए और कहा जल्दी जल्दी परिवार को बाहर निकाल लो आज रात इसमें आग लग जाएगी चूँकि वो लुहार आपसे मोहब्बत करता था उसने आपकी बात मान ली उसने अपना सारा परिवार बाहर निकाल लिया उसी रात को लुहार के घर मे आग लग गई आपकी इस करामत स शहर भर में आपका चर्चा होने लगा लोगो का मज़मा आपके पास लगने लगा आपको शोहरत से बहुत चिढ़ थी और अहले तसव्वुफ़ में

वैसे भी शोहरत का कोई शोक नही होता और क़लन्दर,मज़्जूब तो इसके बिल्कुल सख्त खिलाफ होते हैं।

जेल में क़रामत

एक बार आप गली में जा रहे थे आपने कोई जुमला जुमला कह दिया जिसकी शिकायत कुछ औरतो ने वहाँ के मजिस्ट्रेट से कर दी उन्होंने आपको जेल में डाल दिया सुबह हुई तो लोगो ने देखा कि आप सड़क पर घूम रहे हैं।लोगो ने आपको पकड़ फिर जेल में बंद कर दिया फिर उन्होंने अगले दिन देखा कि आप बाहर है उधर जब जेलर को खबर हुई तो उसने आपको ढूंढा तो आप कमरे में मिले आपकी ये क़रामत बहुत ही मशहूर हुई।17 अगस्त 1925 में 64 साल की उम्र में आपने बज़ाहिर इस दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया।

शाह नियाज़ बे नियाज़ अल्वी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नसब

आपकी विलादत 6 जमादिस सानी 1155 हिजरी और अंग्रेज़ी कैलेंडर के मुताबिक 7 अगस्त 1742 को हिन्द के शहर सरहिन्द में हुई थी।आपके वालिद का नाम सैयद इलाही शाह मोहम्मद अलैहिर्रहमा और आपकी वालिदा का सैयदा बीबी गरीब नवाज़ था।

नसब

आप वालिद की तरफ़ से अल्वी सैयद और वालिदा की तरफ से काज़मी(हुसैनी)सैयद हैं।यानी वालिद की तरफ़ से आपका शजरा ए नसब मौलाए क़ायनात से जाकर मिलता है और वालिदा की तरफ़ से आपका शजरा ए नसब इमाम मूसा अल काज़िम रजिअल्लाहू तआला अन्हु से जाकर मिलता है।

खानदान

आपका खानदान बुखारा में बड़ी हैसियत वाला खानदान था।सबसे पहले सैयद अयातुल्लाह अल्वी बुखारा से मुल्तान आये उसके बाद उनके बेटे इधर उधर जगहों पर रहने लगे जिनमे सैयद अज्मतुल्लाह अल्वी मुल्तान से सरहिन्द आये और उनके बेटे सैयद इलाही शाह रहमतुल्लाह अल्वी सरहिन्द में रहने लगे जहां आपकी पैदाइश हुई कुछ दिन सरहिन्द में रहने के बाद आप पूरे परिवार के साथ दिल्ली चले आये।

तालीम

आपकी इब्तदाई तालीम अपनी वालिदा के ज़रिए हासिल हुई है एक तो वो खुद रूहानियत के आला मक़ाम पर फ़ायज़ तहज्जुद गुजार वलीया सैयदा थीं जिसका असर आप पर भी पड़ा।उसके बाद आप ने आला तालीम अपने पीरो मुर्शिद हज़रत ख्वाज़ा फखरुद्दीन उर्फ फख्र ए जहाँ रहमतुल्लाह अलैह से सीखी।जहां आपने कुरआन,हदीस,फ़िक़्ह,मन्तिक,फ़लसफ़ा की तालीम 15 साल की उम्र में मुकम्मल कर ली।तीन दिन तक आपका इम्तेहान

हुआ जहां बड़े बड़े उलेमाओ और सूफियों की मौजूदगी में आपको दस्तार ए फ़ज़ीलत से नवाज़ा गया।

पीरो-मुर्शिद

पीरो मुर्शिद के ताल्लुक से आपके बारे में एक दिलचस्प और मामूल से हटकर एक बात सामने आती है कि आप दो पीरो के मुरीद थे।तारीख़ गवाह है आप अपने उस्ताद हज़रत ख्वाज़ा फखरुद्दीन मोहम्मद देहलवी अलमारूफ़ फख्र ए जहाँ रहमतुल्लाह अलैह और सरकार गौसे आज़म के पौते सैयद शाह अब्दुल्लाह बगदादी रहमतुल्लाह अलैह से मुरीद थे।

आपके मुर्शिद फ़ख्र ए जहां को एक रात सरकारे गौसे आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हु का ख्वाब आया जिसमे उन्होंने फ़रमाया की तुम शाह नियाज़ को लेकर मेरे बेटे अब्दुल्लाह बगदादी के पास चले जाना और उनसे बैत करवा देना।उसके बाद सुबह होते ही एक पीर अपने मुरीद को दूसरे पीर का मुरीद करवाने के लिए ले जा रहा है जब तलाश शुरू हुई तो मुर्शिद को उनके बारे में नही पता हुआ कई दिन गुज़र गई लेकिन गौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह के बेटे की तलाश न हो सकी।फिर रात में दूसरी बार उनको ख्वाब में बशारत दी की जाओ दिल्ली चले जाओ वहां हमारे बेटे हज़रत अब्दुल्लाह

रहमतुल्लाह अलैह हज़रत शाह नियाज़ रमतुल्लाह अलैह का इंतजार कर रहे हैं।

(नोट--) यहाँ ये ध्यान रखना अहम है कि तसव्वुफ़ में हक़ीक़ी मुर्शिद एक ही होता है जबकि आपके जो दूसरे मुर्शिद थे आप उनके हक़ीक़ी मुरीद नही थे बल्कि आपने तालिब ए बैत की थी।ओर मुरीद चाहे तो वो एक पीर के होते हुए दूसरे से पीर से तालिबे बैत हो सकता है लेकिन मुरीद सिर्फ एक ही पीर का हो सकता है)

दिल्ली में मुर्शिद

ये अजीब संयोग भी था और आपकी शान भी कि एक मुर्शिद ए क़ामिल आपको अपने साथ ले जा रहा है दूसरे मुर्शिद ए क़ामिल से तालिब-ए-बैत क़राने के लिए। जब आप दिल्ली की जामा मस्जिद पहुंचे तो हज़रत शेख़ अब्दुल्लाह बगदादी रहमतुल्लाह अलैह ने आपको बैत किया और अपनी बेटी की शादी आपसे की।

शादी

आपने दो शादिया की हैं।पहली शादी तो मुर्शिद की शहज़ादी से की थी जिनका शादी के कुछ सालों बाद ही इंतेक़ाल हो गया था उसके बाद आपने दूसरी शादी की जिनसे दो औलादे हुईं जिनमे हज़रत सैयद शाह निजामुद्दीन हुसैन अल्वी अलैहिर्रहमा,और हज़रत सैयद शाह नसीरूद्दीन अल्वी अलैहिर्रहमा हुए हैं।

ख़लीफ़ा

आपके कई मशहूर खुल्फा हुए हैं जिन्होंने आपकी तालीम को आम किया और हिन्द में इस्लाम फैलाया है उनमे आपके सबसे बड़े शहज़ादे सैयद निजामुद्दीन हुसैन अल्वी अलैहिर्रहमा पहले खलीफा हुए हैं उनके अलावा सैयद मुहम्मद सानी अलैहिर्रहमा,मौलवी अब्दुल लतीफ़ समरकन्दी अलैहिर्रहमा,मौलवी नियमतुल्लाह काबुली अलैहिर्रहमा, मौलवी यार मुहम्मद काबुली अलैहिर्रहमा,मुल्ला जान मुहम्मद काबुली अलैहिर्रहमा,मौलवी मोहम्मद हुसैन मक्की अलैहिर्रहमा, मौलाना वाज मोहम्मद अलैहिर्रहमा,मिर्ज़ा अब्दुल्लाह बैग बरेलवी अलैहिर्रहमा,मिर्ज़ा आगा मुहम्मद जबलपुरी अलैहिर्रहमा,मौलवी उबेदुल्लाह अलैहिर्रहमा,

हज़रत शाह मिस्कीन जयपुरी अलैहिर्रहमा आपके खलीफा हुए हैं।

कलाम

आप आला दर्ज़े के शायर थे और आलमे रब्बानी भी थे।आपने 14 मोतबर किताबे लिखी हैं जिनमे रिसाला राज़ ओ नियाज़ और एक हाशिया मुल्ला अब्दुल मीर जाहिद जलाल के ऊपर जो बहुत ही मशहूर हुआ है। आपकी शायरी और कलाम को पढ़कर तसव्वुफ़ की झलक मिलती है ख्वाज़ा गरीब नवाज़ से आपको बेपनाह अक़ीदत थी जिसका सबूत आपने इस शेर के ज़रिए भी दिया है और सूफियों को एक प्यारा सा मैसेज भी दिया है।आप फरमाते हैं कि

"क़ुर्ब ए हक़ ए नियाज़ गर ख़्वाही

शाज़ विर्दे जुबाँ मोइनुद्दीन

आपने अपने जद्दे करीम नाना जान सैयदुस शोहदा इमामुल इमाम हज़रत इमाम हुसैन रजिअल्लाहू तआला अन्हु की शान में बहुत ही मकबूल व मशहूर शेर लिखा है।

"ए दिल बिगीर दामन ए सुल्तान ए औलिया
यानी हुसैन इब्ने अली जान ए औलिया

आप एक हक़ीक़ी सूफी क़ामिल वली अल्लाह अल्वी चमन के फूल तसव्वुफ़ के आला दर्जे पर फ़ायज़ इल्मी और रूहानी मंज़िलो पर कायम शख्सियत हैं। आपने 9 अक्टूबर 1834 ईस्वी में दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया। आपकी शख्सियत और रूहानियत की वजह से उस दौर में लोगो ने बरेली शरीफ़ को जाना और पहचाना है आज भी आपका सिलसिला नियाज़िया चिश्तिया पूरी दुनिया मे फैला हुआ है हर मुल्क में आपके अनुयायी है जो अपने नाम के आगे नियाज़ी लगाते हैं अल्लाह आपके सदके हम सबको अपना क़ुर्ब अता फरमाए हमारे गुनाहों को माफ़ फरमाए।

मख्दूम शाह मुनअम पाक बाज़ रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नसब

आपकी विलादत 1082 हिजरी और अंग्रेजी केलेंडर के मुताबिक 1671 ईस्वी को पचना शैखापुरा बिहार में हुई थी।

नसब

आपका नसब हज़रत मख्दूम हक़्क़ानी रहमतुल्लाह अलैह से मिलता है जो कि अपने वक़्त के बहुत बड़े दरवेश और वली ए क़ामिल थे व हज़रत सैयदना इब्राहिम बिन अद हम रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा थे।

तालीम और मुर्शिद

बचपन की तालीम घर पर ही हुई उसके बाद आला और तसव्वुफ़ की तालीम हासिल करने के लिए आप दीवान सैयद अबु सईद जाफ़र मोहम्मद क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के पास गए उनके इंतेक़ाल के बाद आप उनके शहज़ादे दीवान सैयद ख़लीलुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के पास तालीम सीखने लगे

बाद में उन्हीं के मुरीद और ख़लीफ़ा हुए।तालीम हासिल करने के बाद आप मुर्शिद के हुक्म से दिल्ली चले आये जहां आपने 40 साल तक दिल्ली की मशहूर जामा मस्जिद के पीछे बने मदरसे में बच्चों को आला तालीम भी पढ़ाई है।

अबुल उलाइया

आप रहमतुल्लाह अलैह सिलसिला ए चिश्तियां अबुल उलाइया और नक्शबंदिया अबुल उलाइया के अज़ीम बुजुर्ग हैं।आप रहमतुल्लाह अलैह ख्वाज़ा शाह मोहम्मद फरहद रहमतुल्लाह अलैह के पास उनकी खिदमत में 11 साल रहे जहाँ आपने सिलसिला की तालीम और रूहानी फेज़ हासिल किया।ख्वाजा शाह फरहद रहमतुल्लाह अलैह हुज़ूर सैयद दोस्त मोहम्मद बुराहनपुरी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा हैं और ख्वाजा दोस्त मोहम्मद बुरहानपुरी रहमतुल्लाह अलैह हुज़ूर सैयदना अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा हैं इस तरह से आप रहमतुल्लाह अलैह हुज़ूर गौसे आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हू और मख्दूम उल मुल्क सैयदना शेख सरफुद्दीन यहया मनेरी रहमतुल्लाह अलैह के बहुत करीबी माने जाते हैं।

इबादत

आप रहमतुल्लाह अलैह अक्सर रोज़े से रहते हर वक़्त इबादते इलाही में मशगूल रहते।आपने कभी भी अपने लिए घर नही बनाया और न ही शादी की है आप को शोर शराबा बिल्कुल नही पसन्द थी आपका ज़्यादा तर वक़्त इबादत में ही गुजरता था।

दिल्ली से पटना

कुछ सालों तक रहने के बाद आपने दिल्ली को छोड़कर पटना का रुख किया और पटना में आपने मीर तकी मस्जिद में क़याम किया और कुछ दिनों के बाद यही अपनी खानकाह भी बनाई।

पटना से बिहार

पटना पहुचने के कुछ दिन बाद आप बिहार शरीफ़ भी गये जहां आप तीन महीने तक हुज़ूर मख्दूम उल मुल्क मख्दूम ए जहाँ शेख सरफुद्दीन यहया मनेरी रहमतुल्लाह अलैह के आस्ताने मुबारक पर रुके और फेज़ बातिन हासिल किया और फिर पटना लौट आये।

क़ुतुब

आप रहमतुल्लाह अलैह ने दिल्ली मदरसे में तदरीस के दौरान तीन किताबें लिखी हैं

1--मुकाशिफ़त-ए-मुनेमि

2--इल्हामात-ए-मुनेमी

3--मुशाहिदात--ए-मुनेमी

जिसमे इल्हामात-ए-मुनेमि और मुकाशिफत-ए-मुनेमी आज खुदाबख्श लाइब्रेरी और दीगर लाइब्रेरी में आसानी से मिल जाती हैं लेकिन मुशाहिदात-ए-मुनेमी बहुत कम ही लाइब्रेरी में है या तो बस नाम की मिलती है।

खुल्फा

पटना शरीफ में आपकी आमद के बाद आपसे कई हज़रात मुरीद हुए और जब वो अपनी मंज़िल तक पहुंच गए तो आपने उनको ख़िलाफ़त व इजाजत अता कर दी।जिनमे ख़लीफ़ा ए

अव्वल में हज़रत मौलाना सैयद हस्सान रज़ा रायपुरी रहमतुल्लाह अलैह का नाम सबसे पहले आता है।

1--मौलाना सैयद हस्सान रज़ा रायपुरी अलैहिर्रहमा

2--हजरत ख्वाजा रुकनुद्दीन इश्हाक अज़ीमाबादी अलैहिर्रहमा

3--हजरत मख्दूम शाह हसन अली अलैहिर्रहमा

4---शाह कुतबुद्दीन इलियास शाह बसावन अलैहिर्रहमा

5---सूफी सैयद मोहम्मद दायम अलैहिर्रहमा

6--सैयद शाह गुलाम हुसैन दानापुरी अलैहिर्रहमा

7--शाह अब्दुल्लाह सानी अलैहिर्रहमा

8--शाह खुदा बख्श अलैहिर्रहमा

9--शाह फ़ाज़िल अलैहिर्रहमा

10--शाह मनेरी अलैहिर्रहमा

11--शाह वजहुल्लाह तालिब अलैहिर्रहमा

12--शाह मुहम्मद अज़ीम अलैहिर्रहमा

13--शाह रहीमुद्दीन अलैहिर्रहमा

14--मुल्ला जमालुल हक़ अलैहिर्रहमा

15--मुल्ला कमालुल हक़ अलैहिर्रहमा

16-शाह नवाजिश अली अलैहिर्रहमा

आप रहमतुअल्लाह अलैह का मक़ाम बहुत ही बुलन्द व बाला है अहले तसव्वुफ़ आपसे बड़ी अक़ीदत रखते हैं आपने 1771 ईस्वी में इस दुनिया ए फानी को बज़ाहिर अलविदा कह दिया। आपका आस्ताना बिहार के पटना में मौजूद मतीनघाट में है आपके मुर्शिद दीवान सैयद ख़लीलुद्दीन शाह रहमतुल्लाह अलैह हैं बिलयक़ीन आप की जात से दीन इस्लाम बिहार और पटना में बहुत तेज़ी से फेला है।

सैयद आले रसुल माहरेरवी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत रजब माह में 1209 हिजरी को हुई।आपके वालिद सैयद आले बरकात रहमतुल्लाह अलैह थे।

शजरा ए नसब

आप ज़ैदी/हुसैनी सादात हैं।यानी नसब के एतबार से तो आप आला और मोअज़्ज़्म हैं क्योंकि आपकि किस्मत में दुनिया का सबसे अज़ीम खानदान आया है।

शजरा ए नसब

आपका शजरा ए नसब कुछ यूँ है--

सैयद आले रसूल महरेरवी अलैहिर्रहमा

सैयद आले बरकात अलैहिर्रहमा

सैयद शाह हमज़ा अलैहिर्रहमा

सैयद शाह आले मोहम्मद अलैहिर्रहमा

सैयद शाह बरकतउल्लाह अलैहिर्रहमा

सैयद शाह आवेश हुसैनी अलैहिर्रहमा

सैयद शाह अब्दुल जलील अलैहिर्रहमा

सैयद मीर अब्दुल वाहिद अलैहिर्रहमा

सैयद शाह इब्राहिम अलैहिर्रहमा

सैयद शाह कुतबुद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयद शाह महाइक अलैहिर्रहमा

सैयद शाह बुधन अलैहिर्रहमा

सैयद शाह कमाल अलैहिर्रहमा

सैयद शाह क़ासिम अलैहिर्रहमा

सैयद शाह हसन अलैहिर्रहमा

सैयद शाह नसीर अलैहिर्रहमा

सैयद शाह हुसैन अलैहिर्रहमा

सैयद शाह उमर अलैहिर्रहमा

सैयद शाह मुहम्मद सुगरा अलैहिर्रहमा

सैयद शाह अली अलैहिर्रहमा

सैयद शाह हुसैन अलैहिर्रहमा

सैयद शाह अब्दुल फरह शानी अलैहिर्रहमा

सैयद अबु फिरस अलैहिर्रहमा

सैयद शाह अबुल फिरह वासिकी अलैहिर्रहमा

सैयद शाह दाऊद अलैहिर्रहमा

सैयद शाह हुसैन अलैहिर्रहमा

सैयद शाह यहया अलैहिर्रहमा

सैयद शाह जैद सोम अलैहिर्रहमा

सैयद शाह उमर अलैहिर्रहमा

सैयद शाह जैद दोम अलैहिर्रहमा

सैयद शाह अली अलैहिर्रहमा

सैयद शाह हुसैन अलैहिर्रहमा

सैयद शाह अली अलैहिर्रहमा

सैयद शाह मुहम्मद ईसा अलैहिर्रहमा

सैयद शाह ज़ैद शहीद अलैहिर्रहमा

सैयदना इमाम जैनुल आब्दीन रजिअल्लाहू तआला अन्हु

सैयदना मौला इमाम हुसैन रजिअल्लाहू तआला अन्हु

सैयदना मोलाए क़ायनात हज़रत अली करमल्लाहु वज्हुल करीम

सैयदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम

(इस शजरा शरीफ में अक्सर जगहों पर अली/हुसैन का नाम मिलता है क्योंकि सादात और अहले इल्म इन नामों की बरक़त जानते थे और अहले बैत के घराने के नाम मे दादा-पौते-नाना-नवासे--दादी-फूफी के नाम अक्सर एक ही होते हैं यानी हमनाम होते थे)

महरेरा आमद और ख़ानदानी पश्मन्जर

आपके जद्दे अमज़द में सैयद मुहम्मद सुगरा रहमतुल्लाह अलैह बहुत बड़ा नाम हैं।जो कि जिहाद करते हुए हरदोई जनपद के शहर बिलग्राम पहुंचे।उसके बाद सैयद मीर

अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह और सैयद शाह जलील अलैहिर्रहमा पहली हस्ती है जो महरेरा तशरीफ़ लाये।आप ने 2 साल तक जंगलो में मुजाहिदा किया।सैयद अब्दुल जलील अलैहिर्रहमा ने वहीँ रहकर 2 निकाह किये एक बिलग्राम शरीफ से भी किया।आपके बाद सैयद शाह आवेश सज्जादानशीं बने और उनकी शादी सैयद अलाउद्दीन बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह की बेटी से हुई जिनसे 3 शहज़ादे हुए उन्हीं शहज़ादो में सैयद शाह बरकतउल्लाह अलैहिर्रहमा भी हैं।

सैयद शाह बरकतउल्लाह अलैहिर्रहमा आपके परदादा थे जो फारसी के बहुत ही बुलन्द पाए के शायर थे।इल्मे मौसीक़ी से आपको लगाव था।एक बार आप काल्पी शरीफ़ गए जहां सैयद शाह फ़ज़्लुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह से मुलाकात हुई तो उन्होंने आपक़ो क़ादरी सिलसिला में दाखिल किया और क़ादरी सिलसिला के उसूल के मुताबिक आपने मोशीकी को तर्क कर दिया।आपसे 2 साहबज़ादे हुए जिनमे सैयद शाह आले मुहम्मद और सैयद शाह निजातुल्लाह अलैहिर्रहमा।आपने तमाम सिलसिला से फेज़ लिया है।आपकी शोहरत मुरीदीन और तलबा के ज़रिए पूरे मुल्क में

फैल गई।बादशाह मोहम्मद शाह ने आपको 2 गांव वक़्फ़ कर दिया उसके बाद उन गाँवो से जो भी आमदनी होती आप गरीबो में तक़सीम कर देते थे।आपने बहुत सारी किताबे लिखीं है जिनमे

1--रिसाला चहार अनवार

2--रिसाला सवाल जवाब

3--मसनवी रियाज़ुल आशिकीन

4--दीवाने इश्की

5--रिसाला तक़सीम

उसके बाद आपको हज़रत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाह अलैह से खिरका व तबर्रूक़ात हासिल हुई।और आक़ा अलैहिस्सलाम के बाल मुबारक भी आपको अता हुए।

सैयद शाह आले रसूल की तालीम

आपने इब्तिदाई तालीम मौलाना शाह सलामतुल्लाह अलैहिर्रहमा से सीखी।उसके बाद आला तालीम के लिए

फिरंगी महल तशरीफ़ लाए।जहां मौलाना अब्दुल वासे,मौलाना अनवार अहमद व मौलाना शाह नूरुल हक़ जैसे उलेमा से आपने ज़ाहिरी उलूम सीखे।उस दौर के उलेमा तिब भी सीखते थे जब आपने तालीम हासिल कर ली तो रूहानियत की तरफ क़दम बढ़ाए जहां सैयद अच्छे मियाँ रहमतुल्लाह अलैह से मुरीद हुए और इजाजत व खिलाफ़त अता हुई।आपको तमाम सिलसिला की इजाजत थी।ऐसे वजायफ़ जिनको हासिल करने के लिए इंसान की ज़िंदगी गुज़र जाती है आप ऐसे वजायफो को सुबह शाम पढ़ते।आप रूहानियत के आला मक़ाम पर फ़ायज़ थे।

मुसफहाते अरबा

आपको मुसफहाते अरबा की भी इज़ाज़त हासिल थी।यानी इसका मतलब ये है कि आपने उस हस्ती से मुसाफा किया है जिसने सिलसिला ब सिलसिला हुज़ूर ए अक़दस के हाथों पर ज़ाहिरी ज़िंदगी मे मुसाहफ़ा किया है।इसलिए आपको मुसाफतुल मुमारिया 10 वास्तो से,,मुसाफ़तुल खादिरया 18 वास्तो से मुसाफ़तुल मनामिया-21 वास्तो से हासिल हुई है।आप तसव्वुफ के बहुत ही बुलन्द दर्ज़े पर फ़ायज थे।आपने तीन ऐसी हस्तियो से मुसाफा किया है जिन्होंने रसूले खुदा से

बिला वास्ता मुसाफा किया है।शाह वलिउल्लाह देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के बड़े बेटे शाह अब्दुल अजीज अलैहिर्रहमा से भी आपने फेज़ लिया है।

मामलात

आप बजमात नमाज़ अदा करते थे और कसीर तादाद क़ुरआन शरीफ पढ़ते थे।आपके वजायफ़ के अंदर दलायुल खैरात का वजीफ़ा था ये वजीफ़ा हर सिलसिला में है जिसे इमाम मुहम्मद बिन सुलेमान अल जसुली अलैहिर्रहमा ने लिखा है।

आला हजरत और आप

आप का तज़किरा इसलिए भी हर जगह पर आम है क्योंकि आप आला हजरत अजीमुल बरक़त के पीरो मुर्शिद हैं।आप हमेशा कहा करते थे कि पहले मुझे बड़ी बैचेनी रहती की जब खुदा मुझसे मैदान ए महशर सवाल करेगा ए आले रसूल तुम दुनिया से क्या लाये हो तो में क्या जवाब दूँगा--? यही सोचकर आप परेशान रहते लेकिन जिस दिन से आला हजरत अज़ीमुल बरक़त आप के मुरीद हुए हैं तबसे आप को ये बेचनी खत्म हुई आप की शान समझने के लिए यही काफी है कि

वक़्त के मुजद्दीद,मुहद्दिस,मुहक़्क़ीक़, मुसन्निफ़ आपके मुरीद हैं।

18 जिल हज 1296 हिजरी में आपने दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया।लेकिन आपका नाम ता क़यामत तक ऐसे ही अदब से लिया जाएगा आपका फैज़ान जारी व सारी रहेगा।

आला हजरत फ़ाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत

आपकी विलादत 10 शव्वाल 1272 हिजरी अंग्रेजी कैलेंडर के मुताबिक जून 1856 ईस्वी को हुई।

खानदान

आपके जद्दे अमज़द कंधार के सुल्तान थे उस वक़्त किसी मसले को लेकर घर की औरतो में झगड़ा शुरू हुआ कि तख़्त पर उनके बेटे बैठे।आपके जद्दे अमजद ने झगड़े को बढ़ता देख गद्दी छोड़ दी और दिल्ली आ गए।दिल्ली में उनकी आमद से सुल्तान ने उनका जोरदार इस्तेकबाल किया और फ़ौज का सेनापति बना दिया आप के जद्दे **आला** 6 हज़ार की लश्कर के सरदार थे।

फिर आपके जद्दे अमज़द ने रुहेलखंड को फतह कर लिया जिससे सुल्तान ने ख़ुश होकर उन्हें वहाँ का गवर्नर बना

दिया।फिर उनके बेटे सआदत खान अलैहिर्रहमा बदायूँ शरीफ आये वहाँ वो भी कई गाँव के मालिक थे उस वक़्त बदायूँ में कई बाजार और नहरे सआदत खान अलैहिर्रहमा के नाम से चलती थी।वहाँ उनकी तीन औलादे हुईं जिनमे सबसे बड़े बेटे मोहम्मद आजम खान अलैहिर्रहमा थे और मोहम्मद आज़म खान के शहज़ादे हाफिज़ काज़िम अली खान अलैहिर्रहमा जो कि बदायूँ के तहसीलदार थे।मोहम्मद आज़म खान अलैहिर्रहमा का तसव्वुफ़ से ज्यादा लगाव रहता।सर्दियों में भी आप अक्सर पतले कपड़े पहनते थे फिर हाफिज़ काज़िम अली खान अलैहिर्रहमा के शहज़ादे जिनका नाम रज़ा अली खान था आप आला हजरत अजीमुल बरक़त के दादा जान थे।दादा मोहम्मद आजम खान अलैहिर्रहमा ने पौते अली रज़ा खान को तालीम और तरबीयत दी फिर उनके शहज़ादे मौलाना नक़ी खान अलैहिर्रहमा जो खुद एक बहतरीन आलिम सूफी शरीयत पर अमल करने वाले उलेमा थे।

तो अज़ीज़ों खानदान का ज़िक्र यहां इसलिए किया गया है ताकि आपको ये समझ आ जाए कि आला हजरत अजीमुल बरक़त का खानदान का खानदान आशिके रसूल था।एक से बढ़कर एक आलिम ए दीन आपके खानदान में हुए हैं।

बचपन और तालीम

जब आप 4 साल 4 माह के हुए तो रस्मे बिस्मिल्लाह अदा हुई।आप क़ुरआन क़रीम पढ़ रहे थे आपने उलट पढ़ा फिर क़ारी साहब ने दुबापरा पढ़ाया आपने फिर उलट पढ़ा।ये सब आपके वालिद मौलाना नक़ी रज़ा खान अलैहिर्रहमा देख रहे थे उन्होंने क़ुरआन मंगवाया और देखा कि एराफ़ की गलती थी उन्होंने कहा बेटे एराफ़ में गलती है ये तो ठीक है लेकिन जब क़ारी साहब सही पढ़ा रहे थे तो तुम उल्टा क्यों पढ़ रहे थे आपके तलफ़्फ़ुज़ में क्यों नही निकल रहा था।आपने फ़रमाया बाबा में तो पढ़ना चाहता ही था लेकिन मेरे मुंह से निकल ही नही रहा था आपके वालिद समझ गए कि ये कोई आम बच्चा नही है।

बचपन की करामत

अल्लामा सैयद शाह मुख्तार अहमद नईमी दामत् बरकातहुल आलिया फरमाते हैं कि आला हजरत अजीमुल बरक़त की हर तस्नीफ़ एक क़रामत है लेकिन बचपन ही से उन्होंने जो तालीम हासिल की है उसका सानी नही मिलता।

6 साल की उम्र में आपने पहला जबरदस्त खिताब दिया।8 साल की उम्र में हिदायतुन नोह पढ़कर अरबी की शरह 8

साल की उम्र में लिख डाली।21 उलूम आपने अपने वालिद मौलाना नक़ी रज़ा खान अलैहिर्रहमा से सीखे।जब आपकी उम्र 13 साल 10 महीने 5 दिन हुई तो आप मुफ्ती बन गए।और आप सेल्फ मेड मुफ्ती नही बल्कि 500 से ज्यादा उलेमाओ ने आपक़ो मुफ्ती का लक़ब दिया।

बेटा तू मुझे पढ़ाता है

एक बार आप वालिद साहब से मुसल्लमुस सबूत पढ़ रहे थे।आपके वालिद मोहतरम को इस किताब के हाशिये पर एतराज़ होता था आपने सोचा लाओ आज एतराज़ ही खत्म दिया जाए आपने तदब्बुर के बाद इबारत को इस अंदाज में पढ़ा कि इबारत से एतराज़ ख़त्म हो गया।जब आपने ये मसला हल कर दिया तो ज़ोर से सुब्हानअल्लाह कहा।घर के सारे फर्द जाग गए आपके वालिद भी उठे कहा बेटा क्या हुआ आपने वो इबारत पेश की वालिद ने देखा तो उनकी आंखों से आंसू जारी थे और उन्होंने कहा बेटे तू मुझे पढ़ाता है।

रामपुर में आमद

वालिद साहब से 21 उलूम मुक़म्मल करने के बाद आप उसके आगे की तालीम के लिए रामपुर गये।उस दौर में वहाँ

दो इल्मी दबदबे वाली दो शख्सियते थी जिनकी शोहरत के चर्चे हर तरफ थे।उनमें 1 तो हुज़ूर फ़ज़ले हक़ खैराबादी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे मौलाना अब्दुल हक़ खैराबादी जो मन्तिक,फलसफ़ा और उसूल के जबरदस्त आलिम थे और दूसरी शख्सियत मौलाना अब्दुल अली अलैहिर्रहमा जिनको रियाजी में महारत हासिल थी।

जब आप रामपुर पहुंचे तो वहां के नवाब ने मौलाना अब्दुल हक़ खैराबादी से कहा ये देखो इतनी कम उम्र में सब पढ़ कर आये हैं।इतना सुनने के बाद मौलाना अब्दुल हक़ खैराबादी आपके पास आये और पूछा मन्तिक में क्या पढ़ा है--?आपने जवाब दिया क़ाज़ी मुबारक पढ़ चुका हूँ उन्होंने फिर पूछा कि क्या करते हो--?आपने फ़रमाया तदरीस(पढ़ाना),तस्नीफ़(किताबे लिखना)करता हूँ।उन्होंने पूछा किस उनवान पर लिखते हो--?आपने फ़रमाया की रद्दे वहाबिया,अज़्मते सैयदुल अम्बिया पर लिख रहा हूँ।ये सुनकर उन्होंने कहा एक मेरा शागिर्द है मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूंनी अलैहिर्रहमा वो भी रद्दे वहाबिया पर लिखता रहता है--ये सुनकर आला हजरत अजीमुल बरक़त ने जलाली अंदाज़ में कहा सुनो मियाँ रद्दे वहाबिया पर लिखना कोई मामूली बात नही है और आपके

वालिद अल्लामा फ़ज़्ले हक़ खैराबादी अलैहिर्रहमा ने हिन्द में वहाबियों से सबसे पहला मुनाजरा करके इस्माइल देहलवी को परास्त किया था।उसके बाद मौलाना अब्दुल हक़ खैराबादी समझ गए कि ये कोई आम नोजवान नही है उसके बाद से उन्होंने कभी आपसे इस लहज़े में बात नही की।आपने उनसे तालीम हासिल की आपके उस्तादों में मौलान अब्दुल हक़ खैराबादी अलैहिर्रहमा, मौलाना नक़ी रज़ा खान अलैहिर्रहमा,मौलना अब्दुल अली अलैहिर्रहमा,आपके मुर्शिद सैयद आले रसूल माहरेरवी रहमतुल्लाह अलैह का नाम आता है।इन उस्तादों से आपने रिदाअत,इल्मे सीरत,इल्मे किरात, इल्मे तारीख़, इल्मे लुगत,इलमुल आदाब,इलमुल एखलाख,इल्मे आसमा रिजाल,हयाते जदीदा,नज़्में हिंदी,नज़्में फारसी,नज़्में अरबी,इंशा ए अरबी, इंशा ए फारसी,इंशा ए हिन्दी, इलमुत तौहीद समेत 52 उलूम हासिल किए।

इल्मी खिदमात

आपने 1300 से ज्यादा किताबे लिखी है और आपकी हर किताब एक करामत है।

इलमुल नाफ़ पर 22 किताबे

इलमुल शरफ़ पर 1

इलमुल अदब पर 1

इलमुल लुगत 1

इलमुल तज़नीद 4

रस्मे ख़त्म कुरआन 1

इलमुल एखलाख 3

इलमुल तफ़्सीर 15

उसूल तफ़्सीर 1

इल्मे हदीस 26

असनाबे हदीस 3

उसूले हदीस 6

तखरीज़ हदीस 4

जिरह उल तहदिल 2

अस्माउल रिजाल 7

लुगत हदीस 1

रसमुल मुफ्ती 3

इलमुल फ़रायज़ 4

इलमुल नाजरा 7

सीरत 4

फ़ज़ाएल 20

मनाकिब 12

तारीख 3

तसव्वुफ़ 12

सुलूक 2

अज़कार 9

नसाएफ 3

मलफूज़ात 5

मकतूबात 2

ख़ुतबात 2

उरूज़ 1

ताबीर 1

जफर 9

फ़िक़्ह 253

उसूले फ़िक़्ह 7

अक़ाएद कलाम 126

इसके अलावा अम्बिया व औलिया की तोहीन करने वालो के जवाब में आपने सैकड़ो किताबे लिखी हैं।ये सारी किताबे आपने खुद लिखी हैं।आपकी सबसे बड़ी क़रामत फतावा रज़विया है।जिसने भी इसको पढ़ा अपने सर को झुका लिया।आप के पास पूरी दुनिया से फतवे आते और आप उसे चंद मिनटों में हल कर देते थे।

(नोट--) अमूमन ये सुनने को मिलता है कि आप दोनों हाथों से लिखते थे जो कि ग़लत है क्योंकि आला हजरत अजीमुल बरक़त ने कभी बाएं हाथ से कोई काम नही किया है तो

अज़ीज़ों जिस हस्ती ने बाए हाथ से कोई दुनियावी काम नही किया हो वो दीन का काम कैसे कर सकता है आप हमेशा दाहिने हाथ से लिखते थे आप ने बाएं हाथ से लिखने को मना फ़रमाया है|

आपके फतावो को देखकर मक्का के इमाम शेख सैयद इस्माईल रहमतुल्लाह अलैह ने कहा अल्लाह की कसम अगर आज नोमान बिन साबित अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह होते तो आपको अपना शागिर्द बना लेते।

इमाम

इलमुल फ़िक़्ह में आपको इमाम का दर्जा दिया गया है

आपने नूरुल इजा में

जिस तरह के पानी से वज़ू जायज़ है उसकी 160 अक्साम और जिस पानी से वजू जायज़ नही है उसकी 146 अकसाम बयान की है।

तयम्मुम पर आपने 181 अक्साम लिखे हैं जिनमे 107 अक्साम तो आपने अपने इल्म से ख़ुद लिखा है।

इमामुल मुहद्दिसीन

अल्लामा शेख़ यासीन अहमद अल ख़यारी अलैहिर्रहमा ने आपको इमामुल मुहद्दिसीन कहकर पुकारा है।आपसे कोई मसला पूछता आप बगैर देखे बता देते की ये मसला फला पेज पर फला हदीस से है।सज़दा ए ताजीमी पर आपने 40 हदीसे लिखीं है और सज़दा ए ताजीमी को आपने हराम कहा है और इसे पढ़ने के बाद मौलाना अबुल हसन नदवी ने आपकी तारीफ की और कहा इल्मी दबदबे में अहमद रज़ा का कोई सानी नही है।हाजी इमदादुल मक़्क़ी मजहरी के ख़लीफ़ा ने फतवा दिया कि दु रूद ए ताज पढ़ना शिर्क है आपने इसके जवाब में 300 हदीस से साबित किया कि दुरूद ए ताज पढ़ना जायज़ है अहमदुल्लाह शाह कानपुरी ने आपसे सवाल किया कि लोग चावल और गेंहू जमा करते हैं और उलेमा को खिलाते है क्या ये जायज़ है--?आपने 60 हदीस से साबित करके इसे जायज बताया फिर मुर्दो के सुनने पर आपने 400 दलाएल और 77 हदीस से साबित किया।जब मिर्जा गुलाम क़ादियानी ने खुद को नबी कहा आपने 121 हदीस से उसका रद किया।जब दाढ़ी की बेहुरमती हुई तो आपने मुश्त भर दाढी

रखना 56 हदीस से साबित किया यही वजह है कि आपको इमामुल मुहद्दिसीन कहा जाता है।सैयद मोहम्मद किछौछवी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते है कि हदीस में इल्मे अस्मा रिजाल सबसे मुश्किल मरहला होता है जब आपके सामने क़ोई सनद पढ़ी जाती उसके मुत्तालिक आप जो फ़रमा देते बाद में जब में किताब देखता तो वही होता।

मुजद्दीद ए मिल्लत

सबसे पहले हमें समझना है कि मुजद्दीद कौन होता है--?

नबी क़रीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

"हर सदी के ख़त्म पर अल्लाह रब्बुल इज्जत इस उम्मत के लिए एक मुजद्दीद भेजेगा जो दीन को बातिल से काटकर साफ करेगा"

(अबु दाऊद जिल्द 2 सफा 241)

यानी जब दीन पर नए नए ख्यालात और तसव्वरात के पर्दे डाल दिये जाते हैं तो मुजद्दीद अपने इल्मी दलाएल से उन पर्दो को काटकर साफ करता है।मुजद्दीद वो होगा जब सारे बातिल दीन में आकर अपने दीन को मिला देंगे तो मुजद्दीद उसे साफ करेगा।

मुजद्दीद की पहचान

1--मुजद्दीद का पहला काम होता है जो लोग अहकामे शरीयत भूल गए हैं उनको याद दिलाना।

2--मुजद्दीद छोटी से छोटी सुन्नत को भी आम करेगा।

3--मुजद्दीद फ़िक़्ह के उलझे हुए मसलो को सुलझाएगा।

4--अपनी ताक़त का इस्तेमाल करते हुए बातिल की शान व शौकत को ख़त्म करेगा।

5--मुजद्दीद का अरबी ज़ुबान पर क़ब्ज़ा होगा यानी अरबी ज़ुबान उसे ऐसी आती होगी जैसे उसकी मादरी ज़ुबान हो।पटना में हुए जलसे में करीब 500 उलेमाओ ने आपको मुजद्दीद कहा।शेख़ हिदायतुल्लाह बिन महमूद बिन मोहम्मद सईद मोहाजिम मदनी ने जब आपकी किताब अद दौलतुल मककिया बिल गेबिया पढ़ी जो ख़ुद आपने अपने हाथों से लिखी है जैसे ही इस किताब को पढ़ा फौरन बोल पड़े अल्लाह की कसम ये शख़्श मुजद्दीद है।

आपके दौर में बद अक़ीदों की बाढ़

आपके दौर में बेअदबी/बदतमीज़ी अक्सर बदमजहबो के ज़रिए हुई।वो भी सैयदुल अम्बिया की शान में नज़दी फितना

अपने उरूज़ पर था और ये वो फितना है जिसने सबसे ज्यादा औलिया अल्लाह की शान में तौहीन की।जिसके हर एतराज़ का जवाब आला हजरत अजीमुल बरक़त ने दिया है।

तक़वेतुल ईमान जैसी किताब के ज़रिए रसूल ए अक़्दस की शान में तोहीन हुई।

जब बदमजहबो ने नबी की अज़मत पर उंगली उठाई आपने फ़रमाया

"फर्श वाले तेरी शौकत का उलूं क्या जाने

खुसरवा अर्श पे उड़ता है फरेरा तेरा"

जब बदमजहबो ने नबी को बेबस और मजलूम लिखा तो आपने फ़रमाया

"मालिक ए कौनेन है गो पास कुछ रखते नही

दो जहाँ की नेमते है इनके खाली हाथ मे"

जब बदमज़हबो ने नबी के इल्मे ग़ैब पर उंगली उठाई तो आपने लिखा

"और कोई ग़ैब क्या तुमसे निहा हो भला
जब न खुदा हि छिपा तुमपे करोड़ो दुरूद"

जब बदमज़हबो ने नबी को अपनी तरह समझा और अपना बड़ा भाई कहा तो आपने लिखा

"सुबह तैबा में हुई बंटता है बाड़ा नूर का
सदक़ा लेने नूर का आया है तारा नूर का"

जब बदमजहबो ने नबी और मौला अली को आम इंसान के बराबर लिखा और कहा जिसका नाम मुहम्मद और अली है वो किसी चीज के मालिक नही हैं उसके जवाब में आपने लिखा

"में तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब में नही मेरा तेरा"

आपने बदमजहबो के हर एतराज़ का जवाब क़ुरआन और हदीस की रोशनी में देते हुए उनके उठ रहे हर फ़ितने को कुचल डाला।

अहले बैत (सादात) की ताज़ीम

आपने सादातो की ताज़ीम खुद करके उनके मक़ाम को बता दिया और हमेशा के लिए ये दर्स भी दे दिया कि इल्म हासिल करने के बाद सैयदो पर तनक़ीद करने वालो को ख़बरदार हो जाओ।सैयदो की शान में आपने कुछ प्यारे जुमले इरशाद फरमाए।

1--सैयद अगर बे अमल भी है फिर भी उसकी ताज़ीम की जानी चाहिए।

2--सैयद को गाली देने से निकाह टूटने का डर रहता है और ईमान जाने की भी पूरी गुंजाइश रहती है।

3--सैयदो के नसब की छानबीन और तहक़ीक़ करना गुनाह की तरफ ले जाने वाला काम है अगर कोई शख़्स खुद को सैयद बताता है तो हम पर लाज़िम है कि उसकी ताज़ीम करे।

4--सैयदो की तहक़ीर करने वाला शख़्स मुतलकन काफिर है।

5--उस्ताद को ये चाहिए अगर उसका शागिर्द सैयद हो तो गलती करने पर उसे ज़ोर से न मारे और मारते वक़्त तसव्वुर करे कि में शहज़ादे के पैर में काटा लग गया है उसे निकाल रहा हूँ।

6--आपके दो शेर है आज भी सैयदो की शान में पूरी दुनिया मे मक़बूल है।

1--तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का

तू है एन ए नूर तेरा सब घराना नूर का

2--अहले सुन्नत का है बेड़ापार असहाबे हुज़ूर

नज़्म है और नाव है इतरत रसूलल्लाह की

अहले बैत की शान में आपने यहाँ तक फ़रमा दिया की अगर सरकार गौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह का भी नाम आ जाये तो अंगूठे को चूमना चाहिए।

शैखुल इस्लाम अल्लामा सैयद मदनी मियाँ व हुज़ूर ग़ाज़ी ए मिल्लत सैयद हाश्मी मियाँ किछौछवी के वालिद सैयद मोहम्मद मुहद्दिस किछौछवी जब आपके पास तालीम हासिल करने के लिए आए तो आप अपनी मसनद से उठकर खड़े गए और कहा आओ शहज़ादे मेरे पास जो कुछ भी है आपके ही जद्दे अमजद का है।

सहाबा क़राम से मोहब्बत

आप को सहाबा क़राम से बहुत मोहब्बत थी।आपने कभी गुस्ताखे सहाबा से सलाम नही किया आप ने फरमा दिया कि नबी क़रीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक रजिअल्लाहो तआला अन्हु सबसे अफ़ज़ल हैं और अहले सुन्नत वल जमात और तमाम औलिया अल्लाह का भी यही अक़ीदह है।

क़ुरआन का तर्जुमा

क़ुरआन का तर्जुमा आपकी एक और बहुत बड़ी करामत है

दरसअल पहले तर्जुमे में अम्बिया औलिया से ताल्लुक से बेअदबी थी लेकिन आपके तर्जुमे में अदब की झलक मिलती है आपने लफ़्ज़ी तर्जुमा किया जबकि उससे पहले तफसीरी तरजुमा होता था।लफ़्ज़ी तर्जुमा आपकी सबसे बड़ी क़रामत है और सबसे आसान तर्जुमा आपने ही किया है।

दरसअल उस्तादुल असातजा हज़रत अल्लामा सदरुशशरिया अमज़दी रहमतुल्लाह अलैह ने एक दिन आपसे कहा हुज़ूर क़ुरआन का तर्जुमा कर दे।आपने कहा ठीक है दोपहर में जिस वक्त आराम करता हूँ उस वक़्त और रात में थोड़ी देर रोज़ आ जाना हम तर्जुमा बता देंगे।रोज़ जोहर की नमाज़ के बाद वो आ जाते और आप बगैर दूसरो के तर्जुमे

की मदद से तर्जुमा करते जाते और फिर आपने बेहद अदब के साथ तर्जुमा मुकम्मल कर लिया।

दीदार ए ताजदारे मदीना

आप को रहमतुललिल आलमीन से बे पनाह मोहब्बत थी उठते बैठते हर वक़्त आप नबी की बारगाह में दुरूदो सलाम का नजराना पेश किया करते थे।

आप जब हज कर चुके तो मदीना मुनव्वरा की और चल दिये बेहद अदब के साथ आप सरकारे मदीना के आस्ताने पर हाजिर हुए पहली शब गुजर गई आपको दीदार नही हुआ आप वापिस चले आये दूसरी शब गुजर गई फिर आपको दीदार नही हुआ।तीसरी शब आयी तो आप रो रहे थे तो आस्ताने के पास क़दमो की तरफ बेठे थे फिर बेसाख्ता

आपकी जुबान से निकल पड़ा

वो शुए लालाजार फिरते हैं
तेरे दिन ए बहार फिरते हैं
कोई क्या पूछे तेरी बात रज़ा
तुझसे कुत्ते हज़ार फिरते हैं

इतना कहना था कि एकाएक हर तरफ रोशनी ही रोशनी आप माथे की निगाहों से दीदार ए मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम से सरफराज़ हुए।ये आपके इश्क़ और अदब का ही नतीजा था कि आपने माथे की निगाहों से उस हस्ती का दीदार किया है जिसके सदके तुफ़ैल ही ये सारी खुदाई है।आप नबी क़रीम के सच्चे आशिक थे।हर कदम पर आपने अमज़ते मुस्तफ़ा, शाने मुस्तफ़ा, मक़ामे मुस्तफ़ा, अंदाज़ ए मुस्तफ़ा को ही बयान किया है।

जिसकी कुछ झलक यहाँ देखिए

1-"मेरे आमाल क़ा बदला तो जहन्नम ही था या रब

में तो जाता मेरे सरकार ने जाने न दिया"

2-"तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का

तू है एन ए नूर तेरा सब घराना नूर का"

3--"ख़ल्क़ से औलिया औलिया से रुसुल

और रसूलो से आला हमारा नबी"

4--तू ज़िंदा है वल्ला तू ज़िंदा है वल्ला

मेरे चश्मे आलम से छुप जाने वाले"

5--हाजियों आओ शहंशाह का रोज़ा देखो

काबा तो देख चुके काबे का काबा देखो"

6--वाह क्या जूद ओ क़रम है शहे बतहा तेरा

नही सुनता ही नही माँगने वाला तेरा"

7"नीमते बांटता जिस सिम्त वो ज़ीशान गया

साथ ही मुंशी ए रहमत का कलमदान गया"

8--उनके नक़्शे पा पे गैरत कीजिये

सबसे छुप के उनकी ज़ियारत कीजिये

9--लहद में इश्के रुखे शा का दाग लेकर चले

अंधेरी रात **सुनी** थी चराग़ लेके चले

10--लुत्फ़ उनका आम हो ही जायेगा

शाद हर नाकाम हो ही जाएगा"

आला हज़रत

ये वो मसला है जहां पर गैर तो गैर हैं अपने भी एतराज़ करते हैं क्योंकि उनको नज़दी/देवबन्दी उलेमा इस तरह से बहकाते हैं कि अगर इंसान के पास इल्म नही है तो उसका बहकना जायज है।वो कहते है सुनो भाइयो जब नबी क़रीम को आला हजरत नही कहा गया,मौलाए क़ायनात वजहुल करीम को आला हज़रत नही कहा गया,जब इमाम आजम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह को आला हजरत नही कहा गया,ख्वाज़ा गरीब नवाज़ को आला हजरत नही कहा गया तो फिर इन्हें क्यो-?

तो भाइयों सबसे पहले ये समझ लेना चाहिए कि जिन हस्तियो के नाम ऊपर दिये है इनके मक़ाम को क़यामत तक अब कोई वली नही पा सकता और रही बात आला हजरत को आला हज़रत सैयद हाफिज़ हाजी वारिस अली शाह रहमतुल्लाह अलैह ने कहा है आला हजरत जब उन्होंने कह दिया तो बिला शक आप आला हजरत हैं।अब एतराज़ करने वालो ने अपने उलेमाओ और अक़ाबिरो को ख़ुद आला हज़रत कहा है तज़रकितुल रशीद में आशिक अली मेरठी ने हाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक़्क़ी को इसी किताब में 11 मर्तबा

आला हज़रत लिखा,मौलवी रसीद गंगोही ने 2 जगह आला हजरत लिखा मौलवी अशरफ अली थानवी ने 3 जगह आला हजरत लिखा तो एतराज़ करने वाले खुद आला हजरत लिखते थे लिहाजा आप इनसब के चक्कर मे न आए अपना काम करते रहे।आला हजरत अजीमुल बरक़त से सच्ची मोहब्बत रखे ये आशिके रसूल हैं आशिके गौसे आज़म हैं आशिके अहले बैत हैं ताक़यामत तक इनका नाम बाकी रहेगा।

आप का विसाल 28 अक्टुबर 1921 ई0 को हुआ

सदरुल अफाज़िल नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमा

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत सफर 1300 हिजरी और अंग्रेज़ी तारीख के मुताबिक 1 जनवरी 1883 ईस्वी को हुई।आपके बचपन का नाम नईम और लक़ब सदरुल अफाज़िल फखरुल अमासिल है।

(सदरुल अफाज़िल मतलब उलेमा का सरदार और फखरूल अमासिल का मतलब जिसकी सोहबत में रहकर बड़े बड़े उलेमा इल्म वाले अपनी शान समझे।

नसब

आपका शजरा ए नसब मौला इमाम हुसैन रजिअल्लाहू तआला अन्हु से मिलता है यानी आप हुसैनी सैयद हैं सादाते हुसैनी के चश्मो चराग़ हैं।

आपके जद्दे अमज़द

आपके जद्दे अजमद ईरान के शहर मशहद में रहते थे ये इलाका भी वहां के लोगो मे हरम के नाम से जाना जाता है क्योंकि यहाँ पर इमाम रज़ा अली रजिअल्लाहू तआला अन्हु का रोजा ए अक़दस है।आपके जद्दे अमज़द वहीं के थे जिसमे से कुछ लोग 1658 के बाद औरंगजेब आलमगीर अलैहिर्रहमा के साथ दिल्ली ने रहने लगे। आपका खानदान हमेशा इल्म और रूहानियत का मरकज़ रहा है।आपके वालिद भी आलिमे दीन थे और बहतरीन शायर भी।

वालिद माजिद

आपके वालिद भी वली ए अकमल थे जब उनको औलादे होती तो वो अपने बेटों को तालीम देते और क़ुरआन हिफ़्ज़ करवाते लेकिन कुछ दिनों बाद उनका इंतेक़ाल हो जाता।जब आपकी पैदाइश हुई तो आपके वालिद ने दुआ माँगी ए अल्लाह इस बच्चे को ज़िन्दगी दे इसे आलिमे दीन बनाकर तेरे रास्ते मे छोड़ दूँगा।

बचपन और तालीम

जब आप 4 साल 4 माह 4 दिन के हुए तो रस्मे बिस्मिल्लाह अदा हुई।फिर आपकी तालीम शूरु हुई जिनमे तीन उस्ताद हाफ़िज़ सैयद नबी,हाफ़िज़ हफजुल्लाह अहमद,हाफ़िज़ इनामुल्लाह साहब इन तीनो उस्तादों ने आपको कुरआन हिफ़्ज़ कराया उसके बाद नाज़िरा तजवीज़ 8 साल तक मुकम्मल हो गई।उसके बाद आला तालीम के लिए हजरत अल्लामा हकीम अबुल फजल अहमद अमरोहवी के पास चले गए जहाँ आपने तिब का भी इल्म सीखा आपके उस्ताद सच्चे आशिके मुस्तफ़ा थे जिन्होंने एक ही हुजरे में 20 साल गुजार दिए हर जुमा को नात की महफ़िल होती थी बस उसी में शिरकत फ़रमाते उसके बाद फौरन अपने हुजरे में तशरीफ़ ले आते।

सनद ए फ़रागत

आपके उस्ताद हज़रत अल्लामा हकीम अबुल फजल अहमद अमरोहवी अलैहिर्रहमा आपको लेकर वक़्त के वली ए क़ामिल हज़रत सैयद मोहम्मद गुल काबुली अलैहिर्रहमा के पास ले गए और उनसे कहा ये बच्चा बहुत ज़हीन है में चाहता हूँ अब आप इसे पढ़ाए।उनसे आपने मन्तिक,फ़लसफ़ा,रियाज़ी वो

बगैर नुक़्ते वाली पढ़ी जब आपने सारे जरूरी उलूम हासिल कर लिए तो आपकी दस्तार का एलान किया गया 20 साल की उम्र में आपको मदरसा इम्दादिया में आपको सनद ए फ़रागत अता की गई।उधर आपकी पहली किताब भी 1 साल के अंदर आ गयी जिसका नाम था "अलकलिमतुल औलिया ली आलाई इल्मुल मुस्तफ़ा"

आपकी चंद किताबें

यू तो आपने सैकड़ों किताबें लिखी हैं लेकिन यहाँ सबका **ज़िक्र** करना मुनासिब नही बस चन्द किताबें पेश ख़िदमत हैं

1--अलकलिमतुल औलिया

2-अहकामे रमज़ान

3--इरशादुल अनाम

4--अदबुल अख़्यार

5--फैज़ान ए रहमत

6--हाशिया मीर

7--फराएदुन नूर फी जराएदुल क़बूर

8--अत तहकीकात लिदा फिद तब्लीसात

9--अलकिताबुल मुस्तताब

10--मुखतसरुल उसूल

11--तफ़्सीर ए ख़ज़ाइनुल इरफान

12--सीरते सहाबा

13--अहकाके हक़

14--मक़ातिबे सदरुल अफाज़िल

15--शायरी मजमुआ

16--सवानेह कर्बला

17--हक़ की पहचान

इसके अलावा भी आपने एक से बढ़कर एक पाए की किताब लिखी है।हाजी मुल्ला मोहम्मद अशरफ़ ने आपकी किताबो को पढ़कर खुशी का इज़हार ज़ाहिर किया और दो पायदान व 2 उगलदान बतौर तोहफ़े दिए।

पीरो-मुर्शिद

जब आपने ज़ाहिरी उलूम हासिल कर लिया तो रुहानी इल्म की गरज़ से मुर्शिद की तलाश में पीलीभीत पहुंचे उस वक़्त वहां पर हज़रत शाह जी मोहम्मद शेर रहमतुल्लाह अलैह की विलायत का डंका बजता था।उनकी शोहरत सुनकर आप भी उनके पास पहुंचे तो कुछ दिन उनकी खिदमत में रहे वो आपसे मुतासिर हुए और एक दिन अपने पास बुला लिया और कहा नईम आपका फेज़ हमारे पास नही है आपने पूछा हुज़ूर तो फिर मेरा फेज़ कहाँ है-? शाह जी अलैहिर्रहमा ने कहा कि तुम्हारा फेज़ तुम्हारे उस्ताद सैयद मोहम्मद गुल काबुली रहमतुल्लाह अलैह के पास है।ये सुनकर आपने वहां से विदा ली और मुर्शिद की बारगाह में हाज़िर हुए इधर आप कुछ कहते उधर उससे पहले मुर्शिद बोल पड़े क्या हुआ नईम हो आये पीलीभीत से ये सुनकर आप उनके क़दमो में गिर पड़े और कहा हुज़ूर जब सब जानते ही हो तो अब देर किस बात की मुझे अपना मुरीद करो उन्होंने कहा तीसरे दिन जुमा है फजर की नमाज़ हमारे साथ पढ़ना फिर जुमा आया आपने उन्ही के पीछें नमाज़ पढ़ी उन्होंने सलाम फेरा और आपको

अपने पास बुलाकर बैत किया और सिलसिला ए क़ादरी में दाखिल किया।

अशरफी क्यों-?

आप सिलसिला ए क़ादरी में मुरीद हुए लेकिन आपके नाम में अशरफी इसीलिए लगता है क्योंकि आपके मुर्शिद सैयद मोहम्मद गुल काबुली रहमतुल्लाह अलैह ने आपको वक़्त के बुजुर्ग सैयद अली हुसैन अशरफी मियाँ किछौछवी अलैहिर्रहमा के सुपुर्द कर दिया जिन्होंने आपकी रूहानी तरबियत की और सिलसिला ए अशरफिया की खिलाफत अता की इसीलिए आपके नाम के आगे अशरफी भी लिखा मिलता है।

बरकाती

लफ्ज़ बरकाती भी आपकी मज़ार पर लिखा हुआ है क्योंकि आपके मुर्शिद ए खिलाफत सैयद अली हुसैन किछौछवी अलैहिर्रहमा ने आपको आला हजरत अजीमुल बरक़त के सुपुर्द कर दिया था जहां आप उनकी सोहबत में रहे और सिलसिला ए बरकातिया कादरिया की ख़िलाफ़त अता की आप आला हजरत फ़ाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा हैं।

नईमुद्दीन

क़ुरआन करीम में ये लफ्ज़ नईम 17 मर्तबा आया है। अक्सर जन्नत के साथ ये लफ्ज़ आया है इसके बहुत से मायने होते हैं मिसाल के तौर पर नेमत,माल,नेकी,लाड, प्यार,इनाम वगैरह।

आला हजरत से मुलाकात

आला हजरत अजीमुल बरक़त फ़ाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह से आपकी मुलाकात कुछ दिलचस्प तरीके से हुई।

दरसअल उन दिनों आला हज़रत अजीमुल बरक़त अपनी कलम से बद अक़ीदों को क़ुरआन और हदीस की रोशनी में जवाब दे रहे थे तभी एक दिन जौनपुर के किसी बद अक़ीदह ने आला हजरत को गाली दी आपने दलाएल के साथ उस बन्दे को जवाब दिया उधर एक दिन आला हजरत के किसी मुरीद ने खत लिखकर कहा हुज़ूर आपने जो जवाब दिया है उसकी कॉपी भेजिये ये पढ़कर आला हजरत ने मुरीद से कहा इस ताल्लुक से तो अभी तक हमने कुछ भी न लिखा फिर पता चला कि नईम नाम का एक नोजवान लड़का है आला हजरत ने उसके मज़ामीन की एक कॉपी मंगाई और जब उस पर नज़र डाली तो कहा आफरीन बहतरीन जवाब।

उसके बाद आप की मुलाकात उनसे हुई आला हजरत आपसे बहुत मुतासिर थे उन्होंने आपको ख़िलाफ़त भी अता कर दी।आप बहतरीन आलिम थे आपको सदरुल अफाज़िल का लक़ब मिला है आपको इल्म का एक पहाड़ कहा जाए तो गलत नही होगा आप तसव्वुफ़ के आला दर्जे पर भी फ़ायज़ थे आज भी आपका आस्ताना यूपी के जिला मुरादाबाद में है जहां से फैज़ान ए हुसैनी लगातार जारी व सारी है।

आप का विसाल 1948 ई0 को हुआ

शाह वलीउल्लाह देहलवी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत

आपकी विलादत 4 शव्वाल 1114 हिजरी और अंग्रेजी केलेण्डर के मुताबिक 21 फरवरी 1703 ईस्वी को हुई थी।

नसब

वालिदा की तरफ से आपका शजरा ए नसब इमाम मूसा काज़िम रजिअल्लाहू तआला अन्हु से मिलता है और वालिद की तरफ से 33 वास्तो से ख़लीफ़ा ए दोम हज़रत उमर फारूक ए आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हु से मिलता है इस तरह आप दोनों वास्तो से आला घराने के फ़रज़न्द हैं।

खानदान की हिन्द आमद

आपका खानदान कुरेशी था जो हिजाज में रहता था उसके बाद वहाँ से हिजरत करके यमन तशरीफ़ लाये और वहाँ से खुरासान में भी कुछ अरसे तक रहे फिर वहां पर मंगोलो का हमला हुआ और उसी हमले की वजह से आपका खानदान

हिंदुस्तान में रोहतक आया जहां पर आपके खानदान के साथ कुछ सादात व क़ुरैशी खानदान के कई हज़रात तशरीफ़ लाये।आपके शजरे में 12वे नम्बर पर एक अज़ीम बुजुर्ग हज़रत मुफ़्ती शेख शमसुद्दीन क़ुरैशी अलैहिर्रहमा का नाम मिलता है जो रोहतक आने वाले में सबसे पहले फर्द माने जाते हैं।

आपका हज और अक़ाएद के ताल्लुक से लोगो मे झूठी अफवाह

आप के ताल्लुक से यहाँ पर ध्यान देने की बहुत सख्त जरूरत है क्योंकि आप रहमतुल्लाह अलैह को बद मज़हब अपने अक़ाएद का बताते हैं और ये दावा करते हैं कि जब आप हज क़रने गए और एक साल वहां रुके तो आपका अक़ीदह अब्दुल वहाब बिन नजद के अक़ीदह से मिल गया इसीलिए आप पर एक बहुत बड़ा इल्ज़ाम लगाया गया कि आप नज़दियो के अक़ीदह पर हैं जबकि ऐसा कुछ भी नही है आप रहमतुल्लाह अलैह का अक़ाएद अहले सुन्नत का ही अक़ीदह था और आप खुद तसव्वुफ़ के आला दर्जे पर फ़ायज़ थे जिसका अंदाज़ा आपकी सवानेह पढ़कर खुद लगाया जा सकता है आपके ही खानदान के मशहूर फर्द नाशिर हज़रत

सैयद अहमद अव्वल ने "तहदीदुल हदीस" के आखिर में लिखा है साजिश के तहत दो किताबे "तोहफ़तुल मवादीन" और "बलागुल मुबीन" आपकी तरफ मनसूब कर दी गई जबकि हक़ीक़त में ये किताबे आपकी नही थी।आपको इन किताबो के साथ जोड़ने का एक मकसद ये भी है कि आप शेख इसमाईल देहलवी के हक़ीक़ी दादा थे इसीलिए उनकी निस्बत की वजह से वो आपको अपने जुमरे में जबरन दाखिल करना चाहते थे लेकिन अज़ीज़ों आपने तसव्वुफ़ के लिए जो काम किया है वो क़ाबिले तारीफ है।

रसूल की तरह कोई नही

आपने मक्का और मदीने में एक साल रहकर 1 किताब भी लिखी है जिसमे उन्होंने हर सनद के साथ सूफी का लफ्ज़ लिखा है।एक साल आप सऊदी में रहे और वहाँ से आपने हदीस लिखी आप अहले बैत से बेपनाह मोहब्बत करते थे आपने इज्तिमाई ज़िक्र को भी जायज़ कहा है आपने अपनी मशहूर और सनदी किताब अलफजलुल मुबीन में लिखा है कि

"अल्लाह ने हराम कर दिया है शैतान पर की वो मोहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की मिसाल बने जिसने ख्वाब में रसूल को देखा उसने यक़ीनन उन्हें ही देखा"

रसुल्ल्लाह के आस्ताने से आपका कनेक्शन

आपके नज़दीक या रसुल्ल्लाह पुकारना जायज़ है बल्कि आप फ़रमाते हैं कि मैने कई हदीसें डायरेक्ट रसूल ए ख़ुदा से ली हैं और में अपनी ज़िंदगी मे रसूल की मज़ार पर जाता और वहां में उनसे कलाम करता जिसका मुझे जवाब मिलता"

या रसूल्ल्लाह कहना आपके नज़दीक जायज़

आपने मदीना शरीफ़ में रहते हुए एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के नाम मे खत लिखा जिसमे उन्होंने या रसूल्ल्लाह से शुरू करते हुए लिखा कि या रसूल्ल्लाह आप मेरे सबसे ज़्यादा क़रीब है या ये मुश्किल तो इस तरह से आपके इस ख़त से ये पता चला कि आप के नज़दीक या रसूल कहकर पुकारना जायज़ है।

बाबा रत्न लाल हिन्दी रजिअल्लाहू तआला अन्हु और आप की मोहब्बत

दरसअल बाबा रतन लाल हिन्दी रजिअल्लाहू तआला अन्हू जो कि हिन्द के पहले मुसलमान और पहले सहाबा रसूल हैं जिनका ज़िक्र मआपने अपनी मशहूर किताब अदरुश शमीन में किया है।

साफई मसलक से आपका कनेक्शन

आप के उस्ताद शेख अबू ताहिर मोहम्मद बिन इब्राहीम कुर्दी रहमतुल्लाह अलैह शाफ़ई मसलक के पैरोकार थे वो 2 सालो तक गौसे आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हु के दरबार मे खादिम बनकर रहे।

आपने एक किताब अपने जद्दे आला हजरत उमर फारूक ए आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हू के मसाएल और उनके फतवे/इरशाद को नक़्ल किया जिसका नाम फ़िक़्ह ए उमर रखा गया जिसके रावी इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह हैं।

आपने इसी किताब में हज़रत उमर फारूक ए आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हु का एक फतवा नकल करते हुए लिखा है कि जादूगर मर्द हो या औरत उसे जहाँ पाओ क़त्ल कर दो

(फ़िक़्ह ए उमर पेज नम्बर 726)

इल्मे ग़ैब ए मुस्तफ़ा पर आपका अक़ीदह

आप रहमतुल्लाह अलैह ने नबी करीम के इल्मे ग़ैब पर अपनी कलम चलाते हुए लिखा है कि एक बार   किसी जंग में फतेह के बाद एक गुलाम ने हज़रत उमर ए फारूक ए आज़म

रजिअल्लाहू तआला अन्हू के सामने उसने वहां से जीता हुआ ख़ज़ाना उनके सामने रखा तो वो रोने लगे तो लोगो ने पूछा ए अमीरूल मोमिनीन आप आखिर रो क्यों रहे हैं -?तो उन्होंने फ़रमाया की में इसलिए रो रहा हूँ क्योंकि मुझे ये डर सता रहा है कि जिस कौम के पास दौलत आती है वो खुदा को भूलकर दुनियापरस्ती में लग जाती है फिर अगली सुबह ख़ज़ाने को गरीबो में बंटवाया जिसमे सबसे पहले सुराका को कंगन पहनाया तो इस पर आपने कहा कि एक बार मेरे रसूल ने सुराका को देखकर फ़रमाया था की एक दिन तुम्हारे हाथ मे सोने के कंगन होंगे इस तरह से नबी करीम के इल्म ए ग़ैब पर आपने अपनी कलम चलाकर आशिक ए रसूल होने का सबूत पेश किया है।

आस्ताने पर हाजिरी देने का तरीक़ा

आप रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि जब भी साहिबे आस्ताना के दयार में हाज़री दो तो पहले 2 रकत नफिल बराये सवाब साहिबे मज़ार पढ़ो पहली रकत में सूरह फतह और दूसरी बार मे सूरह इखलास और अगर सूरह फतह न आती हो तो सूरह इखलास 5 5 बार पढ़ो फिर सलाम के बाद किब्ला की तरफ पुश्त कर लो और साहिबे मज़ार की तरफ चेहरा

करो उसके बाद आपने फ़रमाया 1 बार आयतल कुर्सी,सूरह मुल्क और चारो कुल पढ़ो फिर फातिहा के बाद 11 मर्तबा सूरह इखलास और 7 मर्तबा तकबीर कहना है उसके बाद आपने लिखा कि साहिबे मज़ार का तवाफ़ करो उसके बाद साहिबे आस्ताना के चेहरे के सामने दाहिनी तरफ बैठ जाओ उसके बाद 21 मर्तबा या रब्बी और फिर आसमान की तरफ सर उठाकर या रूहु रूहु तबतक कहे जब तक साहिबे मज़ार आपसे बात न करने लगे।

खत्म ए ख़्वाज़गान

आपने खत्म ए ख़्वाज़गान का तर्जुमा तफ़्सीर से किया है और तस्व्वुर ए शेख का ज़िक्र 5 मर्तबा किया है।किसी ने आपसे पूछा की सूफिया मुजाहिदा और रियाज़त क्यों करते हैं आपने फ़रमाया इससे सूफिया कि मन्ज़िल तय होती है।

आप उर्स के कायल थे

आप उर्स के भी कायल थे आप खुद हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के उर्स में शामिल होते थे और उर्स के अखराजात का एक हिस्सा खुद खर्च करते थे।

किताबे

आपने 60 से ज़्यादा किताबे लिखी हैं।

जिसमे अंफ़ासुल आरेफीन, अदरुश शमीन,फ़िक़्ह ए उमर जैसी मोतबर किताबे मिलती हैं।

आपका नज़रिया

आपके नज़रिए में ये बात वाजेह होती है की आपने किसी चीज़ को मना नही किया।मसलन रफाये देन पर आपने इस मसले पर सेकड़ो दलील पेश की लेकिन ये नही कहा कि करे या न करे इसी तरह से आपके ज़्यादातर मसले मिलते हैं।

इस्माइल देहलवी से कनेक्शन

1157 में आपने दूसरी शादी की जिनसे आपकी 4 औलादे हुई।

1--शाह अब्दुल अजीज देहलवी अलैहिर्रहमा

2--शाह रफीउद्दीन अलैहिर्रहमा

3--शाह अब्दुल कादिर अलैहिर्रहमा

4--शाह अब्दुल गनी अलैहिर्रहमा

जिसमे शाह अब्दुल गनी के एक बेटे जिनका नाम शाह इसमाईल देहलवी था वो आपके पौते थे।जिन्होंने एक किताब तक़वेतुल ईमान लिखी जिसमे उनका अक़ीदह आपके अक़ीदह से बिल्कुल उल्टा था।इसीलिए आपका अक़ाएद दूसरा था उनका दूसरा आपकी शान कुछ और हे आप तसव्वुफ़ के आला दर्जे पर फ़ायज़ थे औलिया अल्लाह से आपको बहुत अक़ीदत थी आप बिलयक़ीन अहले सुन्नत के अज़ीम सूफी बुजुर्ग हैं आपका नाम ता क़यामत तक अहले तसव्वुफ़ के नज़दीक मकबूल रहेगा।

अल्लामा फज़ले हक़ खैराबादी अलैहिर्रहमा

विलादत, नाम,नसब

आप की विलादत 7 अप्रैल 1796 ईस्वी को खैराबाद जिला सीतापुर में हुई थी।आपके वालिद सदर-उस-सुदूर फ़ज़ले हक़ फारूकी अलैहिर्रहमा थे जो दिल्ली के क़ाज़ी भी थे।

नसब

आपका शजरा ए नसब ख़लीफ़ा ए दोम हज़रत उमर फारूक ए आज़म रजिअल्लाहू तआला अन्हु से मिलता है यानी आप फारुखी शेख हैं।

तालीम

आपका खानदान तालीम के मामले में बहुत ही आला दर्ज़े का है जिसकी बराबरी आज के दौर में शायद ही कोई कर पाए।आप के वालिद मोहतरम ने मकतबे खैराबाद जैसे मोजिज़ा की शुरुआत की थी जिसे आप रहमतुल्लाह अलैह ने

मुकम्मल किया।जिसके बाद से आजतक मदरसों में पढ़ने वाला कोई भी शख़्श अगर दस्तार की फ़ज़ीलत से सरफ़राज़ होता है तो उसका शजरा ए तलममुज इमाम फज़्ले हक़ खैराबादी रहमतुल्लाह अलैह से ही मिलता है।आपके बाद से इल्मे माकुलात का कोई दूसरा दबिस्तान वजूद में नही आया है।

जंगे आज़ादी का पहला फतवा

जंगे आजादी में हज़ारो उलमाए अहले सुन्नत व मुजाहिदीन ने इस मुल्क को बरतानिया हुकूमत से आज़ाद कराने के लिए अपनी जान की क़ुरबानी दी है लेकिन आप रहमतुल्लाह अलैह को अगर इस मंज़िल की नींव कहा जाए तो ग़लत नही होगा तारीख गवाह है कि आप रहमतुल्लाह अलैह ने अंग्रेज़ो के ख़िलाफ़ जिहाद का फतवा सबसे पहले दिया था उस वक़्त उनके खिलाफ बोलना भी ज़ुल्म समझा जाता था और कोई इसकी मजम्मत नही करता था लेकिन आपने सबसे पहले उनके ख़िलाफ़ एक फतवा दिया जिसमें अंग्रेज़ो से जंग लाज़मी कर दी इस फतवे के फौरन बाद दिल्ली में 90 हज़ार की तादाद में हिन्द के जांबाज सिपाही अंग्रेज़ो के खिलाफ मैदान में आ गये इस बात से आपकी अहमियत और मर्तबे का

अंदाज़ा लगाया जा सकता है उसी के कुछ दिन बाद 26 दिसम्बर 1858 को अंग्रेज़ कर्नल क्लार्क ने आपसे पूछा कि मौलाना क्या तुमने ही हमारे खिलाफ जंग का फतवा दिया है-? आप रहमतुल्लाह अलैह ने तल्ख अंदाज़ में जवाब देते हुए कहा हाँ ये हिमाकत मेने ही की है और जबतक तुम हमारा मुल्क छोड़कर नही जाओगे हम ऐसे ही फतवे देते रहेंगे अल्लाहु अक़बर ये होते हे आशिके रसूल जो अपने खुदा के सिवा किसी दूसरे को खातिर में लाते ही नही है आप ने इतनी बेबाकी से जवाब दिया कि वो कर्नल क्लार्क भी हैरान हो गया उसके बाद आप रहमतुल्लाह अलैह 30 जनवरी 1859 अपने घर मे नज़रबन्द हुए 22 फरवरी 1859 में आपके ऊपर मुकदमा चला और 28 फरवरी को सज़ा सुनाई गई।

काला-पानी की सज़ा

आप पर जिहाद का फतवा देने व 1857 से 1858 के बीच हुई जंग का अगुवाकार होने के नाते कालापानी की सज़ा सुनाई गई ये उस वक़्त की सबसे बड़ी सज़ा हुआ करती थी।आपने अपने मुकदमे में कोई वकील नही किया बल्कि खुद अपने मुकदमे की पैरवी की वही तारीख़ में ये भी मिलता है कि उस मुकदमे की सुनवाई करने वाला जज भी आपका शागिर्द था

वह आपसे हमदर्दी रखता था लेकिन वहां पर मौजूद गवाहों ने आपको पहचानने से इनकार कर दिया खैर कुछ भी हो आपको इस का बिल्कुल भी ग़म न था आप ने खुशी खुशी काले पानी की सज़ा क़बूल की तारीख में आपका नाम ता क़यामत तक चमकता रहेगा।

काला पानी क्या है--?

अज़ीज़ों यहां ये समझना जरूरी है कि आखिर काला पानी क्या होता है तो इसके जवाब में खुद अल्लामा इमाम फज़ले हक़ खैराबादी रहमतुल्लाह अलैह ने वहां रहते हुए एक किताब (अस्सौरतुल हिंदिया)लिखी है जिसमे उन्होंने लिखा कि मुझे दरिया ए शोर के किनारे पहाड़ियों पर छोड़ दिया गया जहाँ सूरज हमारे सर पर होता था और वहां का पानी सांप के ज़हर से ज्यादा कड़वा और हवा बदबूदार हर तरफ घबराहट यानी बियाबान ही बियाबान।

अज़ीज़ों आप की किताब से हमे ये जानकारी मिलती है कि उस वक़्त रंगून और मद्रास के दरमियान एक ऐसा हिस्सा होता था जहां की आबो हवा इंसान के लिए बिल्कुल भी मुफीद नही होती थी जहां इंसान का एक एक दिन घुट घुट कर गुजरता था जो कि अपने आप मे बहुत बड़ी बात थी सलाम है

फ़ज़ले हक़ खैराबादी रहमतुल्लाह अलैह को आपने ऐसी हुकूमत के सामने बगावत के सुर बुलन्द किये और ऐसे बुलन्द किये जिससे सारी बरतानिया सल्तनत लरज़ कर रह गयी उस दौर में जहां और भी उलेमा अपनी ज़िंदगी गुजर करने मे बिज़ी थे आपने उलेमा ए अहले सुन्नत की रहनुमाई करते हुए एक ऐसा फतवा दिया जिससे हिन्द के लाखो उलेमाओ ने अंग्रेज़ो की नोकरी छोड़ी थी उनमे कुछ दूसरे मज़हब के भी लोग शामिल थे।

देवबन्दीयत को ललकारा और मुनाज़िरा

इधर आप अंग्रेज़ो के ख़िलाफ़ जंग की तैयारी कर रहे थे उधर देवबन्दीयत के बड़े आलिम रशीद अहमद गंगोही और इसमाईल देहलवी जैसे लोग रसूल ए खुदा की अज़मत पर,रिसालत पर,फ़ज़ीलत पर,नुबूवत पर,इल्मे ग़ैब पर,हाज़िर नाज़िर पर,जातो शिफ़त पर लगातार हमले कर रहे थे कोई रसूल को शैतान से कम अख्तियार वाला बता रहा था,तो क़ोई लिख रहा था कि अल्लाह झूठ बोल सकता है,कोई लिख रहा था कि नबी किसी चीज़ पर अखितयार नही रखते तो कोई लिख रहा था कि नबी चमार से ज्यादा ज़लील है(नउजबिल्लाह)कोई आपके वालिदैन के कुफ़्र को साबित

करके जहन्नमी होने का टैग लगा रहा था कोई आप को प्यारी दुखतर माँ फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा की शफाअत पर शक कर रहा था यानी हर तरफ से मेरे रसूल ए करीम की शान में हमले हो रहे थे उस दौर में सबसे पहले मुनाज़िरा करने का शरफ़ भी इमाम ए अहले सुन्नते मुहिब्बे सादात फ़ज़ले हक़ खैराबादी रहमतुल्लाह अलैह को हासिल है आपने सबसे पहले फतवा दिया और नज़दियत के फ़न को कुचलने में सबसे पहला वार आपने ही किया।

इस्माइल देहलवी को मस्जिद से भगाया

आप रहमतुल्लाह अलैह के उस्ताद सिराजुल हिन्द हज़रत अल्लामा शाह अज़ीज़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे इसमाईल देहलवी को आपने जलील करके मस्जिद से बाहर भगाया क्योंकि उनका अक़ाएद उनके पाक और शफ़्फ़ाफ़ खानदान के सख़्त खिलाफ था।ये अजीब तो है ही कि जिस घर मे शाह वलीउल्लाह देहलवी रहमतुल्लाह अलैह, शाह अज़ीज़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह जैसी हस्तियां हो जो जाहिरी और बातनी दोनों उलूमो पर कब्ज़ा रखती हों उसी खानदान में एक ऐसा लानती इंसान पैदा हुआ है जिसकी मुखालिफत अहले

खानदान के साथ साथ आप रहमतुल्लाह अलैह ने भी किया है।

आप की जात से सुन्नियत-तसव्वुफ़ का जो काम हुआ है उसे बयान करना मुश्किल हे आप की शान और अज़मत का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आपके बेटे शाह अब्दुल हक़ खैराबादी अलैहिर्रहमा के पास मुजद्दीद ए दीनो मिल्लत इमाम ए अहले सुन्नत अल्लामा अहमद रज़ा खान फ़ाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह और मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूंनी रहमतुल्लाह अलैह जैसी शख्सियतें इल्म सीखती थी आपके शहज़ादे अब्दुल हक़ खैराबादी अलैहिर्रहमा को शम्सुल उलेमा भी कहा जाता है आपका खानवाद तालीम व तहज़ीब का मरकज़ था तसव्वुफ़ के रंग में ढलकर सब ने आपसे तालीम हासिल की है आपका कोई सानी नही है आपने इस दुनिया ए फानी को 20 अगस्त 1861 को अलविदा कह दिया और रब्बे हक़ीक़ी से जा मिले आपकी मज़ार अंडमान निकोबार में ही है।

आपकी शान में किसी शायर ने कुछ यूं लिखा है

वो किताबे हुर्रियत का एक उनवाने जली
डाल दी जिसने फिरंगी सल्तनत में खलबली
नूर का मीनार उसका हर तदब्बुर हर अमल
नग्मा-ए-जम उसकी इमामत के चमन कि कली
काइदे तहरीक आज़ादी है तन्हा बिलयक़ीन
रूहे आज़ादी उनकी गौद में पोशी पली

ख्वाजा मुहम्मद नबी रज़ा शाह रहमतुल्लाह अलैह

ए फखरुल आरफ़ीन तेरी कुतबियत पे नाज़

शाहे रज़ा को तुमने ख़ुर्शीद कर दिया

विलादत, नाम,नसब

आपकी विलादत 25 रबीउल अव्वल 1284 हिजरी बुध के दिन हुई आपकी वालिदा मख्दूमा फरमाती हैं कि जबसे आप की विलादत हुई घर मे खैर व बरक़त बढ़ गई आपके हुस्नो जमाल से सारा घर रोशन व मुनव्वर हो गया।

आपके वालिद का नाम हज़रत मौलाना मोहम्मद हसन रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा और आपकी वालिदा माजिदा मख्दूमा थी जो हज़रत सैयद मोहम्मद मुश्ताक साहब रहमतुल्लाह अलैह की मुरीदा थीं।

बचपन और तालीम

आप को बचपन ही से शोर शराबा अच्छा नही लगता था आप हमेशा अकेले रहना पसन्द करते थे।जब आपकी उम्र शरीफ़ 4 साल 4 माह हुई तो वालिद ने बिस्मिल्लाह शरीफ की रस्म अदा की और क़ुरआन की तालीम शुरू क़रा दी।क़ुरआन क़रीम ख़त्म करने के बाद और भी उलूम जैसे अरबी,फारसी,तारीख,जुग्राफ़िया वगेरह की तालीम मौलवी जमशान खां साहब व मौलवी मोहम्मद हुसैन साहब विलायती मियाँ साहब किबला से हासिल की।उसके बाद आपको जिस्मानी वर्जिश करने का शौक़ हुआ और आप रोज वर्जिश करते।वालिद साहब को आपसे बेहद मोहब्बत थी। जिस्मानी वर्जिश के लिए अच्छी ग़िज़ा आप के लिए घर पर मौजूद रहती।आप माशाल्लाह जवान भी ऐसे थे कि हज़ारो लाखों की **भीड़ में** सबसे अलग और पहलवान भी ऐसे हुए की लासानी जो देखता वो यही कहता कि हमने इससे खूबसूरत जावन न देखा न सुना।1884 में आपकी शादी नैनीताल के तहसीलदार खान रज़ा बहादुर खान की साहबज़ादी के साथ हुई।शादी के एक साल बाद आपने बंगाल में नोकरी कर ली।आपके साथ भाई तहव्वर अली खान साहब और मामू अली रज़ा खाँ साहब

भी मुलाज़िम थे।उसके एक साल बाद 1304 हिजरी में आपके वालिद साहब का इंतेक़ाल हो गया खबर सुनकर आप घर आ गए और ईसाले सवाब व फ़ातिहा में शरीक हुए फिर वापिस लौट गए।

तज़किरा बैअत व ख़िलाफ़त

एक मर्तबा नवाब ख़्वाजा सर सलीमुल्लाह खां साहब बहादुर नवाब ढाका के किसी बड़े काम के सर अंजाम के लिए आप और जनाब नवाब हैदर अली खां साहब और हज़रत डिप्टी बदीउल आलम साहब किब्ला कलकत्ता में क़याम यज़ीद थे।उन्ही दिनों सैयदुश साकिलीन ज़हदतुल आब्दीन क़ुतुबे आलम फखरुल आरफ़ीन हज़रत हाफिज़ सैयद अब्दुल हई हुसैनी चटगांमी रहमतुल्लाह अलैह भी उसी मकान में आराम फरमा रहे थे।चूंकि हज़रत डिप्टी बदीउल आलम हज़रत सैयदना फखरुल आरफ़ीन के मुरीद थे तो आप भी वहीँ रुके।एक दिन सुबह फ़ज़्र के वक़्त आप नमाज़ अदा कर रहे थे कि कुछ देर में पूरा मकान जुम्बिश(लरजना लगा।तो सैयदना फखरुल आरफ़ीन रहमतुल्लाह अलैह ने अपने मुरीद से कहा कि इस मकान में क्या कोई ओर भी बुजुर्ग शख्सियत है उन्होंने कहा नही हुजूर एक हमारे दोस्त हैं जो ऊपर वर्जिश

कर रहे हैं ये सुनकर फखरुल आरफ़ीन ने कहा कि अल्लाह अल्लाह जब उस नोजवान की जिस्मानी क़ुव्वत से ये मकान हिल जा रहा है तो उसकी रूहानी क़ुव्वत से आलम को क्या क्या हासिल होगा ।आपने उनको मुरीद किया और ज़रूरी तालीम व नसीहत दी।

आपका पहनावा

सर पर गोल कला गौसिया अक्सर चिकन की होती थी।एक सफेद कुर्ता चिकन का या मलमल का।और सर से लेकर क़दम तक सफ़ेद रंग यानी लिबासे नबवी आप को बहुत पसंद था।ईदुल अजहा के दिन सैयदना हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत पर अमल करते हुए पाजामा पहनते।और ईदुल फितर में तहबन्द पहनते थे।सर्दी के मौसम में दो कम्बल और एक कनटोप कभी अमामा भी बांध लेते हर कदम पर सादगी का पैकर थे।

मुआशरत

रात को जिस वक़्त देखा गया तो आप मुसल्ले पर ही दिखे।आप कभी ख्वाव और गफलत की नींद न सोते अगर कोई आवाज़ देता तो जागने वाले की तरह जवाब देते और बराबर अल्लाह का ज़िक्र ऊँची आवाज़ में करते रहते।खाने में

आपको ज़ायका होता या न होता कुछ भी ख्याल न रहता जो आपके सामने पेश होता आप खा लेते और अल्लाह का शुक्र अदा करते।सुबह के वक़्त एक प्याली चाय और मुखतशर नाश्ता दोपहर को खाना बाद असर तक चाय की एक प्याली और बाद नमाज़ इशा रात का खाना।खाना कलई दार सीनी में पेश होता था जो दस्तरख्वान में तनाउल फरमाते।आप पलथी बैठकर खाना नही खाते थे।

करामत

आप रहमतुल्लाह अलैह की बेशुमार क़रामते हैं

मौलवी साहब बेहोश हो गए

एक मर्तबा आपकी ख़िदमत में एक अजनबी मौलवी साहब हाज़िर हुए और मुलाकात के बाद अर्ज़ की लोग कहते हैं कि हुज़ूर गौसे आज़म शेख़ अब्दुल कादिर जीलानी रजिअल्लाहू अन्हू अल्लाह के हुक्म से मुर्दों को ज़िंदा कर देते थे ये बात हमारी समझ मे नही आती।मौलवी साहब का ये एतराज़ सुनकर आपको जोश आ गया आपने फ़रमाया सुनो मौलवी साहब अल्लाह तआला ने उन्हें वो ताकत अता की है कि अब भी हज़ारो लाखों मुर्दो को ज़िंदा कर रहे हैं और क़यामत तक जिंदा करते रहेंगे।आपकी की बुलन्द आवाज़ से मौलवी साहब

तड़पने लगे और ज़मीन पर लौटते लौटते बेहोश हो गए जब होश आया तो माफी माँगी और बैत से सरफराज़ हुए।

मुरीदा पर जिन्नात का असर

आपकी एक मुरीदा क़स्बा साही की रहने वाली थी उसके ऊपर बीस साल से जिन का असर था वो सख़्त तकलीफ़ में मुब्तिला रहती थी।एक रोज़ हज़रत की खिदमत में आई और आपके सामने ज़ोर ज़ोर से हंसते हुए तेज़ बदतमीजी भरे लहजे में बात करने लगी आप समझ गए कि ये जिन का असर है आपने जिन को मुखातिब करते हुए फ़रमाया की तुमको मालूम नही है कि ये हमारी मुरीदा हैं।इनका पीछा छोड़ दो इसी में खैर है।उस के बाद से वो मुरीदा बारह साल तक जिंदा रही लेकिन फिर कभी जिन का असर नही हुआ।

खाने में बरक़त हो गई

एक बार मौलाना फ़रज़न्द मोहम्मद साहब के मकान पर आप की दावत थी।मौलाना साहब ने सिर्फ 8-10 लोगो का इंतज़ाम किया था।लेकिन जैसे ही लोगो को ये मालूम हुआ कि आज आप की आमद हो रही है तो बहुत से लोग वहां पहुंच गए यव देखकर मौलाना साहब परेशान हुए।आपने फ़रमाया मुतमइन रहो फिक्र न करो हमारे हिस्से का खाना हमे दे दो

हम ख़ुद सबमे तक़सीम कर देंगे।जब आपके सामने खाना पेश हुआ तो आपने अपना रुमाल डेक्ची में डालकर फ़रमाया की खाना शुरू करवाओ।फिर वहां पर मौजूद सभी ने खाना खाया और यहां तक की खाना बच भी गया ये माजरा देखकर मौलाना साहब हैरतअंगेज़ हो गए।उसके बाद से आपकी क़रामते इसी तरह की है आपने 25 आदमियों के खाने को 100 आदमियों में पूरा कराया है आपकी सबसे प्यारी आदत थी कि जितने भी आदमी थे सबको दस्तरख्वान पर बिठाकर खाना खिलाते थे फिर आखिर में खुद खाते।

बीमारी से शिफ़ा

हम अहले सुन्नत का अक़ीदह है कि बीमारी से शिफ़ा देना अल्लाह रब्बूल इज्जत का काम है और उसी की शान में है ।लेकिन जो अल्लाह के दोस्त(वली) होते हैं अल्लाह अपने दोस्तों की बात को रद नही करता यानी वो जो भी कह देते है अल्लाह की अता से हो जाता है।

एक मर्तबा हैदर खां जो कि पेचिश के मर्ज में मुब्तिला थे।आपकी बारगाह में हाजिर हुए फिर तो आपने कुछ मकाबरिया पेश की और फ़रमाया की इसको खा लो

इंशाल्लाह आराम हो जाएगा।उन्होंने वो खाई और फिर जबतक ज़िंदा रहे इस मर्ज में दुबारा कभी मुब्तिला नही हुए।

और वो फारसी दा हो गए

एक मर्तबा आपने चहला खां साहब **को** दीवाने हाफिज़ ग़ज़ल पढ़ने का हुक्म दिया तो उन्ह अर्ज़ की हुज़ूर में मजबूर हूँ मुझे फारसी की समझ नही है आपने फ़रमाया पढ़ो पढ़ लोगे ये कहते हुए आपने अपना हाथ उनके सीने पर फेरा उसी वक़्त उनकी फारसी इतनी बहतर हो गई कि मानो ये इसी जुबान के उस्ताद हो।

एतिकाफ और चिल्ले

आपने एक चिल्ला मिर्ज़ा खेल शरीफ़ में किया।चालीस रोज़ लगातार रोज़े रहते शाम को अफ्तारी के वक़्त पत्तो की सब्ज़ी से अफ्तार करते।दूसरा चिल्ला ढाका में किया।उस मे वही हाल रहता अफ्तार के वक़्त पत्तो की सब्ज़ी रहती।तीसरा चिल्ला भैंसोड़ी शरीफ़ में किया।उस वक़्त अफ्तार के वक़्त खाना पहुँचाने की ज़िम्मेदारी एक मुरीद पर थी।अफ्तार के लिए मूंग की दाल का पानी तक़रीबन एक छांक और एक हल्की चपाती जो की पीसी हुई उसमे भी चिल्ला खत्म होने

तक सूखी हुई हुजरे में मौजूद पाई गई।चिल्ले के दिनों किसी को अंदर जाने की इजाजत नही होती थी जब आप चालीस रोज़ के तीसरे चिल्ले के बाद बाहर आये तो जिस्मानी कमज़ोरी की वजह से दो खादिम आपको टेक के सहारे घर तक ले गए मगर चेहरा चाँद की तरह चमक रहा था।चौथा चिल्ला भी आपने भैंसोड़ी शरीफ की मस्जिद में किया जहां अफ्तार में सिर्फ एक खुरमा और एक छांक पानी मुक़र्रर फ़रमाया था।चार साल तक आपने हैदराबाद, गुलबर्गा शरीफ, खुल्दाबाद, ओरंगाबाद, झांसी,अजमेर शरीफ,बंगाल का दौरा किया है।

पीरो मुर्शिद की नज़र में

आपके पीरो मुर्शिद फखरुल आरफ़ीन सैयद हाफिज़ अब्दुल हई रहमतुल्लाह अलैह के आप बहुत अज़ीज़ थे वो फरमाते रहते थे।

1--हज़रत ख़्वाज़ा नबी रज़ा शाह रहमतुल्लाह अलैह का क़याम लखनऊ में मख्दूम आलम शाह अब्दुल हक़ रूदौलवी रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत मख्दूम शाह मीना साहब लखनवी रहमतुल्लाह अलैह की मर्ज़ी से हुआ है।

2--हज़रत मुहम्मद नबी रज़ा शाह रहमतुल्लाह अलैह लखनऊ के शाहे विलायत हैं।

3--हज़रत मुहम्मद नबी रज़ा शाह रहमतुल्लाह अलैह के पास दौलते ख्वाज़गान का ख़ज़ाना है

4--हज़रत मुहम्मद नबी रज़ा शाह रहमतुल्लाह अलैह क़ुतुब,गौस व ख़्वाजगी का मर्तबा हासिल है।

5--हमने ख्वाव देखा कि लखनऊ में आलीशान शाही इमारत तैयार हो रही है तो दरयाफ्त किया तो मालूम हुआ कि ये मकानात हज़रत मुहम्मद नबी रज़ा शाह रहमतुल्लाह अलैह के लिए तैयार हो रहा है हम समझ गए कि मुहम्मद नबी रज़ा शाह अवध के बादशाह हैं।

6--हमारे यहाँ एक नेक बख्त बीबी ने देखा कि हमको हज़रत ख्वाज़ा नबी रज़ा शाह गोद मे उठाकर लखनऊ ले जा रहे हैं।

7--हमारे यहाँ जो जिस इरादे से आया वो ले गया देखो हज़रत नबी रज़ा शाह झोली भरकर फ़क़ीरी ले गए।

8--हमारी बातों को जिस तरह से नबी रज़ा शाह ने समझा उस तरह से किसी दूसरे मुरीद ने नही समझा।

9--हमे उनसे और उन्हें हमसे कुछ इस तरह से निस्बत है कि अगर मुझे चीरा जाए वो निकलेंगे और उन्हें चीरा जाए तो हम निकलेंगे।

10--वो हमारे सिलसिला के असद है।

महफिले शमा

आप को महफिले शमा का बहुत शौक था।अक्सर शमा के दौरान आप पर हाल आने लगता कई मौके पर तो कई गैर मुस्लिम महफिले शमा के दौरान मुलसमान भी हुए।आप की महफ़िल में गैर मुस्लिम भी बैठते थे।आपको सादगी बहुत पसंद थी।जहां जाते लोगो का एक हुज़ूम आपके साथ चलता था। आपके भाई व ख़लीफ़ा हुज़ूर शैखुल औलिया दादा इनायत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह आपके ख़लीफ़ा बने।आपका आस्ताना मुबारक लखनऊ के सदर में है जहां हर साल बहुत ही धूमधाम से उर्स पाक मनाया जाता है और हर मजहब के लोग वहां जाते है अक्सर सूफिया की जमात आपसे बहुत अक़ीदत रखती है।आपका सिलसिला सिलसिला ए अबुल उलाई चिश्तिया जहाँगीरीया है।आपको और भी 7 सिलसिला से ख़िलाफ़त थी लेकिन मुर्शिद के इर्शादत के मुताबिक आप मुरीदों को सिर्फ एक ही सिलसिला का शजरा

देते थे।आपकी बुजुर्गी हुस्नो एखलाख,तक़्वा परहेजगारी बेनज़ीर थी।तसव्वुफ़ के आला दर्जे पर फ़ायज थे।आज भी आपके चाहने वाले पूरी दुनिया मे मौजूद है।

अजमेर से बातिनी फेज़

आपकी आमद अजमेर शरीफ हुए तो बेहद अदब व ताज़ीम के साथ अताए रसूक ख्वाज़ा गरीब नवाज़ की बारगाह में हाजिर हुए जहां से एक खादिम वही आस्ताने के सामने बैठे दुआए कर रहे थे जब आप अंदर दाखिल हुए तो आप खड़े दुआ करने लगे तो देखा कि नूर आस्ताने से जाहिर हुआ और आपके सीने में जाकर समा गया ये देखते ही वो खादिम आपके क़दमो में गिर गए और कहा हुज़ूर आप कहाँ से आये हैं कौन है--? आपने सादगी से जवाब देते हुए कहा हम नबी रज़ा है भैंसोड़ी से।इतना सुनते ही वो रोने लगे और कहा हुज़ूर ये क्या था आपने फ़रमाया जो लेने आया था वो मिल गया अब इजाजत दे यही वजह है की आज भी आपके सज्जादगान अजमेर शरीफ उर्स में बड़ी पाबन्दी के साथ शिरकत करते हैं।

असद जहाँगीरी

एक मर्तबा आप मख्दूम ए रूदौली हुज़ूर शैखुल आलम अलैहिर्रहमा के उर्स में तशरीफ़ लाए आपके साथ आपके पीर भाई जनाब हाफिज़ मक़बूल अहमद साहब बनारसी अलैहिर्रहमा भी हुजरे में आराम फरमा थे। शब को हाफिज़ साहब किसी ज़रूरत से तहज्जुद के वक़्त हुजरे से बाहर चले गए।आप उस वक़्त जा नामज़ पर बैठे थे और लालटेन रोशन थी।जब हाफिज़ साहब बाहर से वापस आये और किवाड़ खोला तो देखा कि एक बब्बर शेर उसी मुसल्ले पर बैठा है हाफिज़ साहब ये मंजर देखकर घबरा गए और वापस चले आये थोड़ी देर बाद अंदर से आवाज़ आयी कि हाफिज़ साहब डरो नही हम मौजूद हैं।ये केफियत हाफिज़ साहब ने दरबार आली में हज़रत सैयदना फखरुल आरफ़ीन रहमततुल्लाह अलैह की खिदमत में अर्ज़ की तो फखरुल आरफ़ीन रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया की ख्वाज़ा नबी रज़ा शाह साहब असद(शेर) हैं।उस दिन से आपका ख़िताब असद जहाँगीरी हो गया।

ख़्वाजा इनायत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह

विलादत, नाम,लक़ब

आपकी विलादत 22 मुहर्रम 1302 हिजरी को उत्तर प्रदेश के जिला रामपुर के भैंसोड़ी शरीफ़ में हुई थी।आपके वालिद का नाम हज़रत मौलाना मुहम्मद हसन रज़ा शाह कुद्दुस सिर्रहु था।आपका नाम मुहम्मद इनायत हसन और लक़ब "शैखुल औलिया" था।

बचपन

आप 2 साल के ही थे कि वालिद साहब का इंतेक़ाल हो गया।जिसके बाद आपकी परवरिश आपके बड़े भाई और पीरो मुर्शिद क़ुत्बुल आरफ़ीन हज़रत ख्वाजा मुहम्मद नबी रज़ा शाह अलमारूफ़ दादा मियाँ लखनवी रहमतुल्लाह अलैह ने की जिससे आपकी तालीम और तरबियत दोनों आला रही है।दादा हुज़ूर ने बड़ा भाई होने के नाते ज़ाहिरी परवरिश और मुर्शिद होने की वजह से रूहानी,मअनवी इरफानी,तालीम व तरबियत,तज़किय-ए-नफ़्स,तंवीरे क़ल्ब फ़रमाई।

शैखुल औलिया का लक़ब

"शेखुल औलिया" आपका इम्तियाज़ी,इन्फिरादी बड़ा ही बुलन्द रुतबा लक़ब है जिसका तर्जुमा है कि "वलियों के पीर मुर्शिद"!औलिया कबार में ये बहुत ऊँचा दर्ज़ा है।शेख़ का एक मायना मुर्शिद भी होता है ।

चन्दा मियाँ

आपकी उरफियत(उपनाम)चन्दा मिया है जिसकी असल वजह ये है कि बस्ती के लोग आपकी इन्तेहाई खूबसूरती की वज़ह से "चांद" से तस्बीह देते थे और आपका नूरानी चेहरा चाँद को भी धूमिल कर देता था इसीलिए आपको चन्दा मियाँ कहा जाता है आपका खानवाद-ए-आली हुस्नो-जमाल में,तक़वा तहारत में बेनज़ीर रहा है और ये खूबियां आज भी आपके घराने के एक एक फर्द मे दिखाई पड़ती हैं लोग आपकी तशबीह चाँद से करते हैं लेकिन में तो यही कहूंगा कि

चाँद से तशबीह दूं ये कैसा इंसाफ है

चांद पर तो दाग है मेरे इनायत का चेहरा साफ है।

हज-व-ज़ियारत और बारगाहे नबवी में हुजूरी

आपने 1356 ईस्वी में मक्का शरीफ पहुंच कर हज किया ।वो मुसलमान जिसको सोते में रसूल ए करीम का दीदार हो जाये तो उसकी किस्मत जाग उठे लेकिन आपकी सबसे बड़ी क़रामत यही है कि आपको जागते में रसूल ए खुदा का दीदार हुआ है और एक बार नही बल्कि जितने दिन मदीना मुनव्वरा में रहे हैं आपको दीदार ए मुस्तफा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम नसीब हुआ है।

अक्सर औलिया अल्लाह की जमात ने सोते हुए रसूल ए ख़ुदा को ख्वाब में देखा है लेकिन कुछ ऐसे भी औलिया अल्लाह हैं जिन्हें जागते हुए रसूल का दीदार हुआ है मिसाल के तौर पर शाह मुहद्दिस अब्दुल हक़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह 1052 हिजरी,कुतबे सुब्हानी सैयद शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अल बांसवी हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह 1136 हिजरी,मौलाना सैयद मुहम्मद वारिस रसूल नुमा बनारसी रहमतुल्लाह अलैह 1166 हिजरी,ख्वाज़ा मुहम्मद इनायत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह 1360 में और आला हजरत अजीमुल बरक़त फ़ाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह को भी ये शरफ़ हासिल हुआ है।

(मकालुल अरफा--आला हजरत)

(नोट--) जो लोग इस पर एतराज करते है उन्हें चाहिए कि एक बार सिलसिला ए शाजल्लिया के इमाम ए पेशवा हुज़ूर सैयदुना अबुल हसन शाज़ली रजिअल्लाहू अन्हु को पढ़ लें (656 हिजरी) वो फरमाते हैं कि "आँख झपकने भर भी बहालते बेदारी रसूल ए पाक सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के दीदार से महरूम नही हुआ हूँ" अल्लाह अल्लाह पहले हमें चाहिए कि हम तसव्वुफ़ की जानकारी कर ले फिर हमें औलिया अल्लाह की शान में गुस्ताखी करनी चाहिए वरना इनसे दुश्मनी तो ख़ुदा से दुश्मनी है और जिसकी दुश्मनी खुदा से हो गई वो कहीं का नही रह गया मौला हम सबको अदब और तहज़ीब अमन पसन्द बनाए।

मिर्ज़ा खेल शरीफ़ में हाजरी

दरसअल आप सिलसिला ए अबुल उलाइया जहाँगीरिया चिश्तिया से ताल्लुक़ रखते थे इसीलिए आपने इस मुबारक सिलसिले के बानी औलादे हुसैन हज़रत सैयदुल आरफ़ीन ख्वाज़ा मुखलिसुररहमान रहमतुल्लाह अलैह के शहज़ादे और खलीफा और आपके दादापीर हज़रत ख्वाज़ा फखरुल आरफ़ीन सैयद हाफ़िज़ अब्दुल हई रहमतुल्लाह अलैह के

अस्ताना शरीफ़ चटगांव शरीफ़ बांग्लादेश में दो मर्तबा हाज़िरी दी है।पहली हाजिरी 1329 हिजरी और दूसरी हाजरी 1338 में दी और बेपनाह फेज़ हासिल किया है।

किताबे

आप बेशुमार खूबियों के साथ आलमे रब्बानी भी हैं और हमे ये समझना चाहिए कि आलमे रब्बानी ऐसी बरगज़ीदा हस्ती को कहा जाता है जिसका अदब-व-एहतराम कुतबे ज़माना करते हैं।आपने किताबें तहरीर करके भी सिलसिला ए जहाँगीरिया को एजाज़ बख्शा है।आपकी सबसे मोतबर किताबो में से कुछ के नाम यहां दिए जा रहे हैं

1--एजाजे जहांगीरी

2--सीरते फखरुल आरफीन

(सैयद शाह सिकन्दर अबुल उलाइ जहाँगीरी रहमतुल्लाह अलैह)

3--सीरते जहाँगीरी

4--यादगारे जहाँगीरी

मुरीदीन व खुल्फ-ए-इज़ाम

मुरीदीन तो बहुत है और हर मुरीद इनायती रंग से रंगीन, सब दरिया ए इनायती से सैराब.खुल्फा की तादाद बज़ाहिर तो कम है लेकिन बहुत ही अहम है।हर ख़लीफ़ा अपनी जगह रुश्द व हिदायत का आफताब व महताब है अपनें पीरो मुर्शिद का हर तरफ से वफादार और जानिसार जिनमे कुछ खुल्फ़ा का नाम यहां दिया जा रहा है।

1--ख़्वाज़ा सूफ़ी मुहम्मद हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह

2--हज़रत सूफी मुहम्मद सिद्दीक हसन शाह मुरादाबादी रहमतुल्लाह अलैह

3--हज़रत सूफी बशीरुल्लाह शाह लखनवी रहमतुल्लाह अलैह

4--हज़रत सूफी वकील याक़ूब अली शाह रहमतुल्लाह अलैह

पीरो-मुर्शिद

आपके पीरो मुर्शिद क़ुत्बुल आरफ़ीन ख्वाज़ा मुहम्मद नबी रज़ा शाह दादा मियाँ रहमतुल्लाह अलैह हैं जो आपके हक़ीक़ी भाई भी हैं आपने 16 साल की उम्र मे बैत की थी।आप गुलशने शाहे रज़ा के अव्वल फूल यानी पहले मुरीद हैं आप

शाह रज़ा के जानशीन थे और उनके आस्ताने के सज्जादानशीं बने आपने उनके वक़ार को बकरार रखा आपको पीरो मुर्शिद से बेपनाह मोहब्बत थी और यक़ीनन उनकी खास तवज़्ज़ो आप पर थी इसीलिए आज भी जहाँगीरी खज़ाना आप दोनों हाथों से दिल खोलकर लुटा रहे हैं।

विसाल

4 शव्वाल 1360 हिजरी अंग्रेज़ी कैलेंडर के मुताबिक 26 अक्टूबर 1941 को 58 साल की उम्र में आपने दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया।आपकी वसीयत के मुताबिक आले रसूल खलीफा ए आला हजरत सदारुल अफाज़िल बदरुल अमासिल अल्लामा सैयद नईमुद्दीन हुसैनी मुरादाबादी क़ादरी रज़वी अशरफी बरकाती ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।आपका रोजा उत्तर प्रदेश के जिला रामपुर के भैंसोड़ी शरीफ में है जहाँ आज भी 2,3,4,5,शव्वाल को आपका उर्स पाक मनाया जाता है।आपके जानशीन आपके शहज़ादे सनदुस्सालेकीन ख़्वाजा मुहम्मद राहत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह हैं जो आपके मुरीद और ख़लीफ़ा ए आज़म भी है।

ख्वाजा मुहम्मद राहत हसन शाह अलैहिर्रहमा

विलादत,नाम

आपकी विलादत 26 मुहर्रमुल हराम 1343 हिजरी को उत्तर प्रदेश के जिला रामपुर के भैंसोड़ी शरीफ़ में हुई।आपका नाम अक़दस "मुहम्मद राहत हसन" आपके वालिद का नाम हुज़ूर शैखुल औलिया खवाजा अल्हाज मुहम्मद इनायत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह है।

आपका खानदान

इस खानवाद ए आली मोरिसे आला हजरत अब्दुल्लाह खान अफगानी रहमतुल्लाह अलैह हैं जो मुल्क अफगानिस्तान के कस्बा "शैख़ जानां" जिला पेशावर से तर्के वतन करके कस्बा भैंसोड़ी ज़िला रामपुर(यूपी)को अपना मुस्तक़िल वतन बना लिया जो आजतक नस्ल बाद नस्ल इस क़बीला का वतन मालूम है ये अजीमुल बरक़त क़बीला हमेशा से ही बहुत ही पाक,साफ,शफ़्फ़ाफ़,रहा है।आपकी वालिदा भी,वालिद

भी,दादा भी,दादी भी,परदादा भी,परदादा भी,यहाँ से वहाँ तक़ विलायत का एक सिलसिला ए मुसलसल है।नूर की कड़ियाँ,नूर की ज़ंज़ीरे हैं जो एक़ दूसरे से वाबस्ता,पैवास्ता है।ऐसे पाक गहवार-ए-विलायत व क़रामत में जो पैदा होगा वो सनदुस सालेकीन ही होगा।

सनदुस्सालेकीन क्यों

आपका बहुत ही मशहूर लक़ब "सबदुस्सालेकीन" जिसका मानी लुगत और इस्तेहालात की रोशनी में ये है कि " ऐसी राह पर निहायत ही होश-व-हवास वे साथ,करीना और उसूल से पीर व मुर्शिद के साथ साथ चलना जो मंज़िले मक़सूद इरफ़ाने हक़ तक पहुंचा दे।इसी राह को तरीक़त कहते हैं।तरीक़त का मानी रास्ता है मगर इस रास्ते पर शरीअतें मुस्तफ़वी की शमा ज़रूर रोशन हो वरना ये अल्लाह वालो की तरीक़त हरगिज़ न होगी बल्कि ये शैतानी राह होगी।वही तरीक़त मक़बूल,महबूब और अल्लाह तक पहुचाने वाली है जिसको शरीअत पाक की ताईद और पुश्त पनाही हासिल है।पूरा सुलूक व तसव्वुफ़ ,हक़ीक़त व मारफत हुज़ूर सैयदना व सैय्दुल कुल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की ख़ुशनूदी इत्तेबा और मुहब्बत ही में है।इसीलिए हुज़ूर क़ुत्बुल आरफीन ख्वाज़ा मुहम्मद नबी रज़ा

शाह दादा मियाँ रहमतुल्लाह अलैह ने बड़ी सच्चाई और सफाई के साथ एलान हक़ फरमा दिया कि जो शरीअतें पाक स हटा वो मुझसे वो कटा।ऐसे शख्श से मेरा और मेरे पीराने इज़मा कुदुस्त इसरारहुम का कोई ताल्लुक नही,कोई लगाव नही है।सच है हर नेमत दामन ए मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम से ही वाबस्ता है।"सनद" ये भी अरबी का लफ्ज़ है जिसका मानी है भरोसा,एतमाद, पुश्त पनाह,दार व मदार वगरैह।सनद का लफ्ज़ उसूले हदीस की इस्तेलाह में बहुत ही मुस्तअमिल है,सनद ही पर हदीस की असल का दार-व-मदार है।जैसी सनद वैसी असल अब पढ़ो "सनदुस्सालेकीन" का तर्जुमा हज़रत ख्वाजा राहत हसन अलैहिर्रहमा पर सालिको का दार व मदार है।आप सालिको की सनद हैं,जिसको सुलूक की सनद दे रहे हैं वह "सालिक" है।आप सालिक ही नही बल्कि सालिक गर हैं सालिक बनाने वाले।इंसान गुम हैवानो को इंसान बनाना फिर उनको इरफ़ाने हक़ की फैक्ट्री में डाल कर अल्लाह वाला बनाना यही है आपका सुलूक-ए-तसव्वुफ और यही है सिलसिला-ए-जहाँगीरिया की खिदमत-व-इशाअत का अव्वलीन मकसद!

अब्दाले ज़माना और मुस्तज़ाबुददवात

"मुस्तज़ाबुददावात" का मायना है कि जिसकी ज़ुबान से निकली हुई दुआ बारगाहे इलाही में बहुत जल्द क़बूल हो जाती है।सफे औलिया में बहुत ही ऊँचे मर्तबा सरापा खैर व बरक़त,मुस्तज़ाबुददावात बुज़ुर्गों को "अब्दाल" कहते हैं।हदीसो में अब्दालों के बकसरत फ़ज़ाएल-व-मरातिब बयान किये गए हैं।यहाँ सिर्फ चंद खुसूसियात ज़िक्र किये जा रहे हैं।

1--मुस्तज़ाबुददावात होते हैं।

2--बहुत ही सखी ज़िन्दा दिल होते हैं।

3--सभी का भला चाहते हैं।

4--दिल और ज़ुबान एक होती है।

5--जिनके ज़िक्र की बरकत से बलाए टलती हैं।

6--उनके वसीले से बारिश होती है।

7--उनसे ज़मीन का निज़ाम क़ायम है।

8--उनका सीना कानो से पाक होता है।

इन ख़ुसूसियात की रोशनी में हज़रत ख्वाजा राहत हसन अलैहिर्रहमा की साफ,शफ़्फ़ाफ़, सुथरी,निखरी सीरत का

मुतालेआ क़रने के बाद हक़ीक़त शनाश अहले दिल ने साफ ऐलान कर दिया और ये ऐलान हर तरफ फैल गया कि हजरत ख्वाजा राहत हसन अलैहिर्रहमा अब्दाले ज़माना है मुस्तज़ाबुददावात बुजुर्ग हैं।

अहलिया मुबारक

आप ही कि दरगाह आली के नज़दीक मदफून है 1995 ईस्वी उनका इंतेक़ाल हुआ।आप निहायत पाकबाज़,वलीया और आरेफा थीं।उर्स और तमाम उमूर में बहुत ही सलीका शिआर मुन्तज़मा।मुरीदीन की देखभाल बेहद फ़राख दिल और कुशा मुरीदीन की दिलजुई,मुहब्बत दुःख दर्द में खैरगीरी।हर मुमकिन तौर पर मदद करना इस घराने की पुरानी रीत रही है और ये विरासत रिवायत आज भी कायम है।

साहब्ज़ादगान

आपके तीन बेटे थे।

1--सनदुल औलिया ख्वाज़ा फ़साहत हसन शाह अलैहिर्रहमा

2--मख्दूम गेरामी किब्ला मिस्बाह हसन मियाँ।

3--मख्दूम गेरामी किब्ला फरहत हसन मियाँ।

और दो साहबज़ादिया थी

1-मख्दूमा नईमा खातून

2--मख्दूमा फहीमा खातून

मुरीदीन व ख़लीफ़ा

मुरीदीन औऱ खलीफ़ा की तादाद कम मगर अहम और बहुत अहम।हर मुरीद ज़िक्रे जली औऱ खफी का मुजस्सम नमूना उन्ही मुरीदो में एक जिला बाराबंकी के मोजा खजुरी में आराम फरमा रहे बुजुर्ग ताजुस सूफिया सदरुस सूफिया हाफिज़ो कारी शेख अहमदुल्लाह शाह राहती इनायती रज़ाई अबुल उलाई जहाँगीरी रहमतुल्लाह अलैह हैं।सारे मुरीद सुलूक व तसव्वुफ़ से बाफ़ैज़,बामुराद,सब राहती फैक्ट्री के शाहकार,सब पर पीर व मुर्शिद की छाप ,सूफियों की भीड़ में आसानी से पहचान लिए जाने वाले राहती गोहर सादात।

तारीखे वफात

4 ज़ीकादा 1395 हिजरी अंग्रेजी कैलेंडर के मुताबिक़ 9 नवम्बर 1975 ईस्वी बरोज़ इतवार को आपने दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया।आपकी नमाज़े जनाज़ा आप ही के खानदाने आली के मुक़तदर,बुजुर्ग,भैंसोड़ी शरीफ़ की जामा

मसिजद के पेशे इमाम मौलाना नुरुल हसन साहब उर्फ दद्दा मियाँ रहमतुल्लाह अलैह ने पढ़ाई। हर साल 2,3,4,5 ज़ीकादा को बमक़ाम भैंसोड़ी शरीफ़ बहुत ही ईमानी रूहानी फ़िज़ा में उर्से मुबारक होता है जहां लाखो की तादाद में राहती गुलाम हाज़िर होते हैं।

सूफी अहमदुल्लाह शाह रहमतुल्लाह अलैह

तेरे फ़िराक़ में जां से गुज़र गए होते
तेरा ख़्याल न होता तो मर गए होते

सिलसिला ए आलिया राहतिया इनयातिया रजाइया अबुल उलाइया जहाँगीरिया के अज़ीम बुजुर्ग हज़रत ताजुस सूफिया सैयदुल आशिकीन हाफिज़ो क़ारी सूफी अहमदुल्लाह शाह रहमतुल्लाह अलैह की विलादत 9 रजब दिन जुमा 1349 हिजरी और अंग्रेज़ी कैलेण्डर के मुताबिक नवम्बर माह के 1930 ईस्वी में उत्तर प्रदेश के जिला बाराबंकी के मोजा खजुरी में हुई थी।

खानदान और खजुरी की पहचान

आप शेखान कोट खजुरी से ताल्लुक रखते थे।दरसअल मौजा खजुरी की अज़मत व शान का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यहाँ पे सैयदुश शोहदा फिल हिन्द सैयद सालार

मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह के हमराहियों की एक सेना के सिपहसलार हज़रत सैयद अलीमुद्दीन खमाची अलमारूफ़ सैयद मीरान शाह का आस्ताना ए आली कहीं और नही बल्कि इसी गाँव खजुरी में हैं जहाँ पर हज़रत हाफ़िज़ ओ कारी ताजुस सूफिया अहमदुल्लाह शाह की विलादत हुई है।जब सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह हिन्द की सरजमीं पर दीन इस्लाम फैलाने की गरज से आये तो उनके साथ सैयद मीरान शाह अलैहिर्रहमा भी थे जिनके हमराहियों में शेख़ दीन मोहम्मद,शेख़ गद्दन,शेख पक्खन नाम के तीन हज़रात भी बाहर से आये थे जो कि आप रहमतुल्लाह अलैह के जद्दे अमज़द में से हैं।वो भी सैयद मीरां शाह अलैहिर्रहमा के हमराह थे एक जंग किला फतह करने के बाद सैयद मीरान शाह अलैहिर्रहमा की शहादत हुई और सूफी साहब अलैहिर्रहमा के जद्दे अमज़द यही पर ठहर गए और तभी से आपके जद्दे अमज़द उनके आस्ताने के खादिम हुए ये सिलसिला आप तक चला और सैयद मीरां शाह शहीद अलैहिर्रहमा से आप रहमतुल्लाह अलैह को बेपनाह फैज़ान मिला है।

सैयद मीरान शाह अलैहिर्रहमा

सैयद मीरान शाह अलैहिर्रहमा का असली नाम मौलाना सैयद अलीमुद्दीन खम्माची था आपकी मज़ार के दक्खिन जानिब चहार दीवारी से तीन फीट बाद तक़रीबन 10 फिट लंबाऔर 10 फिट चौड़ा गंज शहीदा है इसके दक्खिन 10 फिट बाद दूसरा गंज शहीदा है उसके पश्चिम 25 फिट बाद तीसरा गंज शहीदा है जिसको बस्ती वालो ने अपनी आँखों से खुद देखा है।बस्ती के लोग आपकी दरगाह से फेज़ लेते और एक दिन ऐसा हुआ जो शायद क़ुदरत की मंजूरी थी या बस्ती वालो की बदकिस्मती 9 रबीउल आखिर यानी अंग्रेजी कैलेण्डर 6 सितम्बर सन 1995 ईस्वी में बुध के दिन सुबह 4 बजे घाघरा नदी के कटान में आस्ताना समेत गंज शहीदा और कब्रस्तान शहीद हो गए।

(इन्ना लिल्लाही वइन्ना इलैही राजीऊन)

आपकी विलादत

आपके वालिद का नाम शेख़ रहमतुल्लाह था।आपकी विलादत से पहले आपके घर मे जो भी बच्चा पैदा होता वो कुछ दिनों बाद फ़ौत हो जाता।आपसे पहले आपके बड़े भाई

की विलादत हुई और 7 रोज़ के ही बाद उनका इंतेक़ाल हो गया उसके बाद आपकी बड़ी बहन की विलादत हुई और तीन महीने बाद वो भी रब्बे हक़ीक़ी से जा मिली।इन दो वाकियात ने वालिदैन के साथ अहले खानदान को रंजीदा होने पर मजबूर कर दिया अहले खानदान के चेहरों पर इसका सदमा देखा जा सकता था वालिदैन की केफीयत को बयान करना मोअल्लिफ के लिए मुमकिन नही है लोगो को ये लगता था कि अब शायद ये मुबारक खानदान कभी अहले वतन खजुरी को वारिस न दे पाए लेकिन क़ुरबान जाओ अल्लाह की मसलेहत पर जिस खानदान को ये फिक्र सताने लगी कि क्या अब हमारा कुल ही आगे बढ़ेगा अल्लाह ने उसी खानदान में ऐसा आशिके रसूल आशिके अहले बैत मर्द मुजाहिद सैयदुल आशिकीन ताजुस सूफिया सदरुस सूफिया फखरुस सूफिया हाफिज़ो कारी हज़रत सूफी अहमदुल्लाह शाह राहती अबुल उलाई जहाँगीरी जैसा नायाब नगीना अता किया जिसकी चमक ता क़यामत कम नही होगी जिसकी सोहबत से हज़ारो सूफियों की मन्ज़िले तय होगी जिसको नज़र में रखते हुए मोअल्लिफ लिखते हैं कि

क्यों न करे नाज़ सिलसिला ए जहाँगीरिया तुम पर
ख्वाज़ा राहत के दिलबर ए यार हैं अहमदुल्लाह शाह

जब आपके वालिदैन ने जिला फ़ैज़ाबाद के भेलसर में मौजूद हज़रत लुत्फुल्लाह शाह शहीद अलैहिर्रहमा के आस्ताने और जिला बाराबंकी के तकिया में मौजूद अज़ीम बुजुर्ग दादा मुश्ताक शाह अलैहिर्रहमा के आस्ताने पर हाज़िरी देकर बेटे की मिन्नत मांगी तो बुजुर्गो के वसीले से मांगी गई मिन्नत को अल्लाह ने कबूल किया और आप की विलादत हुई यूं कहा जा सकता है की आप रहमतुल्लाह अलैह इन दोनों बुजुर्गों की दुआओ का ही तोहफा हैं।

(नोट--) तसव्वुफ़ में सैकड़ों औलिया अल्लाह ऐसे भी हुए हैं जिनकी विलादत की दुआ दूसरे बुजुर्ग ने की है मसलन क़ुत्बुल मदार सैयद बदिउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह की दुआ से मलंग ए आज़म सैयद जमालुद्दीन जानेमन जन्नती मदारी रहमतुल्लाह अलैह की विलादत हुई,मदारुल आलमीन ही की दुआ से सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह

की विलादत हुई,सरकार गौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की दुआ दे शेख़ उमर शयूख सहाबुद्दीन सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह की विलादत हुई,मीर सैयद मख्दूम अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी रहमतुल्लाह अलैह की भी विलादत दूसरे फ़क़ीर की दुआ से हुई तो इस तरह के वाकियात भरे पड़े हैं और अहले सुन्नत अहले तसव्वुफ़ का अक़ीदह है कि औलिया अल्लाह अपनी क़ब्रो में ज़िन्दा है अल्लाह की अता से अवाम और मुहिबबीन को फेज़याब करते रहते हैं।

आपका बचपन

जब आपकी विलादत हुई तो आपको एहतियातन कई रोज़ अपनी वालिदा से दूर रखा गया।आपको दूध की जगह हज़रत शाह लुत्फुल्लाह शाह शहीद अलैहिर्रहमा की मज़ार के ग़ुस्ल का मुबारक पानी पिलाया जाता फिर कुछ दिन बाद अय्यामे ज्ज़की के बाद दुबारा ग़ुस्ल हुआ उसके बाद से आपने वालिदा का दूध पीना शुरू किया उसमे भी काफी एहतियात रखा जाता था।

(हज़रत लुत्फुल्लाह शाह शहीद अलैहिर्रहमा बहुत ही अज़ीम हस्ती हैं जो कि तहसील रुदौली शरीफ में रहीमगंज में आराम फरमा रहे बुजुर्ग हजरत सैयद शाह मौलवी अमीर अली

शहीद रहमतुल्लाह अलैह के हमराहियों में थे और उन्ही के साथ रहकर बातिलो से जंग करते हुए शहीद हुए हैं जिनका आस्ताना कुछ दूरी पर भेलसर में है)

दादा मुश्ताक शाह रहमतुल्लाह अलैह के आस्ताने पर हाज़री

अब चूंकि आपकी उम्र 6 माह हो चुकी थी और वालिदैन ने मिन्नत को पूरा करने का बेहतरीन वक़्त जानकर आपको अपने हमराह लिया और तकिया में मौजूद दादा मुश्ताक शाह रहमतुल्लाह अलैह के आस्ताने पर पहुंचे।अक्सर जिन्होंने वहां पर हाजिरी दी है वो बखूबी जानते है कि दरगाह ज़मीन से ऊपर टीले की ऊंचाई की शक्ल में बनी है आप के वालिद बाहर डेग पकवाने में मशरूफ थे आप अपनी वालिदा के साथ साहिबे आस्ताना के सामने बैठे थे इतने में आप हाथों के बल किसी तरह चलते हुए आस्ताना के ऊपर दोनों तरफ को पैर करके बैठ गए अब ये माज़रा देखकर वालिदा घबरा गई और वहां पर मौजूद लोग भी घबराने लगे फौरन बात आपके वालिद तक पहुंची वो भी फौरन दौड़ कर पहुंचे देखा कि आप दोनों तरफ को पैर किये हुए आस्ताना से लिपटे हुए उन्होंने आपको आस्ताने से नींचे उतारने की बहुत कोशिश की लेकिन

आप नींचे नही उतरे उल्टे आप ज़िद करने और रोने लगे आपका रोना देखकर दरगाह के खादिम ने कहा बैठे रहने दो ये खुद से उतरेंगे अगर उस वाकिये को शायरी की जुबान में बयान करना हो तो कुछ यूं होगा

यूं जांबजा लिपट जाना साहिबे मज़ार से सालिम

कोई कुछ भी ये सनद ए विलायत रस्मे मोहब्बत है

किस मर्तबे पर हैं फ़ायज़ मेरे ताजुस सूफिया

जब बचपन मे ये शान ओ अज़मत है

और क्यों न करे वो अता दरिया ए फेज़ ए मुहम्मदी

वो ताज ए सूफिया लाडलए खवाजा राहत है

मालूम होता था कि खुद साहिबे आस्ताना आपको अपनी गौद में लिए हुए प्यार कर रहे थे और आप भी उनसे चिमटे हुए थे और बातनी सीना ब सीना विलायत आपके सीने मुबारक में अता कर रहे थे।

बहरहाल कुछ देर बाद आप खुद अपनी मर्ज़ी से उतर आए और उसके बाद थोड़ी दूर पर वालिदा के साथ बिठाए गए फिर मिन्नत पूरी करके वालिदैन के साथ वापिस चले आये और धीरे-धीरे तमाम रस्मो/मिन्नतों का सिलसिला पूरा होता गया।

आपकी तालीम

प्राइमरी स्कूल से उर्दू तालीम में दर्ज़ा 4 पढ़ने के बाद आपका दिल इल्मे दीन हासिल करने की तरफ हुआ जिसके गरज़ आपने अपने हम वतन हज़रत हाफ़िज़ मोहम्मद इदरीस अलैहिर्रहमा के पास कलाम ए रब्बानी हिफ़्ज़ करना शुरू किया और धीरे धीरे तकमील की तरफ कारवाँ बढ़ता गया उसके बाद आपकी तव्वजो और मेहनत को देखकर आपके वालिदैन ने आपको लखनऊ के दारुल उलूम फुरकानिया भेजने का फैसला किया आखिरकार आप दारुल उलूम फुरकानिया तशरीफ़ ले गए और वहां क़ुरआन हिफ़्ज़ कर लिया फिर इल्मे किरात का कोर्स 1956 ईस्वी में यानी कि तीन साल में मुकम्मल किया और आप मदरसे से चुनकर सरहिन्द शरीफ़ उर्स में तशरीफ़ ले जाते उस वक़्त वहां का क़ायदा था कि जो तुलबा पढ़ने में बेनज़ीर होते वो सरहिन्द शरीफ भेजे जाते और आप को इसी सिलसिले में तीन बार सरहिन्द शरीफ

भेजा गया। तालीम के साथ साथ आप दरोगा हैदर बख्श पुराना चौक की मस्जिद में इमामत के फ़रायज़ को भी अंजाम देने लगे ओर हाफ़िज़ की सनद लेने के बाद आपने आलिम की तालीम शुरू कर दी लेकिन अब यहां से आपको वो लुत्फ़ नही मिल रहा था और आप की हालत और केफीयत में अब बदलाव महसूस होने लगा।

दादा मियाँ का आस्ताना ओर चचा मियाँ

जब आप मदरसा फुरकानिया में जेरे तालीम थे तो अक्सर सदर शरीफ में मौजूद क़ुत्बुल आरफीन ख्वाज़ा मोहम्मद नबी रज़ा शाह अलैहिर्रहमा के आस्ताने पर हाज़िर हुए फातिहा पढ़ी उसके बाद जब बाहर आये तो वहां आस्ताने के एक खादिम जिनको लोग चचा मियाँ कहते हैं उनसे मुलाकात हुई जो बेहद मीठा और ठहर ठहर कर बोलते दुबले पतले से थे लेकिन बेइंतिहा शफ़क़त से पेश आते आप उनसे बड़े मुतासिर हुए और उनसे अक़ीदत बढ़ती गई।उस वक़्त आपका लगाव दादा मियाँ की तरफ बढ़ने लगा चचा मियाँ ने आपसे ख्वाज़ा राहत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह के चंद मुरीदों से मिलवाया आपने उनसे मुलाकात की हर मुरीद को वजदानी और रूहानी कैफियत में पाया जो ज़िक्रे जली और

ख़फ़ी का मुजस्सम नमूना थे।आप उन्ही मुरीदों से अक्सर ख्वाज़ा राहत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह की सादगी और करामतो के बारे मे सुनते रहते उस वक़्त में यूपी में ख्वाज़ा राहत हसन शाह अलैहिर्रहमा की विलायत का डंका बज रहा था लेकिन उन्होंने शोहरत की बजाय सादगी से ज़िन्दगी गुज़ारी और बहुत कम मुरीद किये क्योंकि उनका मकसद भीड़ जुटाना नही था धीरे धीरे आपका दिल उनकी तरफ माइल होने लगा ओर क्यों न जो जब दादा मियाँ और फखरुल आरफीन रहमतुल्लाह अलैह की बातनी रज़ामंदी से आपके लिए ये सब सोचा जा चुका था तो फिर देर किस बात की आपने भी दादा मियाँ के भतीजे ख़्वाज़ा इनायत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह के शहज़ादे हज़रत ख्वाज़ा राहत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह के हाथ पर बैत की और सिलसिला ए अबुल उलाइया जहाँगीरिया से सरफ़ाज़ हुए।

ए राहत हसन आपकी कुतबियत पे नाज़

अहमदुल्लाह शाह को तुमने खुर्शीद कर दिया।

मुर्शिद से मोहब्बत

अहले तसव्वुफ़ का अक़ीदह है कि मुर्शिद अगर राज़ी है तो इंशाल्लाह बेड़ा पार होता है और मुर्शिद की खिदमत का तरीक़ा ये ब कोई नया नही है बल्कि ये सैयदुल अम्बिया के ज़माने से चला आया है तारीख़ गवाह है कि जब मेरे आक़ा अलैहिस्सलाम जलवा अफ़रोज़ होते तो सहाबा का झुरमुट यही सोचता रहता कि काश आज में रसूल ए खुदा की खिदमत कर लूं तो ये कोई नया तरीका नही है और बगैर आजिज़ी इन्किसारी के तसव्वुफ़ में सालिक कोई भी मन्ज़िल तय नही कर ही नही सकता।आपने अपने मुर्शिद को राज़ी कर लिया आपका अक्सर ये मामूल था कि जब भी आपके मुर्शिद का क़याम दादा मियाँ अलैहिर्रहमा के आस्ताने पर होता आप ज्यादातर वक़्त उन्ही की खिदमत में रहते।हज़रत ख्वाज़ा राहत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह की तवज़्ज़ो भी आम मुरीदों की बनिस्बत आप पर ज्यादा थी वो चाहते थे कि मन्ज़िले तसव्वुफ़ की पुरखार वादियों से गुज़ार कर मारिफ़त के बुलन्द दरज़ात जल्द से जल्द तय करा दे मुर्शिद की निगाहें करम का ही फ़ैज़ था कि आप इल्म ओ अदब के मामले में आम मुरीदों से जुदा थे आप खामोशी के साथ खिदमत ए

मुर्शिद के अहम फरायज़ को अंजाम देने में मशगूल रहते आपके हमराह पीर भाई गुलाम रसूल साहब और दूसरे पीर भाई जो सदर बाजार में रहते थे वो भी मुर्शिद की खिदमत करते लेकिन आप उनसे ज्यादा वक्त मुर्शिद की खिदमत में देते।आप सारी सारी रात मुर्शिद के सामने बैठे रहते और मुर्शिद के चांद से रोशन चेहरे का दीदार करते रहते जिसको शायर ने कुछ यूं बयान किया है

जब उस निगाह से पहली पहली निगह मिली

फिर उसके बाद न अबतक कहीं पनाह मिली

मताए दोनों जहां भी मिले तो ठुकरा दूं

ये कम नही की मुझे तेरी बारगाह मिली

मुर्शिद का झूँठा खाया

औलिया अल्लाह अपने मुर्शिद का झूठा खाना तबर्रुक समझकर बड़े ही अक़ीदत और मोहब्बत से खाना पसंद करते थे और ता क़यामत तक जो भी सालिक हक़ीक़ी अहले

तसव्वुफ़ होगा वो इसे बाइसे फ़ख्र समझेगा तारीख़ गवाह है कि शेख सारँग चिश्ती अलैहिर्रहमा, सैयद शाह सिराजुद्दीन बुखारी शाहे आलम,सैयद शमसुद्दीन तुर्क अल्वी पानीपती अलैहिर्रहमा,सैयद जमालुद्दीन जानेमान जन्नती अलैहिर्रहमा, सैयद मख्दूम अशरफ जहाँगीर सिमनानी अलैहिर्रहमा, सुल्तानुल उलेमा हज़रत मौलाना जलालुद्दीन रूमी अलैहिर्रहमा,और भी दीगर बड़े बड़े औलिया अल्लाह इस तबर्रुक और सुन्नत से सरफ़राज़ हुए हैं।

एक बार आप मुर्शिद की खिदमत में हाज़िर थे रात के दो बजे थे मुर्शिद ने एक खादिम को आवाज़ दी और कहा जो आज एक मुरीद ने दशहरी आम पेश किया उसे काटकर हमारे पास ले आओ खादिम ने आम काटकर आपके पास हाजिर कर दिया उन्होंने आम का गूदा खा लिया और छिलका आपकी तरफ कर दिया आपने फौरन बड़े ही अक़ीदत और मोहब्बत से बड़े ही फ़ख्र से उसे तबर्रुक समझकर छिलका खाया और फैजान ए मुर्शिद से मालामाल हुए आम इंसान की समझ से ये बाहर है लेकिन आप जानते थे कि सनदुस्सालेक़ीन ख्वाज़ा राहत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह का झूँठा खाना अपने आप में बहुत बड़ी सआदतमंदी थी उन दिनों दारुल

उलूम फुरकानिया में जेरे तालीम थे और पायनियर मस्जिद में इमामत भी करते जहां से आपको 30 रुपये माह तनख्वाह मिलती आपके मुर्शिद ने कहा सारा पैसा घर भेज दिया करो तुम्हारे लिए तुम्हारा ख़ुदा काफी है आपने ऐसा ही किया हर माह सारा पैसा घर भेज देते और मुर्शिद का क़ुर्ब हासिल करने में लग गए मुर्शिद से मोहब्बत और अक़ीदत को शायर अपने लफ़्ज़ों में यूं बयान करता है

मेरे मुर्शिद की सूरत है कि शान ए किबरियाई है

अयाँ नाम खुदा चेहरे पर नूरे मुस्तफ़ाई है

ये वो दिल है जिस दिल मे तेरी उल्फत समाई है

ये वो सर है जिसे क़दमो तलक तेरे रसाई है

तुम्हारे आस्ताने की गदाई क्या गदाई है

गुलामी की गुलामी है खुदाई की खुदाई है

अब मुर्शिद ने आपको सिलसिला ए अबुल उलाइया जहाँगीरिया की खिलाफत व इजाजत देकर सिलसिला को

बढ़ाने की ज़िम्मेदारी सौंप दी उधर अहले अहबाब की ज़िम्मेदारी और इधर मारफत की मन्ज़िल तय करने का ज़ज़्बा लेकिन आप बिलकुल भी हताश नही हुए क्योंकि वो जानते थे कि ख्वाज़ा राहत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह उनसे बहुत मोहब्बत करते हैं खिलाफत अता होने पर शायर ने आपकी केफीयत कुछ यूं बयान की है कि

औरों को मिला है वो मुक्कदर से मिला है
मुझको तो मुकद्दर भी तेरे दर से मिला है

शजरा ए तरीक़त

आपका शजरा ए तरीक़त कुछ यूं है

ताजुस सूफिया हज़रत सूफी शेख़ अहमदुल्लाह शाह रहमतुल्लाह अलैह

सनदुस्सालेकीन ख्वाज़ा राहत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह

शैखुल औलिया ख्वाज़ा इनायत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह

क़ुत्बुल आरफीन ख्वाज़ा नबी रज़ा शाह दादा मियाँ रहमतुल्लाह अलैह

फखरुल आरफीन मख्दूम मौलाना सैयद अब्दुल हई हुसैनी चटगामी रहमतुल्लाह अलैह

शैखुल आरफीन ख्वाज़ा सैयद शाह मुखलिसुररहमान हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना शाह इमदाद अली भागलपुरी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना शाह मोहम्मद महदी फारूकी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना शाह मोहम्मद मज़हर हुसैन अलैहिर्रहमा

सैयदना शाह फरहतुल्लाह अलैहिर्रहमा

सैयदना मख्दूम शाह हसन अलैहिर्रहमा

सैयदना शाह मख्दूम मुनअम पाकबाज़ अलैहिर्रहमा

सैयदना मीर सैयद खलीलुद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयदना मीर जाफर अलैहिर्रहमा

सैयदना मीर सैयद अहलुल्लाह अलैहिर्रहमा

सैयदना मीर सैयद निज़ामुद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयदना मीर तकीउद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयदना मीर सैयद नसीरुद्दीन अलैहिर्रहमा

सैयदना मीर सैयद मोहम्मद महमूद अलैहिर्रहमा

सैयदना मीर सैयद फ़ज़्लुल्लाह अलैहिर्रहमा

सैयदना शाह कुतबुद्दीन बीनाए दिल अलैहिर्रहमा

सैयदना शाह नज़्मुद्दीन क़लन्दर अलैहिर्रहमा

सैयदना नूरुद्दीन मुबारक ग़ज़नवी अलैहिर्रहमा

सैयदना निज़ामुद्दीन ग़ज़नवी अलैहिर्रहमा

शेखुल मशायख शेख उमर सहाबुद्दीन सोहरावर्दी रहमतुल्लाह अलैह

सुल्तानुल औलिया सैयदना गौसे आज़म शेख अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना अबू सईद मुबारक मखजूमी अलैहिर्रहमा

सैयदना अबुल हसन हिदकारी अलैहिर्रहमा

सैयदना अबु यूसुफ तरतूसी अलैहिर्रहमा

सैयदना अब्दुल वाहिद अब्दुल अज़ीज़ यमनी अलैहिर्रहमा

सैयदना रहीमुद्दीन अयाज़ अलैहिर्रहमा

सैयदना अबू बकर शिबली अलैहिर्रहमा

सैयदना सैयदुत ताइफा ख्वाज़ा जुनैद बगदादी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना शेख़ सिर्री शक्ति रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना शेख मारूफ करखी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना हज़रत इमाम अली मूसा रज़ा राजिअल्लाहू तआला अन्हु

सैयदना इमाम मूसा काज़िम रजिअल्लाहू तआला अन्हु

सैयदना इमाम जाफ़र सादिक़ रजिअल्लाहू तआला अन्हु

सैयदना इमाम मुहम्मद बाकिर रजिअल्लाहू तआला अन्हु

सैयदना इमाम ज़ैनुल आब्दीन रजिअल्लाहू तआला अन्हु

सुल्तानुश शोहदा लख्ते दिले सैयदा नूरे निगाहे मुस्तफ़ा
सैयदना मौला इमाम हुसैन रजिअल्लाहू तआला अन्हु

ताजदारे हल अता शेरे खुदा मुश्किल कुशा दामाद ए मुस्तफ़ा असदुल्लाहुल गालिब मतलूब ए कुल्ले तालिब सैयदना मौला अली क़रमल्लाहु वजहुल करीम

सैय्दुल अम्बिया व अस्फिया रहमतुल लिलआलमीन हज़रत अहमद मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम

वतन वापसी और सिलसिला ए बैत की शुरुआत

आपके वतन आने के बाद लोगो ने आपके दामन ए करम वाबिस्ता होने का शरफ़ हासिल किया उनमे कुछ मुरीद जिन्हें आपकी सोहबत हफ्ता पन्द्रह दिनों में लाज़मी मिल जाती थी उनके नाम कुछ यूं है

1--सूफी उस्मान अली साहब(खैरनपुर, रूदौली)

2--सूफी ईशा मोहम्मद(खेरनपुर,रूदौली)

3--सूफी अब्दुल गफ्फार(रूदौली

4--सूफी मोहम्मद नईम साहब(आसुमऊ)

5--सूफी नोशाद अली साहब (हसनामऊ,रूदौली)

6--सूफी आफाक अहमद साहब(सरायंनासिर,रूदौली)

7--सूफी दिलशाद अली साहब(हसनामऊ,रूदौली)

8--सूफिया सादिया खान साहिबा(कोपेपुर)

9--सूफी मोहम्मद अख्तर साहब(टांडा,अम्बेडकरनगर)

10--सूफी दस्तगीर अहमद साहब(टांडा,अम्बेडकरनगर)

11--सूफी जान मोहम्मद(हयातनगर,रूदौली)

12--सूफी लच्छी शाह(छत्तीसगढ़)

13--सूफी अलाउद्दीन साहब(इल्तिफ़ात गंज,अम्बेडकरनगर)

14--शमा रसूल साहब

(गेरौंढा शरीफ़, फैज़ाबाद)

यूं तो आप रहमतुल्लाह अलैह के बेशुमार मुरीदीन हैं लेकिन ये वो मुरीदीन है जिनका आपसे रिश्ता ज़ाहिरी और बातनी तौर पर दूसरे मुरीदों की बनिस्बत ज्यादा मजबूत था।

बहराईच शरीफ हाज़िरी और एक़ मुरीद की रिक्क्त का वाकिया

आप रहमतुल्लाह अलैह की बेशुमार क़रामते हैं आप को हुज़ूर सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह से बेपनाह अक़ीदत थी आपको उनसे बातनी फैज़ान हासिल है।यूं तो आप ख्वाजा राहत हसन अलैहिर्रहमा के दिल का सुकून थे लेकिन आप सैयद सालार ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह के भी सच्चे आशिक व महबूब थे।एक बार आपने अपने मुरीदों को लेकर बस के ज़रिए बहराईच शरीफ़ का सफर किया जहाँ पर आपने सिलसिला ब सिलसिला सारे मुरीद को साहिबे मज़ार के सामने पेश करके हाज़िरी दिलवाई उनमे से आपके एक मुरीद सूफी जान मोहम्मद साहब रूदौली शरीफ के मोजा हयातनगर से ताल्लुक रखते हैं वो साहिबे आस्ताना की बारगाह में पेश करने के लिए मिठाई/फूल वगरैह की तलाश में मशरूफ थे इतने में आप सारे मुरीदों को लेकर बस की तरफ चले आये और जब बस चलने लगी तो सूफी जान मोहम्मद को देखकर आप रहमतुल्लाह अलैह ने नज़रे क़रम उनकी जानिब की नज़रे करम का पड़ना था कि सूफी जान मोहम्मद साहब पर रिक्क्त तारी हो गई वो खुद बयान करते हैं

कि तीन दिन तक लगातार रिक्क्त की सिद्दत से दिल परेशान रहा कुछ समझ मे नही आ रहा था इधर सूफी जान मोहम्मद साहब रिक्क्त से छुटकारा पाने के लिए मुर्शिद की बारगाह में चल पड़े उधर आप रहमतुल्लाह अलैह भी अपने घर से इन्ही के पास चल दिये।रास्ते मे जैसे ही आप को देखा उन्होंने आपके क़दमो में गिर गए और कुछ कहते कि उससे पहले आपने फ़रमाया मे खुद इसी वास्ते तुम्हारे पास आ रहा था चलो घर चलो उसके बाद आप सूफी जान मोहम्मद के घर हयातनगर में आये उस दिन जब रात का वक़्त हुआ तो आपने आदत व मामूल से हटकर सूफी जान मोहम्मद से फ़रमाया आज अपनी चारपाई मेरे बगल में बिछाना मुर्शिद का हुक्म था तो उन्होंने वैसा ही किया फिर जब सुबह हुई तो सूफी जान मोहम्मद ने देखा कि उनकी हालत अब पहले जैसी है आप रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया जान मोहम्मद इसे हासिल करने में लोगो को मुद्दते लग जाती हैं और तुम तो खुश किस्मत थे कि तुम्हेD ये सब इतनी आसानी से अता हो गया था उसके बाद आप वहां से चले आये।

दुआ से बेटी की पैदाइश

आप रहमतुल्लाह अलैह हर वक़्त आलमे जज़्ब में रहते थे एक बार सूफी जान मोहम्मद हयातनगर के पास एक सनातन धर्म की औरत आई और कहने लगी आपके पीरो मुर्शिद अगर कभी आये तो मुझे जरूर बुला लीजियेगा दरसअल उस औरत के एक बेटा था और उसे ख्वाहिश थी कि एक बेटी भी हो जाये एक दिन सूफी जान मोहम्मद आपके घर तशरीफ़ ले गए और कहा हज़रत एक ऐसा मामला है आप रहमतुल्लाह अलैह ने कहा क्या तुमने मुझे कभी ये सब करते देखा है उन्होंने कहा हज़रत देखा तो नही है लेकिन उस औरत की परेशानी और हाजत देखकर मुझसे रहा न गया तो बस इसीलिए गुलाम ने अर्ज़ कर दी आप ने फरमाया ठीक है जब घर आऊँ तो उसको बुलवाना एक दिन आप सूफी जान मोहम्मद के घर पहुंचे तो उन्होंने उस औरत को बुलवाया आप एक चारपाई पर लेटे हुए वो औरत आई और आते ही उसने क़दमबोशी की और बैठ गई न आपने इस ताल्लुक से कोई कलाम न किया और न उस औरत ने।कुछ अरसा गुज़रने के बाद वो औरत चलने लगी तो जाते वक्त दुबारा क़दमबोशी की अब वो कुछ कह पाती की आपने फ़रमाया जाओ तुम्हारी फिक्र खत्म हो

जायेगी तुम्हारा काम हो जाएगा इतना कहकर आपने उसे जाने की इजाजत दी सूफी जान मोहम्मद साहब बताते हैं कि पूरे 9 महीने के बाद उस औरत के घर पर बेटी हुई तो ये आपकी एक करामत ही थी की आपने बगैर कुछ कहे उसे अता किया जब गैरो को आपने इतना अता किया तो जो आपके दर से जुड़ गया उसे न जाने कितना मिला होगा ये तो बस देने वाला या दिलाने वाला या पाने वाला ही बता सकता है दूसरा कोई नही।

अजमेर स पैदल खजुरी का सफर

मेने पहले ही वाजेह कर दिया है कि आप रहमतुल्लाह अलैह अक्सर आलमे जज़्ब में रहते और इसी हालत में कई कई किलोमीटर दूर वलियों के आस्तानो पर हाज़री देने निकल जाते एक़ बार आप ख्वाजा ए हिन्द सरकार गरीब नवाज रहमतुल्लाह अलैह के दरबार मे हाज़िरी दी उस वक़्त आपके पास महज 8 रुपये थे जो आपने जाते वक़्त ट्रेन के टिकट वगैरह में खर्च कर दिए अब जब हाज़िरी का शरफ़ हासिल हो गया तो वापसी का इरादा हुआ आप ट्रेन में बैठ गए लेकिन फौरन याद आया कि शरीयत बगैर टिकट सफर करने की इजाजत नही देती है फिर आप रहमतुल्लाह अलैह पैदल ही

अजमेर से घर की और चल पड़े रास्ते मे आपने पत्तियो से अपनी भूख मिटाई जयादातर आप भूखे रहते बस हल्का सा पानी और जब भूख की सिद्दत हद से ज्यादा हो जाती तो आप ने पेड़ो की पत्तियों से गुजारा किया और पैदल चलते रहे और कई रोज़ के बाद आप अपने वतन खजुरी वापिस लौट आये ये ख्वाज़ा गरीब नवाज का फैज़ान ही था कि आप रहमतुल्लाह अलैह पैदल इतने लम्बे सफर से आसानी से अपने घर चले आये वैसे ऐसे कई वाकियात आपकी ज़िंदगी से मिलते हैं कि आपने बहराईच शरीफ़ का भी सफर पैदल ही तय किया है।

नीम का पेड़ सूख गया

एक बार मज़्ज़ुब के लिबास(हाथ मे चूड़ी,दुप्पटा)वगेरह पहने हुए खजुरी से रूदौली शरीफ़ की तरफ़ जा रहे थे रास्ते में एक मक़ाम जिसे सहापुर कहते हैं वहां पर एक शख्श ने आपको इस हालत में देखा तो आपसे कहा बाबा ये सब लिबास डाले ही हो या कुछ आपके पास है भी आपने फ़रमाया क्या तुम देखना चाहते हो मेरे पास क्या है उसके बाद आपने अपनी जलाली नज़र सामने लगी नीम की पत्तियो पर डाला वो सूख कर लटक गयी और वहाँ के मौजूद लोग बताते है कि 3-4 दिनों के अंदर एकदम से हरी भरी नीम पल भर में सूख गयी ये

आप रहमतुल्लाह अलैह की नज़र ए जलाली का आलम था वरना आपने कभी भी लोगो की बातों का जवाब इस तरह नही दिया और अपने आप को सब्र ओ शुक्र का पैकर बनाये रखा वरना आप को तो वो फ़ैज़ ख्वाजा राहत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह से मिला था कि अगर जिसे हालते जलाल में देख लेते उसका अंजाम वही जान सकता है दूसरा नही।

शमा रसूल की बैत और ख्वाब

आपके एक मुरीद शमा रसूल साहब जो गेरोंढा शरीफ़ के रहने वाले हैँ वो बयान करते हैं कि एक बार मेरे भांजे ने मुझसे अर्ज़ की कि में इस बार आप रहमतुल्लाह अलैह से बैत कर लूं लेकिन मेने मना कर दिया फिर उसी रात को मेने ख्वाब देखा कि महिफले शमा हो रही है और आप रहमतुल्लाह अलैह वहाँ जलवागर हैं सुबह होते ही में दौड़ कर आपके पास गया और आपके दस्ते अक़दस पर बैत की।

मुरीद को जानवर से बचाया

आपके मुरीद शमा रसूल साहब बयान करते हैं कि मुरीद होने के कुछ दिन बाद में अपने खेत मे बैठा था इतने में एक अजीबोगरीब शक्ल का जानवर मेरे सामने आ गया जब मुझे उससे बचने की कोई सूरत नज़र न आई तो मैने आँखे बंद

करके फरमाया की या मुर्शिद मदद करो इतना कहना था कि फौरन आप वहां पहुंच गए और उस जानवर को भगा दिया फिर तुरन्त गायब हो गए।

सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह से आपकी निस्बत

आपके मुरीद और ख़लीफ़ा सूफी आफाक अहमद साहब बयान करते हैं कि एक बार मे भी अपने मुर्शिद के साथ सैयद सालार रहमतुल्लाह अलैह के आस्ताने पर हाज़िर था हालांकि उस वक़्त में हज़रत से बैत नही हुआ था जब में सरकार ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में हाज़िर हुआ तो मैने कहा सरकार आप आपके हवाले खुद को कर रहा हूँ आप जिसे चाहे उसके सुपुर्द कर दे उनका ये कहना था कि कुछ देर बाद आप रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि आफाक साहिबे आस्ताना का हुक्म हो चुका है वो तुम्हे मेरे हवाले कर रहे हैं इसके बाद बहराईच शरीफ में सूफी आफाक अहमद अबुल उलाई जहाँगीरी साहब को बैत किया और अपने फैज़ान से मालामाल किया जिसका असर आज भी दिखाई पड़ता है।

मुरीद को शैतान से बचाया

आपके मुरीद सूफी आफाक अहमद साहब बयान करते हैं कि एक बार वो रात को क़रीब 8 या 8 बजे शुजागंज से सराय नासिर अपने घर की और जा रहे थे इतने में रास्ते मे गन्ने के खेत से उन्हें कुछ डरावनी आहट महसूस हुई लेकिन उन्हें लगा शायद हवा चल रही होगी जब वो आहट और तेज़ होती गई तो उन्होंने आप रहमतुल्लाह अलैह को याद किया और फ़रमाया मुर्शिद बचाइए वरना ये शैतान नुकसान पहुंचा देगा उनकी ज़ुबान से ये जुमले अदा हुए ही थे कि आप उनके पास पहुंच गए और फरमाया आफाक इतने में ही घबरा गए कुछ देर चलने के बाद आप वहाँ से ग़ायब हो गए।इस तरह के वाकियात आपकी हालाते ज़िन्दगी में बहुत से मिलते हैं।

खैरनपुर आपक़ी नमाज़

आपके मुरीद शमा रसूल साहब बयान करते हैं कि एक बार वो रुदौली शरीफ से कुछ दूरी पर वाके एक मौजा जो खैरनपुर के नाम से मशहूर है वहाँ वो तमाम पीर भाइयो के साथ सूफी उस्मान साहब के गरीबखाने पर मौजूद थे आप रहमतुल्लाह अलैह की मौजूदगी भी महफ़िल को ज़ीनत बख़्श रही थी इतने में इशा कि अज़ान होने लगी तमाम पीर भाई उठकर मस्जिद की तरफ़ चले गए में और हज़रत उसी जगह पर बैठे

रहे फिर जब नमाज़ ख़त्म हो गई तो हज़रत ने मुझसे कहा शमा रसूल नमाज़ पढ़ने चलोगे मेने कहा जी हज़रत जरूर चलूँगा इतना कहने के बाद में और हज़रत मस्जिद की तरफ चल पड़े मेने आगे बढ़कर जब मस्जिद का दरवाजा खोला तो अचानक से एक खुशबू महसूस हुई जो मेने इससे पहले कभी अपनी ज़िंदगी मे नही महसूस की थी फिर जब हम मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हुए तो लगा की सारी मस्जिद भर गई हो और जैसे ही नमाज़ पढ़कर सलाम फेरा तो देखा वहाँ सिर्फ में और हज़रत थे।

घाघरा नदी वापिस चली गयी

आपके मुरीद व ख़लीफ़ा सूफी आफाक अहमद साहब बयान करते हैं कि एक बार आप रहमतुल्लाह अलैह मेरे घर आये थे घर पर सभी से मुलाकात की जब आप चलने लगे तो मैने कहा हुज़ूर नदी कटान पर है घर से ज्यादा दूरी भी नही मेरे मुंह से ये सुनकर आप ने फरमाया तो ग़म न करो उसे भगा दिया जाएगा फिर कुछ दिनों बाद पीछे की और चली गई।

घर की ख़्वाहिश

सूफी आफाक अहमद साहब बयान करते हैं कि एक बार मेरे पीर भाई सूफी उस्मान साहब खेरनपुर से अपने अहलो अहयाल के साथ आप के उर्स में शामिल थे मेने मन ही में सोचा कास आज मेरा घर भी इस काबिल होता कि ताला लगा दिया जाता है इसके अगले दिन बाद हयातनगर तहसील रूदौली में एक नए घर का सौदा बहुत ही कम दामों में हो गया जिसे वो आप रहमतुल्लाह अलैह की है करामत बताते हैं।

उर्स की तारीख़ और मख्दूम ए सिमना अलैहिर्रहमा से आपकी निस्बत

एक बार आप मीर सैयद मख्दूम जहाँगीर अशरफ़ सिम्नानी रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में हाज़िर हुए उसके बाद अपने मुरीद अब्दुर्रहीम(मुबारकपुर,टांडा)के घर तशरीफ़ लाए और अब्दुर्रहीम जो कि आपके मुरीद थे उनको मुखातिब करके फ़रमाया कि अब्दुर्रहीम आज हम सुल्तान से सुल्तान की तारीख अपने लिए मांग लाया हूँ और तारीख़ गवाह है उसी तारीख यानी 27 मुहर्रम को आप रहमतुल्लाह अलैह ने दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया आज भी आपकी उर्स और मख्दूम ए सिमना का उर्स एक साथ होता है ये आपकी सबसे

बड़ी करामत है क्योंकि इस करामत को आपने अपने विसाल से तकरीबन 15 साल पहले बता दिया था।

बिच्छू के डंक का असर खत्म हुआ

मुशीर नाम के एक शख़्स बयान करते हैं कि एक बार उनकी बहन को एक ज़हरीले बिच्छू ने डंक मार दिया जिससे वो बेहोश हो गई फिर वो उन्हें लेकर के आप की बारगाह में हाज़िर हुए आपने देखते ही फ़रमाया क्या हुआ रे,मुशीर ने अपनी बहन को लिटाने के बाद सारा माजरा बताया आपने अपनी जुबान से लुआब ए दहन निकाला और जख्म पर लगा दिया कुछ ही देर में उसका दर्द खत्म हो गया और वो बिल्कुल ठीक हो गई।

आप रहमतुल्लाह अलैह के 4 साहबजादे भी हैं जिनका नाम कुछ यूं है

1--शेख नियाज़ अहमद उर्फ नन्हे मियाँ

2--शेख अली अक़बर

3--शेख हैदर अली

4--शेख अमीर अली

तो अज़ीज़ों ये थे ख्वाजा राहत हसन रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा ताजुस सूफिया हज़रत हाफिज़ो क़ारी सूफी अहमदुल्लाह शाह रहमतुल्लाह अलैह जिनकी शान और मर्तबे का अंदाज़ा लगा पाना मुश्किल है अल्लाह हज़रत के सदके तुफ़ैल हम सभी को राहै रास्त पर चलने की तौफ़ीक़ दे।

ख्वाजा फ़साहत हसन शाह अलैहिर्रहमा

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 29 जिल हिज्जा 1374 हिजरी अंग्रेजी कैलेंडर के मुताबिक 19 अगस्त 1955 ईस्वी को बरोज़ जुमा भैंसोड़ी शरीफ़ जिला रामपुर में हुई।

नाम

आपका नाम "मुहम्मद फसाहत हसन" था और लक़ब मख्दूम उल मशायख,महबूबे मुस्तफ़ा, सनदुल औलिया और उर्फ़ियत "मियाँ हुज़ूर" है।

नसब

आपका खानदान पाक साफ और शरा का पाबन्द था आपके खानदान आली में वालिद ख्वाजा राहत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह और आपके दादा ख्वाजा इनायत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह व आपके खानदान के सबसे अज़ीम

बुजुर्ग क़ुत्बुल आरेफीन ख्वाज़ा मुहम्मद नबी रज़ा शाह अलमारूफ़ दादा मियाँ रहमतुल्लाह अलैह जैसी शख्सियत हैं जिनका अहले तसव्वुफ़ बड़ा ऐहतराम करते हैं।

बचपन

आपका बचपन बड़ा ही संजीदा रहा है जब आप की उम्र 4 साल 4 माह हुई तो आपके वालिद मोहतरम ख्वाजा राहत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह ने 1378 हिजरी को रस्मे बिसमिल्लाह ख़्वानी अदा की जब आपकी उम्र 16 साल हुई तो पहली शाबानुल मोअज़्ज़म 1391 हिजरी यानी 1971 को आपने बैत ली जो कि जुमा मुबारक का दिन था और दादा हुजूर इनायत हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह का आस्ताना था।

शादी

आपकी शादी 30 मई 1982 ईस्वी बरोज़ इतवार मुहल्ला शेखपुरा क़स्बा बहेड़ी शाह गढ़ जिला बरेली से हुई थी।आपका ससुराल खानदान हमेशा से अफगानी नस्ल,निहायत ही क़रीमुन्नसब, शरीफुल हसब,सरापा तक़वा,तहारत,सुन्नी सहीउल अक़ीदह रहा है।सिर्फ आप ही कि नही बल्कि ख्वाजा मुहम्मद नबी रज़ा शाह रहमतुल्लाह

अलैह के ज़माने से ही उनका और आला हजरत अहमद रज़ा खान फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमा के पाक साफ खानवादे से आपके यहां शादी होती रही है और आज भी ये मुबारक सिलसिला क़ायम व जारी है।

हुज़ूर सनदुल औलिया का उनफुवाने शबाब

आपकी उम्र मुबारक जब 20 साल हुई तो आपके सर पर "सज्जादा नशीनी" सिलसिला की तब्लीग-व-इशाअत का भारी बोझ बुजुर्गों की जानिब से रख दिया गया।आपने इस अमानत विरासत की पूरी पासबानी करते हुए सिलसिला को फ़रोग़ बख्शा कि इस राह के तजुर्बाक़ार,पुख्ताकार, बुजुर्गवार,दांतों तले उंगली दबा कर बोल पड़े की अल्लाह अल्लाह तेरी क़ुदरत की इतने कम वक्त में इतने बड़े बड़े काम निहायत ही खुश असलूबी से अंजाम दिया।मुल्क और बैरूनी मुल्क का एक भारी भीड़,खुल्फा की भी अच्छी खासी तादाद,मस्जिदों,मदरसों,खानकाहों की भी तामीर मुसलसल जारी रखी।

विसाल सनदुल औलिया

28 जमादुल आखिर 1422 हिजरी मुताबिक 17 सितम्बर 2001 ईस्वी बरोज़ दोशम्बा को कुल 46 साल की उम्र में हो गया यानी कि क़ुत्बुल आरेफीन दादा मियाँ ख्वाजा मुहम्मद नबी रज़ा शाह रहमतुल्लाह अलैह की उम्र मुबारक भी 46 साल ही थी।आपकी नमाज़े जनाजा आपके ही मुरीद हज़रत अबुल महमूद मुहम्मद मज़हरी फ़साहती ने पढ़ाई है जो कि आपकी बज़ाहिर ज़िंदगी मे भी नमाज़ पढ़ाते थे।

उर्स सरापा क़ुदुस

आपका उर्स मुबारक हर साल 26,27,28,29 जमादुल आखिर को किब्ला मुहम्मद सबाहत हसन शाह की सज्जादा नशीनी में बमुक़ाम भैंसोड़ी शरीफ़ जिला रामपुर में बहुत ही रहमत बरसती फ़िज़ा में होता है।बकसरत मुरीदीन,मोतकीदीन,उलमा,मशायख, पीराने इज़ाम की आमद आमद से बड़ा ही पुरकैफ माहौल हो जाता है हर तरफ ख़ुशीहाली और हरियाली छा जाती है सब फ़साहती फुयूज़ व बरकात से खूब खूब सैराब हो जाते हैं।दुआ है कि परवरदिगार हमेशा मेरे पीर व मुर्शिद के आस्ताना से तेरी लाजवाल

रहमतों,नेमतों के धारे बहते रहे और हम जमीअ वाबस्तगान खूब जी भर के नहाते रहे हैं।आमीन!

एक नज़र में

आप रहमतुल्लाह अलैह की असल करामत यही रही है कि ज़िन्दगी का हर लम्हा हर गौशा इत्तेबा-ए-नबवी व रज़ा-ए-मुस्तफ़वी के नूरानी ढाँचे में ढला है।आपके दामन में 4 पीर,14 खानवादे में सिलसिला तसव्वुफ़ की तमाम नूरानी निसब्ते जमा हो गई है।कादरियत और चिशियत भी,सोहरावर्दियत और फिरदौसियत भी,इनायतियत भी राहतियत भी,नक्शबंदियत भी अबुलउलाइयत भी।आप की शान कोई क्या बयान कर सकता है आप की ज़िंदगी का हर लम्हा सुन्नते मुस्तफ़ा के मुताबिक ही गुजरा है।

सैयद साहू सालार ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह

आप रहमतुल्लाह अलैह अल्वी सादात थे आपका नाम पूरी दुनिया मे मशहूर है और क्यों न हो आपने जिस वक्त दीन की तब्लीग के लिए हिंदुस्तान का सफर किया है उन दिनों यहाँ कहीं कहीं शायद कोई मुसलमान मिलता था।आप गज़नी के सुल्तान महमूद ग़ज़नवी की फ़ौज़ के सिपहसालार थे और बाद में उन्होंने अपनी बहन सतरे मुअल्ला की शादी भी आपसे कर दी थी।

सैय्दुश शोहदा फिल हिन्द

आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम इस वजह से भी तारीख के सुनहरे लफ़्ज़ों में दर्ज हो गया है क्योंकि सैय्दुश शोहदा फिल हिन्द हज़रत सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह आप ही के शहज़ादे थे अज़ीज़ों कुर्बान जाओ दादा साहू सालार रहमतुल्लाह अलैह की जात ए अक़दस पर आपकी ही बदौलत हिन्द में उस वक़्त दीन फेला जिस वक़्त यहां नाम निहाद मुसलमान थे।

शजरा ए नसब

आपका शजरा ए नसब मोहम्मद बिन हनफिया रजिअल्लाहू तआला अन्हु से होता हुआ मौलाए क़ायनात हज़रत अली क़रमल्लाहु वजहुल करीम से मिलता है।

आपका शजरा ए नसब कुछ इस तरह से है

सैयद साहू सालार गाज़ी अलैहिर्रहमा

सैयद शाह अताउल्लाह ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा

सैयद शाह ताहिर ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा

सैयद शाह तैयब ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा

सैयद शाह मोहम्मद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा

सैयद शाह सैफ मलिक ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा

सैयद शाह आसिफ ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा

सैयद शाह अब्दुल मन्नान ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा

सैयदना मुहम्मद बिन हनफिया रजिअल्लाहू तआला अन्हु

सैयदना मौला अली करमल्लाहु वजहुल करीम

तो इस तरह से आप मौलाए क़ायनात की औलाद हैं आपका आस्ताना आलिया यूपी के जिला बाराबंकी के सतरिख में मौजूद है जहां पर हज़ारो अक़ीदत मन्द हाज़िरी देते हैं आपकी शान और मर्तबे का अंदाज़ा लगाना सबके बस की बात नही है आप की निस्बत और दीन के लिए दी गई आपकी कुर्बानियां यक़ीनन ता क़यामत तक आपका ज़िक्र करने के लिए काफी हैं आप हज़रत सैय्यदना बदिउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह से भी बेपनाह अक़ीदत रखते थे कुछ किताबो से ये भी मिलता है कि मदारुल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह की दुआ से ही आपके शहज़ादे सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा की विलादत हुई थी आप बिलयक़ीन तसव्वुफ़ के आला दर्ज़े पर फ़ायज़ थे।आपका फैज़ान हम अहले वतन को ताक़यामत अता होता रहेगा।

हुज़ूर महबूब उल औलिया रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत जिला बाराबंकी के क़स्बा टिकैतनगर के पास एक गाँव क़स्बा इचौली में हुई थी।

आप हसब व नसब के एतबार से खानदान ए मुगलिया से ताल्लुक रखते हैं और आपका नसब बहादुर शाह जफर से होते हुए हज़रत सैयदना औरगंजेब आलमगीर रहमतुल्लाह अलैह से मिलता है।

आपका मियाँ कनेक्शन

आपने अपने आप को मियाँ क्यों ज़ाहिर किया--?ये सवाल बहुत से लोग अक्सर एक दूसरे से पूछते रहते हैं या अपने मन में ही सोचते रहते हैं तो इसका जवाब ये है कि जब हिन्द की सरजमीं पर अंग्रेज़ो का ज़ुल्म खानदान ए मुगलिया पर होने लगा और इस खानदान के चश्मो चरागों को ज़िंदा मारा जाने लगा और बहादुर शाह जफर जैसे लोगो को गिरफ्तार

कर लिया गया और काला पानी की सज़ा दी गई तो बकिया खानदान के लोग सुरंग के रास्ते से निकलकर सरज़मींन ए हिन्द में जगह जगह बिखर गए और जब कोई जासूस पूछता की आप लोग कौन है--?आपका खानदान क्या है--?तो आप अपने को मियाँ ज़ाहिर करते ताकि अंग्रेज़ो के हवाले न कर दिए जाएं।

टिकैतनगर से ढलमऊ शरीफ़ आमद

आप और आपका खानदान बाराबंकी के क़स्बा टिकैतनगर में आबाद थे।उन दिनों ढलमऊ शरीफ(इल्तिफ़ात गंज,अम्बेडकरनगर) से कुछ लोग टिकैतनगर में बेल की खरीदारी के लिए आये थे आपसे उनकी मुलाकात हुई धीरे धीरे आपका एखलाक हुस्ना देखकर उन्होंने आपको अपने यहाँ आने की दावत दी और फिर आपने उनकी फ़रयाद को क़बूल किया और ढलमऊ शरीफ चले गए और आज भी आपका आ**सताना** मुबारक यहीं पर है जहां लाखो चाहने वाले आपके दर से फेज़ पाते हैं।

शुएबुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह

आप ऐसे बुजुर्ग थे कि अपने राज़ को किसी पर ज़ाहिर नही होने देते थे खेती बाड़ी आपका पेशा था,मकई के मचाना पर रात के हिस्से में हुज़ूर शुएबुल औलिया को मुरीद फ़रमाया।जहाँ आजकल पीरानी अम्मा और हज़रत मौलाना अब्दुल बारी साहब कुद्दुस सिर्रहु की मज़ार हैं।

गुरु गुड़ रह गये चेला शक्कर हो गया

हुज़ूर शुएबुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह को दाखिले सिलसिला करने के बाद हिन्द व पाक की मज़ारात पर सफर की इजाज़त दी और कुछ खाने के लिये भुना हुआ चना भी इनायत फ़रमाया।सफर की इब्तिदा सत्थिन शरीफ से हुई और इरशाद फ़रमाया की बगैर साहिबे मज़ार से मिले हुए न आना यानी साहिबे मज़ार से मिलकर ही अगली जगह सफर करना।फिर आपने साल भर का दौरा किया जब वापिस आए तो सफर के हालात बयान करने लगें कि हुज़ूर यहाँ ये देखा वहां ये देखा हुज़ूर शुएबुल औलिया के हालात को सुनकर पीरानी दादी ने फ़रमाया-

"गुरु गुड़ रह गए चेला शक्कर हो गया"

ये सुनकर आपको हल्का सा जलाल आ गया और आपने फ़रमाया भय्या आपने क्या देखा--?

शुएबुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया कि हुज़ूर पहले आपको फिर साहिबे मज़ार को देखा और ये भी फ़रमाया जब रास्ता भूल जाता तो कोई बुज़ुर्ग ज़ाहिर होते और जब रास्ते पर लग जाता तो ग़ायब हो जाते ये सुनकर आपने फ़रमाया--भय्या वो बुज़ुर्ग कोई और नही बल्कि में खुद हूँ---

आज भय्या आलिम हो गए

हुज़ूर शुएबुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह की एक ख्वाहिश ये थी कि काश में आलिम हो जाता तो जब हज़रत शुएबुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह की तालीम बातनी तौर पर पूरी हो गई तो आपने फ़रमाया--

"आज भय्या आलिम हो गए"

उलेमा का बयान है कि हुज़ूर शुएबुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह हिदाया वगैरह की इबारते ऐसी पढ़ते थे जैसे मोतबर आलिम पढ़ रहा हो,ये आप की खुली हुई क़रामत है उस्ताद की क़ाबलियत का अंदाज़ा लगाना हो तो शागिर्द की

काबिलियत मुलाहिज़ा करो,ठीक वैसे ही पीर के मर्तबे का अंदाज़ा लगाना हो तो मुरीद के मर्तबे को देखकर अंदाज़ा लगाओ।हुज़ूर शुएबुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह की जिंदगी क़रामतो से भरी हुई है हज़रत सरकार महबूबुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाया करते थे--

आपन छुपू और तवें उभारा
ये मन मुख तो देख गंवारा

अपना छुप गए और हुज़ूर शुएबुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह को चमका दिया और ऐसा चमकाया की अरबो/अज़म दुनिया भर में शुएबुल औलिया का चर्चा हो रहा है और होता रहेगा।यूं तो उनकी जो भी क़रामत है वह दर हक़ीक़त आपकी ही करामत है।इसीलिए की पीर-मुरीद से कभी जुदा नही होता,पीर अपने मुरीद को हर हाल में देखता रहता है जैसे कि तसव्वुफ़ की किताबो में है।आपका नाम ताक़यामत तक ज़िन्दा रहेगा।आप तसव्वुफ़ के बुलन्द मर्तबे पर फ़ायज़ थे।

एक नज़र में

1--आपका आबाई घर टिकैतनगर के बगल एक गाँव जिसका नाम क़स्बा इचौली है।

2--आप का आस्ताना ढलमऊ शरीफ़ है जो पहले फैजाबाद में पड़ता था लेकिन अब ये अम्बेडकरनगर जिला पड़ता है।

3--आप को सिलसिला ए चिश्तियां, सोहरावर्दिया, नक्शबंदिया कि ख़िलाफ़त व इजाजत हासिल थी।

हुज़ूर शुएबुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह

विलादत

आपकी विलादत 1307 हिजरी बरावँ शरीफ़ जिला सिद्धार्थनगर में हुई थी।आपके वालिद का नाम हज़रत फजर अली अलैहिर्रहमा था।

नाम

आपका पूरा नाम मोहम्मद यार अली और लक़ब शैखुल मशायख व शुएबुल औलिया है।

नसब

आप अल्वी सैयद हैं आपने कभी भी शोहरत के लिए अपने नसब को आम नही किया क्योंकि आप जानते थे कि अगर नसब को सादिर कर दिया तो दीन की तब्लीग उस तरह से नही हो पायेगी जिस तरह से आप बगैर नसब सादिर किये हुए करते थे आप सैयदुश शोहदा फिल हिन्द सैयद सालार

मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह के चचाज़ाद भाई की औलाद में से हैं आपका शजरा ए नसब सैयद सालार सैफ़ुद्दीन सुरुख ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह से होता हुआ मोहम्मद बिन हनफिया रजिअल्लाहू तआला अन्हु से मौलाए क़ायनात तक जाता है।

खानदान

हज़रत सैयद सैफ़ुद्दीन सालार ग़ाज़ी सरखू रहमतुल्लाह अलैह इस्लाम फैलाने की गरज से दिल्ली पहुंचे तो वहां से करीब 12 कोस के फासले पर राजा राय महीपाल ने आपकी फ़ौज़ पर हमला कर दिया उसके लश्कर की तादाद क़रीब 14 लाख थी लेकिन आपकी फ़ौज़ में जज़्बे ईमानी जोश मार रहा था आपकी फ़ौज़ ने 14 लाख की फ़ौज़ का डेढ़ महीने मुक़ाबला किया आखिरकार राजा ने पस्त होकर जंग बगैर किसी नतीजे के खत्म करने का फैसला किया उस जंग के बाद वो दिल्ली पहुंचे!

(तारीख ए मसऊदी-पेज 144)

सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह

आपके खानदान की नस्ल हिंदुस्तान में जिस मर्द मुजाहिद से फैली वो हज़रत शाह अताउल्लाह गाज़ी अलैहिर्रहमा जो कि हुज़ूर शुएबुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह की अट्ठारहवीं पुश्त के जद्दे आला हैं उनके तीन साहिबज़ादे थे!

1--सैयद सालार सैफ़ुद्दीन ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह

2--सैयद सालार साहू ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह

3--सैयद सैफ़ुद्दीन सालार सुरखू रहमतुल्लाह अलैह

जिनमे सैयद सालार सैफ़ुद्दीन अलैहिर्रहमा गज़नी में ही रह गए इस वजह से उनकी नस्ल हिंदुस्तान में नही है और दूसरे साहिबज़ादे सैयद साहू सालार ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह की एक औलाद हुई जो सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह के नाम से पूरी दुनिया में मशहूर हुए उन्होंने शादी नही की थी और 19 साल की उम्र में सुन्नते मौला इमाम हुसैन रजिअल्लाहू तआला अन्हु पर चलते हुए खुदा की राह में शहीद हो गए इसीलिए उनकी भी कोई

औलाद आज हिंदुस्तान में नही है अगर कोई उनकी औलाद होने का दावा करता है तो वो दावा झुठा है।

हज़रत सैयद सैफ़ुद्दीन सालार सुरखू रहमतुल्लाह अलैह

आप सैयद सालार मसऊद गाज़ी रहमतुल्लाह अलैह के चचा थे।आपका आस्तानां बहराईच शरीफ में ही है आप 13 रजब 424 हिजरी को राहे हक़ में शहीद हुए।आपकी तीन औलादें थी।

1--सैयद सालेह ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा

2--सैयद जफरुद्दीन ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा

3--सैयद सालार मोहम्मद ग़ाज़ी

आज भी हिंदुस्तान में इनकी औलादे मौजूद हैं जिनसे अल्वी सादात की तादाद पाई जाती है

जिनमे यूपी में कुछ मशहूर जगह जहाँ पर अल्वी सैय्यदो की तादाद पाई जाती है।

1--बेलखरा शरीफ़(बाराबंकी)

2--मंगरोडा(बाराबंकी)

3--मीरपुर(बहराईच)

4--बरावं शरीफ़(सिद्धार्थ नगर)

5--बाँसी असनगवा(सिद्धार्थनगर)

6--खैराबाद(सीतापुर)

बेलखरा से बरावं शरीफ़ तक का सफर

हुज़ूर शुएबुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह के जद्दे अमज़द बेलखरा शरीफ़ से ताल्लुक रखते थे फिर 1857 में आपके जद्दे अमज़द बेलखरा शरीफ़ से हिजरत करके बरांव शरीफ़ चले गए जिसमे सैयद ख़ुर्शीद अल्वी अलैहिर्रहमा और उनके दो भाई सैयद शमसुद्दीन अल्वी अलैहिर्रहमा और सैयद हसन अली अल्वी अलैहिर्रहमा भी उनके हमराह चले गए।जहाँ इनकी मुलाकात ज़ियाउद्दीन नामी एक शख्श से हुई धीरे धीरे आपसे उनकी अक़ीदत बढ़ती गयी और आख़िरकार आपके जद्दे अमज़द वहीँ रहने लगे।चंद महीनों बाद सैयद शमसुद्दीन अल्वी अलैहिर्रहमा बहराईच लौट गए और दो भाई सैयद खुर्शीद अल्वी अलैहिर्रहमा और सैयद हसन

अल्वी अलैहिर्रहमा वहीँ रहने लगे उनमे हसन अली अलैहिर्रहमा की कोई भी औलाद नही थी और सैयद ख़ुर्शीद अल्वी अलैहिर्रहमा की तीन औलादे हुई।

1--सैयद शाह फज़र अल्वी अलैहिर्रहमा

2--सैयद शाह मोहम्मद अशरफ़ अल्वी अलैहिर्रहमा

3--सैयद शाह ख़ुदा बख्श अल्वी अलैहिर्रहमा

जिनमे आप सैयद शाह फजर अल्वी अलैहिर्रहमा की औलाद में से हैं आज भी आपका खानदान बेलखरा शरीफ,मीरपुर,मंगरोडा में आबाद है और कुछ लोग अब रोज़गार व मजबूरी के बाएस मुख्तलिफ जगहों पर आबाद हुए है मसलन कर्नाटक,मुम्बई,लखनऊ, बाराबंकी,फ़ैज़ाबाद, नेपाल व दीगर जगहों पर आज भी अल्वी सादात पाए जाते हैं जिनका शजरा ए नसब सैयद सैफ़ुद्दीन सालार सुर्खु ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह से होता हुआ मौलाए क़ायनात हज़रत अली करमल्लाहु वज्हुल करीम तक जाता है।आप 5 भाई थे

और 4 बहन थी सैयद फजर अली अल्वी अलैहिर्रहमा साहब के 5 साहिबज़ादे

1--सैयद क़ुर्बान अली अल्वी साहब

2--सैयद सुब्हान अली अल्वी साहब

3--सैयद वाज़िद अली अल्वी साहब

4---सैयद शाह मोहम्मद यार अली अलमारूफ़ शुएबुल औलिया अलैहिर्रहमा

5---सैयद मुंशी मोहम्मद नबी रज़ा अल्वी साहब

इन पांचों साहिबजादो में सैयद वाजिद अली अल्वी साहब को छोड़कर बाकी चारो भाइयो की औलादे आज भी जिला सिद्धार्थनगर के बरावं शरीफ़ में आबाद हैं।

हुलिया व सरापा

हज़रत शुएबुल औलिया अलैहिर्रहमा निहायत सादगी पसन्द बुजुर्ग दरवेश थे।चेहरा चाँद सा रोशन चमकदार था।रंग गोरा सबीह व नूरानी आँखे दाढ़ी मुबारक घनी गोल और उभरी

हुई दनदान साफ व शफ़्फ़ाफ़ उम्र के आख़िरी हिस्से में मसनवी(बनावटी)दाँत लगवाए थे।हाथ नरम नाज़ुक दरमियानी सीना कुशादा।रफ़्तार में क़दम बगैर आवाज़ के ज़मीन पर पड़ता और मतानत के साथ उठता मगर चलने में बड़े बड़े तेज़ रो लोग आपका साथ न दे पाते।गरज ये है कि आप सर से लेकर पैर तक़ मुस्तकीमुल अक़ामत इंसान थे।आवाज़ दिलकश व पुरवकार थी।जो निहायत सामिया नवाज़ और दिल की गहराइयों में उतर जाने वाले थी।तर्ज़ तकल्लुम(बात करने का तरीका)निहायत मुवस्सिर और दिल नशीं था।जब जलाल में आते या किसी पर खफ़ा होते तो आपकी आवाज़ भारी और बुलन्द महसूस होती।इस मौके पर हरकोई लरज़ जाता था और आपसे नज़र मिलाने की हिम्मत नही कर पाता था।हैबत व जलाल का आलम ये था कि कोई भी आपको जी भर के देख नही पाता था।गुफ्तगू मे जँचे तुले अल्फ़ाज़ बोलते जो सुनने वाले वे दिल पर असर कर जाती थी।

(तज़्किरा ए शुएबुल औलिया पेज नम्बर 26)

आपका पहनावा

आप रहमतुल्लाह अलैह सर पर सफ़ेद एक ख़ास चार गोशों की सूफियाना टोपी मलमल अधिया तन ज़ेब का सफेद का लंबा कुर्ता इस्तेमाल करते थे और उसके ऊपर कभी सफेद और क़भी हल्के रंग की सदरी का इस्तेमाल करते।रियाज़त व मुजाहिदा के खास दौर में गाढ़े रंग का सफ़ेद कुर्ता उसी का तहबन्द उसी की टोपी इस्तेमाल करते थे।क़स्बा सिकन्दरपुर जिला बस्ती जहाँ आपने अपनी ज़िंदगी का आधा सफर तय किया यानी कि आपने 40 साल सिकन्दरपुर मे गुजारे हैं।जुमा के दिन सफ़ेद कलीदार पाजामा भी पहनते थे नमाज़ के वक़्त पाबंदी के साथ सर पर अमामा भी बांधते उस का रंग भी सफेद होता उम्र के आख़िर दौर में धारीदार सफ़ेद मद्रासी लुंगी पहनने लगे थे।रुमाल भी रंगीन जोड़ेदार होता बिल्कुल सफ़ेद रुमाल जिस पर सफेद धागे से फूल कढ़े होते।सर्दी के मौसम में ऊनि सदरी और ऊनी कुर्ता खाकी का जिसका रंग भूरा रहता था।फजर के वक़्त नमाज़ मे मक्का मुअज़्ज़मा से लाया हुआ गहरे कत्थई रंग का कढ़ा हुआ ऊनी झुबबा इस्तेमाल करते फजर की नामज़ पढ़ने के

बाद आप अक्सर अपने हाथों पर इतर लगाते थे जिससे कि आपसे मुसाफा करने वाले के भी हाथ महकने लगते।

सिकन्दरपुर से आपकी आमद और 40 साल गुजारना

चमन में फूल का खिलना तो क़ोई बात नही

ज़ है वो फूल जो गुलशन बनाए सहरा को

आप रहमतुल्लाह अलैह शुरुआत में जुलाई 1916 ईस्वी को प्राइमारी स्कूल की मुलाज़िमत के सिलसिले में तशरीफ लाए जहां मौलवी नूरुल हक़ के ग़रीब खाने पर ठहरे एक प्राइमरी स्कूल में 6 महीने तक मुलाज़िमत करने के बाद आपका तबादला शोहरत गढ़ जिला बस्ती हो गया वहां पर मोहम्मद वली अंसारी के मक़ान में रुके।

उस ज़माने में ख़िलाफ़त कमेटी का बहुत जोर वो शोर था।ब्रिटिश हुकूमत के बहुत से ओहदेदार अंग्रेजो की मुलाज़िमत को हराम व नाज़ायज़ होने का फतवा जानकर नोकरियों को तर्क(छोड़)रहे थे।आपने भी मुलाज़िमत(नोकरी)छोड़ दी और रियाज़त और मुजाहिदा में

मशगूल हो गए।आपने सुलूक की जिस मंजिल पर क़दम रख दिया था उसका तक़ाज़ा यही था कि आप पूरे अज़्म यक़ीन के साथ मुतवक़्क़ल अली अल्लाह होकर ज़िन्दगी गुज़ारे.

हम ख़ुदा ख्वाही व हम दुनियाए दों

ऐं ख्याल अस्त व मुहाल अस्त व जुनो

सिकन्दरपुर में कुछ अरसे तक करघे पर कपड़ा भी बुना फिर उसको भी छोड़ दिया और सारा वक़्त ज़िक्र व फिक्र में गुज़ारते आप अक्सर यहीं रहते कभी कभी अपने वतन बरावं शरीफ़ पैदल चले जाते और पैदल ही वापिस आते।

उस दौर में सिकन्दरपुर व उसके कुर्ब व जवार का माहौल जिहालत व ज़लालत में डूबा हुआ था पढ़े लिखे और मज़हबी लोगो की तादाद बहुत कम थी लोगो मे दीन व मज़हब का ज़ोक़ व शौक बस रस्म व रिवाज़ की हद तक पाया जाता था और एखलाक व किरदार के इतबार से निहायत पस्ती में पड़े हुए थे।आपने शुरुआती दौर में जिस तरह से ये सब बर्दाश्त किया है अगर कोई दूसरा शख़्स होता तो शायद ही ऐसे

माहौल में वहां टिक पाता।इस मुक़ाम पर 40 साल तक रहना आपकी क़रामतो में से एक करामत है।आप उस दौर में रमज़ानुल मुबारक ईदुल फितर और ईदुल अज़हा ग्यारहवीं शरीफ़ और रज़्बी शरीफ़ निहायत धूम धाम से सिकंदरपुर मे ही करते थे।तक़रीर के लिए बाहर से उलेमा आते थे।ढलमऊ शरीफ़ (फ़ैज़ाबाद अब अम्बेडकर नगर)के ख़ामोश दरवेश आरिफ ए बिल्लाह आबिद ज़ाहिद हज़रत महबूब शाह अलमारूफ़ महबूब-उल-औलिया अलैहिर्रहमा के शहज़ादे हज़रत मौलाना अब्दुल बारी साहब और हज़रत अब्दुर्र रऊफ साहब(इल्तिफ़ात गंज)उन दोनों हज़रात के साथ बुलबुले हिन्द हज़रत मौलाना मुहम्मद अय्यूब साहब तांडवी और मौलाना अज़ीज़ साहब तांडवी भी साथ मे तशरीफ लाते।आप उनकी बहुत इज्जत और खातिरदारी करते और जब वापिस होने लगते तो उस दौर के हिसाब से भरपूर नज़राना अता करते थे।

(नोट--) दरसअल उन दिनों ढलमऊ जिला फ़ैज़ाबाद में आता था लेकिन अब ये हिस्सा जिला अंबेडकरनगर मे आता था|

इस्तेगफार व तवक़्कुल

बावज़ूद इसके कि ज़ाहिरी तौर पर आप का कोई मुश्तकल ज़रिया आमद नही था न पीरी-मुरीदी का सिलसिला था कि लोगो से नज़राने मिलते उस वक़्त के क़याम में सिकन्दरपुर वालों में किसी शख्स के सामने हाथ न फेलाया न कोई नज़राना क़बूल किया न कहीं दावत में तशरीफ़ ले गए।

इबादत व मुजाहिदा

सुन्नत नमाज़े क़यामगाह में अदा करते और फ़र्ज़ नमाज़े जमात के साथ मस्जिद में अदा करते थे उसके बाद आप क़यामगह तशरीफ़ ले आते इसराक की नमाज़ अदा करते और फिर चाशत की नमाज़ बाद क़ुरआन करीम की तिलावत करते फिर हस्बे मामूल वज़ाएफ पढ़ते उसके बाद नाश्ता करते अगर कोई मौजूद होता तो उसकी खैरियत और आने का सबब दरयाफ्त करते।शरीयत के मसले बुज़ुर्गाने दीन की तालीमात बयान करते।

दोपहर को खाने के बाद केलूला(दोपहर में आराम)फ़रमाते उसके बाद गुस्ल करके लिबास तब्दील करते नमाज़ ज़ोहर अदा करते और वज़ाएफ़ में मशगूल रहते।असर की नमाज़ के बाद जो लोग हाज़िर रहते उनके साथ खत्म ए ख़्वाज़गान

पढ़ते।फिर दलाएलुल खैरात वगैरह पढ़ने में मगरिब तक मशगूल रहते।नमाज़े मगरिबी में सलातुल अवाबीन पाबंदी से पढ़ते इशा की नमाज़ पढ़ कर खाना तनाविल फ़रमाते और फिर कुछ देर तक हाज़रीन मुअक़्क़दीन व अरबाबे मोहब्बत से आमतौर पर दीनी मज़हबी गुफ्तगू फ़रमाते।रमज़ान शरीफ में फ़र्ज़ रोज़े रखने के अलावा हर इस्लामी महीने की 12/14/15 को रोज़ा रखते,ईद के बाद शव्वाल के 6 रोज़े रखते और मुहर्रम के आखिरी 9,10 को रोज़ा रखते व रज़ब की आखरी तारीखों में शबे मेराज के रोज़े रखा करते थे।

नमाज़े जुमा का आप ईद की तरह एहतमाम करते आप की इक़तिदा मे नमाज़ पढ़ने और तक़रीर सुनने के लिए आप की आमद की खबर पाकर हैदराबाद(जिला बस्ती) से हाज़ी रज़्ज़ब बैग, और शेख मोहमद सिद्दीक,मौलवी रहमत शेख़, लाल मोहम्मद और खड़ाव जिला गोंडा के अली रज़ा खान वगैरह सिकन्दरपुर की जामा मस्जिद में ज़रूर आते।इसके अलावा दूसरे हफ्ते मे भी ये लोग आप की खिदमत मे हाज़िर हुआ करते थे इनके अलावा अक़ीदतमन्दो में खिदमतगारो में वज़ीर चौधरी सालार दीन,चौधरी हाफ़िज़ जान अली जुगनू

मियाँ आपके पेशे नज़र रहते।इन दोनों हज़रात को आप से बेपनाह अक़ीदत और मोहब्बत थी।

रंगून का सफर

मुंशी रहमत अली ढलमऊ शरीफ़ की कोशिशो के बाद आप 1925 ईस्वी को रंगून तशरीफ़ ले गए।वहां कुछ रोज़ तक बँगाली जामा मस्जिद में मुन्शी अब्दुल अज़ीज़ मरहूम के महमान बनकर मुकीम हुए वहाँ के अहले अक़ीदत ने आप की खिदमत करके फ्यूज़ व बरकात हासिल किए वापसी में सिकन्दरपुर तशरीफ़ लाये।

हिंदुस्तान के मशहूर आस्तानो की ज़ियारत

सन 1928 ईस्वी में खानवाद ए चिश्तियां के बुजुर्गान ए दीन व औलिया ए क़राम के आस्तानो पर हाज़री का क़स्द किया।आपने ये सफर आलम ए ख्वाब में बशारत मिलने के बाद शुरू किया।आपके हमराह विक्रम जोत जिला बस्ती के रमज़ान अली थे।साथ मे दो तहबन्द और चादर और एक रुमाल लिया।पहले आप अपने वतन बरावां शरीफ़ गए वहाँ से तशरीफ़ लाकर सिकन्दरपुर से ढलमऊ शरीफ (अंबेडकरनगर),सत्थिन शरीफ़(अमेठी),और झूँसी शरीफ़(इलाहाबाद)हाज़िर हुए।इन मक़ामात पर बा तरतीब

खानदान ए कादरिया के बुजुर्ग व दरवेश हज़रत महबूब ए इलाही अलैहिर्रहमा और सिलसिला ए चिश्तियां के बुजुर्ग हज़रत अब्दुल लतीफ़ शाह साहब रहमतुल्लाह अलैह सिलसिला सोहरावर्दिया के दरवेश हज़रत सैयद अब्दुस शकूर साहब अलैहिर्रहमा हैं आपको इन तीनो बुजुर्गो से ख़िलाफ़त व इज़ाज़त हासिल थी यहां से आप देहली,अजमेर शरीफ,गुलबर्गा शरीफ,मुल्तान,बंगाल, लाहौर,बिहार,दकन,गुजरात और बरेली शरीफ़ का दौरा किया कहीं पर एक घण्टा रुके कहीं एक दिन और कहीं एक हफ्ता सूबा उड़ीसा के जिला कटक में सवा महीने का क़याम किया जहां से आपको बेपनाह फेज़ हासिल हुआ।आपने 12 साल का ये सफर 12 महीने में पूरा कर लिया जहां तक़रीबन 8 हज़ार रुपया खर्च हुआ था।

साहिबे अस्ताना की ज़ियारत और आपकी अक़ीदत

आपने एक बार फिर से आस्तानो पर हाज़िरी व दौरा शुरू किया आप फ़रमाते थे कि "जबतक मे किसी मज़ार पर हाज़िर होता तो साहिबे मज़ार की बे हिजाब ज़ियारत न हो जाती दूसरे आस्तानो के लिए सफर ही नही करता था इससे ये इशारा होता था कि वापसी की इजाजत है और वहां से

लेकर दूसरे आस्ताने तक उनकी रूहानी हिफाज़त रहती आपने जिस जिस आस्ताने पर हाज़री दी है आपने साहिबे मज़ार को बेहिज़ाब देखा है।

एक अजीब ओ गरीब करामत

एक टीन के गोल बक्से में 33 नोट 100-100 के रखे हुए थे जो खुद हज़रत मौलवी नुरुल हक़ साहब ने रखे थे।रमज़ानुल मुबारक़ 1934 ईस्वी में बाद नमाज़ ए इशा आप रहमतुल्लाह अलैह ने मौलवी नुरुल हक़ साहब से फ़रमाया बक्सा लाओ खोलो और तेंतीस सो रुपये निकालो मैने वो बक्सा लाकर नोट निकालें।आप ने उनसे फ़रमाया नोट गिनो उन्होंने जब पैसा गिना तो एक़ सो का नोट फालतू हुआ फिर आपने कहा दुबारा गिनो इस तरह से जितनी बार गिनते उतनी बार एक सो का नोट फालतू हो जाता उन्होंने कहा हज़रत अब रहने दे अब नींद लग रही है आपने फ़रमाया तुम बेवकूफ हो अगर सारी रात गिनते तो हर बार एक सो का नोट फालतू हो जाता।

(तज़किरा ए शुएबुल औलिया-पेज़ नम्बर 47)

नमाज़ क़ी बरक़त

एक बार का वाकिया है कि आप रहमतुल्लाह अलैह बस्ती स्टेशन पर सवार हुए।ट्रेन चार बजे रात में रवाना होती थी आप और आपके हमराही ने वज़ू पहले ही कर लिया था।सुन्नत डब्बा के अंदर ही पढ़ी गई ट्रेन अगले स्टेशन पे रुकी तो आप मुसल्ला लेकर प्लेटफार्म पर उतर गये आप को देखकर तमाम साथी भी उतर गए सामान डब्बा के अंदर ही था और बाहर तमाम हज़रात नमाज़ पढ़ने में मशगूल हो गए।अभी अज़ान व तकबीर सलात के बाद पहली रकअत शुरू हुई थी की ट्रेन छोड़ने के का वक़्त हो गया और वो सीटी देकर चलने लगी लेकिन थोड़ी ही दूरी तक जाने के बाद वापिस आ गयी और उसी जगह पर खड़ी हो गई आपने आराम व सुकून के साथ पूरी नमाज़ अदा की जबतक आप ने नमाज़ पढ़ी तबतक वो ट्रेन वही खड़ी रही।

फकीरी व दरवेशी

आपने अपनी ज़िंदगी दरवेशी मिज़ाज़ से गुज़ारी है किसी का तोहफा और नज़राना हरगिज़ क़बूल नही करते थे।जब मौलवी नुरुल हक़ साहब के घर वाले बहुत ज़िद करने लगते तो आप मजबूर होकर बेशन की रोटी और चटनी थोड़ी सी

खा लिया करते।आपके दर पर बड़े बड़े राजा महाराजा आते लेकिन आप उनसे दूर ही रहते आप को जब भी किसी चीज़ की ज़रूरत होती तो अपना मुसल्ला उठाते उसके नीचे से दे देते आपने मुरीदों से नज़राना नही लिया और अगर कोई मुरीद बहुत मना करने के बावजूद भी दे जाता तो उस पैसे को उलेमाओ में बतौर हदिया दे देते अपने पास कुछ न रखते।

राजा उतरौला का वाकिया

उतरौला जिला बलरामपुर का राजा मुमताज़ अली खां का इकलौता लड़का मर गया उसको दफन नही किया गया।लाश को कीमियाई अदुयात के ज़रिए महफ़ूज़ रखा।बहुत से दरवेश फ़क़ीरों और आलिमो को बुलवाया और उन से कहता--मेरा बेटा जादू से मर गया है इसे अच्छा कर दो इस सिलसिले में उसका साला नवाब लखनऊ आपके पास पहुंचा बड़ी मिन्नत व समआत के बाद आप मौलवी अब्दुर्रज्जाक साहब हरैया बस्ती और दारे मियाँ को साथ लेकर राजा उतरौला के दरबार मे पहुंचे।राजा आपको अपने लड़के की लाश पे ले गया और कहा बाबा किसी तरह मेरे बेटे को ज़िंदा कर दे इसकी जान जादू से गयी है।

आपने बेसाख़्ता जवाब दिया कि ये मर चुका है इसका कफ़न दफन करो।राजा ने पूछा क्या जादू हक़ नही--?आप ने जवाब दिया जादू सही है लेकिन मौत पर ग़ालिब नही--राजा ने कहा--क्या जादू या किसी वज़ह से बेवक़्त मौत नही होती आपने फ़रमाया नही मौत अपने वक़्त पर मुक़र्रर होती हे।उसके बाद आपने राजा से कहा उठाओ बन्दूक औऱ मुझे मारो अगर मौत नही तो में नही मरूँगा राजा ने बन्दूक उठाई मगर चला न सका।वो आपके क़दमो में गिर पड़ा और माफी माँगने लगा आपको बहुत सा नज़राना देने की कोशिश की आपने ठोकर मारते हुए वहां से सिकन्दरपुर की हिजरत कर ली आपके हमराहियों ने कहा हुज़ूर वो नवाब था उसकी दौलत का दीन का बहुत काम होता आपने फ़रमाया एक पागल से अल्लाह के दीन का क्या काम होता।

नसब ज़ाहिर न करने की वज़ह

आप अल्वी सैयद हैं लेकिन आपने अपने नसब नसब को काफी हद तक आम नही किया था आप इन सब चीजो से दूर रहते थे।आप मुहम्मद बिन हनफिया रजिअल्लाहु तआला अन्हु से सैयदना मौलाए क़ायनात की औलाद ओ अमज़ाद में से हैं।मगर आपने अपनी ज़िंदगी मे कभी भी अपनी जुबान

व क़लम से हसब नसब का इज़हार नही किया।आपके मुहिबबीनो का बयान है कि कुछ मौकों पर आपने इस नसब की तरफ इशारा करते जिसका मफ़हूम व मतलब आम इंसान समझने से हमेशा क़ासिर रहे। तजुर्बाकार और अहले इल्म अच्छी तरह समझ गए थे कि आप रहमतुल्लाह अलैह किसी आली और मुअज़्ज़िज़ खानदान के चश्मों चराग़ हैं मगर इस हक़ीक़त को पोशीदा रखते थे।आपने अपने नसब को इसलिए भी नही ज़ाहिर किया था क्योंकि आप जानते थे कि उस दौर में राजा महाराजा सादातो की बहुत ताज़ीम करते थे और उन्हें अपने पास रखते थे जबकि आप का मक़सद गरीबो में रहकर फकीरी में ज़िन्दगी गुज़ारने का था जिससे कि दीन इस्लाम के लिए कुछ किया जा सके।

मदरसा फैजुर रसूल

मदरसा फैजुर रसूल आपकी वो खिदमात है जिससे पूर्वी यूपी में आज भी हज़ारो की तादाद में बेहतरीन आलिम हाफ़िज़ निकलते हैं।आला हजरत के शहज़ादे मुफ्ती ए आज़म ए हिन्द इस मदरसे में आ चुके हैं और इसकी तारीफ भी कर चुके हैं।वही हुज़ूर हाफ़िज़ ए मिल्लत,सैयद मुख़्तार अशरफ अशरफी अल जीलानी, मौलाना मोहम्मद हशमत अली

खान,व दीगर शख्सियतो ने इस मदरसे की तारीफ की है और आप रहमतुल्लाह अलैह की शान बयान करना आम इंसान के बस में नही है आपने दीन की वो खिदमत की है जिसका सानी नही मिलता आपके बाद ख़लीफ़ा मियाँ अलैहिर्रहमा आपके जानशीन हुए उसके बाद से आजतक ये सिलसिला चला आ रहा है आप को उलेमाओ से बहुत अक़ीदत थी और महफील ए मीलाद के आप बहुत शौकीन थे।1387 हिजरी यानी 1967 ईस्वी को आपने दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया।

ख्वाजा इमामुद्दीन चिश्ती बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 564 हिजरी में हुई थी आपका नाम इमादुद्दीन था।आपका नसब बहुत ही मोज़ज़्ज़म है क्योंकि आप मौला इमाम हुसैन रजिअल्लाहू अन्हु के पौते हज़रत सैयदना ज़ैद शहीद रजिअल्लाहू अन्हु की औलाद में से है यानी आप ज़ैदी/हुसैनी सादात हैं।

तालीम

आपकी तालीम कूफ़ा में हुई वहाँ आपने कुछ महीने तदरीस(यानी पढ़ाने)की भी ज़िम्मेदारी को अंजाम दिया।

बिलग्राम शरीफ आमद

एक दिन आप अपने हुजरे में इबादते इलाही में मशगूल थे इतने में ग़ैब से आवाज़ आई-

"ए इमादुद्दीन! कन्नौज के करीब एक क़स्बा बिलग्राम है जहां देव रहते हैं और लोगो को तकलीफ पहुंचाते हैं-उस जगज चले जाओ ताकि व मलऊन तुम्हारे हाथ से मारा जाए।

आप ने वसवसा समझ कर कुछ ज़्यादा गौर न किया लेकिन उसी तरह तीन बार आवाज़ सुनी और उसी रात हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने ख्वाब में आकर बशारत दी-

"ए इमादुद्दीन! उस जगह पहुंच कर देव को हलाक करो और उसी इलाके की विलायत तुम्हारे सुपुर्द की जाती है और जामा मस्जिद कन्नौज की बुनियाद तुम्हारे ऊपर मोक़ूफ़ है"

जब आप रहमतुल्लाह अलैह नींद से बेदार हुए तो हिंदुस्तान की तरफ चलने का इरादा किया और सिराजुद्दीन नाम के एक मुरीद को साथ लिया और चंद माह में हिंदुस्तान पहुंच गए।

ख्वाजा फ़रीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह से मुलाकात

जिस वक्त हाँसी शरीफ पहुंचे ख्वाजा फरीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह ने यकायक अपनी मजलिस में फ़रमाया मालूम होता है कोई साहिबे कमाल मर्द इस जगह वारिद

हुआ है--वो आपको बुलावे की खबर देने के लिए उठना ही चाह रहे थे इसी दरमियान आप वहाँ पहुंच गए।उन्होंने आपका इस्तक़बाल किया।आपने उनको सलाम किया उन्होंने आपके सलाम का जवाब दिया उसके बाद दश्तपोशी की फिर हक़ाइक़ व मआरिफ़ से भरी हुई बातें एक दूसरे से हुईं।वो आपसे बहुत मुतासिर हुए और आप भी शेख जी बाफेज़ सोहबत से मसरूर हुए।

अबूदियत क्या है-?

हाँसी शरीफ में एक शख्स ने आप से सवाल किया कि अबुदियत क्या है--? आपने जवाब दिया की हर हाल में अल्लाह रब्बुल इज़्जत की बन्दगी करना।

चारो असहाब की दोस्ती

एक़ बार एक शख्स ने आपसे पूछा कि असहाबे कबार में कुछ फर्क है या नही--?

आपने फ़रमाया उन हज़रात में तफावत करना फ़िज़ूल बात है-उस जगह किसी फर्क और फ़िज़ूल बात की गुंजाइश नही-अगर कोई अनासिर आग,पानी, मिट्टी,हवा में तफावत करता है तो उन लोगो मे भी कर सकता है और किसी को

इन चार असहाब की दोस्ती के बगैर विलायत हासिल नही हो सकती है।

रूह की असल किया है-?

एक बार किसी शख्स ने आपसे पूछा कि रूह की असल क्या है--?आपने फ़रमाया मेरे नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के पास हज़रत जिब्राइल अलैहिस्सलाम वही लाये जिसका तर्जुमा है

"तुम फ़रमाओ रूह मेरे रब के हुक्म से एक चीज़ है"

(सूरह:बनी इसराईल,आयत:85)

सैयद मुहम्मद सुगरा वास्ती बिलग्रामी अलैहिर्रहमा

विलादत, नाम,नसब

आपक़ी विलादत 564 हिजरी में हुई थी।आपका नाम मुहम्मद सुगरा और लक़ब इमामुल आरफ़ीन,फातह--ए--बिलग्राम है।आपका नसब 20 वास्तों से

हज़रत सैयदना इमाम ज़ैद शहीद रजिअल्लाहू अन्हु से होता हुआ सैयदुश शोहदा इमाम हुसैन रजिअल्लाहू अन्हु तक जाता है।आप ज़ैदी हुसैनी सैयद हैं।आपके वालिद का नाम सैयद शाह अली रहमतुल्लाह अलैह है।

शजरा ए नसब

सैयद मुहम्मद सुगरा बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह

सैयदना शाह अली अलैहिर्रहमा

सैयदना हज़रत हुसैन अलैहिर्रहमा

सैयदना अबुल फरह सानी अलैहिर्रहमा

सैयदना शाह अबु फरास अलैहिर्रहमा

सैयदना अबुल फरह वास्ती अलैहिर्रहमा

सैयदना दाऊद अलैहिर्रहमा

सैयदना हुसैन अलैहिर्रहमा

सैयदना मोहमद यहया अलैहिर्रहमा

सैयदना ज़ैद अलैहिर्रहमा

सैयदना अली अलैहिर्रहमा

सैयदना हसन अलैहिर्रहमा

सैयदना अली इराकी अलैहिर्रहमा

सैयदना हुसैन अलैहिर्रहमा

सैयदना मुहम्मद अलैहिर्रहमा

सैयदना ईसा मुतीबुल असबल अलैहिर्रहमा

सैयदना इमाम ज़ैद शहीद रजिअल्लाहू अन्हु

सैयदना इमाम जैनुल आब्दीन रजिअल्लाहू अन्हु

सैयदना मौला हुसैन रजिअल्लाहू अन्हु

सैयदना मौला अली मुश्किल कुशा शेरे खुदा ताजदारे हल अता रजिअल्लाहू अन्हु

सैयदुल अम्बिया हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम

इस तरह से आप दुनिया के सबसे अज़ीम खानदान के चश्मों चराग़ हैं।

खानदान और जद्दे अमज़द

दरसअल मौला इमाम हुसैन रजिअल्लाहू अन्हु के लख्ते ज़िगर सैयदना इमाम जैनुल आब्दीन रजिअल्लाहू अन्हु ने कई शादियां की थी।जिनमे एक शादी सैयदा फ़ातिमा बिन्ते मौला इमाम हसन रजिअल्लाहू थी जिनके बतन ए अतहर से सैयदना इमाम मुहम्मद बाकर रजिअल्लाहू अन्हु की विलादत हुई।दूसरी शादी इन्होंने हज़रत मुख्तार शकफ़ी की नज़र करदा कनीज़ के से की जिनके बतन ए अतहर से हज़रत सैयदना इमाम ज़ैद शहीद रजिअल्लाहू अन्हु की विलादत हुई।

सैयदना इमाम ज़ैद शहीद रजिअल्लाहू अन्हु

आपने 2 शादियां की थी।

1--हज़रत रुकय्या जो कि मोला इमाम हसन के पौते सैयदना अब्दुल्लाह अल महज़ की बेटी थी उनसे तीन शहज़ादे हुए--

1--सैयदना मुहम्मद अलैहिर्रहमा

2--सैयदना हुसैन अलैहिर्रहमा

3--सैयदना ईसा मुतीबुल असबाल

दूसरी शादी आपने अल्वी सैयदों के जद्दे आला सैयदना मुहम्मद बिन हनफिया रजिअल्लाहू अन्हु की पौती से की जिनसे हज़रत सैयदना यहया रहमतुल्लाह अलैह की विलादत हुई।सैयदना ज़ैद शहीद रजिअल्लाहू अन्हु के सबसे छोटे शहज़ादे सैयदना ईसा मुतीबुल रजिअल्लाहू अन्हु थे जो बचपन में ही शेर का शिकार करते थे इसीलिए इन्हें मुतीबुल असबाल कहा जाता है।उन्होंने सैयदना ज़ैद शहीद रजिअल्लाहूँ अन्हु की शहादत के बाद वहां से अलग हिजरत कर गए उनकी नमाज़े जनाज़ा हसन बिन सालेह ने पढ़ाई।

आपके जद्दे आला कूफ़ा से गज़नी

हज़रत सैयदना अली इराक़ी रजिअल्लाहू अन्हु की चौथी पुश्त सैयद अबुल फरह सानी रईसे कूफ़ा से बे लुत्फ हो गए और कूफ़ा छोड़कर गजनी चले आये।बाद में रईसे कूफ़ा ने आपको वापिस बुलाने के लिए खत लिखा और माफी माँगी जिसमे कुछ फर्द गजनी में ही रहे और आप वापिस चले गए उन दिनों गजनी में सुल्तान महमूद गजनवी अलैहिर्रहमा की हुकूमत थी।

आप फातहे बिलग्राम क्यों--?

आप रहमतुल्लाह अलैह 612 हिजरी में खानदान व फ़ौज को लेकर बिलग्राम आए जहां हर तरफ गुमराही थी जिधर नज़र उठती शिर्क ही शिर्क गुनाह ही गुनाह।आप ने आने के बाद यहां के अहंकारी राजा जो अपनी ताकत और सत्ता के नशे में चूर था उसका नाम श्री सिंह था।उसने राजा सांडी,राजा कन्नौज से मिलकर आपसे जंग की।आमने सामने का मुकाबला हुआ आपके जज़्बे ईमानी और रूहानी ताक़त के आगे वो परास्त हुए उसी जंग में राजा मारा गया।उसके बाद दिल्ली वापिस चले गए उस वक़्त दिल्ली की सल्तनत आपके पीर भाई सुल्तान शमसुद्दीन अल्तमश रहमतुल्लाह अलैह के

पास थी।कुछ दिन उनके पास रहने के बाद आप हमेशा के लिए बिलग्राम चले आये।यहाँ आकर आपने दीन की तब्लीग शुरू की आप की सोहबत में बैठने से लोगो मे ईमान का जज़्बा पैदा हो गया चंद दिनों में माहौल एकदम से आपक़ी तरफ झुक गया।लोग खुदा की इबादत में मशगूल रहने लगे।किसी शायर ने आपक़ी शान में ठीक ही कहा है--

इस तरह सैयद सुगरा की अताए बख्शी
जैसे तारीख़ मुकद्दर पे जियाए बख्शी
आज खुशियो के उजाले से हैं आलम सरजाद
कौल ए तौहीद की हर सिम्त सदाए बख्शी

आपके आने के बाद से बिलग्राम अल्लाह और उसके रसूल के नामलेवा वजूद में आये।इसीलिए आपको फातहै बिलग्राम कहा जाता है।

महरेरा और मसौली

आज़ीज़ों हमे एक और बात का ध्यान रखना है कि हिन्द की मशहूर ख़ानक़ाह महरेरा शरीफ़ और बाराबंकी के करीब मौजूद मसौली शरीफ के अज़ीम बुजुर्ग आपक़ी ही औलाद हैं अल्लाहु अक़बर!

आपके दो शहज़ादे औऱ 1 शहज़ादी थी।जिनमे सैयद मोहम्मद सालार अलैहिर्रहमा साहिबे सैफ और मामूलाते मशायख थे।

सादात पांच भय्या आप ही के नस्ल से हैं।

मैदान पूरा के सादात भी आप ही की औलाद हैं।आप बिलग्राम शरीफ 31 साल तक बज़ाहिर बा हयात रहे।14 शाबान 645 हिजरी को आपने दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया।

(मआअसल--किराम-फारसी--11)

फना के बाद भी बाकी है शान रहबरी तेरी

खुदा की रहमते हों ए अमीरे कारवाँ तुझ पर

आपक़ी दुआ

आपने आखरी वक़्त में तीन दुआ की जिसका आज भी ज़माना देख रहा है--

1--मेरी नस्ल क़यामत तक बाकी रहे-

2--मेरी नस्लो में उलेमा ए इस्लाम और बुजुर्गाने दीन पैदा होते रहें--

3--मेरी औलादों में जो क़नाअत का रास्ता अख्तियार करे और लालच से बचे उन्हें ज़रूरियाते ज़िंदगी की तकमील में कमी का एहसास न हो

आज भी सैयद ओवेश मुस्तफ़ा वास्ती ज़ैदी हुसैनी,सैयद सुहैल मियाँ, सैयद शाह गुलज़ार इस्माईल मसौलवी,सैयद अमीन मियाँ बरकाती, इन्ही की औलादो में से हैं।

हज़रत ख्वाजा सैयद कमालुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह

विलादत,नाम,नसब

आपक़ी विलादत उत्तर प्रदेश के जिला अयोध्या में हुई है।आप हज़रत ख्वाजा नसीरुद्दीन महमूद रोशन चराग़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के सगे भांजे व ख़लीफ़ा हैं।आपका नाम सैयद कमालुद्दीन था।नसब के एतबार से आप हसनी सैयद हैं।यानी मौला इमाम हसन रजिअल्लाहू अन्हु की औलाद में से हैं।आपके वालिद का नाम सैयद अब्दुर्रहमान है।आपके एक भाई हज़रत सैयद जैनुल आब्दीन अलैहिर्रहमा हैं। आपक़ी वालिदा अपने वक़्त की राबिया-ए-जमन थी।

(अनवारुल आरफीन-313)

(अखबारुल अख़्यार)

(सियरुल आरफीन)

मकमाते मुक़द्दसा की ज़ियारत

आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी ज़ाहिरी ज़िंदगी मे 7 हज किये।और रोज़-ए-रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की ज़ियारत से सरफराज हुए।उसके बाद आपने बैतूल मुकद्दस में भी हाज़िरी दी।फिर खुरासान होते हुए दिल्ली वापिस चले आये इस तवील सफर में सैकड़ों उमरा व सलातीन ने आपसे मुलाकात की और आपके इल्म,तक़वे,आली नसब की वजह से आपकी बहुत ताज़ीम की और बेपनाह फेज़ हासिल किया।

फुतूहात

फुतूहात का ये आलम था कि जब आप दिल्ली वापिस आये तो आपके साथ तीस ऊँट माल व असबाब से भरे हुए थे ।जिसमें तीस हज़ार अशरफिया और रुपये भी थे।यह देखकर आपके मामू और वक़्त के वली ए कामिल दरवेश हज़रत ख्वाजा सैयद नसीरूद्दीन महमूद रोशन चराग़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने आपसे फ़रमाया-

"शेख कमालुद्दीन!इस क़दर दुनिया अपने साथ क्यों लाये हो--?

आपने फ़रमाया

" मुझको रास्ते मे मालूम हुआ कि सुल्तानुल मशायख ख्वाजा हज़रत निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह ने रेहलत फ़रमाई और उनकी जगह आप सज्ज़ादगी पर बेठे हैं तो में खाली हाथ जाऊंगा तो मेरे अपने और गैर कुछ कहेंगे इस वजह से असबाबे ज़ाहिर लाया हूँ अब में उसको उलेमा,फुकहा,सूफिया,मिस्कीन में तकसीम कर दूंगा।

उसके बाद आपने सारा माल तकसीम कर दिया औऱ मुर्शिदे खिलाफत की खिदमत में जुट गए।

शादी औऱ औलाद

आपने ख्वाजा नसीरुद्दीन महमूद रोशन चराग़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से शादी की जिनसे आपके तीन साहबजादे और 1 साहबजादी वजूद में आईं।उनमे से आपके बड़े शहज़ादे शेख निजामुद्दीन का जवानी में इंतेक़ाल हुआ।आपके दूसरे साहबज़ादे शेख नसीरूद्दीन आपक़ी हयात में ही तहसीले इल्म से फ़ारिग हो गए थे।आपके तीसरे शहज़ादे शैखुल मशायख शेख सिराजुद्दीन अलैहिर्रहमा हैं।आपक़ी साहबज़ादी की शादी शेख बुरहानुद्दीन अलैहिर्रहमा से हुई।

विसाल शरीफ़

आपका विसाल 27 जीकादा 756 हिजरी में हुआ।आपका आस्ताना आपके मामू जान हज़रत ख्वाजा नसीरूद्दीन महमूद रोशन चराग़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के पास ही है।

आप एक नज़र में

1--आप अपने वक़्त के इल्म के समंदर सूफिया औलिया अल्लाह ने आपसे तालीम हासिल की इसीलिए आपका सबसे मशहूर लक़ब अल्लामा पड़ा।

2--जब भी कहीं रास्ते मे मिल जाते तो आपको देखकर हज़रत ख्वाजा नसीरूद्दीन महमूद रोशन चराग़ देहलवी खड़े हो जाते।

3--हज़रत सैयद जलालुद्दीन मखदूम जहानीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलैह ने आपसे मशारिकुल अनवार की शरह पढ़ी है।

4--आप तसव्वुफ़ के आला दर्जे पर फ़ायज़ बाकमाल दरवेश थे।

5--आपका शजरा ए नसब हसनी है जिसको ज़िक्र तसव्वुफ़ की दर्जनों मोतबर किताबों से मिलता है आपक़ी शान बुलन्द व बाला है।

हुज़ूर ताजुश्शरिया अलैहिर्रहमा

फ़ख़्र ए अज़हर की बुलंदी नापने निकले हो तुम
हाथ रख लो सर पे वरना टोपियां उड़ जाएंगी

विलादत,नाम,नसब

आपकी विलादत 2 फरवरी 1943 ईस्वी को उत्तर प्रदेश के जिला बरेली शरीफ़ में हुई थी।आपके वालिद का नाम हज़रत अल्लामा मौलाना इब्राहीम रज़ा क़ादरी अलैहिर्रहमा है।जो कि हुज़ूर हुज्जतुल इस्लाम के शहज़ादे हैं।

नाम

आपका असल नाम "मुहम्मद"है इसी नाम पर आपका हक़ीक़ा भी हुआ है वालिद ने आपका नाम अपने नाम के मद्देनजर इस्माईल रज़ा रखा था।बाद में आपको मुफ़्ती अख़्तर रज़ा खाँ अज़हरी के नाम से जाना और पहचाना गया आपका लक़ब ताज ए शरीयत है।

मुफ़्ती

आप के घराने में एक से एक बढ़कर एक आलिमे दीन वली अल्लाह पैदा हुए हैं आप के इल्म का लोहा भी आपके दादा सरकार आला हज़रत अजीमुल बरक़त रहमतुल्लाह अलैह की तरह पूरी दुनिया के उलेमाओ ने माना है।अरबो अज़म के मुफ़्ती आपसे सवाल करते थे और सबसे बड़ी बात तो ये है जी जिस जुबान में वो सवाल करते आपका जवाब भी उसी जुबान में होता मिसाल के तौर पर अगर कोई अमेरिकन आपसे अंग्रेज़ी में कोई सवाल करता तो आप उसे अंग्रेजी में ही जवाब देते अगर कोई अरबी आपसे अरबी जुबान में सवाल करता तो आप उसे अरबी में जवाब देते थे ये आपके इल्मी सलाहियत का एक छोटा सा नमूना है।

शरीयत पहले शख्सियत बाद में

आपने कभी किसी को खुश करने के लिए फतवा नही दिया है जब भी फतवा दिया है तो सिर्फ एक बात का ख्याल रखा है और वो है हक़ का यानी शरीयत के खिलाफ दूसरो को खुश करने का फतवा आपने नही दिया है।एक बार जब मुल्क 1975 में बहुत बुरे दौर से गुजर रहा था पूरे मुल्क में इमरजेंसी लगी हुई थी और लोगो को जबरन पकड़-पकड़

कर नसबंदी कराई जा रही थी ऐसे माहौल में जब लोगो ने उलेमाए देवबंद से रुज़ू किया तो उन्होंने हुकूमत के दबाव में आकर नसबन्दी को ही जायज़ क़रार दे दिया लेकिन जब आप ने अपना क़लम मुबारक उठाया है तो हुकूमत को खुश करने के लिए नही बल्कि दूध का दूध पानी का पानी करने के लिए आप ने अपने फतवे में कुरआन और हदीस के रोशनी में ये साबित किया कि नसबन्दी हराम है हराम है हराम है ये होते है मुफ़्ती ये होता है फतवा जिस पर शरीयत भी फ़ख्र करती है उसे हम ताजुश्शरिया कहते हैं।

औरते मज़ार पर न आएं

अहले सुन्नत वल जमात का अक़ीदह रहा है कि औरतो को कब्र पे नही जाना चाहिए लेकिन उसके बावजूद कुछ बदअक़ीदह किस्म के लोग सुन्नियों पर ये इल्ज़ाम कसी करते हैं कि ये कब्र के पुजारी हैं उन अंधों से कहना चाहता हूँ कि तूने मुफ़्ती अख़्तर रज़ा खान अलैहिर्रहमा का वो फतवा नही देखा जिसे 26 जनवरी 1995 को उन्होंने मज़मून की शक्ल में छपवाया था और मुरीदों में ये आम कर दिया कि जब भी दरगाह में आये अकेले आये किसी औरत को साथ मे न लाये क्योंकि औरतो का क़ब्रो पे जाना सख्त मना है यही फतवा

हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़म हिन्द रहमतुल्लाह अलैह का भी था यही फतवा सरकार आला हजरत अजीमुल बरक़त फ़ाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह का भी है और यही फतवा आप ने भी दिया है बस अफसोस लोगो को ये नही दिख रहा है।

बचपन और तालीम

जब आपकी उम्र 4 साल 4 माह 4 दिन हुई तो हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़म हिन्द रहमतुल्लाह अलैह के हाथों रस्मे बिस्मिल्लाह अदा की गई और आपकी तालीम शुरू हुई नाजिरा आपने अपनी वालिदा माजिदा से पढ़ा।इब्तिदाई तालीम अपने वालिद हज़रत अल्लामा मौलाना इब्राहीम रज़ा क़ादरी अलैहिर्रहमा से सीखी।उसके बाद हाफ़िज़ इनामुल्लाह खाँ हामिदी से फारसी की तालीम हासिल की।फिर 3 साल के लिए आप "जामियातुल अज़हर"में पढ़ने के लिए भेजे गए जहाँ आप 3 साल रहे।

आपका इल्मी दबदबा

आपकी इल्मी सलाहियत व काबिलियत का अंदाज़ा लगा पाना मुश्किल है बस यूं समझिए कि जिसने आला हजरत का इल्म नही देखा था वो आपके इल्म को देख ले उसे समझ आ जायेगा कि इल्म क्या होता है।

जब आपकी उम्र 10 साल हुई तो आपने मदरसा में दाखिला लिया जहाँ दर्जा 8 तक आपने तालीम हासिल की और इस मौके पर आप अरबी,उर्दू,अंग्रेज़ी,हिंदी, संस्कृति बोलने लगे थे।जब आप मिश्र गए तो उस्ताद अल्लामा अब्दुल तव्वाबव मिश्री को अंग्रेज़ी अखबार का तर्जुमा अरबी और उर्दू में करके सुनाया करते थे।आपने 1962 तक अपने इल्म का लोहा मनवा लिया था आप अरबी की इबारत सुनकर उसके मुसन्निफ़ का नाम बता देते थे एक बार एक आलिम साहब ने आपके सामने अरबी के एक इबारत पढ़ी सुनते ही आपने बता दिया कि ये फला हज़रत की है उन आलिम साहब ने हैरत से पूछा कि आखिर आप ऐसे कैसे जान जाते है--? आपने फ़रमाया उनके अरबी के स्टाइल से में जान लेता हूँ।आप को इल्म हासिल करने का बहुत शौक था जब आपके वालिद अल्लामा इब्राहीम रज़ा खाँ अलैहिर्रहमा की तबीयत बहुत ज्यादा बिगड़ गई तो उन्होंने आपको एक खत लिखा जिसमे उन्होंने आपसे तालीम मुकम्मल करने की बात कही और यहां तक कह दिया कि अगर मेरा इंतेक़ाल भी हो जाये उसके बाद भी वहीँ रहकर तालीम जारी रखना आखिरकार 12 जून 1965 ईस्वी को आपके वालिद साहब

का इंतेक़ाल हो गया लेकिन आपने वालिद साहब के हुक्म की तामील करते हुए अपनी तालीम जारी रखी।

बरेली आमद और फ़ख्र ए अज़हर

आप तीन साल "जामियातुल अज़हर" में रहे और हर साल उस इदारे में टॉप किया जिसके बाद आपको फ़ख्र ए अज़हर का टाइटल दिया गया इसी वजह से आपके नाम मे अज़हरी खासकर लगता है यूं तो हर उस शख्स को भी अज़हरी कहा जाता है जिसने "जामियातुल अज़हर" से तालीम हासिल की हो लेकिन आपके बाद ये नाम आपकी तरफ मनसूब हो गया आज बरेली शरीफ में आपके मदरसे से फारिग होने वाले तलबा भी अपने नाम के आगे अज़हरी लगाते हैं।आपने वहाँ तीन साल रहकर तीनो साल टॉप किया फिर वहां के सदर के हाथों आपको मेडल मिला और आखिरकार अपने वतन वापिस आने का इरादा किया 17 नवम्बर 1966 में बरेली के जंक्शन पर आपका जोरदार इस्तेकबाल हुआ जिसकी सरपरस्ती खुद आपके पीरो-मुर्शिद हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़म हिन्द अलैहिर्रहमा फ़रमा रहे थे।

हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़म हिन्द अलैहिर्रहमा

आपके पीरो-मुर्शिद शहज़ाद ए आला हजरत अल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा खान हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़म हिन्द अलैहिर्रहमा हैं जो रिश्ते में आपके नाना भी हैं आपको बचपन ही में बैत कर लिया था आपसे बेपनाह मोहब्बत करते थे।जब आप तीन साल जामियातुल अज़हर से पढ़कर वापिस आये तो अक्सर कहा करते थे कि काश में वो तीन साल भी मुफ़्ती ए आज़म हिन्द अलैहिर्रहमा के साथ गुजारता तो मुझे उससे ज्यादा इल्म हासिल होता अल्लाह अल्लाह ये इल्म ये रूहानियत ये मकाम है मुफ़्ती ए आज़म हिन्द अलैहिर्रहमा आपका भी इल्म में कोई सानी नही है आप तसव्वुफ़ के आला दर्जे पर फ़ायज़ थे आपकी रूहानियत को सभी ने तस्लीम किया है।

प्रधानमंत्री को मिलने से मना किया

आजकल के आलिमो को अगर जरा सा लालच दे दिया जाए तो उम्मीद है कि वो अपने उसूल से खिलवाड़ कर जाएंगे और करते भी हैं अमूमन ये बात देखी जाती है लेकिन कुर्बान जाओ मेरे अज़हरी मियाँ की जात पर।एक बार मुल्क के प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव के खुसूसी सेक्रटरी आपके पास आये और आपकी इल्मी काबिलियत से प्रधानमंत्री बहुत

मुत्तासिर हैं और आपसे दुआ लेने का शौक रखते हैं आपने फौरन फरमा दिया कि उनके हाथ बाबरी मस्जिद की शहादत में मुलव्विस हैं हम उनसे किसी भी सूरत में मुलाक़ात नही कर सकते पूरे 7 घण्टे प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव बरेली के सर्किट हाउस में बैठे रहे और आखिरकार मायूस होकर चले गए।

अरब मुल्कों का दौरा

एक बात याद रखनी चाहिए कि हम और आप हिन्द में तो कहीं भी दौरा कर सकते हैं लेकिन अरब मुल्कों में दौरा करने के लिए उसमे अरबी जुबान में महारत हासिल होनी जरूरी है और आप रहमतुल्लाह अलैह की महारत अरबी ज़ुबान पर ऐसी थी कि जैसे ये आप की मादरी ज़ुबान हो,2009 में आपने सीरिया का दौरा किया जहां आपसे कई उलेमाओ ने हदीस की इजाज़त ली।मुफ़्ती ए दमिश्क ने आपका तार्रुफ़ कराया और उस रात हुए जलसे में आपने अरबी में तक़रीर भी की जिससे मौजूद उलेमा दंग रह गए।

जब आपने अमेरिका का दौरा किया तो आपने अंग्रेज़ी ज़ुबान में सूरह फातिहा की तफ़्सीर बयान की अल्लाहु अकबर यानी आप हर ज़ुबान में माहिर थे 36 उलूम पर आपका क़ब्ज़ा था।

तैयब एर्दोगान की आपसे मोहब्बत

तुर्की के मशहूर सदर तैयब एर्दोगान भी आपसे सच्ची अक़ीदत रखते हैं उनके पीरो मुर्शिद शेख महमूद नक्शबंदी दामत बरकातहु ने जब अपने गरीबखाने पर आप रहमतुल्लाह अलैह को बुलाया था वहां उनके मुरीद और तुर्की के सदर तैयब एर्दोगान भी मौजूद थे।

विसाल

20 जुलाई 2018 को आपने इस दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया आपकी नमाज़े ज़नाज़ा आपके शहज़ादे हुज़ूर असजद मियाँ क़ादरी साहब ने पढ़ाई।जाते जाते भी आप अपने बीच एक ज़िन्दा क़रामत छोड़ गए आपकी नमाज़े जनाज़ा में इतने चाहने वाले हाज़िर थे कि उसकी गिनती करना मुश्किल था में खुद इस तारीखी मंज़र का चश्मदीद गवाह हूँ कहीं पर पैर रखने की जगह नही थी लग रहा था आज सारा आलम उमड़ पड़ा हो एक आशिके रसूल के आखिरी दीदार के लिए।

एक नज़र में

1--आप दोनों तरफ से आला हज़रत अजीमुल बरक़त की औलाद हैं यानी एक तरफ से नवासे हुए और दूसरी तरफ से पौते।

2--आप को फ़ख्र ए अज़हर भी कहा जाता है।

3--आप मुफ़्ती ए आज़म हिन्द अलैहिर्रहमा के मुरीद व नवासे हैं।

4--आपके वारिसे उलूम आला हजरत कहा जाता है।

5--आपके करोड़ों की तादाद में मुरीद हैं।

6--आपका आस्ताना बरेली शरीफ में ही है।

7--आपका चेहरा चाँद सा रोशन चमकदार था।

8--आपके एक शहज़ादे हुज़ूर असजद मियाँ दामत बरकातहु हैं।

9--आपने 50 से ज्यादा किताबें लिखी है।

10--आपकी कुछ किताबों के नाम ये हैं

1--हिजरत-एरसूल

2--आसार-ए-क़यामत

3--अल-हक़-उल-मुबीन

4--सफ़ीना-ए-बख्शिश

5--फतावा-ताजुश्शरिया

हज़रत मख्दूम अनीसुर्रहमान जबलपुरी रहमतुल्लाह अलैह

आपकी विलादत तकरीबन 1260 हिजरी में उत्तर प्रदेश के शहर जौनपुर में हुई थी।आपने जौनपुर में ही क़ुरआन, हदीस, फ़िक़्ह का इल्म हासिल किया उसके बाद शेखे क़ामिल की तलाश में आपने सरज़मींने इलाहाबाद का रुख किया जहां आपको वक़्त के वली ए क़ामिल आरिफे बिल्लाह हज़रत अल्लामा मौलाना सैयद सिकन्दर अली इलाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह की सोहबत नसीब हुई उन्ही से आपने बैत की उसके बाद मुर्शिद ने आपको ख़िरका व ख़िलाफ़त अता की और जो भी फेज़ उन्हें हज़रत मौलाना सूफी सैयद अब्दुर्रहमान लखनवी रहमतुल्लाह अलैह से हासिल हुआ था सब आपको अता कर दिया।उसके बाद आपने हिन्द के बेशुमार औलिया अल्लाह की बारगाह में हाजिरी दी है और फेज़ हासिल किया है उनमें ख्वाज़ा गरीब नवाज़ सैयदना मोईनुद्दीन चिश्ती हसन संजरी रहमतुल्लाह अलैह, हुज़ूर शैखुल आलम रूदौलवी अलैहिर्रहमा,सैय्दुश शोहदा फिल

हिन्द सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह बहराईच शरीफ़,अशरफुल आलमीन सैयदना हाफिज़ वारिस अली शाह रहमतुल्लाह अलैह,सैयदना अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कलियरी रहमतुल्लाह अलैह,सैयदना शमसुद्दीन तुर्क अल्वी पानीपती रहमतुल्लाह अलैह,ख्वाजा जलालुद्दीन क़बीरुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह,से बेपनाह फेज़ लिया है।14 सफर 1327 हिजरी को आपने इस दुनिया ए फानी को अलविदा कह दिया।आपका आस्ताना जबलपुर में है जहाँ से आज भी रहमते इलाही बरसती है।